अध्याय – 01 भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन
(Advent of European companies in India)

1) भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन का कारण (Reason for the advent of European companies in India)

प्राचीन काल से ही भारत और यूरोप के मध्य व्यापारिक संबंध स्थापित थे, हालांकि नवीन समुद्री मार्ग द्वारा यूरोपीय कंपनियों के भारत आने के निम्नलिखित कारण थे :-

1. मांस संरक्षण तथा अन्य कार्यों हेतु यूरोप में दक्षिण - पूर्व एशिया के मसालों की भारी मांग
2. भारत की समृद्धि तथा दक्षिण पूर्व एशिया के संसाधनों की जानकारी
3. 1453 में उस्मानिया सल्तनत ने कुस्तुनतुनिया को जीत लिया, परिणाम स्वरूप एशियाई क्षेत्र के व्यापार पर अरब व्यापारियों का जबकि यूरोपीय क्षेत्र के व्यापार पर वेनिस तथा जेनोआ के नवीन स्थापित एकाधिकार को तोड़ना
4. यूरोप में पुनर्जागरण :
   - मानवतावाद
   - धर्म सुधार
   - कंपास जैसे वैज्ञानिक आविष्कार
     - ✓ नवीन समुद्री मार्गों की खोज
     - ✓ ब्राजील (कैब्रल)
     - ✓ अमेरिका (1492, कोलंबस, स्पेन)
     - ✓ भारत (1498, वास्कोडिगामा, पुर्तगाल)
     - ✓ ऑस्ट्रेलिया (कुक, ब्रिटेन)
     - ✓ न्यूजीलैंड, तास्मनिया (तस्मान, इंग्लैंड)
5. सामंती व्यवस्था के स्थान पर वणिकवादी व पूंजीवाद का उद्भव :-
   - कच्चे माल की आवश्यकता
   - नवीन बाजारों की आवश्यकता
6. अन्य कारण :-
   - ईसाई धर्म प्रचार
   - पूर्वी धनसंपदा का आकर्षण
   - औपनिवेशिक प्रवृति

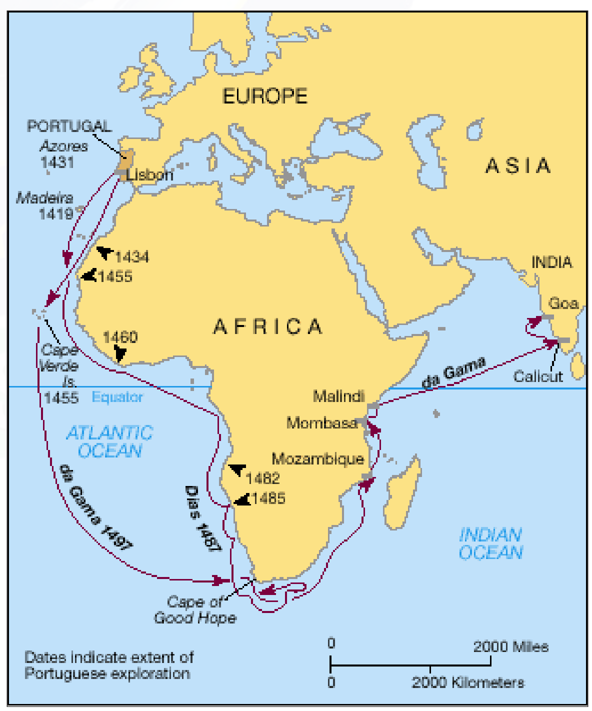

वणिकवाद : एक आर्थिक विचारधारा जो बहुमूल्य धातुओं के संचय तथा निर्यात को बढ़ावा देने पर आधारित है

Note : भारत आगमन के जल एवं स्थल मार्ग

- भारत में मुख्यतः दो भागों से विदेशी प्रवेश कर सकते थे - प्रथम उत्तर-पश्चिम सीमा को पार कर परंपरागत स्थल मार्ग से और द्वितीय समुद्री मार्ग द्वारा।
- स्थल मार्ग, बाल्कन देशों से टर्की , फारस, ईरान, इराक होता हुआ अफगानिस्तान पहुंचता था, फिर खैबर, कुर्रम , बोलन तथा गोमल आदि दर्रो से होता हुआ भारत तक पहुंचता था।
- जलमार्ग, भूमध्य सागर अथवा काला सागर द्वारा लाल सागर, फारस की खाड़ी और अरब सागर होता हुआ भारत पहुंचता था।
- 18 वीं सदी (1700-1799) में भारत की स्थिति - लाल सागर एवं भूमध्य सागर के बीच नहर निर्माण से पूर्व सीधा जुड़ाव नहीं था अपितु थोड़ा भूमि मार्ग भी पार करना होता था। यही एक बड़ी बाधा थी क्योंकि व्यापारिक सामग्री को एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में ले जाने के लिए बड़ी संख्या में भारवाहक पशुओं की जरूरत होती थी।

2) भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन का क्रम (Order of arrival of European companies in India)

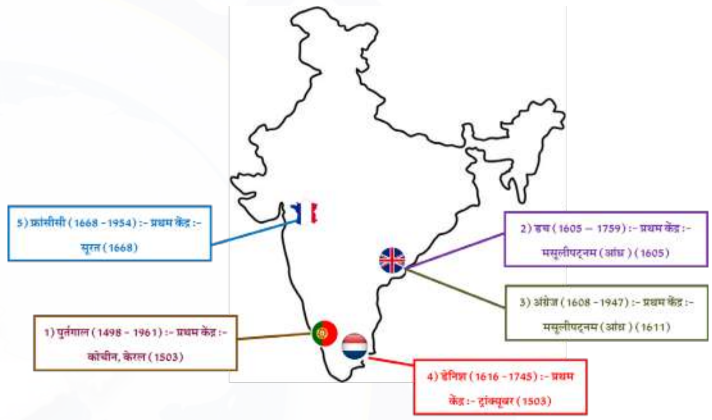

3) 18वीं सदी में भारत की अवस्था (Condition of India in the 18th century)

18 वीं शताब्दी से पूर्व यूरोपीय जातियों ने भारत में व्यापारिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया. हालांकि 18 वीं सदी के उत्तरार्ध में कर्नाटक, बंगाल आदि मे राजनीतिक हस्तक्षेप प्रारंभ किया जिसका कारण निम्नलिखित तत्कालीन स्थितिया थीं :-

1) राजनीतिक परिस्थितियां
   - मुगल साम्राज्य का पतन
   - नवीन राज्यों (बंगाल, हैदराबाद, अवध) का उदय
   - नवीन शक्तियों (मराठा, राजपूत, सिरत , जाट) का उदय
   - केंद्रीय शक्ति का अभाव व राजनैतिक विखराव
2) आर्थिक परिस्थितियां
   - विश्व की सर्वाधिक समृद्ध अर्थव्यवस्था
   - फसलें – चावल, गेहूं, कपास, नील, अफीम आदि
   - विश्व का 25% औद्योगिक उत्पादन – कपड़ा, जहाज निर्माण, जूट, शक्कर, तेल आदि
   - 1700 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में 24% योगदान से 1947 में मात्र 4.2%
3) सामाजिक परिस्थितियां
   - वर्ण व्यवस्था,
   - वर्ण आधारित भेदभाव, बाल विवाह, जाति व्यवस्था
   - सती प्रथा, बहु विवाह, महिला शिक्षा का अभाव
   - पदानुक्रम :-

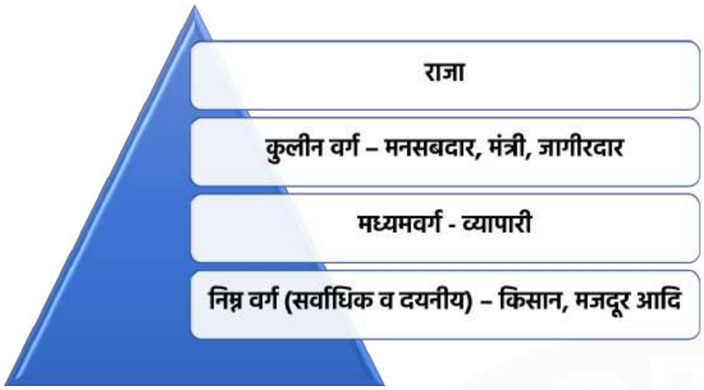

4) पुर्तगाल (1498-1961) : सर्वप्रथम आये - सबसे बाद गये (Portugal (1498-1961) : Came First – Last to go)

- 1498 → प्रथम यूरोपीय वास्कोडिगामा समुद्री मार्ग से भारत पहुंचा
- 1503 → कोचीन में प्रथम पुर्तगाली फैक्ट्री
- 1505 → कन्नूर में द्वितीय पुर्तगाली फैक्ट्री
- 1505 → प्रथम पुर्तगाली गवर्नर फ्रांसिस्को डी अलमीड़ा की नियुक्ति
- 1509 → गवर्नर अल्फांसो डी अल्बुकर्क द्वारा पुर्तगाल शक्ति की वास्तविक नींव
- 1510 → पुर्तगालियों का गोवा पर अधिकार
- 1535 → पुर्तगालियों का दीव पर अधिकार
- 1559 → पुर्तगालियों का दमन पर अधिकार
- 1596 → दक्षिण - पूर्व एशिया में डचों ने पुर्तगाल को हराया
- 1612 → अंग्रेजों ने सूरत में हराया
- 1639 → मराठों ने सालसेट और बेसिन पर अधिकार किया
- 1658 → श्रीलंका और मालाबार में पुर्तगालियों की हार
- 1661 →

1) पुर्तगाल के भारत आगमन के कारण

1. मसाला व पूर्वी व्यापार पर अरब तथा इटली के एकाधिकार को समाप्त करना
2. ईसाई धर्म का प्रचार -प्रसार
3. पुर्तगाली राजकुमार हेनरी (द ने विगेटर) का प्रोत्साहन
   - बार्थोलोम्यो डियाज (1487) - केप आफ गुड होप
   - वास्को-डि-गामा (1498) - भारत
4. यूरोपीय पुनर्जागरण, वैज्ञानिक आविष्कार तथा बेहतर जहाज निर्माण तकनीक
5. विकसित अस्त्र-शस्त्र, नौसेना व समुद्री ज्ञान

2) पुर्तगाल सामान्य तथ्य

पुर्तगाल का प्रथम आगमन :- 20 मई 1498

वास्को - डि - गामा | **कालीकट बंदरगाह**

शासक

- पुर्तगाल राजा - मैनुअल
- राजकुमार - डॉन हेनरिक
- कंपनी - एस्तादो द इंडिया (सरकारी)
- दिल्ली सल्तनत -सिकंदर लोदी (लोदी वंश)
- कालीकट - जमोरिन
- गुजरात - महमूद बेगड़ा
- विजयनगर - नरसिंह द्वितीय (सालुव)

3) वास्को - डि - गामा (1469-1524)

1. 20 मई 1498 को समुद्री मार्ग द्वारा भारत पहुंचने वाला प्रथम यूरोपीय :-
   - भारत पहुंचने के नये समुद्री मार्ग की खोज।
     (**यूरोप** → केप आफ गुड होप → भारत)
   - समुद्री यात्रा में अहमद इब्न मज़ीदी (गुजराती) द्वारा सहायता
   - कालीकट शासक जमोरिन द्वारा स्वागत
   - अरब व्यापारियों द्वारा विरोध
   - जहाज - साओ ग्रेनियल
   - काली मिर्च के व्यापार से 60 गुना मुनाफा

Note : 1500 ईस्वी में द्वितीय पुर्तगाली अभियान के तहत पेड्रो अल्वारेज कैब्राल 13 जहाजों के एक बेड़े का नायक बनकर भारत आया । उसका अरब व्यापारियों के साथ भीषण संघर्ष हुआ।

2. 1502 :- वास्को-डि-गामा की द्वितीय भारत यात्रा
   - व्यापार विस्तार हेतु कारखाना प्रणाली (इटली से प्रेरित)
     - ✓ प्रथम - कोचीन (1503)
     - ✓ द्वितीय - कन्नूर (1505)
   - 1503 में पुर्तगाल के शासक द्वारा एकाधिकार नीति
     - ✓ 1505 से भारत में पुर्तगाली गवर्नर जनरल
     - ✓ प्रथम गवर्नर - फ्रांसिस्को - डी - अल्मीडा (1505-09)
3. 1524 :- वास्को -डि -गामा की तृतीय भारत यात्रा
   - 24 दिसंबर 1524 - कोचीन में मृत्यु

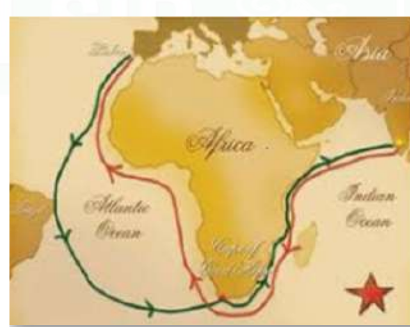

4) प्रमुख पुर्तगाली गवर्नर

- फ्रांसिस्को – डी - अल्मीडा (1505-09)
- अल्फांसो – डी - अल्बुकर्क (1509-15)
- नीनो डी कुन्हा (1529-1598)
- गार्सिया द नारोन्हा
- अंतिम – मैनुअल एण्टोनियो (1958-1961)

4.1) फ्रांसिस्को-डी-अल्मीडा (1505-09)

1. प्रथम पुर्तगाली गवर्नर (1505-09)
2. उद्देश्य :- व्यापार व नौसेना सुदृढ़ीकरण
3. **मुख्य कार्य :-**
   - 1505 में अंजाडीवा, कन्नूर तथा किलवा में दुर्ग
   - नीले जल की नीति (Blue water policy)
   - 1509 में गुजरात, तुर्की व मिस्र की संयुक्त नौ सेना को पराजित किया (बेटा खोया)
   - फितोरियो की स्थापना - फितोरियो ऐसे व्यापारिक स्थल या अड्डे होते थे , जहां से नौसैनिक बेंड़ों को सहायता प्रदान की जाती थी।
   - हिंद महासागर में पुर्तगाली वर्चस्व

4.2) अल्फांसो-डी-अल्बुकर्क (1509-15)

1. द्वितीय पुर्तगाली गवर्नर
2. भारत व हिंद महासागर में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक :-
   - होमुर्ज (1515)
   - मलक्का (1511)
   - गोवा (1510 : बीजापुर शासक आदिल युसुफशाह से)
   - विजय नगर शासक कृष्णदेव राय से बेहतर कूटनीतिक संबंध
   - बंगाल (हुगली, बाल्सोर) में विस्तार
3. सामाजिक कार्य :–
   - पुर्तगालियों को भारतीय महिलाओं से विवाह हेतु प्रोत्साहन
   - सती प्रथा खत्म करने का प्रयास
4. मुख्यालय :- कोचीन
5. 1515 में गोवा में मृत्यु

1515 - 1529

निर्वात व भारतीय राजनीतिक परिवर्तन

- 1515 से 1529 तक 6 पुर्तगाली गवर्नर
- 1526 :- पानीपत का प्रथम युद्ध व भारत में मुगल सत्ता का आरंभ।
- 1529 :- कृष्णदेव राय की मृत्यु के बाद कमजोर पर जयनगर साम्राज्य

4.3) अन्य गवर्नर

5) नीले पानी की नीति और कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था (Blue Water Policy and Cartaz -Armada -Convoy system)

5.1) नीले पानी की नीति (Blue water policy)

- पुर्तगाली वायसराय फ्रांसिस्को - डी- अल्मीडा द्वारा हिंद महासागर में प्रभुत्व हेतु बनाई गई नीति।
- उपकरण –
  - ✓ नौ सैनिक सुदृढ़ता
  - ✓ फितोरियो की स्थापना
- अन्य उद्देश्य :- अन्य यूरोपीय व अरवियो से व्यापारिक एकाधिकार की सुरक्षा

5.3) कार्टज - आर्मेडा - काफिला व्यवस्था (Cartaz -Armada -Cafile system)

- हिंद महासागर में जहाज से व्यापार करने हेतु भारतीय व अरबी व्यापारियों द्वारा पुर्तगालीयों से परमिट लेने की व्यवस्था।
- **उद्देश्य** :- हिंद महासागरीय व्यापार पर पुर्तगाली एकाधिकार स्थापित करना।
- **अन्य तथ्य** :-
  - ✓ कार्टज - परमिट
  - ✓ आर्मेडा - बाध्यकारी

  (कार्टज, आर्मेडा —) बाध्यकारी परमिट
  - ✓ भारतीय व अरबी जहाज, काली मिर्च व गोला बारूद नहीं ले सकते थे।
  - ✓ जहाजों की रक्षा हेतु पुर्तगाली संरक्षक बेडे का साथ
  - ✓ मुगल बादशाह अकबर ने भी कार्टज लिया।
  - ✓ पुर्तगाली स्वयं को " सागर का स्वामी " कहते थे।
- पुर्तगाल समुद्र पर वर्चस्व बना सके क्योंकि भारतीय शासकों ने नौ सैनिक शक्ति को मजबूत करने का प्रयास नहीं किया।

6) पुर्तगालियों का व्यापार पर प्रभुत्व (Domination of Portuguese on trade)

पुर्तगाली दक्षिण पूर्वी एशिया के साथ समुद्री मार्ग से व्यापार करने वाले पहले यूरोपीय थे और उन्होंने निम्न प्रकार से अपने व्यापार का विस्तार किया :-

1. मालाबार तट से मसालों तथा कोरोमंडल तट से वस्त्रो के व्यापार पर जोर
2. उत्तर पश्चिम भारत से टाफ़्टा (एक प्रकार का कपड़ा) का व्यापार
3. मलक्का मलीना आदि से लॉन्ग, कस्तूरी, लाख इत्यादि का व्यापार करने हेतु नागपट्टनम को प्रमुख बंदरगाह बनाया
4. वे वस्तुओं को खरीदने के लिए पश्चिम से सोना चांदी और अन्य बहुमूल्य रत्न लाते थे।
5. मसालों के अलावा, परिवहन के द्वारा भी लाभ
6. पुर्तगालियों को सबसे सर्वाधिक लाभ काली मिर्च के व्यापार से हुआ वह लगभग 170000 क्रूजेडो प्रतिवर्ष सिर्फ काली मिर्च के व्यापार हेतु भारत भेजा करते थे।

7) पुर्तगालियों के भारत में विस्तार की नीति (Portuguese expansion policy in India)

दक्षिण भारत की राजनीतिक परिस्थितियों देखने के बाद 1505 के बाद पुर्तगालीयो ने भारत में साम्राज्य विस्तार की नीति अपनाई जो इस प्रकार है :-

8) पुर्तगालियों के पतन का कारण (Reasons for the fall of Portuguese)

पुर्तगाली भारत आने वाले सबसे प्रथम यूरोपियन थे तथा भारत से जाने वाली सबसे अंतिम। इसके बाद भी निम्नलिखित कारणों के चलते वह भारत में छोटे से क्षेत्र में सीमित रह गए :-

1. भ्रष्ट शासन व दोषपूर्ण व्यवस्था
2. कार्टेज पद्धति, लूट की नीति तथा व्यापारिक दूरदर्शिता की कमी
3. स्पेन का पुर्तगाल पर अधिकार तथा निरंकुश राजतंत्र
4. पुर्तगाल की कंपनी पूर्णता सरकार के एकाधिकार में होना
5. धार्मिक असहिष्णुता की नीति तथा जबरन ईसाइयत का प्रचार
6. अंग्रेज, डच जैसी उभरती नौसैनिक शक्तियों से पराजय
7. मुगल साम्राज्य का विस्तार तथा बेहतर संबंधों का अभाव
8. ब्राजील की खोज के बाद भारत पर ध्यान की कमी
9. आयोग गवर्नर की नियुक्ति
10. सीमित पुर्तगाली संसाधनों के कारण पुर्तगाल में व्यापार तकनीक कौशल का पिछड़ापन

9) पुर्तगाली शासन का भारत पर प्रभाव (Impact of Portuguese rule on India)

पुर्तगालियों भारत के आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी कृषि व स्थापत्य कला को निम्न तरीके से प्रभावित किया :-

1) तकनीकी योगदान :-
- 1556 में गोवा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना
- जहाज व हथियार निर्माण की तकनीकें

2) कृषि में योगदान :-
- नवीन फसले - तंबाकू, आलू, मूंगफली, टमाटर, शकरकंद, मक्का, रबड़, लाल मिर्च, कहवा
- नवीन फल - पपीता, अनानास, अमरुद, अल्फांसो आम, चीकू आदि

3) सामाजिक व धार्मिक योगदान :-
- भारत में ईसाई धर्म व मिशनरी की शुरुआत (1st पादरी - फ्रांसिस्को जेवियर)
- सती प्रथा को रोकने का प्रयास

4) स्थापत्य कला योगदान :-
- गोथिक स्थापत्य कला - केरल में सेंट थॉमस चर्च की स्थापना (1510)

10) अन्य तथ्य (Other Facts)

तथ्य | Fact

1. **स्वतंत्रता प्राप्ति के समय गोवा गवर्नर | Goa Governor at the time of independence** → **बोस्सा | Bossa**
2. **अंतिम गवर्नर | Last governor** → **मैनुएल एंटोनिओ 1958-1986 | Manuel Antonio 1958–1986**

↓ **1961** — **ऑपरेशन विजय | Operation Vijay**

↓ **पुर्तगाली बस्ती गोवा, दमन दीप का भारत विलय | Portuguese colony Goa Daman Deep merges with India**

- → **वाइस किंगडम | Vice kingdom**
- → **समान नागरिक संहिता | Uniform Civil Code**
- → **19 दिसंबर 1961 | 19 December 1961** → **गोवा मुक्ति दिवस | Goa Liberation Day**

5) डच II Dutch – नीदरलैंड/हॉलैंड के निवासी

- 1596 → कार्नेलियस डेहस्तमान सुमात्रा तथा भारत पहुंचा (प्रथम डच नागरिक)
- 1602 → डच संसद ने यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड (Veree..) को स्थापित किया (संयुक्त उपक्रम कंपनी)
- 1605 → मसूलीपट्टनम में प्रथम भारतीय फैक्ट्री
- 1610 → पुलिकट में एकमात्र किला बंद फैक्ट्री की स्थापना (नाम - गोल्ड्रिया)
- 1610 → गोल्ड्रिया में पगोडा नामक स्वर्ण सिक्के
- 1616 → सूरत में फैक्ट्री
- 1619 → इंडोनेशिया के जकार्ता में स्थित बैटेविया को मुख्यालय बनाया
- 1627 → बंगाल के पीपली में पहली फैक्ट्री
- 1641 → पुर्तगालियों से मलक्का छीना
- 1658 → पुर्तगालियों से श्रीलंका छीना
- 1658 → पुलिकट के बाद भारत में नागपट्टनम को केंद्र बनाया
- 1759 → अंग्रेज व डचों के मध्य बेदरा का युद्ध
- 1795 → भारत छोड़कर चले गए

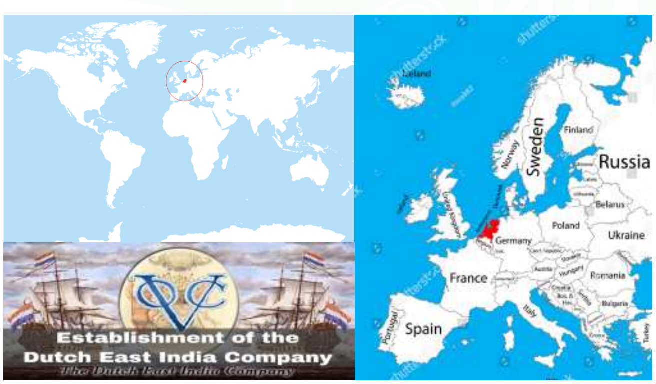

1) कम्पनी की स्थापना (Establishment of company)

नाम :- यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड्स || Verenigde Oostindische Compagnie (1602)

- कारण - पुर्तगालियों को पूर्व से होने वाला लाभ
- मुख्यालय - बटाविया (इंडोनेशिया)
- प्रथम भारतीय केंद्र – मसूलिपटनम
- संयुक्त कंपनी (17 सदस्यीय बोर्ड)
- प्रारंभिक पूंजी – 6500000 गिल्डर

- 1602 :- डच संसद ने कंपनी को 21 वर्षों का पूर्वी व्यापार एकाधिकार दिया
- उद्देश्य :- एशियाई मसाला व वस्त्र व्यापार द्वारा लाभ अर्जन
- विशेषता :-
  - ‡ भारत से ज्यादा इंडोनेशिया (मसाला द्वीप) पर बल
  - ‡ भारत को वस्त्र व्यापार का केंद्र बनाया
  - ‡ भारत के कोरोमंडल तट पर ज्यादा व्यापार
  - ‡ भारतीय मुख्यालय - पुलीकट

Amsterdam VOC HQ

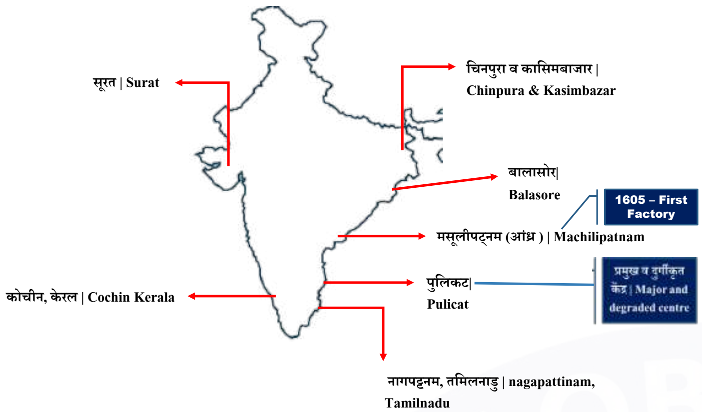

2) डचों का पुर्तगालियों से संघर्ष

कारण :- व्यापारिक प्रतिस्पर्धा

1. 1602 ई में डचों ने पुर्तगालियों को बंटम के निकट युद्ध में परास्त किया
2. 1605 ई में डचों ने पुर्तगालियों से अम्बोइना छीन लिया
3. 1619 ई में उन्होंने जकार्ता पर अधिकार कर लिया और डच राजधानी बटाविया का निर्माण किया
4. 1639 ई में उन्होंने गोवा की नाकेबंदी की
5. 1641 ई में मलक्का पर अधिकार कर लिया
6. 1658 में श्रीलंका में पुर्तगालियों की बस्तियों पर अधिकार कर लिया

3) डच व्यापार का विस्तार

1. पुर्तगालियों के प्रभाव को समाप्त करके डचों ने मसाले के व्यापार पर एकाधिकार कर लिया
2. पूर्वी द्वीपसमूह (इंडोनेशिया) में भारत के सूती कपड़े की और भारत में पूर्वी मसालों की अच्छी खपत थी
3. वे भारत में पूर्वी द्वीपसमूह से मसाले, चन्दन की लकड़ी, कालीमिर्च, जापान से तांबा और चीन से रेशमी वस्त्र लाते थे
4. इसी प्रकार वे भारत से पूर्वी द्वीपसमूह को अनेक चीजों का निर्यात करते थे जैसे - नील, अफीम, सूती वस्त्र, रेशम, शोरा और चावल
5. इस व्यापार से डचों को एक लाभ यह था कि उन्हें सोना खर्च नहीं करना पड़ता था, अदला-बदली के आधार पर ही व्यापार चलाया जा सकता था

4) डचों का पतन (Decline of Dutch)

1. बेदरा (कर्नाटक का युद्ध) 1759

डच || Dutch — अंग्रेज || British → रॉबर्ट क्लाइव

डच || Dutch ↓ हार || Defeat

2. पतन के कारण :-
   - डच कंपनी में सरकार का ज्यादा हस्तक्षेप
   - अंग्रेजों का कुशल नेतृत्व तथा सशक्त नौसेना
   - साधनों का अभाव
   - डच कम्पनी के अधिकारियों का कम वेतन

- दक्षिण पूर्वी एशिया के मसाला द्वीपों की अपेक्षा भारत पर कम ध्यान
- यूरोप में ब्रिटेन तथा फ्रांस से संघर्ष

5) प्रमुख व्यापारिक केंद्र –

- पुलीकट (1610ई)
- सूरत (1616ई)
- विमिलिपट्टम (1641ई)
- चिनसुरा (1653ई)
- कासिमबाज़ार (मुर्शिदाबाद के निकट)
- बालासोर
- पटना
- नेगापट्टम (1658)
- कोचीन (1663ई)

6) अंग्रेज (Britisher)

- 1588 → स्पेन और पुर्तगाल की नौसेना (आरमेडा) को अंग्रेजों ने हराया
- 1597 → जॉन मिलडेन हॉल स्थल मार्ग से भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज
- 1600 → गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेंट ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडिया की स्थापना
- 1600 → ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ ने कंपनी को पूर्वी व्यापार हेतु 15 वर्षों का एकाधिकार दिया
- 1608 → कैप्टन हॉकिंस रेड ड्रैगन नामक जहाज से सूरत पहुंचा
- 1609 → महाराजा जेम्स प्रथम ने पूर्वी व्यापारिक एकाधिकार को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ाया
- 1611 → दक्षिण में मसूलीपट्टनम में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना
- 1612 → अंग्रेजों तथा पुर्तगालियों के मध्य स्वैली होल का युद्ध
- 1613 → जहांगीर ने अंग्रेजों को सूरत में फैक्ट्री खोलने की अनुमति दी
- 1615 → जेम्स प्रथम ने टॉमस रो को जहांगीर से मिलने भेजा
- 1632 → गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा सुनहरा फरमान दिया गया
- 1633 → पूर्वी भारत में अंग्रेजों ने अपना पहला कारखाना उड़ीसा में खोला
- 1639 → अंग्रेजों ने चंद्र नगर के राजा से मद्रास को पट्टे पर लिया

- 1588 → The Spanish and Portuguese Navy (Armeda) were defeated by the British
- 1597 → John Mildenhall first Englishman to come to India by land route
- 1600 → Establishment of Governor and Company of Merchants of London Trading into the East Indies
- 1600 → Britain's Queen Elizabeth granted the Company a 15-year monopoly on Eastern trade
- 1608 → Captain Hawkins reached Surat by a ship called Red Dragon
- 1609 → King James I extended the Eastern trading monopoly for indefinite time.
- 1611 → Establishment of the first factory at Masulipatnam in the South
- 1612 → Battle of Swally (suvali) between the British and the Portuguese
- 1613 → Jahangir allowed the British to open a factory in Surat
- 1615 → James I sent Thomas Roe to meet Jahangir
- 1632 → Golden decree given by the Sultan of Golconda
- 1633 → The British opened their first factory in Orissa in Eastern India.
- 1639 → The British leased Madras from the Raja of Chandra Nagar.

- 1640 → मद्रास में फोर्ट सेंट जॉर्ज की स्थापना
- 1651 → ब्रिजमैन द्वारा हुगली में फैक्ट्री की स्थापना
- 1667 → औरंगजेब ने अंग्रेजों को बंगाल में व्यापार करने हेतु फरमान जारी किया
- 1661 → चार्ल्स द्वितीय ने कंपनी को मुद्रा, न्याय और संधि का अधिकार दिया व गवर्नर नियुक्त करने का अधिकार भी मिला
- 1662 → चार्ल्स द्वितीय का पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह
- 1668 → चार्ल्स द्वितीय ने 10 पौंड वार्षिक किराए पर कंपनी को बम्बई दिया
- 1677 → गेराल्ड अंगियार ने मुंबई नगर की नींव डाली
- 1686 → औरंगजेब ने अंग्रेजों को हराया जिस कारण उन्हें फुल्टा द्वीप जाना पड़ा
- 1687 → मुख्यालय सूरत से मुंबई लाया गया
- 1698 → बंगाल के सूबेदार अजीमुशान ने अंग्रेजों को कालिकाता, सुतानती और गोविंदपुर की जमीनदारी दी
- 1700 → जॉब चरनॉक ने कोलकाता की स्थापना की तथा फोर्ट विलियम भी बनाया
- 1715 → जॉन शर्मन के नेतृत्व में ब्रिटिश मंडल मुगल बादशाह फर्रुखसियर से मिला (डॉक्टर विलियम हैमिल्टन)
- 1717 → फर्रुखसियर द्वारा शाही फरमान या मैग्राकार्टा जारी किया गया

St. George Fort in Chennai

- 1813 → कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को कम किया गया
- 1833 → कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार की समाप्ति
- 1858 → कंपनी के प्रशासनिक एकाधिकार की समाप्ति
- 1874 → ईस्ट इंडिया कंपनी को बंद किया गया

Company flag (1801)

Robert Clive became the first British Governor of Bengal after he had instated Mir Jafar as the Nawab of Bengal

An East India Company coin, struck in 1835

An English soldier apologising to Emperor Aurangzeb

Coat of arms (1698)

1) कंपनी की स्थापना (Establishment of company)

Governor and Company of Merchants of London Trading into the East-Indies

- गठन :- 31 दिसंबर 1600
- संस्थापक :- जॉन वॉट व थॉमस स्मिथ
- प्रथम गवर्नर :- थॉमस स्मिथ
- निजी कंपनी - निदेशक मंडल(24) द्वारा संचलित
- प्रथम केंद्र :- सूरत (1608)
- 1600 में महारानी एलिजाबेथ द्वारा 15 वर्ष व 1609 में राजा जेम्स प्रथम द्वारा अनिश्चित काल हेतु पूर्वी व्यापारिक एकाधिकार

1) भारत में :-
   - अकबर (1542-1605)
   - जहाँगीर (1605-1625)
2) उद्देश्य :- एशियाई व्यापार द्वारा लाभ अर्जन
3) अन्य तथ्य :-
   1) दक्षिण भारत में प्रथम केंद्र - मसूलीपटनम
   2) प्रारंभिक मुख्यालय - सूरत

Sanjiv Mehta

2) मुख्य व्यापारिक केंद्र (Major trading centre)

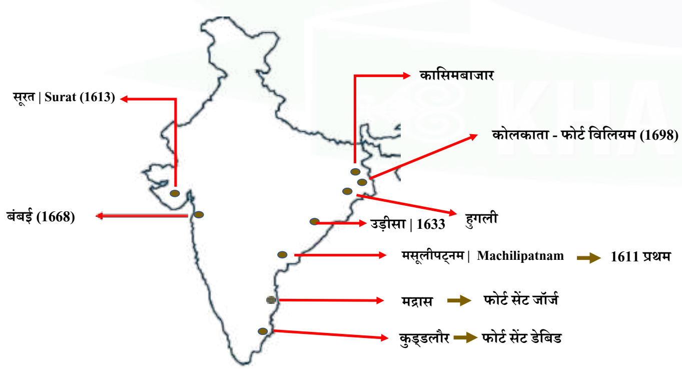

नागपट्टनम तमिलनाडु | Travancore (Tamil Nadu)

3) उत्तर भारत में विस्तार (Expansion to North India)

3.1) जहांगीर काल (1605-1625)

3.2) औरंगजेब काल (1658-1707)

3.1) जहांगीर काल (1605-1625)

1) कैप्टन विलियम हॉकिंस

1) 24 अगस्त 1608 को मुगल बादशाह जहांगीर के दरबार में आने वाला अंग्रेज व्यापारी(आगरा)
2) तुर्की व फारसी में संवाद
3) प्रभावित होकर मुगल सम्राट ने 400 का मनसब व इंग्लिश खां की उपाधि दी
4) हालांकि पुर्तगाली वर्चस्व के कारण व्यापारिक वार्ता में असफल

2) स्वाली का युद्ध(1612)

1) स्थान :- सूरत के निकट
2) पुर्तगाल नौसेना व गुजरात गवर्नर बनाम अंग्रेज
3) अंग्रेजी कमांडर :- टॉमस वेस्ट
4) परिणाम :- पुर्तगालियों की हार तथा 1613 में अंग्रेजों को सूरत में फैक्ट्री खोलने की अनुमति मिली

3) सर टॉमस रो (1615-1619)

1) 1615 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम के राजदूत के रूप में जहाँगीर के दरबार मे आया
2) उद्देश्य :- भारत में व्यापारिक विस्तार
3) परिणाम :- मुगल साम्राज्य के प्रदेशों में फैक्ट्री खोलने की अनुमति

3.2) औरंगजेब काल (1658-1707)

1651 → बंगाल में प्रथम फैक्ट्री हुगली → हुगली

↑ शाहशुजा द्वारा

निशान → व्यापारिक अनुमति ₹3000 वार्षिक

1668 → अंग्रेज बनाम मुगल

↓

औरंगजेब ने अंग्रेजों से हुगली मसूलीपट्टनम आदि छीना

↓

अंग्रेजों ने माफी मांगी

1698 → बंगाल के तीन गांव
- कालीकट
- सूतानती
- गोविंदपुर

→ जमीनदारी ↓ जॉब चरनॉक के द्वारा कलकाता फोर्ट विलियम की स्थापना

1717 → फरुखसियर → शाही फरमान
- ₹3000 वार्षिक कर - बंगाल
- ₹10000 वार्षिक कर - सूरत
- बम्बई में कंपनी द्वारा ढाले गए सिक्कों को संपूर्ण मुगल राज्य में चलाने की आज्ञा मिल

↓ मैग्राकार्टा ऑफ कंपनी

(फरुखसियर ↑) जॉन सरमन मिशन व डॉक्टर हैमिल्टन

नोट → स्वर्ण फरमान → गोलकुंडा
↓
500 → 1632

4) दक्षिण भारत में विस्तार II Expansion to South India

1) 1639 → फ्रांसीस डे ने चंद्रगिरी के राजा से मद्रास लिया

↓

फोर्ट सेंट जॉर्ज - दक्षिण व्यापार केंद्र

2) 1661 → ब्रिटेन राजकुमार चार्ल्स प्रथम व पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन ऑफ ब्रेगेन्ज़ा का विवाह

↓

पुर्तगाल → Gift (Bombay) → ब्रिटेन

| 10 पाउंड किराया

1668 → EIC

↓

1. गेराल्ड ओंगियर द्वारा मुंबई स्थापना
2. 1687 → सूरत से मुंबई केंद्र बना

KGS IAS

7) डेनिस II Danish - डेनमार्क के निवासी

1. डेनमार्क की कंपनी
2. 1616 :-
   - डेनिस ईस्ट इंडिया कंपनी
     - 1620 → प्रथम फैक्ट्री → त्रेंकोबर तमिलनाडु
     - 1676 → द्वितीय फैक्ट्री → सीरामपुर बंगाल
3. 1845 → अंग्रेजों को सभी फैक्ट्री बेच कर चले गए

8) फ्रांसीसी (French)

1) कम्पनी की स्थापना (Establishment of company)

फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी || Compagnie française pour le commerce des Indes Orientales (1664)

संस्थापक :- कोल्बर्ट(लुई 14) के वित्त मंत्री	पूर्णतः सरकारी कम्पनी	प्रथम अभियान :- फ्रांसिस कैरो, जो 1668 में सूरत पहुंचा	भारतीय मुख्यालय :- पुडुचेरी (फ्रांसिस मार्टिन द्वारा स्थापित)	1742 में डूप्ले के आगमन पश्चात विस्तारवादी नीति

2) अन्य तथ्य (Other Facts)

- 1664 → FEIC की स्थापना
- 1668 → फ्रांसीसी कैरो के नेतृत्व में सूरत में प्रथम फैक्ट्री
- 1669 → मसूलीपट्टनम में द्वितीय फैक्ट्री
- 1674 → वलीकोंडापुरम के शासक से जमीन ले कर पांडिचेरी की स्थापना (संस्थापक - फ्रांसिस मार्टिन - फ्रांसीसी बस्तियों का संस्थापक)
- 1674 → बंगाल में चन्द्रनगर में बस्ती
- 1693 → यूरोप में डच फ्रांस युद्ध के कारण डचों ने पांडिचेरी छीना
- 1697 → रिजविक की सन्धि द्वारा फ्रांस को पांडिचेरी वापस मिला
- 1721 → मॉरीशस
- 1724 → माहे
- 1739 → कराईकल
- 1742 → डूप्ले फ्रांसीसी गवर्नर बना तथा भारत में फ्रांसीसी साम्राज्यवादी नीति का आरम्भ

3) डुप्ले की नीतियां II Dupleix's Policies

1742 तक मात्र व्यापार | Mere trade till 1742
↓
1742 → डूप्ले को फ्रांसीसी गवर्नर || Joseph François Dupleix - French Governor
↓
साम्राज्य विस्तार || Empire expansion

1. भारतीयों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप
2. एक प्रकार की सहायक संधि व्यवस्था
3. व्यापारिक और राजनीतिक महत्वाकांक्षा
   ↓ अंग्रेजों से संघर्ष
   ↓ 3 कर्नाटक युद्ध
   - प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-1748)
   - द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-1754)
   - तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-1763)

4) प्रथम कर्नाटक युद्ध (1744-48)
First Carnatic War (1744-48)

1) कारण :-
- आंग्ल फ्रांसीसी व्यापारिक द्वंदता
- ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध (1740)
  - ऑस्ट्रिया सम्राट चार्ल्स VI की मृत्यु
  - मारिया थेरेसा (ब्रिटेन) बनाम फ्रांस
  - किंग जॉर्ज युद्ध(उत्तर अमेरिका), प्रथम कर्नाटक युद्ध (भारत), सिलसियन युद्ध
  - फ्रांसीसी दार्शनिक वॉल्टेयर - अपने देश में छोड़े गए तोप के प्रथम गोले ने अमेरिका तथा एशिया में हमारे सारे तोपखाने में माचिस लगा दी

2) महत्वपूर्ण घटनाएं :

1. फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने कूटनीति द्वारा तत्कालीन कर्नाटक नवाब अनवरुद्दीन से शांति की अपील की हालांकि अंग्रेजी गवर्नर मोर्स ने इसे अस्वीकार किया
2. डूप्ले ने मॉरीशस के गवर्नर ला बुर्दने (La Bourdonnais) की सहायता से मद्रास पर कब्जा किया
3. सेंट थोमे / अड्यार का युद्ध(1746)
   - कारण - डूप्ले द्वारा मद्रास, कर्नाटक नवाब अनवरुद्दीन को न सौपना
   - पक्ष
     - ✓ फ्रांस - कैप्टन पैराडाइज
     - ✓ कर्नाटक - कर्नाटक नबाव पुत्र महफूज खां
   - परिणाम
     - ✓ फ्रांस की विजय
     - ✓ भारतीय शासकों की सैन्य अक्षमता की जानकारी
   - ओर्म का कथन - यूरोपीय जातियों को भारतीय नरेशों की सैनिक शक्ति का उस समय तक सही अंदाजा नहीं था, किंतु एक फ्रांसीसी टुकड़ी ने सम्पूर्ण सेना को हराकर उसका खोखलापन सिद्ध कर दिया

3) परिणाम :-

1) अनिर्णित
2) एक्स ला शापल की संधि (1748) द्वारा युद्ध समाप्ति

- यूरोप व अन्य स्थानों में युद्ध समाप्ति
- अंग्रेजों को मद्रास जबकि फ्रांसीसियों को उत्तर अमेरिका में लुइसबर्ग पुनः प्राप्त

- 1744-48 के मध्य अंग्रेज व फ्रांसीसी सेना के मध्य
- कारण :- ऑस्ट्रिया उत्तराधिकार युद्ध
- परिणाम :- अनिर्णित व एक्स ला शापेल की संधि द्वारा

4) महत्व :-

1) युद्ध के अंत में दोनों पक्ष पूर्ववत बने रहे। फिर भी भारतीय इतिहास में इस युद्ध का विशेष महत्व है
2) यूरोपीय जातियों की सैनिक प्रतिष्ठा स्थापित हो गयी
3) यूरोपीय जातियों को अनुभव हो गया कि देशी दरबारों की आंतरिक राजनीति में हस्तक्षेप करके अपार लाभ उठाया जा सकता है
4) जल शक्ति का महत्व भी स्पष्ट हो गया

5) द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54) Second Carnatic War (1749-54)

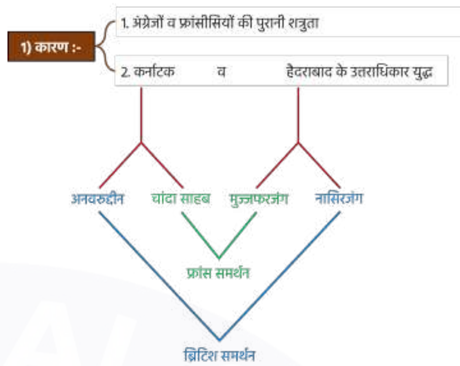

3) अंबर का युद्ध (1749) - चंदा साहब, मुज़फरजंग व फ्रांसीसियों ने अनवरुद्दीन को हराकर कर्नाटक पर अधिकार किया
4) सेंट टोमे पर अंग्रेजों का अधिकार
5) तंजौर का उत्तराधिकार युद्ध(फ्रांस को कराईकल (1738) व अंग्रेजों को कोटाई(1749) मिला

2) महत्वपूर्ण घटनाएं

1. डूप्ले व बुस्सी की सहायता से हैदराबाद में फ्रांसीसी प्रभुत्व
2. त्रिचनापल्ली का घेरा - अनवरुद्दीन के पुत्र मोहम्मद अली, अंग्रेजों मद्रास गवर्नर सांडर्स, तंजौर शासक बनाम फ्रांसीसी
3. अर्काट का घेरा (1751) - रॉबर्ट क्लाइव बनाम रजा खां (चंदा साहिब क़ा पुत्र), इससे रॉबर्ट क्लाइव की ख्याति फैली
4. रॉबर्ट क्लाइव व मेजर लॉरेंस ने मिलकर त्रिचनापल्ली में चंदा साहिब व फ्रांसीसी कमांडर लॉ को हराकर मोहम्मद अली को कर्नाटक का नबाव बनाया
5. डूप्ले की फ्रांस वापसी (1754) तथा गोड्यू (नवीन फ्रांसीसी गवर्नर) द्वारा पांडिचेरी की संधि

3) परिणाम :-

1. अनिर्णायक, परन्तु अंग्रेजी प्रधानता
2. पांडिचेरी की संधि (1755)
   - द्वितीय कर्नाटक युद्ध के बाद फ्रांसीसी गवर्नर गोडेह्यू तथा अंग्रेजों के मध्य सन्धि
   - प्रावधान
     - ✓ दोनों कम्पनियां भारतीय राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी
     - ✓ एक दूसरे के विजित प्रदेशों की वापसी
   - डूप्ले - गोडेह्यू ने अपने देश की बरबादी तथा राष्ट्र के अपमान पर हस्ताक्षर किए
3. अंग्रेजों का कर्नाटक फ्रांसीसीओं का हैदराबाद पर प्रभाव

4) डूप्ले की असफलता के कारण

1. फ्रांस से समय पर सहायता न मिलना
2. फ्रांसीसी कम्पनी की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी
3. डूप्ले ने स्वयं व्यापार की ओर कम ध्यान दिया
4. डूप्ले ने बुसी को हैदराबाद भेजकर भूल की
5. डूप्ले को जिन सेनानायकों पर निर्भर रहना पड़ा वे निकम्मे साबित हुए
6. अंग्रेजों की सामुद्रिक शक्ति फ्रांस की तुलना में कहीं अधिक थी

6) तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63) Third Carnatic War (1756-63)

1) कारण :-

1. आंग्ल फ्रांसीसी व्यापारिक और राजनीतिक प्रतिद्वंदिता
2. यूरोप का सप्तवर्षीय युद्ध (1756)

2) महत्वपूर्ण घटनाएं

1. क्लाइव का चन्द्रनगर पर अधिकार(नवंबर 1756)
2. काउंट लाली (फ्रांसीसी सेनापति) द्वारा अंग्रेजों के अंग्रेजों के फोर्ट सेंट डेविस पर अधिकार
3. फ्रांस द्वारा असफल मद्रास का घेरा (1758-59)
4. वाण्डीवाश का युद्ध (अक्टूबर 1759)
    - पक्ष - अंग्रेज (आयरकूट) बनाम फ्रांस (लाली)
    - कारण - यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध व भारत में तृतीय कर्नाटक युद्ध
    - परिणाम - फ्रांसीसी पराजय तथा पांडिचेरी पर अंग्रेजो का अधिकार
    - समापन - पेरिस की सन्धि (1763)

3) पेरिस की संधि (1763)

1. यूरोप में अंग्रेजों तथा फ्रांस के मध्य की संधि जिसके द्वारा सप्तवर्षीय व तृतीय कर्नाटक युद्ध समाप्त हुआ
2. पांडिचेरी तथा चंद्र नगर फ्रांसीसियों को लौटा दिए गए
    - किंतु उन पर यह शर्त लगा दी गई कि वे भारत में सेना नहीं रख सकेंगे
    - इसके बाद फ्रांसीसियों ने अंग्रेजों का विरोध करना बंद कर दिया, फ्रांसीसी केवल व्यापार तक ही सीमित रह गए

कर्नाटक युद्ध (Karnataka war)

युद्ध	कारण	परिणाम	विशेषता
प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-1748)	ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध	ऑक्सा- ला- शैपेल की संधि	1. डूप्ले बनाम मोर्स 2. अड्यार की लड़ाई / सेंट थोम की लड़ाई (1746) 3. कैप्टन पैराडाइज → फ्रांस; अनवउद्दीन → कर्नाटक; बनाम
द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-1754)	हैदराबाद और कर्नाटक के विवादास्पद उत्तराधिकारियों के मुद्रे पर	पांडिचेरी की संधि	1. अंबार की लड़ाई (1749) 2. डूप्ले की वापसी → गोडेहु नया गवर्नर हैदराबाद: नासिरजंग, मुजफ्फरजंग कर्नाटक: अनवउद्दीन, चंदासाहब ↓ अंग्रेज ↓ फ्रांस
तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-1763)	सप्तवर्षीय युद्ध का भारत में विस्तार (1756-63)	पेरिस की संधि	1. फ्रांस गवर्नर - लाली 2. वांडीवाश का युद्ध - 12 जनवरी 1760 आयरकूट (अंग्रेज) लाली (फ्रांस)

7) फ्रांसीसियों की पराजय के कारण

1. फ्रांस की यूरोप में साम्राज्यवादी नीति जिससे वह अनावश्यक युद्धों में उलझा रहा
2. अंग्रेजों की व्यापारिक तथा आर्थिक श्रेष्ठता :- फ्रांसीसियों की तुलना में अंग्रेजों ने 1736 से 1756 के बीच लगभग 2.50 अधिक व्यापार किया
3. कंपनी का स्वरूप :- फ्रांसीसी कंपनी एक सरकारी संस्था थी जबकि अंग्रेजी कंपनी प्राइवेट कंपनी थी
4. अंग्रेजों की बंगाल विजय :- बंगाल पर विजय प्राप्त कर लेने के बाद अंग्रेजों की प्रतिष्ठा तो बढ़ी ही साथ ही उसे बंगाल का अपार धन एवं जनशक्ति भी प्राप्त हुई
5. डूप्ले की फ्रांस वापसी :- फ्रांसीसियों की असफलता का यह एक मुख्य कारण बना कि फ्रांस सरकार ने गलत निर्णय के द्वारा 1754 ई में डूप्ले को वापस बुला लिया
6. लाली की अदूरदर्शिता :- लाली एक क्रोधी, अदूरदर्शी और कटुभाषी व्यक्ति था इसलिए उसके नेतृत्व में फ्रांसीसी अधिकारियों ने पूर्ण निष्ठा नहीं दिखाई
7. यूरोपीय राजनीति :- भारत में आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष के दौरान फ्रांस यूरोप के अनेक देशों के साथ युद्ध में उलझा हुआ था
8. फ्रांसीसी जल सेना का कमजोर होना

8) अंग्रेजों की सफलता के कारण

1. EIC का निजी व प्रतिस्पर्धात्मक स्वरूप
2. नौसैनिक सर्वोच्चता
3. द्वीपीय देश होने के कारण इंग्लैंड की बेहतर भौगोलिक स्थिति
4. इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति
5. इंग्लैंड में स्थिर शासन व्यवस्था तथा संसाधनों की पर्याप्तता
6. बेहतर आर्थिक नीति व ऋण बाजार का उपयोग
7. धर्म के प्रति न्यून उत्साह

Quick Revision

1. 1664 : फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी 'इंडेसे ओरियंतलेस' की स्थापना
2. 1746-48 (प्रथम कर्नाटक युद्ध) : फ्रांसीसियों व कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के मध्य
3. 1746 : सेंट टोमे के युद्ध में फ्रांसीसियों की विजय
4. 1748 : एक्स-ला-शापेल की संधि व प्रथम कर्नाटक युद्ध की समाप्ति
5. 1749-54 (द्वितीय कर्नाटक युद्ध) : हैदराबाद व कर्नाटक में उत्तराधिकार समस्या
6. 1749 (अम्बुर का युद्ध) : चंदा साहब कर्नाटक का नवाब बना
7. 1754 : पांडिचेरी की संधि व द्वितीय कर्नाटक युद्ध समाप्त
8. 1758-63 (तृतीय कर्नाटक युद्ध) : ब्रिटिश एवं फ्रांसीसियों के मध्य
9. 1760 : वॉडीवाश युद्ध में ब्रिटिशों की विजय
10. 1763 : पेरिस की संधि

अन्य तथ्य

1. सम्भवतः मध्ययुग की किसी भी अन्य घटना का सभ्य संसार पर इतना प्रभाव नहीं पड़ा, जितना कि भारत जाने के समुद्री मार्ग खुल जाने से उक्त कथन किस इतिहासकार का है - डाइवेल का
2. किस पुर्तगाल वायसराय की समाधि कोचीन में है - वास्कोडिगामा
3. किस पुर्तगाली शासक ने 15वीं शताब्दी में समुद्री यात्राओं को सम्भव बनाने के दिक् सूचक तथा नक्षत्र यन्त्र का अविष्कार एवं उपयोग करवाया - डॉक हेनरिक ने
4. पांडिचेरी (वर्तमान पुदुच्चेरी) पर कब्जा करने वाली यूरोपीय शक्ति कौन थी - पुर्तगाली(दूसरी डच, तीसरी 1793 में अंग्रेज और 1814 में पेरिस सन्धि के बाद पांडिचेरी पर फ्रांस का अधिकार हुआ)
5. हुगली को बंगाल की खाड़ी में समुद्री लूटपाट के लिए किसने अड्डा बनाया था - पुर्तगालियों ने (इसी कारण 1632 में मुगल बादशाह शाहजहां ने हुगली में पुर्तगाली बस्तियों को नष्ट कर दिया था
6. पुर्तगाल दूत अंतानियों कैब्राल किसके शासन काल में भारत आया था - अकबर के
7. स्पाइस आइलैंड(मसाला द्वीप) उपमा, पश्चिमी यूरोपीय देश एवं व्यापारी किस देश को प्रदान किये थे - इंडोनेशिया को इसे ईस्ट इंडीज के नाम से भी जाना जाता था
8. भारत में पुर्तगाली सामुद्रिक साम्राज्य को कौन सी उपमा दी जाती है - एस्तादो द इंडिया
9. 1572 ई में पुर्तगाली गवर्नर बनने वाले एंटानियो द नोरोन्हा के समय अकबर कैम्बे गया था, जहां पुर्तगालियों से उसका पहली बार परिचय हुआ फलतः 1580 में जेसुइट मिशन अकबर के दरबार में आया त। इनमें फादर एकाबिवा व मांसरेट शामिल थे
10. अकबर की अनुमति से हुगली में तथा शाहजहां की अनुमति से बन्देल में पुर्तगालियों ने कारखाने स्थापित किये
11. पुर्तगालियों के विरुद्ध शाहजहाँ ने किस नगर को घेरा था - हुगली को
12. अल्फांसो डी अल्बुकर्क की मजार भारत में कहां स्थित है - गोवा में
13. भारत के साथ व्यापार के लिए सर्वप्रथम संयुक्त पूंजी कम्पनी किस यूरोपीय शक्ति ने आरम्भ की - डचों ने(1602ई)
14. डचों ने पुर्तगालियों को पराजित कर आधुनिक कोच्चि में किस फोर्ट का निर्माण किया था - फोर्ट विलियम्स का 1663 में(1814 में कोच्चि ब्रिटिश उपनिवेश बन गया)
15. पोर्टोनोवो एक समृद्ध कपड़ा उत्पादन केंद्र था
16. मसूलीपट्टनम और सूरत से डचों द्वारा नील निर्यात किया जाता था
17. पुलीकट में डच अपने स्वर्ण पैगोडा (सिक्के) ढालते थे
18. डच व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता अर्थात कार्टल पर आधारित थी
19. डच फैक्ट्रियों के प्रमुखों को फैक्टर कहा जाता था
20. 1608 में टॉमस एडवर्थ के अधीन अंग्रेजों ने सर्वप्रथम सूरत में कारखाना लगाया और उसी वर्ष इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम के दूत के रूप में कैप्टन हॉकिन्स सूरत पहुंचा। वह जहाँगीर के दरबार में 1609 में पहुंचा
21. दक्षिण पूर्वी समुद्रतट पर अंग्रेजों ने अपनी पहली कोठी 1611 में मसूलीपट्टनम में स्थापित की। मसूलीपट्टनम गोलकुण्डा का प्रमुख बन्दरगाह था। यह हीरे, माणिक और कपड़े के व्यापार का प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। यहां व्यापार को लेकर डचों तथा अंग्रेजों के बीच काफी परिस्पर्धा थी
22. 1632 ई में गोलकुंडा के सुल्तान ने अंग्रेजों को एक सुनहला फरमान दिया, जिसके मुताबिक पंकज सौ पैगोडा सालाना कर देने पर उन्हें गोलकुंडा राज्य के बंदरगाहों में स्वतन्त्रतापूर्वक व्यापार करने की अनुमति मिल गयी
23. 1639 ई में फ्रांसिस डे ने चन्द्रगिरि के राजा दरमेला वेंकटप्पा से मद्रास को पट्टे पर लिया था वहां पर एक किलाबंद कोठी का निर्माण किया जिसको फोर्ट सेंट जॉर्ज की संज्ञा से अभिहित किया गया सितम्बर, 1641 में कंपनी का मुख्यालय मसूलीपट्टनम से हटाकर मद्रास स्थित फोर्ट सेंट जॉर्ज में स्थानांतरित कर दिया गया
24. जॉब चरनॉक कलकत्ता का, गेरोल्ड अंगियार बम्बई का और फ्रांसिस डे मद्रास का संस्थापक था
25. भारत आने वाले प्रथम अंग्रेजी जहाज का क्या नाम था - रैड ड्रेगन
26. विलयम फिंच कौन था - कैप्टन हॉकिन्स के साथ भारत आने वाला यात्री जिसने अनारकली के दाँत कथा का उल्लेख किया है
27. नील की सबसे अच्छी किस्म कहां तैयार होती थी - बयाना में
28. मुगल सम्राट औरंगजेब और अंग्रेजों के बीच प्रथम मुकाबला कब और कहां हुआ - 1686 में हुगली में हुआ
29. बंगाल का प्रथम चीफ एजेंट कौन था - विलियम हैजेज (1681-84)
30. मुगल भारत में सुतिवस्त्र, नील, अफीम और चाय में से अंग्रेजी व्यापार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु क्या थी - सूती वस्त्र
31. किस अंग्रेज गवर्नर को औरंगजेब ने भारत से निष्कासित कर दिया था - सर जॉन चाइल्ड
32. इंटरपोलर कौन थे - एशिया के मुक्त व्यापार करने वाले अंग्रेज व्यापारी
33. सेंट थोमे या अडियार का युद्ध कब और किसके मध्य हुआ - कैप्टन पैराडाइस के अधीन फ्रांसीसी सेना एवं कर्नाटक के नबाव अनवरुद्दीन की सेना के बीच 1748ई में लड़ा गया, फ्रांसीसी सेना ने नवाब को हरा दिया
34. फिजियोक्रैट कौन थे - मुक्त व्यापार करने के पक्षधर फ्रांसीसी व्यापारी
35. फ्रांस के सम्राट लुई 14वें के प्रयासों के फलस्वरूप ही फ्रांसीसी धर्म प्रचारको एवं यात्रियों ने एशिया माइनर के रास्ते से भारत के लिए थल मार्ग की खोज की
36. कर्नाटक कोरोमंडल समुद्र तट और उसके पीछे का भूभाग था इसकी उत्तरी सीमा कुण्डलकप्पा नदी तथा दक्षिणी सीमा तंजौर का क्षेत्र था। इसकी राजधानी अर्काट थी। इसके प्रमुख शहरों में मद्रास, पांडिचेरी, बेलोर और त्रिचनापल्ली थे
37. पांडिचेरी कराईकाल यनम तथा माहे भारत की स्वतंत्रता के पश्चात भी फ्रांसीसी उपनिवेश बने रहे लेकिन फ्रांस की सरकार ने सदाशयता का परिचय देते हुए इन क्षेत्रों को नवंबर 1954 में भारत सरकार को स्थानांतरित कर दिया
38. लाली की असफलता से फ्रांसीसी सरकार उससे नाराज हो गई और उसे फ्रांस वापस बुलाकर 1763 में मृत्युदंड दे दिया
39. फ्रांसीसी सहायता से 1765 में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना कहां की गई - डिंडीगुल
40. 17 वीं शताब्दी में भारत और जावा के मध्य पर अपार पर प्रभुत्व किस यूरोपीय शक्ति का था - डचों का
41. अंग्रेजों ने डचों तथा फ्रांसीसियों को किन युद्ध में पराजित कर भारतीय व्यापार से बाहर कर दिया - क्रमशः वेदरा(1759) और वांडिवास युद्ध (1760)

अध्याय – 02 ब्रिटिश का भारत में साम्राज्य विस्तार (Expansion of British Empire in India)

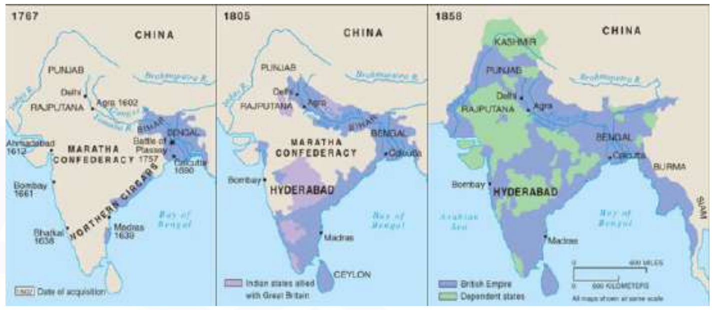

1) परिचय II Introduction

- 18वीं सदी में मुगल साम्राज्य के पतन के बाद निम्नलिखित स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ :-

1. बंगाल - मुर्शिद कुली खां
2. अवध - सआदत खां
3. हैदराबाद - निजाम मुल्क आसफ शाफ

- मुगल विघटन के बाद शक्तियों का पुनः उत्थान :-

1. मराठा - शिवाजी व पेशवा
2. पंजाब / सिख - रणजीत सिंह
3. राजपूत राज्य

- मुगल नियंत्रण में कमी से बनने वाले राज्य :-

1. रुहेलखंड - वीर दाऊद व अली मोहम्मद खां
2. मैसूर - हैदर अली
3. कर्नाटक - सादातुल्लाह खां

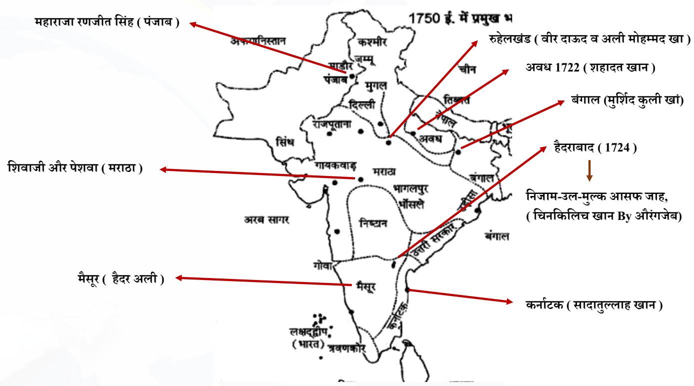

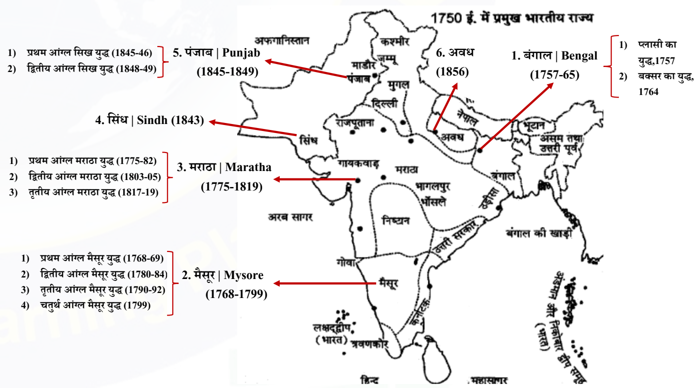

2) बंगाल II Bengal

1) परिचय

बंगाल (बंगाल+बिहार+उड़ीसा) मध्यकालीन भारत में मुगल प्रांत होने के साथ-साथ निम्नलिखित कारणों से अत्याधिक समृद्ध रहा है

- अत्याधिक उपजाऊ क्षेत्र - शोरा, चावल, कपास, नील इत्यादि वाणिज्यिक फसलों का उत्पादन
- उत्कृष्ट नौपरिवहन - ब्रिटेन को एशिया से होने वाले कुल उत्पादन का 60% बंगाल से जाता था
- क्षेत्रीय शक्तियों जैसे - मराठा, जाट तथा सीमावर्ती युद्धों जैसे नादिरशाह, अब्दाली से असंघर्षरत
- उन्नत वस्त्र व्यापार तथा कारीगर

उपरोक्त कारणों के चलते अंग्रेजों ने बंगाल को अपना केंद्र बनाकर वहां आधुनिक प्रशासन तथा शिक्षा की नींव डाली जिससे बंगाल के मध्यम वर्ग ने प्रेरणा लेकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का आधार तैयार किया

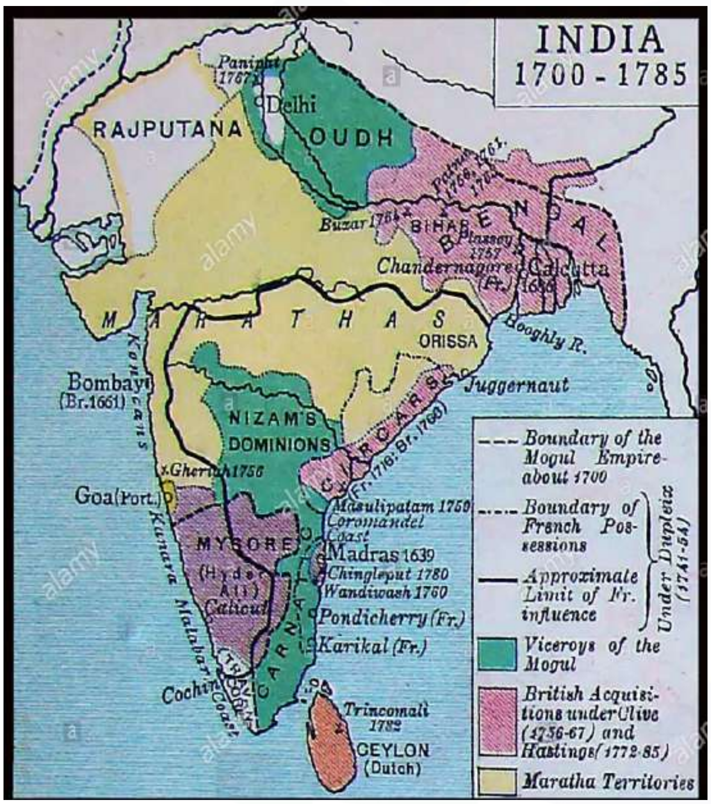

2) बंगाल का प्रशासन

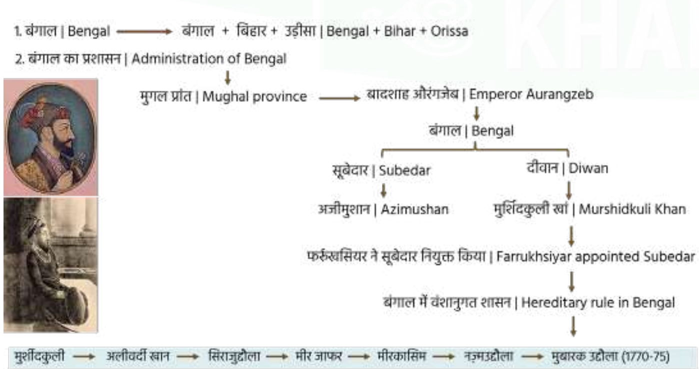

3) बंगाल के प्रमुख नबाव

3.1) मुर्शिदकुली खां

1. मुगल बादशाह (फर्रूखसियर) द्वारा नियुक्त बंगाल का अंतिम सूबेदार तथा बंगाल के स्वतंत्र राज्य का संस्थापक
2. निम्न सुधारों के द्वारा बंगाल को समृद्ध बनाया :-
   - जमीदारों के विद्रोह (गुलाब मोहम्मद, उदयनारायण) को कम करने हेतु राजधानी ढ़ाका से मुर्शिदाबाद स्थान्तरित की
   - छोटे जमीदारों से भूमि लेकर, खालसा भूमि में परिवर्तित किया
   - किसान हेतु ऋण (तकाबी ऋण) व्यवस्था
   - इजारेदारी व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण (ठेके पर भूराजस्व बसूलना)
   - अंग्रेजों के शाही फरमान से समस्या होने के बाद भी विरोध नहीं

NOTE

1727 ई में मुर्शीदकुली खां की मृत्यु के पश्चात उसका दामाद शुजाउद्दीन बंगाल का नवाब बनना। 1739 में शुजाउद्दीन की मृत्यु के बाद पुत्र सरफराज खां बंगाल का नबाव बना

3.2) अलीवर्दी खां

1. सरफराज को 1740 में गिरिया के युद्ध में पराजित करके बंगाल का नबाव बना
2. मुख्य कार्य :-
   - मुगल सम्राट मोहम्मद शाह से पद की स्वीकृति लेने के बाद राजस्व भेजना बन्द किया
   - अंग्रेजों का विरोध नहीं
   - 15 वर्षों तक मराठा संघर्ष में व्यस्त, अंततः मराठों को उड़ीशा दिया

3) प्रमुख कथन :-

- अंग्रेजों की तुलना मधुमक्खी के छत्ते से करते हुए कहा था कि "यदि उन्हें छोड़ दिया जाए तो वो हमें शहद देंगे और यदि उन्हें छेड़ दिया जाए तो बो काट काट कर मार डालेंगे"
- सिराजुद्दौला को यह सलाह दी थी कि "वह अंग्रेजों पर कभी भी विश्वास न करे और जैसे ही मौका मिले उन्हें बंगाल से निकाल दे"
- "इस समय तो धरती पर लगी आग बुझाना भी कठिन है, यदि समुद्र से भी आग की लपटें निकलने लगी तो उन्हें कौन शांत कर सकेगा"

3.3) सिराजुद्दौला (1756-57)

1. अलवर्दी खां के बाद परिवार में पुनः उत्तराधिकारी षड्यंत्र हुआ, जिसका परिणाम
   - अलवर्दी खां की छोटी बेटी का बेटा सिराजुद्दौला नबाव बना
   - सिराज के शत्रु
     - ✓ मौसी घसीटी बेगम
     - ✓ राजवल्लभ
     - ✓ शौक़तजंग (पूर्णिया का नबाव)
   - अन्य विद्रोही
     - ✓ मीर जाफर (सेनापति)

- ✓ रायदुर्लभ (दीवान)
- ✓ जगतसेठ (व्यापारी)
- ✓ अमीरचंद (बेंकर)

2) सिराज का कासिम बाजार व फोर्ट विलियम पर आक्रमण (जून 1756)

कारण :-

- सिराज के विरोधियों राजबल्लव व कृष्ण बल्लभ को अंग्रेजों द्वारा शरण
- फर्रूखसियर द्वारा 1717 में दिए गए दस्तक का अंग्रेजों द्वारा दुरुपयोग
- सिराज की आज्ञा के बिना अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता की किलेबंदी

प्रभाव :-

- 4 जून 1756 नवाब द्वारा कासिम बाजार की अंग्रेजी बस्ती पर हमला
- 16 जून 1756 नवाब का फोर्ट विलियम पर आक्रमण तथा गवर्नर ड्रेक व अन्य अंग्रेज फुल्टा द्वीप भागे
- 20 जून 1756 कलकत्ता का नाम अलीनगर रखा
- हॉलवेल द्वारा काल कोठरी की घटना का वर्णन
- अक्टूबर 1756 सिराज ने शौक़तजंग को मनिहारी के युद्ध में पराजित किया

अंग्रेजों का पलटवार :-

- मद्रास से एडमिरल वाटसन व क्लाइव द्वारा कलकत्ता पर आक्रमण व पुनः अधिकार
- परिणाम : अलीनगर की संधि (9 फरवरी 1757)

3) अलीनगर की संधि (9 फरवरी 1757)

- पक्ष - रॉबर्ट क्लाइव (अंग्रेज) व बंगाल नवाब सिराजुद्दौला
- कारण - अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता पर पुनः अधिकार
- मुख्य प्रावधान -
  - ✓ "दस्तक" प्रयोग की पुनः अनुमति
  - ✓ अंग्रेज कलकत्ता की किलेबंदी अपनी इच्छा अनुसार करेंगे
  - ✓ अंग्रेजों को अपने सिक्के ढालने का अधिकार होगा
  - ✓ नवाब ने क्षतिपूर्ति के रूप में 3 लाख अंग्रेजों को दिए

Note :

- काल कोठरी की दुर्घटना का विवरण मि० हॉलवेल ने 'एलाइव द वन्डर' (Alive the wondrs) नामक पुस्तक में दिया था। उसके अनुसार 146 अंग्रेज कैदियों को नवाब के आदेशानुसार 18 फीट लम्बी और 14 फीट 10 इंच चौड़ी एक अँधेरी कोठरी में 20 जून, 1756 ई० की रात को बन्द कर दिया गया। जून की गर्मी के कारण 21 जून, 1756 ई० की सुबह उनमें से 123 व्यक्ति दम घुटने से मर गये और केवल 23 व्यक्ति शेष बचे जिन्हें नवाब ने बाद में अंग्रेजों को वापस कर दिया
- परंतु आधुनिक इतिहासकार इस घटना की सत्यता में विश्वास नहीं करते, अंग्रेजों ने इस घटना को बहुत बड़ा चढ़ाकर बताया है संभवत उनका एकमात्र लक्ष्य सिराजुद्दौला को एक क्रूर नवाब के रूप में सिद्ध करने का था

4) अंग्रेजों का षड्यंत्र

1. रॉबर्ट क्लाइव ने अलीनगर की संधि के बाद भी बंगाल पर अंग्रेजी आधिपत्य स्थापित करने हेतु नवाब के दरबारियों से संधि करके सिराज के विरुद्ध षड्यंत्र रचा
2. अमीचंद ने क्लाइव से नवाब के खजाने से धन का 50% और 30लाख रूपए कमीशन के रूप में लेना तय किया
3. क्लाइव अमीचंद को इतना अधिक धन नहीं देना चाहता था अतः उसने मीरजाफर से होने वाली संधि के दो संधि पत्र एक वास्तविक तथा दूसरा जाली तैयार कराया सफेद कागज पर लिखा हुआ संधि पत्र वास्तविक तथा लाल कागज पर लिखा हुआ पत्र जाली था।
4. वास्तविक सन्धि-पत्र में मीरजाफर ने अंग्रेजों को निम्नलिखित सुविधाएँ देने का वचन दिया :-
   - कम्पनी को हर प्रकार की व्यापारिक सुविधा
   - कलकत्ता पर वह उनका पूरा अधिकार मान लेगा।
   - ढाका और कासिमबाजार में दुर्ग-निर्माण का अधिकार
   - कम्पनी को कलकत्ता के पास 24 परगनों की जमींदारी
   - क्लाइव और कम्पनी के अन्य पदाधिकारियों को पर्याप्त धन देगा।

के० एम० पणिक्कर ने इस संधि के विषय में कहा है कि "यह ऐसा सौदा था, जिसमें बंगाल के सेठों तथा मीरजाफर ने नवाब और नवाबी को अंग्रेजों के हाथों बेंच दिया।

5) प्लासी का युद्ध (23 जून 1757)

- भारत में ब्रिटिश शासन की नींव बंगाल में पड़ी बंगाल पर अपनी सत्ता की स्थापना करने हेतु ईस्ट इंडिया कंपनी को प्लासी का युद्ध लड़ना पड़ा

5.1) कारण

कारण
- 1) अलीनगर की अपमानजनक संधि तथा क्लाइव द्वारा नवाब पर इसके उल्लंघन का आरोप
- 2) अंग्रेजों ने षड्यंत्र के द्वारा नवाब के प्रमुख अधिकारियों को अपने पक्ष में किया
- 3) अंग्रेजों द्वारा दस्तक का दुरुपयोग
- 4) अंग्रेजों द्वारा नवाब की अनुमति के बिना किलेबंदी करना
- 5) नवाब का कासिम बाजार, फोर्ट विलियम पर अधिकार तथा ब्लैक होल
- 6) अलीनगर की संधि के बाद भी अंग्रेजों का चंद्र नगर पर अधिकार
- 7) सिराजुद्दौला की अदूरदर्शिता :- डॉ. आर. सी. मजूमदार ने लिखा है कि "यदि नवाब ने शीघ्रता से कार्य करके मीरजाफर को बन्दी बना लिया होता तो अन्य षडयन्त्रकारी स्वयं ही आतंकित हो जाते तथा षड्यन्त्र पूर्ण रुप से असफल हो गया होता, किन्तु नवाब के साहस ने उसका साथ छोड़ दिया। किसी सख्त कार्यवाही के स्थान पर वह स्वयं मीरजाफर से भेंट करने उसके निवास पर गया और अलीवर्दी के नाम दयनीय मिन्नतें कीं।"

5.2) महत्वपूर्ण घटनाएं

23 जून 1757 को भागीरथी नदी के तट पर स्थित प्लासी में युद्ध

अंग्रेज – रॉबर्ट क्लाइव (3000 सेना) **बनाम** बंगाल – सिराजुद्दौला (50,000 सेना)(वफादार - मोहनलाल तथा मीर मर्दान)

परिणाम
- अंग्रेजों की विजय
- मीर जाफर को अंग्रेजों ने बंगाल का कठपुतली नवाब बनाया
- मीरन द्वारा की सिराजुद्दौला हत्या

5.3) प्लासी युद्ध का महत्व/ परिणाम

- यद्यपि अंग्रेजों ने यह युद्ध धोखे से जीता था फिर भी निम्नलिखित कारणों से एडमिरल वाटसन ने इस युद्ध को ब्रिटिश राष्ट्र के लिए असाधारण महत्व का बताया :-

1) राजनीतिक परिणाम
- भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना
- कर्नाटक युद्ध में विजय तथा फ्रांसीसियों का पतन
- कंपनी द्वारा बंगाल में कठपुतली नवाबों(मीर जाफर, मीर कासिम) की नियुक्ति
- बक्सर के युद्ध की आधारशिला
- रॉबर्ट क्लाइव को ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक तथा स्वर्ग से उत्पन्न सेनानायक (विलियम पिट) कहा गया

2) आर्थिक परिणाम
- बंगाल की आर्थिक दुर्दशा
- युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में 5.5 लाख पाउंड मिले
- रॉबर्ट क्लाइव को 2.34 लाख पाउंड
- कंपनी को 24 परगना की जमींदारी मिली
- अंग्रेजों के निजी व्यापार पर भी कर समाप्ति
- कंपनी की व्यापारिक लागत में गिरावट से लाभ में वृद्धि

- उपरोक्त प्रभावों से स्पष्ट है कि प्लासी युद्ध ने परिवर्तनों की लंबी प्रक्रिया आरंभ की जिसमें अंग्रेजों के लिए संपूर्ण भारत विजय का मार्ग प्रशस्त कर दिया

5.4) महत्वपूर्ण कथन

1. एडमिरल वाटसन :- प्लासी का युद्ध कंपनी के लिए ही नहीं अपितु सामान्य रूप से ब्रिटिश जाति के लिए असाधारण महत्व रखता है
2. सरकार एंड दत्ता :- प्लासी के युद्ध की विजय का नैतिक प्रभाव बहुत अधिक था एक विदेशी कंपनी के द्वारा एक प्रांतीय सूबेदार को अपमानित किए जाने से कंपनी की शक्ति तथा गौरव में असाधारण वृद्धि कर दी
3. मालसेन :- कोई ऐसा युद्ध नहीं हुआ जिसके तत्कालिक तथा स्थाई परिणाम इतने महत्वपूर्ण हुए हो जितने प्लासी के युद्ध के
4. ताराचंद :- प्लासी के युद्ध ने परिवर्तनों की लंबी प्रक्रिया आरंभ की जिसने भारत का स्वरूप बदल दिया सदियों से प्रचलित आर्थिक और शासकीय व्यवस्था बदल गई
5. श्री नवीन चंद्र सेन :- प्लासी की लड़ाई के बाद भारत में अनंत अंधकारमयी रात्रि आरंभ हो गई
6. सर जदुनाथ सरकार :- 23 जून 1757 को भारत में मध्यकालीन युग का अंत हो गया और आधुनिक युग का शुभारंभ हुआ

6) प्लासी के युद्ध के बाद का घटनाक्रम

मीर जाफर → मीर कासिम → मीर जाफर → नज़्मउद्दौला → सैफ उद दौला → मुबारक उद दौला (1770-75)

6.1) मीर जाफर
- 1) सिराजुद्दौला का विश्वासघाती सेनापति व प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों द्वारा नियुक्त बंगाल का प्रथम कठपुतली नवाब
- 2) दो बार बंगाल का नवाब
  - प्रथम (1757-60)
  - द्वितीय (1763-65)
- 3) कंपनी की मांगों को पूरा न कर पाने के कारण अंग्रेजों ने डच षड्यंत्र का आरोप लगाकर मीर जाफर के स्थान पर मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया

बंगाल की क्रांति - 1760

1. अंग्रेजों ने मीर जाफर पर डचो के साथ अंग्रेजो के खिलाफ षड्यंत्र करने का आरोप लगाकर हटाया

2. मीर कासिम को मीर जाफर के स्थान पर नवाब बनाया
3. वेंसीटार्ट ने इसे "बंगाल की क्रांति" कहा
4. हालांकि इसे क्रांति कहना सही नहीं है क्योंकि ना तो इसमें किसी प्रकार के प्रशासन में परिवर्तन हुआ और ना ही इसमें जनता की भागीदारी थी

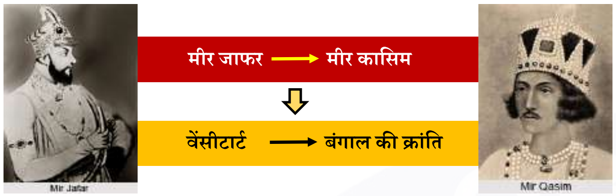

6.2) मीर कासिम (1760-63)

1. अंग्रेजों द्वारा नियुक्ति बंगाल का द्वितीय नवाब
    - अंग्रेजों को वर्दमान, मिदनापुर व चटगांव दिए
2. सुधार :-
    - ब्रिटिश प्रभाव से बचने हेतु राजधानी स्थानांतरण (मुर्शिदाबाद से मुंगेर)
    - यूरोपीय पद्धति पर सेना का गठन (सेनापति - जर्मन समरू)
    - मुंगेर में तोप व बंदूक कारखाना
    - दस्तक के दुरुपयोग को रोकने हेतु आंतरिक व्यापार करो की समाप्ति (1763)
        - ✓ अंग्रेजों का विशेषाधिकार समाप्त व बक्सर के युद्ध की पृष्ठभूमि
        - ✓ अंग्रेजों से मीर कासिम का संघर्ष व हार

पटना हत्याकांड

1. बक्सर युद्ध के पूर्व पटना के अंग्रेज के एजेंट एलिस को कलकत्ता कौंसिल ने नगर पर आक्रमण करने का आदेश दिया
2. यह घटना 24 जून 1763 की है
3. मीर कासिम को जब इस घटना का पता चला तो उसने पटना पर आक्रमण कर उस पर अपना अधिकार कर लिया
4. अंग्रेजों ने जैसे - कटवा, गिरिया तथा सुती में नवाब की सेना को पराजित कर दिया
5. सबसे महत्वपूर्ण युद्ध उदयनाला के पास हुआ जिसमें मीर कासिम बुरी तरह पराजित हुआ
6. पराजय के क्रोध में उसने पटना में गिरफ्तार करीब 148 कैदियों जिसमें एलिस भी था, की हत्या करवा दी

7) बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर 1764)

22 अक्टूबर 1764 को अंग्रेजों (हेक्टर मुनरो) तथा संयुक्त सेना(मीर कासिम, मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय व अवध नवाब शुजाउद्दौला) के मध्य लड़ा गया जिसने वास्तविक रूप से भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नींव रखी

1) कारण

- मीर कासिम के राजस्व, सैन्य व शासन सुधार
- मीर कासिम - अंग्रेजी संघर्ष व पटना हत्याकांड
- अंग्रेजों द्वारा व्यापारिक छूट(दस्तक) का दुरुपयोग
- मीर कासिम द्वारा आंतरिक व्यापार करो की समाप्ति जिससे अंग्रेजों के विशेषाधिकार समाप्त हो गए
- मीर कासिम, शुजाउद्दौला तथा शाह आलम द्वितीय का गठबंधन
- अंग्रेजों द्वारा बंगाल की लूट
    - ✓ परिणाम - अंग्रेजों की विजय तथा इलाहाबाद की संधियां

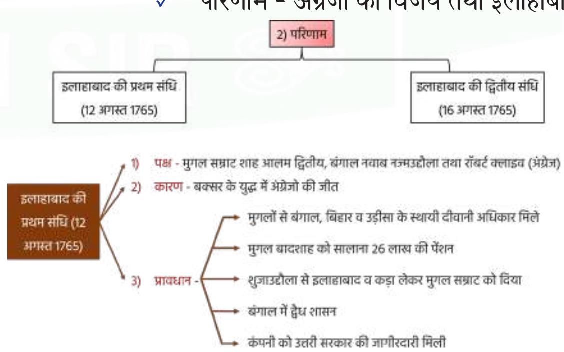

इलाहाबाद की द्वितीय संधि (16 अगस्त 1765)

1) पक्ष - अवध नवाब शुजाउद्दौला व रॉबर्ट क्लाइव
2) कारण - बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की जीत
1) प्रावधान -
- अवध में कर मुक्त व्यापार
- चुनार दुर्ग अंग्रेजों को मिला
- अवध के खर्च पर अवध में अंग्रेजी सेना
- गाजीपुर व बनारस की जागीर अंग्रेजों ने बलवंत सिंह को दिलाई

NOTE

उल्लेखनीय है कि रॉबर्ट क्लाइव यदि चाहता तो अवध नवाब को पदच्युत भी कर सकता था परंतु ऐसा होने पर नवाब के मराठों के संरक्षण में चले जाने का भय था इसलिए क्लाइव मराठा और अंग्रेजी राज्य के मध्य अवध को बफर स्टेट के रूप में बनाए रखना चाहता था यह कंपनी के हित में था

3) युद्ध का महत्व

1. बक्सर की विजय अंग्रेजी सैनिक शक्ति की स्पष्ट विजय थी
2. बक्सर ने अंतिम रूप से अंग्रेजी राज्य की कड़ियों में रिबट(कीलें) लगा दी
3. मुगल बादशाह शाहआलम अंग्रेजों पर निर्भर हो गया अवध व बंगाल कंपनी के नियंत्रण में आ गए इस तरह कंपनी के लिए भारत विजय के द्वार खुल गए
4. प्लासी के बाद जिस लूट का आरंभ हुआ बक्सर ने उस लूट के वेग को तेज कर दिया और उसे वैधानिक रूप प्रदान किया
5. बक्सर की लड़ाई भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की प्रभावी शुरुआत थी, और सभी प्रतीकात्मक उद्देश्यों के लिए भी क्योंकि मुगल सम्राट को ब्रिटिश संरक्षण में रहने की स्थिति के लिए मजबूर किया गया था।

8) बंगाल में द्वैध शासन (1765-1772)

1. 1765 में इलाहाबाद संधियों के परिणाम स्वरूप बंगाल में द्वैध शासन
   - निजामत (प्रशासन) - बंगाल नवाब(नाम का शासक)
   - दीवान अधिकार (राजस्व) - अंग्रेजी कम्पनी
2. नवाब नाम मात्र का शासक रह गया था उसको 53 लाख रुपया वार्षिक पेंशन दे दी गई
3. अन्य तथ्य :-
   - बंगाल के नवाब ने कंपनी को निजामत और मुगल सम्राट शाह आलम ने बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी दे दी थी किंतु कंपनी इस पूरे उत्तरदायित्व को भलीभांति निर्वाह करने में असमर्थ थी
   - अतः रॉबर्ट क्लाइव ने शांति और सुव्यवस्था (निजामत का कार्य) का संपूर्ण उत्तरदायित्व बंगाल के नवाब नज्मउद्दौला को सौंप दिया
   - उसने भारतीय कर्मचारियों के हाथ में मालगुजारी वसूल करने तथा न्याय करने का कार्यभार सौंप दिया ये कर्मचारी नायब नाजिम कहलाते थे
   - बंगाल के लिए रजा खां को नायब नाजिम नियुक्त किया गया और केंद्र मुर्शिदाबाद बनाया गया,
   - बिहार का नायब नाजिम सिताबराय को नियुक्त किया और उसका केंद्र पटना रखा गया।
   - उड़ीसा में रायदुर्लभ की नियुक्ति की गई

5) द्वैध शासन प्रणाली के दुष्परिणाम :-
- ‡ बंगाल बिहार व उड़ीसा में आर्थिक लूट व राजनैतिक अराजकता
- ‡ भारतीय व्यापर, हस्तकला व कृषि का विनाश।
- ‡ अकाल के समय भी लगान बढ़ोतरी (1770)
- ‡ कंपनी के अधिकारियों का भ्रष्ट व अमानवीय आचरण

बंगाल ने अपने इतिहास में ऐसी भ्रष्ट और अराजकतापूर्ण व्यवस्था कभी नहीं देखी थी अंततः वॉरेन हेंगस्टिंग ने 1772 में कम्पनी का गवर्नर बनके आया, इस व्यवस्था को समाप्त किया

- गवर्नर वेरेल्स्ट - कंपनी के नौकर बर्बरता के ऐसे कांड जिनकी समता किसी भी देश के इतिहास में नहीं मिल सकती, करने के पश्चात धन - राशि से लदे हुए जहाज लेकर इंग्लैंड लौटे

- रिचर्ड बीयर - यह देश जो कड़े से कड़े स्वेच्छाचारी शासकों के अधीन भी हरा भरा तथा लहलाता प्रदेश था जब से कंपनी को दीवानी मिली है उजाड़ हो गया है

- सर जॉर्ज कार्नवालिस - मैं निश्चयपूर्वक यह कह सकता हूं कि 1765-85 तक ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार से अधिक भ्रष्ट झूठी तथा बुरी सरकार संसार के किसी भी सभ्य देश में नहीं थी

6) द्वैध प्रणाली के लाभ :-

- शासन की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी न होना
- कम्पनी का व्यापारिक स्वरूप
- विरोधियों को शांत करने की व्यवस्था
- मराठा शक्ति के संघर्ष से बचने के उपाय
- जनता, इंग्लैंड की सरकार तथा अन्य यूरोपीय शक्तियों को संतुष्ट करना
- नवाब तथा कम्पनी के सम्बंध सुदृढ़ करना

9) रॉबर्ट क्लाइव का मूल्यांकन

"क्लाइव ने अपने कुछ कार्यों से अपनी कीर्ति को धूमिल कर दिया"

1. कीर्ति (Achievements) :-
   - अर्काट के घेरे के अवसर पर उसने युद्ध का पलड़ा फ्रांसीसी से बिटिश के पक्ष में सुनिश्चित कर दिया। इस तरह कर्नाटक युद्ध में कंपनी को सफलता मिली।
   - प्लासी के युद्ध में कपनी की सफलता को सुनिश्चित कर दिया। इस प्रकार भारत के सबसे समृद्ध प्रांत पर कंपनी का नियंत्रण हो गया।
   - इलाहाबाद की संधि में उसने अत्यधिक कूटनीतिक दक्षता का परिचय देते हुए कंपनी के लिए बंगाल की दीवानी सुरक्षित कर दी।
2. धूमिल कर दिया (Failure) :-
   - उसने बंगाल में रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन दिया।
   - सोसाइटी ऑफ ट्रेड की स्थापना करके उसने भ्रष्टाचार को व्यक्तिगत स्तर से सामूहिक स्तर पर स्थापित कर दिया
   - सबसे बढ़कर क्लाइव के द्वारा स्थापित द्वैध शासन प्रणाली ने बंगाल

में कुशासन और अव्यवस्था को प्रोत्साहन दिया। इसका परिणाम था 1770 के दशक में होने वाला बंगाल का अकाल।

- यही वजह है कि जहाँ प्लासी की सफलता के लिए उसे बैरन क्लाइव की उपाधि मिली, वही 2 लाख 34 हजार पौंड गलत ढ़ग से हस्तगत करने के कारण उस पर भ्रष्टाचार का अभियोग लाया गया और अंत में 1774 में उसने आत्महत्या कर ली।

10) महत्वपूर्ण प्रश्न व तथ्य

Q 1. डूप्ले ने भारत की चाबी मद्रास में खोजकर भंयकर भूल की, रॉबर्ट क्लाइव ने इसे बंगाल में खोजा और सफल रहा।

उत्तर :

- उपर्युक्त कथन को वृहद संदर्भ में देखने की आवश्यकता हैं। यद्यपि यह सही है कि बंगाल भारत का सबसे समृद्ध प्रांत था तथा यूरोपीय कम्पनियों के द्वारा निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में लगभग 50 प्रतिशत बंगाल से ही होती थी। अतः बंगाल का मुक्त व्यापार का फरमान (दस्तक) ब्रिटिश कंपनी के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ तथा कर्नाटक युद्ध एवं प्लासी के युद्ध के आधे शताब्दी पूर्व से ही ब्रिटिश कंपनी बंगाल से अत्यधिक संसाधन प्राप्त कर चुकी थी। फिर भी डूप्ले के द्वारा मद्रास को महत्व दिए जाने का निर्णय एक भूल नहीं मानी जा सकती बशर्ते उस निर्णय को विवेकपूर्ण ढंग से लागू किया गया होता।
- मद्रास भी वह स्थल था जो सीधे तौर पर हिन्द महासागर बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर के व्यापार से जुड़ा हुआ था। फिर डूप्ले ने क्षेत्रीय राजनीतिक मे दखलअंदाजी करके व्यापार के लिए देशी संसाधनों से ही निवेश जुटाने का निर्णय लिया। यह एक अग्रगामी कदम था जिसकी नकल आगे ब्रिटिश ने भी की। परंतु उसकी विफलता का महत्वपूर्ण कारण बना फ्रांसीसी कंपनी की संरचना तथा प्रबंधन का स्वरूप। दूसरे शब्दों में ब्रिटिश कंपनी के विपरीत फ्रांसीसी कंपनी एक सरकार कंपनी थी तथा इसमे बहुत अधिक राजकीय हस्तक्षेप था। डूप्ले की सक्रियता को फ्रांसीसी हित के लिए हानिकारक मानते हुए उसे फ्रांस वापस बुला लिया गया। यह निर्णय एक बड़ी भूल सिद्ध हुआ। फिर फ्रांसीसी कंपनी का भविष्य काउंट डी लाली के हाथ में दे दिया गया जिसे भारतीय परिस्थितियों का बिल्कुल ज्ञान नहीं था।
- अतः फ्रांसीसी कंपनी और डूप्ले की विफलता को उपर्युक्त संदर्भ में समझने की जरूरत हैं।

Q 2. लार्ड क्लाइव साम्राज्य का प्रायोजक नहीं, वरन् एक ऐसा प्रयोगकर्ता था जिसने ब्रिटिश साम्राज्य के कुछ अंश को उद्‌घाटित किया

उत्तर :

- लार्ड क्लाइव साम्राज्य का प्रायोजक नहीं था, क्योंकि उस काल में साम्राज्य निर्माण ब्रिटिश कंपनी के लिए बड़ी दूर की चीज थी। फिर भी, लार्ड क्लाइव ने एक ऐसी पद्धति विकसित की जिसके आधार पर कंपनी भविष्य में एक साम्राज्य खड़ी कर सकी।
- क्लाइव ने डुप्ले की इस पद्धति से सीख ली कि कैसे भारतीय राज्यों के आंतरिक संघर्ष से लाभ उठाकर कंपनी की स्थिति मजबूत की जा सकती है।
- क्लाइव ने यह सिद्ध कर दिया कि अगर भारतीय सिपाही को भी यूरोपीय मॉडल पर प्रशिक्षित करके आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से लैस कर दिया जाए तो वे यूरोपीय सैनिक से पीछे नहीं रहेंगे। फिर, अर्काट के घेरे तथा प्लासी के युद्ध के अवसर पर उसने यह सिद्ध कर दिया।
- क्लाइव ने बंगाल की दीवानी प्राप्त कर कम्पनी के लिए निवेश की समस्या का हल किया।

Q 3. बंगाल एक प्रायोजित राज्य था और एक लूटा हुआ राज्य भी।

उत्तर :

- बंगाल एक प्रायोजित राज्य रहा था क्योंकि बंगाल की समृद्धि में यूरोपीय कंपनियों की अहम भूमिका रही थी। यूरोपीय व्यापार के कारण बंगाल भारत के सबसे समृद्ध प्रांत के रूप में उभरा। जैसाकि हम जानते हैं कि यूरोपीय निर्यात का लगभग 40% भाग बंगाल से ही आता था। बंगाल सूती वस्त्र उत्पादन का महत्वपूर्ण केंद्र थ। यह रेशम एवं मलमल के उत्पादन के लिए भी जाना जाता था। 17 वीं सदी में डच कंपनी बड़ी मात्रा में बंगाल से कच्चे रेशम का निर्यात करती थी। उसी तरह बंगाल चावल और चीनी के उत्पादन के लिए भी प्रसिद्ध था।
- किंतु प्लासी एवं बक्सर के युद्ध के पश्चात् बंगाल की लूट आरंभ हो गई। प्लासी के युद्ध के शीघ्र बाद बंगाल से कंपनी को लगभग एक करोड़ 77 लाख रूपए मिले जबकि व्यक्तिगत तौर पर क्लाइव को 20 लाख रूपए। ब्रिटिश कंपनी ने अपने अन्य व्यापारिक प्रतिद्वन्द्वियों को बंगाल के व्यापार से बाहर कर दिया। ब्रिटिश व्यापारी बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में जाकर भी लूटपाट मचाते थे। फिर, ब्रिटिश कंपनी ने गुमाश्तों के जरिए बंगाल के शिल्पियों पर कठोर नियंत्रण स्थापित किया। 19वीं सदी के एक गर्वनर जनरल बिलियम बैंटिक भी यह स्वीकार करता है कि बंगाल की मिट्टी शिल्पियों की हड्डियों से पटी पड़ी है। सबसे बढ़कर द्वैध शासन प्रणाली के तहत कंपनी के कर्मचारियों के द्वारा बंगाल की खुली लूट हुई। इसका परिणाम था- 1770 के दशक का बंगाल का भयंकर अकाल। उपर्युक्त संदर्भ में ही हम इस कथन को देख सकते हैं कि बंगाल एक प्रायोजित राज्य था तथा लूटा हुआ राज्य भी।

Quick Revision

1. 1717 में फर्रूखसियर में मुर्शीद कुली खान को बंगाल का सूबेदार बनाया।
2. मुर्शिद कुली खां ने राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद जबकि मीर कासिम में राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित की।
3. 1740 में गिरिया के युद्ध में सरफराज को मारकर अली वर्दी का बंगाल का नवाब बना।
4. 1756 में सिराजुद्दोला बंगाल का नवाब बना।
5. जॉर्ज ऑरवेल के द्वारा 20 जून 1756 के दिन काल कोठरी की त्रासदी या ब्लैक होल घटना का उल्लेख किया गया।
6. 23 जून 1757 को सिराजुद्दौला और रॉबर्ट क्लाइव के बीच प्लासी का युद्ध हुआ।
7. अंग्रेजों ने पहले मीर जाफर और 1760 में मीर कासिम को बंगाल का कठपुतली नवाब बनाया।

8. 22 अक्टूबर 1764 : बंगाल की अत्यधिक लूट से परेशान होकर मीर कासिम में मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय और अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ मिलकर अंग्रेजी जनरल हेक्टर मुनरो की सेना के साथ बक्सर का युद्ध लड़ा
9. 12 अगस्त 1765 इलाहाबाद की प्रथम संधि - रॉबर्ट क्लाइव व मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय
10. 16 अगस्त 1765 इलाहाबाद की द्वितीय संधि - रॉबर्ट क्लाइव और अवध के नवाब शुजाउद्दौला
11. 1765 से 1772 बंगाल में द्वैध शासन
12. 1773 का रेगुलेटिंग एक्ट वारेन हेस्टिंग को बंगाल का गवर्नर जनरल बनाया।

3) मैसूर में ब्रिटिश विस्तार

बंगाल पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के बाद दक्षिण में मैसूर प्राप्त करने हेतु अंग्रेजों को हैदर अली व टीपू से चार युद्ध लड़ने पड़े

युद्ध	समय	मैसूर	अंग्रेज	परिणाम
प्रथम	1767 - 69	हैदर अली	वेरेल्स्ट	हैदर विजयी - मद्रास की संधि (1769)
द्वितीय	1780 - 84	हैदर और टीपू	वॉरेन हेस्टिंग्स	मंगलौर की संधि, 1784
तृतीय	1790 - 92	टीपू	लार्ड कार्नवालिस	टीपू की हार - श्रीरंगपट्टनम संधि, 1792
चतुर्थ	1799	टीपू	लॉर्ड वेलेजली	टीपू की हार और मृत्यु दक्षिण में अंग्रेज प्रभुत्व

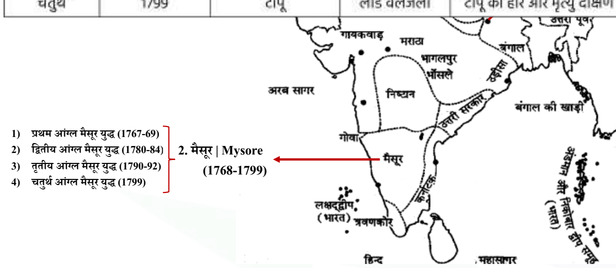

1) पृष्ठभूमि

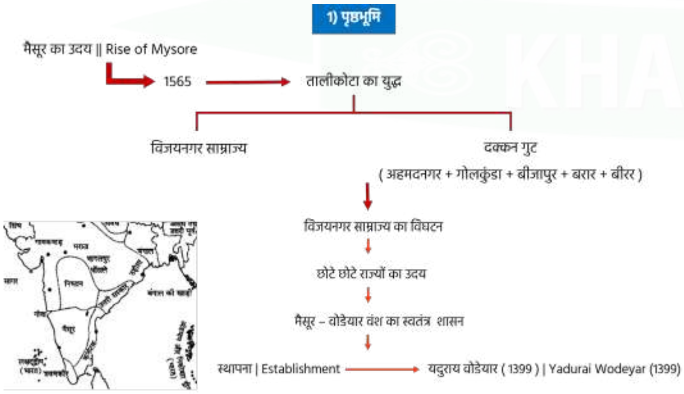

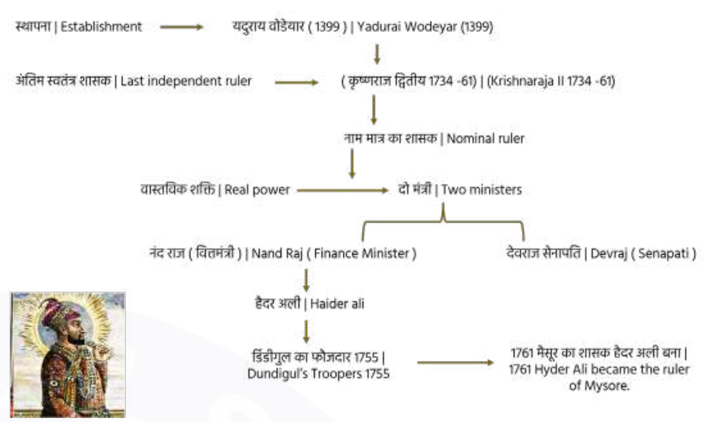

2) हैदर अली की नीतियां

1. सेना का आधुनिकरण और रॉकेट तकनीक का आरंभिक प्रयोग
2. डिंडीगुल में शस्त्रागार
3. धार्मिक सहिष्णुता
   - अधिकतम मंत्री और सैनिक हिंदू
   - चामुंडेश्वरी देवी मंदिर हेतु दान
   - सिक्कों पर शिव पार्वती और विष्णु का अंकन
4. आर्थिक सुधार
   - ऋण सुधार
   - कृषक सुधार
   - मध्यस्थों का अंत
   - फ्रांस और तुर्की की सहायता से आधुनिक उद्योगों की स्थापना
5. अंग्रेजों के प्रतिकूल विदेश नीति - फ्रांस व तुर्की से बेहतर संबंध का प्रयास

3) प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767-69)

3.1) कारण

भारत में ब्रिटिश विस्तारवाद के क्रम में बंगाल के बाद अंग्रेजों ने मैसूर पर अधिकार करने हेतु चार आंग्ल मैसूर युद्ध लड़े ।प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1768-69) अंग्रेजों (जनरल स्मिथ) तथा हैदर अली के मध्य निम्न कारणों से हुआ :-

1. अंग्रेजों की विस्तारवादी नीतियां
2. हैदर अली की बढ़ती शक्ति से अंग्रेजों का भयभीत होना
3. हैदर अली का अंग्रेजों के प्रतिद्वंद्वी फ्रांसीसियों से घनिष्ठ संबंध
4. अंग्रेजों द्वारा हैदराबाद के निजाम तथा मराठों के साथ मिलकर हैदर के विरुद्ध षड्यंत्र करना
5. हैदर अली की सुधारवादी नीतियां व सैन्य आधुनिकीकरण
6. 1767 में हैदरअली द्वारा कन्नड़ तट पर अंग्रेजी जहाज को नष्ट करना
7. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश फ्रांस प्रतिद्वंदता

3.2) युद्ध का घटना क्रम

1. अप्रैल, 1767 ई में निजाम ने मैसूर पर आक्रमण किया
2. निजाम ने अंग्रेजों का साथ छोड़ दिया और हैदरअली से जाकर मिल गया
3. अंत में अंग्रेजों ने उससे संधि कर ली (4अप्रैल 1769)

3.3.) युद्ध का परिणाम

1. परिणाम :- हैदरअली की विजय व मद्रास की संधि (1769ई)
2. मद्रास की संधि (1769ई) :-
   - दोनों पक्षो ने एक दूसरे के विजित प्रदेश लौटा दिए
   - अंग्रेजों ने क्षतिपूर्ति के रूप में हैदरअली को बहुत सा धन दिया
   - दोनों पक्षों ने संकट के समय एक दूसरे को सहायता देने का वचन

यह सन्धि वास्तव में एक दूसरे एक युद्ध विराम संधि था, क्योंकि अंग्रेजों ने इसका अनुकरण नहीं किया, फलतः द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध हुआ

4) दूसरा आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84)

4.1) कारण

यह अंग्रेजी कम्पनी व मैसूर के मध्य होने वाला द्वितीय संघर्ष था, जिसके अधोलिखित कारण है :-

1. 1771ई में जब मराठों ने मैसूर पर आक्रमण किया तब अंग्रेजों ने मद्रास की संधि का उल्लंघन करते हुए मैसूर की कोई सहायता नहीं की
2. अंग्रेजों द्वारा गुंटूर पर हमला
3. अंग्रेजों द्वारा हैदर के संरक्षण वाली फ्रांसीसी बस्ती माहे पर अधिकार
4. 1779 में अंग्रेजों के विरुद्ध हैदर अली द्वारा त्रिगुट संघ (मैसूर+हैदराबाद+मराठा) का निर्माण

4.2) युद्ध का घटनाक्रम

1. 1780 :- हैदरअली द्वारा अंग्रेजी संरक्षण राज्य कर्नाटक पर अधिकार आक्रमण
2. हैदरअली द्वारा कर्नल बेली (अंग्रेज) को हराकर अर्काट पर अधिकार
3. 1781 :- आयरकूट (अंग्रेज) ने हैदरअली को पोर्टोनोवा तथा पीलीलोर के युद्ध में हराया
4. 1782 :- अंग्रेजों ने मराठों के साथ सालबाई की संधि तथा निजामको गुंटूर देकर त्रिगुट को खत्म किया
5. 6 दिसम्बर 1782 :- हैदरअली की मृत्यु व पुत्र टीपू के युद्ध संचालन
6. 1784 :- संघर्ष विराम तथा मंगलौर की संधि

4.3) मंगलौर की संधि (1784)

1. मार्च 1784 ई में टीपू और मद्रास के अंग्रेज गवर्नर जार्ज मैकार्टनी के मध्य मंगलौर संधि हो गयी
2. दोनों पक्षों ने एक दूसरे के विजित प्रदेशों को वापस कर दिया
3. युद्धबन्दियों को भी मुक्त कर दिया
4. अंग्रेजों ने यह आश्वासन दिया कि वे मैसूर के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखेंगे और संकट के समय मैसूर की सहायता करेंगे
5. इस संधि से जहां एक ओर टीपू सुल्तान और मैसूर राज्य की प्रतिष्ठा बढ़ी वहीं दूसरी ओर अंग्रेजों की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची

Note :

- इस प्रकार 1780-81 का वर्ष ब्रिटिश के लिए सर्वाधिक संकट का वर्ष था वस्तुतः इस समय भारत में भी मराठों के साथ अंग्रेजों का संघर्ष चल रहा था तो साथ ही मुंबई व बंगाल के अधिकारियों के बीच भी तनाव था इतना ही नहीं अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम स्वरूप अमेरिका ब्रिटेन से मुक्त हो रहा था इस स्वतंत्रता संघर्ष में फ्रांस, स्पेन, हॉलेंड भी ब्रिटिश के विरुद्ध अमेरिकियों का साथ दे रहा थे । इस तरह भारतीय व अंतरराष्ट्रीय दोनों ही परिस्थितियां अंग्रेजों के प्रतिकूल थी

5) टीपू सुल्तान के सुधार (1782 99)

1) **आर्थिक सुधार :-**
   - कैलेंडर, सिक्के और माप तोल
   - कृषि सुधार
   - व्यापार सुगमता
   - राजस्व सुधार

- ✓ जागीर प्रथा उन्मूलन
- ✓ पालीगारो की शक्तियों को सीमित किया
- ✓ तृतीय युद्ध के बाद राजस्व में 30% वृद्धि

2) सैन्य सुधार :-

- सैनिक आधुनिकरण
- शस्त्रागार

3) कूटनीति सुधार :-

- ब्रिटिश प्रतिकूल कूटनीति
- फ्रांस तुर्की और अफगान में दूतमंडल भेज
- फ्रांस से बेहतर संबंध
- 1794 फ्रेंच सहायता से श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता वृक्ष लगाया

4) धार्मिक सहिष्णुता :-

- श्रृंगेरी मंदिर को दान और देवी शारदा की मूर्ति की स्थापना

Note :

1. 1782 में अपने पिता हैदर अली की मृत्यु के बाद टीपू मैसूर का शासक बना टीपू को उसकी वीरता के कारण शेर-ए-मैसूर कहा जाता है।
2. टीपू अपनी राजनीतिक दूरदर्शिता और प्रशासन में आधुनिक कारकों को अपनाने के कारण अधिक पहचाना जाता है।
3. टीपू को एक साथ कई भाषाओं जैसे अरबी, फारसी, कन्नड़ आदि का ज्ञान था
4. टीपू सुल्तान ने अपने सैन्य संगठन को यूरोपीय पद्धति के अनुरूप संगठित किया
5. टीपू भारत का प्रथम शासक था जो आर्थिक शक्ति को सैन्य शक्ति की नींव मानता था उसने यूरोपियों के समान ही व्यापारिक कंपनियों के निर्माण की बात कही और इसी उद्देश्य से उसने आधुनिक उद्योगों की स्थापना में प्रोत्साहन दिया
6. विदेशी व्यापार बढ़ाने के लिए टीपू ने तुर्की, फ्रांस, वर्मा (म्यांमार), ईरान तथा मॉरीशस में अपने व्यापारिक दूत भेजें।
7. टीपू ने आधुनिक नौसेना खड़ी करने की कोशिश की तथा मंगलौर, मोलीदाबाद, वाजीदावाद में पोत निर्माण केंद्र की स्थापना की
8. टीपू को यह श्रेय दिया जाता है कि वह प्रथम व्यक्ति था जिसने रॉकेट या मिसाइल तकनीक का युद्ध में प्रयोग किया
9. टीपू अपने व्यक्तिगत धर्म के मामले में रूढ़िवादी था लेकिन अन्य धर्मों के प्रति उसने सहिष्णुता की नीति का पालन किया जब 1791 में मराठा घुड़ सवारों ने श्रृंगेरी की शारदा मंदिर को लूटा तो श्रृंगेरी के मुख्य पुरोहित की प्रार्थना पर टीपू ने मंदिर की मरम्मत के लिए धन दिया
10. टीपू फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित था उसने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया तथा फ्रांसीसी क्लब जैकोबिन का सदस्य बना तथा स्वयं को सिटीजन टीपू बुलाया
11. डॉडवेल के अनुसार "वह प्रथम भारतीय राजा था जिसने पाश्चात्य परंपराओं को भारतीय प्रजा पर लागू करने का प्रयत्न किया"

6) तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790-92)

6.1) कारण

1. टीपू सुल्तान के सैन्य सुधार
2. टीपू का अंग्रेजी प्रतिद्वंदी फ्रांस से घनिष्ठ संबंध
3. कार्नवालिस द्वारा मित्र राज्यों की सूची में मैसूर को शामिल ना करना
4. अंग्रेजों के मित्र राज्य त्रावणकोर पर टीपू का आक्रमण

6.2) युद्ध का घटनाक्रम

1. 1789 :- टीपू द्वारा त्रावणकोर पर आक्रमण
2. 1790 :- लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा मराठों तथा निजाम से संधि, जिसमें युद्ध उपलब्धियों को तीन भागों में बांटने का प्रावधान था
3. 1790 :- अंग्रेजी जनरल मीडोज द्वारा मैसूर पर असफल आक्रमण
4. 1790-92 :- लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा श्रीरंगपट्टनम पर आक्रमण
5. मार्च 1792 :- टीपू का आत्मसमर्पण तथा श्रीरंगपट्टनम की संधि

6.3) श्रीरंगपट्टनम की संधि (मार्च 1792)

1. पक्ष :- लॉर्ड कार्नवालिस(अंग्रेज) तथा मैसूर नवाब टीपू
2. **मुख्य प्रावधान :-**
   - टीपू को 3 करोड़ रुपये लड़ाई का हर्जाना तथा आधा राज्य देना पड़ा
   - जब तक रुपया न चुका दिया गया, टीपू के दोनों पुत्र अब्दुल खालिक और मुईज़ुद्दीन को अंग्रेजों के पास बंधक के रूप में रखना पड़ा
   - मालावार, बारामहल, कुर्ग, डिंडीगुल के क्षेत्र अंग्रेजों को और उत्तर-पश्चिम में धारवाड़ मराठों को तथा उत्तर-पूर्व में कड़प्पा से करनूल तक का क्षेत्र निजाम को दिया गया
   - तीनों सम्मिलित शक्तियों में से प्रत्येक ने हर्जाने का तिहाई भाग ले लिया

इसी संदर्भ में कार्नवालिस ने कहा कि "हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाएं बगैर अपने शत्रु को पंगु बना दिया" वस्तुतः यदि मैसूर राज्य का पूर्ण विलय अंग्रेजों द्वारा किया जाता तो मैसूर के अधिक क्षेत्रों को अपने युद्धकालीन मित्रों मराठों व निजाम को देना पड़ता जिससे वह शक्तिशाली होकर ब्रिटिश को चुनौती प्रस्तुत करते अतः इस चुनौती से बचने के लिए कार्नवालिस ने टीपू के साथ संधि की आधा राज्य ही प्राप्त किया इस दृष्टि से श्रीरंगपट्टनम की संधि एक दूरदर्शिता पूर्ण संधि थी

Note :

- टीपू की पराजय का कारण अंग्रेजों का कुशल सेनापतित्व अथवा उनका वीरत्व न था।
- उसकी हार का मुख्य कारण देशी राज्यों का असहयोग था।
- यदि निजाम और मराठों ने अंग्रेजों का साथ न दिया होता तो टीपू की विशाल सेना के समक्ष उनका ठहरना असंभव था। परंतु दुर्भाग्यवश देशी नरेशों के पारंपरिक कलह ने भारत को परतंत्रता को बेड़ियों में जकड़ दिया
- उनमें उस समय तक राष्ट्रीय चेतना का अभाव एक एक करके उन सबके विनाश का कारण हुआ।

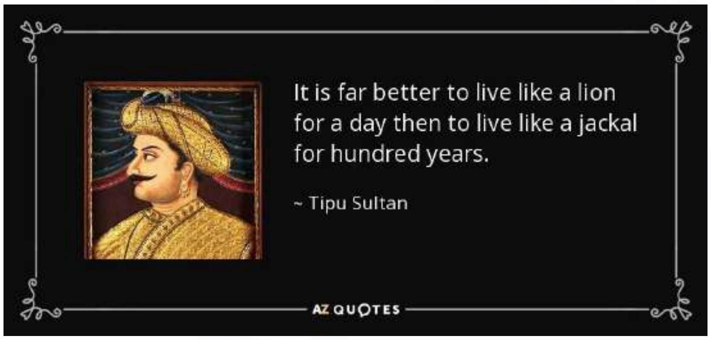

7) चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799)

7.1) कारण

1. अंग्रेजी गवर्नर लॉर्ड वेलेजली की आक्रामक विस्तार वादी नीतियां
2. टीपू सुल्तान द्वारा पुनः सैन्य व राजस्व सुधार
3. श्रीरंगपट्टनम की किलाबंदी
4. अश्वरोही व पैदल सेना का यूरोपीय पद्धति पर पुनर्गठन
5. युद्ध क्षतिपूर्ति हेतु कृषि पर 37% लगान दर में वृद्धि
6. नौ सैनिक सुधार
7. टीपू का फ्रांसीसी व नेपोलियन से घनिष्ठ संबंध
8. टीपू स्वयं को सिटीजन टीपू कहता था
9. फ्रांस के जैकोबिन क्लब की सदस्यता
10. फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता के वृक्ष की स्थापना
11. वेलेजली द्वारा टीपू पर षड्यंत्र का आरोप लगाकर युद्ध का आरंभ

7.2) युद्ध का घटनाक्रम

1. फरवरी 1799 :- अथर्व लेजरली तथा जनरल स्टुअर्ट ने श्रीरंगपट्टनम पर आक्रमण किया
2. टीपू की सदस्य और मलाली नामक स्थानों पर हार
3. अंग्रेजों ने श्रीरंगपट्टनम को घेरा
4. श्रीरंगपट्टनम की रक्षा करते हुए टीपू सुल्तान की मृत्यु

7.3) युद्ध का परिणाम

टीपू की मृत्यु के बाद मैसूर में मुस्लिम सत्ता का अंत हो गया तथा अंग्रेजों ने राज्य विभाजन कर दक्षिण में अपना आधिपत्य स्थापित किया :-

- कंपनी को प्राप्त क्षेत्र : कनारा कोयंबटूर धारापुरम और श्रीरंगपट्टनम
- निजाम को प्राप्त क्षेत्र : गूटी, गुर्मकोंड और चित्तलदुर्ग
- मराठों ने क्षेत्र लेने से इनकार कर दिया।
- मैसूर मैं पुनः वाडयार वंश की स्थापना : अंग्रेजों ने अल्प वयस्क कृष्ण वाडयार को राजा बनाया

इस सफलता के बाद लॉर्ड वेलेजली ने कहा कि "अब पूरब का राज्य हमारे कदमों में है" और लॉर्ड वेलेजली को मार्किस ऑफ़ वेलेजली की उपाधि से सम्मानित किया गया। 1831 तक मैसूर अंग्रेजों का आधिपत्य राज्य बना रहा और बाद में उसे विलियम बेंटिक ने ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल कर लिया।

8) शासक के रूप में टीपू सुल्तान का मूल्यांकन

1782 में अपने पिता हैदर अली की मृत्यु के बाद टीपू मैसूर का शासक बना टीपू को उसकी वीरता के कारण शेर-ए-मैसूर कहा जाता है :-

- सुधारवादी कार्य :-
  - ✓ सैन्य संगठन को यूरोपीय पद्धति के अनुरूप संगठित किया
  - ✓ रॉकेट या मिसाइल तकनीक का युद्ध में प्रयोग
  - ✓ आधुनिक उद्योगों की स्थापना
  - ✓ आधुनिक नौसेना खड़ी करने की कोशिश की
  - ✓ टीपू ने कुर्गो, नयरो तथा मोपलाओ के विद्रोह का दमन किया
  - ✓ पोलिगारो का अंत करके कृषकों से सीधा संबंध
  - ✓ अन्य धर्मों के प्रति उसने सहिष्णुता की नीति
- टीपू की भूल :-
  - ✓ तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार संधिया और कूटनीति करने में असफल
  - ✓ निजाम व मराठों से संबंध बनाने की बजाय दूरस्थ मुस्लिम राज्य एवं फ्रांसीसी से सहायता लेने का प्रयास किया

उपरोक्त आलोचनाओं के बाद भी निश्चित रूप से टीपू सुल्तान दक्षिणी भारत के इतिहास में एक आकर्षक व्यक्तित्व था, जिसने प्रशासन में आधुनिक कारकों को अपनाने का प्रयत्न किया

युद्ध	समय	मैसूर	अंग्रेज	परिणाम	कारण	महत्वपूर्ण बिन्दु
प्रथम	1767 - 69	हैदर अली	-------	हैदर विजयी - मद्रास की संधि 1769	1. अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति 2. हैदर अली की महत्वाकांक्षा और ब्रिटिश विरोध नीति	
द्वितीय	1780 - 84	हैदर और टीपू	वॉरेन हेस्टिंग्स	मंगलोर की संधि 1784	1. मद्रास संधि का उल्लंघन 2. अमेरिकी क्रांति 3. अंग्रेजों ने माहे बंदरगाह पर हमला किया, माहे हैदर के क्षेत्र में	1. हैदर अली ने कर्नल बेली को हराकर आर्कट (कर्नाटक) पर अधिकार किया 2. पोर्टोनोवा का युद्ध (1781) - हैदर अली व आयर कूट
तृतीय	1790 - 92	टीपू	कार्नवालिस	टीपू की हार - श्रीरंगपट्टनम संधि 1792 (अपमानजनक)	1. टीपू फ्रांसीसी संबंध 2. टीपू का त्रावणकोर पर हमला 3. मंगलौर संधि का उल्लंघन	1. कार्नवालिस - हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाए बिना अपने शत्रु को पंगु बना दिया
चतुर्थ	1799	टीपू	लॉर्ड वेलेजली	टीपू की हार और मृत्यु दक्षिण में अंग्रेज प्रभुत्त्व	1. सहायक संधि नहीं 2. मराठा + निजाम से षड्यंत्र का आरोप 3. फ्रांस और नेपोलियन	1. वेलेस्ली को " मार्किव्स "की उपाधि मिली 2. वेलेस्ली - "अब पूरब का राज्य हमारे कदमों में है"

Quick Revision

1. 1565 : तालीकोटा का युद्ध
2. 1761 : हैदर अली मैसूर का शासक बना
3. हैदर अली ने डिंडीगुल में शस्त्रागार खोला
4. 1767-69 : प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध
5. 1769 : मद्रास की संधि के द्वारा प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध का अंत
6. 1780-84 : द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध
7. 1781 : हैदर अली वायर कूट के मध्य पोर्टो नोवो का युद्ध
8. 1784 : मंगलौर की संधि
9. 1790-92 : तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध
10. 1792 : टीपू सुल्तान की व श्रीरंगपट्टनम की संधि
11. 1799 : चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध व लॉडबैलेंसर लिखो मारपीट की उपाधि मिली

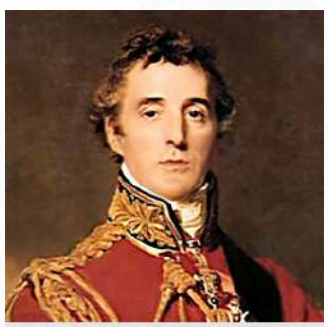

Lord Wellesley

NOTE : विलियम बेंटिक ने 1831 ई. में मैसूर तथा 1834 ई. में कुर्ग एवं कछार की रियासतों को अपने प्रदेश में मिला लिया क्योंकि वहां कथित रूप से बहुत अधिक अव्यवस्था थी

4) मराठा साम्राज्य तथा आंग्ल - मराठा संघर्ष

मराठों का उत्कर्ष मध्यकालीन भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है जिन्होंने अरब सागर के तट से सतपुड़ा पर्वत तक मराठवाड़ा राज्य स्थापित किया मराठा इतिहास को दो चरणों में बांटा जा सकता है प्रथम चरण 17वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध-शिवाजी, शम्भाजी, राजाराम व ताराबाई का काल तथा दूसरा चरण पेशवाओं के अधीन शासन का था

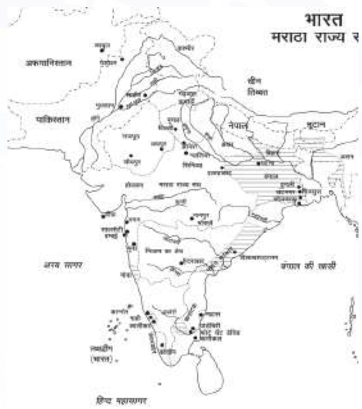

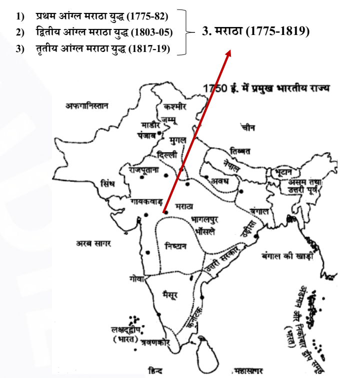

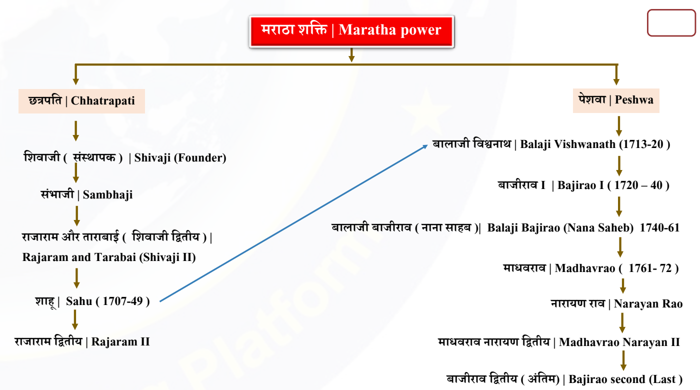

1) मराठा शक्ति के उदय के कारण

मराठा मध्यकालीन भारतीय इतिहास की सर्व प्रमुख शक्ति थे, जिनके उद्भव के निम्नलिखित कारण थे :-

1) मराठा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति :

1. मराठा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और वहां की जलवायु ने मराठों को परिश्रमी बनाया
2. महादेव गोविंद रानाडे ने अपनी कृति राइज ऑफ दि मराठा पॉवर में इस भौगोलिक स्थिति को दर्शाया है
3. महान पर्वत श्रृंखलाएं:
   - लोगों को कष्ट सहिष्णु, फुर्तीला, प्रतिरोधी, उग्र तथा उत्तम सैनिक बनाया
   - गोरिल्ला युद्ध तकनीक
   - सीमित संसाधनों में जीवन यापन

2) दक्षिण में धार्मिक जागरण :

1. भक्ति आंदोलन के संतो, (तुकाराम एकनाथ एवं दादाजी कोंडदेव) ने मराठों के उद्भव में महत्वपूर्ण योगदान
2. मराठा एकता तथा देश, धर्म एवं संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न किया
3. प्राचीन धर्म के गौरव को पुनर्स्थापित एवं संरक्षित करने की बात की

3) दक्षिण की राजनीतिक परिस्थिति

1. अहमदनगर, बीजापुर जैसे राज्यों में राजनीतिक शून्यता
2. औरंगजेब की दक्षिण नीति की असफलता
3. शासन के विभिन्न विभागों में मराठा राजनैतिज्ञों तथा सैनिकों की उपस्थिति

4) शिवाजी का व्यक्तित्व

1. शिवाजी एक वीर योद्धा एवं कुशल सेनानायक थे
2. उच्च कोटि का शासन प्रबंधन
3. सैन्य कुशलता तथा गोरिल्ला युद्ध तकनीक
4. कुशल कूटनीति

5) अन्य कारण

1. औरंगजेब की दक्षिण नीति
2. औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता
3. मराठी भाषा की सरल प्रकृति

2) शिवाजी महाराज का सामान्य परिचय (1627-1680)

4. जन्म :- अप्रैल 1627 ई को शिवनेर के किले में
5. माता :- जीजाबाई
6. पिता :- शाहजी भोंसले(बीजापुर के शासक के यहां कार्यरत थे)
7. गुरु :- समर्थ गुरु रामदास
8. संरक्षक :- दादा जी कोंडदेव
9. विवाह :- 1640 ई में साईबाई से
10. पित्र पक्ष से वह राजपूताना के सिसोदिया वंश से तथा मातृ पक्ष से देवगिरि के यादव के वंश से संबंधित थे
11. उन्होंने एक स्वतंत्र हिंदू राज्य की स्थापना करने को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया

3) शिवाजी महाराज के प्रमुख विजय अभियान

3.1) प्रारंभिक अभियान (1643-1656)

1. बीजापुर के आदिलशाही राज्य के विरुद्ध
2. 1643 :- सिंहगढ़ का किला
3. 1646 :- तोरण का किला
4. 1654 :- पुरन्दर का किला
5. शिवाजी की इन साहसिक विजयों से बीजापुर का सुल्तान क्रोधित हो गया तथा उसने शिवाजी के विरुद्ध अफजल खा के नेतृत्व में सेना भेजी

3.2) कोंकण विजय (1657)

1. 1657 में उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ जाने पर औरंगजेब दक्षिण से उत्तर भारत आ गया

2. 1657 में शिवाजी ने कोंकण के कल्याण, भिवंडी एवं माहुल के किलो को जीत लिया
3. कोंकण विजय से शिवाजी पश्चिमी समुद्र तट पर पहुंच गए और नौसेना निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया
4. शिवाजी कोंकण प्रदेश पर तो ज्यादा समय तक अधिकार ना रख सके परंतु जंजीरा के सीदियों को अपने आधिपत्य में लेने में सफल रहे

3.3) अफजल खां की हत्या (1659)

1. अफजल खाँ ने कूटनीतिपूर्वक शिवाजी को मारने की योजना बनाई तथा शिवाजी के पास कृष्णाजी भास्कर के माध्यम से संधि का प्रस्ताव भेजा
2. शिवाजी ने अफजल खाँ की कूटनीति को समझते हुए संधि के अनुरूप प्रतापगढ़ के जंगलों में उससे मिलने गए
3. जहां अफजल खाँ सशस्त्र आया था तथा गले मिलने के बहाने शिवाजी की हत्या करने का प्रयास किया, किन्तु शिवाजी ने अपने बगनखे के वार से अफजल खाँ को मार डाला
4. इस हमले में शिवाजी को भारी धन-संपत्ति तथा अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हुए, जिससे उनकी प्रतिष्ठा तथा स्थिति और भी अधिक सुदृढ़ हो गई

3.4) शाइस्ता खां से संघर्ष (1663)

1. अफजल खां की हत्या से उत्साहित होकर शिवजी ने मुगलों पर जोरदार आक्रमण किए
2. औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध शाइस्ता खां को विशाल सेना के साथ भेजा
3. शिवाजी ने अपने सैनिकों को भेष बदलकर पूना भेजा तथा मौका देखकर मुगल सेना पर आक्रमण कर दिया
4. इस आक्रमण से शाइस्ता खां का अंगूठा कट गया तथा उसका पुत्र फतेह खां मारा गया

3.5) सूरत की प्रथम लूट(1664)

5. शिवाजी ने 8 जनवरी 1664 में पश्चिमी तट पर स्थित सूरत बंदरगाह पर लूटने की दृष्टि से धावा बोला
6. गवर्नर इनायत खान ने नगर से भागकर किले में शरण ली
7. इस लूट में शिवाजी को एक करोड़ से अधिक रुपया मिला
8. नगर के सेठ साहूकारों को लूट लिया गया किंतु अंग्रेजों एवं डचों की कोठियों को कोई हानि नहीं पहुंचाई गई

3.6) जयसिंह से संघर्ष और पुरंदर की संधि (1665)

1. शाइस्ता खां की असफलता और सूरत की लूट से त्रस्त होकर औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह को भेजा
2. शिवाजी को जयसिंह के सम्मुख आत्मसमर्पण करना पड़ा। बातचीत के परिणामस्वरूप दोनों के बीच 22 जून 1665 ई को पुरन्दर की संधि हो गयी । संधि की शर्तें निम्न प्रकार थी-
   - शिवाजी ने 35 में से 23 किले मुगलों को दे दिए
   - शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को मुगल दरबार में 5000 का मनसब दिया गया
   - शिवाजी ने बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुगल सम्राट को सहायता देने का वचन दिया
3. राजा जयसिंह की अनुरोध के अनुसार शिवाजी 12 मई 1666 को अपने पुत्र शंभाजी के साथ मुगल दरबार में उपस्थित हुए लेकिन वहां उनका आदर ना हुआ और उनको पंचहजारी मनसब की श्रेणी में खड़ा किया गया
4. शिवाजी और उनके पुत्र शम्भाजी को रामसिंह के निवास स्थान आगरा (जयपुर महल) में बंदी बना लिया गया
5. शिवाजी ने कूटनीति का सहारा लिया तथा फल की टोकरी में बैठकर भाग निकले

3.7) सूरत की द्वितीय लूट (1670)

1. शिवाजी ने 1670 में सूरत को पुनः लूटा
2. इसमें शिवाजी को लगभग 66लाख रुपए की आय प्राप्त हुई तथा एक सोने की पालकी भी मिली, जो औरंगजेब को भेंट देने के लिए बनाई गई थी
3. कंचन मंचन दर्रा / डिंडोरी का युद्ध :- सूरत से लौटते हुए मार्ग में शिवाजी ने मुगल सेना को जो दाऊद खां और इखलास खां के नेतृत्व में थी, बुरी तरह पराजित किया
4. 1672 में सूरत पर शिवाजी ने तीसरी बार छापा मारा तथा उसे लूट कर अपार धन प्राप्त किया
5. बीजापुर और गोलकुंडा के राज्यों में उन्हें वार्षिक कर देना आरंभ कर दिया जिससे वे उनकी प्रजा को ना लूटे
6. इस प्रकार 4 वर्ष की अल्पावधि में (1670 से 1674 तक) शिवाजी ने

अपनी खोई हुई शक्तियों को पुनः प्राप्त किया

3.8) शिवाजी का राज्याभिषेक(6जून 1674)

1. 6 जून 1674 में शिवाजी ने अपना काशी के प्रसिद्ध विद्वान श्री गंगाभट्ट द्वारा राज्य अभिषेक करवाया
2. छत्रपति की उपाधि ग्रहण की तथा पत्नी सोयराबाई को राजमहिषी घोषित किया गया
3. इस अवसर पर श्री शिवाजी छत्रपति उत्कीर्ण सोने और तांबे के सिक्के जारी किए गए और नया संवत जारी किया गया
4. शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया
5. किंतु 17 जून, 1674 ई को शिवाजी की माता जीजाबाई का देहावसान हो गया, कारणस्वरूप शिवाजी का दूसरी बार राज्याभिषेक हुआ
6. यह 24 सितम्बर 1674 को तांत्रिक विधि से कांची के निश्चलपुरी गोस्वामी नामक सुप्रसिद्ध तांत्रिक द्वारा संपन्न कराया गया

3.9) राज्याभिषेक के उपरांत

1. शिवाजी ने मुगल सेनापति बहादुर खां के शिविर पर आक्रमण किया जहां से उनको 9 करोड़ रुपए के अतिरिक्त 200 उच्च कोटि के घोड़े भी प्राप्त हुए
2. 1675 को कोल्हापुर पर आक्रमण करके बहुत सा धन प्राप्त
3. शिवाजी का अंतिम और उसके जीवन का सबसे बड़ा अभियान कर्नाटक पर आक्रमण (1677-78) था
   - इसमें बैलोर, तंजौर और जिंजी आदि प्रमुख नगर थे 1678 में शिवाजी ने जिंजी के किले को जीता। यह उनकी दक्षिण भाग की राजधानी बनी
   - परन्तु वह पुर्तगालियों से गोवा तथा सीदियों से चौल और जंजीरा को न छींन सके
4. 2 अप्रैल 1680 को शिवाजी ज्वर से पीड़ित हो गए और अंत में 13 अप्रैल 1680 को उनका देहावसान हो गया

4) शिवाजी का प्रशासन

4.1) सामान्य परिचय

शिवाजी की प्रशासनिक व्यवस्था दक्कन राज्यों विशेषकर मलिक अम्बर के सुधारों से प्रभावित थी जिसकी प्रमुख विशेषताएं निम्न हैं-

- शिवाजी अपने राज्य के सर्वोच्च अधिकारी थे उन्होंने छत्रपति की उपाधि धारण की
- छत्रपति की सहायता हेतु 8 मंत्रियों की परिषद थी, जिसे अष्टप्रधान कहते थे
- अष्टप्रधान की सलाह शिवाजी हेतु बाध्यकारी नहीं थी साथ ही यह पद आनुवंशिक नहीं था
- सेनापति के अतिरिक्त प्रायः सभी मंत्री ब्राह्मण होते थे
- प्रत्येक मंत्री के अधीन आठ अधिकारियों का कार्यालय होता था
- शिवाजी ने मराठा साम्राज्य को निम्नलिखित 6 इकाइयों में बांटा था :-

4.2) अष्टप्रधान

1. प्रशासन में शिवाजी की सहायता और परामर्श के 8 मंत्रियों की परिषद
2. प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख
3. परिषद के सभी सदस्यों की नियुक्ति शिवाजी द्वारा
4. मंत्रियों के निर्णय मानना शिवाजी के लिये बाध्यकारी नहीं था।
5. शिवाजी ने किसी मंत्री के पद को अनुवांशिक नहीं बनाया।
6. अष्टप्रधान में सेनापति को छोड़कर सभी मंत्री ब्राह्मण होते-थे।
7. प्रत्येक मंत्री के अधीन आठ अधिकारियों का कार्यालय होता था

1) पेशवा (प्रधानमन्त्री)	2) सर-ए-नौबत (सेनापति
3) अमात्य (राजस्व मन्त्री)	4) वाकयानवीस - सूचना, गुप्तचर एवं सन्धि-विग्रह
5) चिटनिस - राजकीय पत्राचार	6) सुमन्त – विदेश मन्त्री
7) पण्डित राव- धार्मिक कार्यों की देखरेख	8) न्यायाधीश- न्याय विभाग का प्रधान।

1. पेशवा (प्रधानमंत्री) :-
    - यह राजा का प्रधानमंत्री होता था।
    - राज्य का प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था की देख-रेखा
    - राजा की अनुपस्थिति में उसके कार्यों की देखभाल भी करता था।
    - सरकारी पत्रों तथा दस्तावेजों पर राजा के नीचे मुहर लगाता था।
2. अमात्य (पन्त व मजुमदार) :-
    - यह वित्त एवं राजस्व मंत्री होता था।
    - आय-व्यय के सभी लेखों की जाँच करना
3. वाकियानवीस (मंत्री) :-
    - सूचना, गुप्तचर एवं सन्धि-विग्रह के विभागों का अध्यक्ष
    - यह वर्तमान समय के गृहमंत्री की भाँति होता था।
4. सुमंत (दबीर) :-
    - यह राज्य का विदेश मंत्री होता था।
5. सचिव/चिटनिस/शुरूनवीस :-
    - राजकीय पत्राचार
    - मुख्य कार्य - राजकीय पत्रों की भाषा, शैली की जाँच करना
6. सेनापति (सर-ए-नौबत) :-
    - सैन्य प्रधान
    - सेना की भरती, संगठन, अनुशासनं आदि का दायित्व
7. पण्डितराव (सद्र) :-
    - धार्मिक कार्यो की देखरेख
    - धार्मिक कार्यों के लिए दिये जाने वाले अनुदानों का दायित्व
8. न्यायाधीश :-
    - न्याय विभाग का प्रधान।
    - मुख्य कार्य - फौजदारी और दीवानी मुकदमों की सुनवाई तथा राज्य में न्याय और कानून की व्यवस्था का रखरखाव

क्र	नाम	कार्य
1	पेशवा	प्रधान मंत्री
2	सर-ए- नोबत	सेनापति
3	अमात्य	वित्त एवं राजस्व मंत्री
4	वाक्यन्वीस	सूचना मंत्री, गुप्तचर विभाग
5	चिटनीस	चिट्ठी/डाक विभाग का कार्यालय
6	सुमंत	विदेश मंत्री
7	पंडित राव	धार्मिक मंत्री
8	न्यायाधीश	न्यायालय से संबंधित

4.3) प्रांतीय प्रशासन

1) शिवाजी ने मराठा राज्य को चार प्रांत या सरसूबा में बांटा था
2) प्रांत के सर्वोच्च अधिकारी को सर सूबेदार के नाम से जाना जाता था, इस की नियुक्ति स्वयं शिवाजी करते थे
    - उत्तरी प्रान्त – इसमें बम्बई के उत्तर में सूरत व सल्हेर दुर्ग से लेकर पूना तक का भाग सम्मिलित था
    - दक्षिण पश्चिमी प्रांत - इस प्रान्त में दक्षिणी कोंकण प्रदेश या समुद्री तट सम्मिलित था
    - दक्षिण पूर्वी प्रान्त - इस क्षेत्र में सतारा, सांगली, कोल्हापुर आदि क्षेत्र शामिल थे
    - दक्षिण प्रान्त - इसमें कोलाबा, जिंजी और उसके आस पास का प्रदेश सम्मिलित था
3) प्रत्येक प्रान्त, महालों में विभक्त था यहां का अधिकारी सरहवलदार होता था
4) महालों को तरफों में बांटा गया था जो हवलदार नामक अधिकारी के अधीन था। इसके अधीन कारकुन नामक अधिकारी होते थे।
5) गांव सबसे छोटी इकाई थी। पटेल, पाटिल या देशमुख इसका मुखिया होता था

4.4) राजस्व प्रशासन

शिवाजी की भू राजस्व व्यवस्था पर मलिक अंबर का प्रभाव था यह रैयतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी। जिसकी निम्नलिखित विशेषताएं है :-

1. शिवाजी ने अन्नाजी दत्ते के अधीन भूमि की विस्तृत माप कराई
2. माप का आधार जरीब/ काठी थी
3. भूमि को ठेके पर देने की प्रथा को समाप्त कर, उत्पादन के अनुमान पर किसान से लगान निर्धारित किया
    - उपज के आधार पर 1/3 भाग भूमिकर
    - बंजर भूमि पर कर नहीं लिया जाता था
    - राजस्व नकद या वस्तु के रूप में चुकाया जाता था
4. राज्य कृषि को प्रोत्साहन देने के लिए तकाबी ऋण

चौथ	सरदेशमुखी
इस कर के बदले में पड़ोसी राज्यों को शिवाजी के आक्रमण से बचने का आश्वासन प्राप्त हो जाता था।	यह कर भी पड़ोसी राज्यों से वसूल किया जाता था।
इसकी मात्रा राज्य की आय की एक चौथाई (1/4) होती थी।	यह उस प्रदेश के भूमिकर का 10 प्रतिशत भाग होता था। सरदेशमुखी वसूल करना शिवाजी अपना कानूनी अधिकार मानते थे

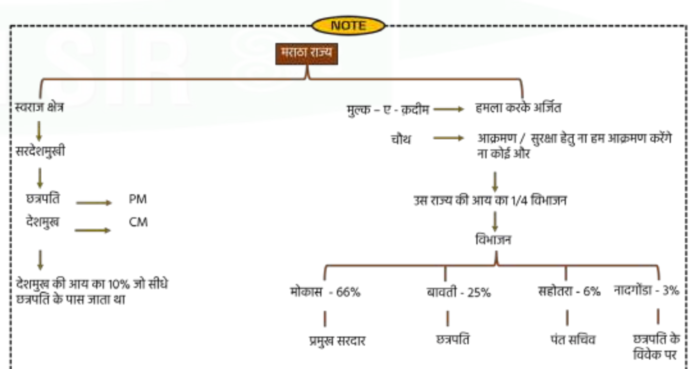

4.5) सैन्य प्रशासन

शिवाजी के सैन्य-प्रशासन में दुर्ग, तोपखाना में दुर्ग, नौ-सेना, घुड़सवार सेना एवं पैदल-सेना सम्मिलित थी।

1. अश्वारोही सेना :- शिवाजी की अश्वारोही सेना के संगठन को पागा कहा जाता था। इसमें दो प्रकार के सैनिक होते थे -
   - बरगीर - इन्हें राज्य की ओर से घोड़े एवं शस्त्र प्राप्त होते थे।
   - सिलेदार - ये घोड़े एवं शस्त्र का प्रबंध स्वयं करते थे।
2. पैदल सेना :-
   - पैदल सेना को पाइक कहा जाता था
   - पैदल सेना का सबसे बड़ा अधिकारी - सरे-नौबत
3. दुर्ग :- शिवाजी के पास 240 या 250 दुर्ग थे। इसकी देख-रेख के लिए विभिन्न अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी-
   - हवलदार :- किले की सुरक्षा व्यवस्था का उत्तरदायित्व
   - कारकुन :- यह किले के गोदाम का अधिकारी (कायस्थ)
4. तोपखाना :- शिवाजी के पास एक छोटा तोपखाना था, जिसमें लगभग 200 तोपें थीं। ये तोपें फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों से खरीदी गई थीं।
5. नौ-सेना :- शिवाजी ने कोलाबा, कल्याण नगरों में नौ-सैनिक ने अड्डों की स्थापना की थी।

4.6) न्याय प्रशासन

1. शिवाजी का न्यायालय धर्म-सभा या हुजूर-हाजिर मजलिस कहा न्याय प्रशासन जाता था।
2. न्यायाधीश के द्वारा दीवानी व फौजदारी मुकदमों की सुनवाई की जाती थी।
3. न्याय की अंतिम अपील छत्रपति के पास की जाती थी। वे न्यायाधीश, एवं पंडितराव की सहायता से निर्णय देते थे
4. प्रान्तीय एवं महल स्तर पर न्याय के लिए मजलिस हुआ करती थी जिसे सभा कहा जाता था।

5) शिवाजी का मूल्यांकन

सुधार :-

1. आदर्श तथा उच्च व्यक्तित्व
2. उज्जवल चरित्र :- शिवाजी का चरित्र अत्यंत उज्जवल था। वे शत्रु की स्त्री को भी मां तथा बहन के समान समझते थे।
3. महान संगठनकर्ता :- शिवाजी एक महान संगठनकर्ता थे। उन्होंने मराठा जाति को संगठित करके उसे एक सैनिक जाति के रूप में परिणित कर दिया।
4. महान सेना नायक
5. महान विजेता :- 1656 ई. में शिवाजी ने जावली पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। 1674 में राज्याभिषेक के पश्चात शिवाजी पेड़गांव, भूताल छावनी, फर्ली तथा कोल्हापुर पर जीत दर्ज की।
6. कुशल प्रशासक :- शिवाजी ने जमींदारी, जागीरदारी तथा ठेकेदारी प्रथा को पूर्णतया समाप्त कर दिया।

शिवाजी की शासन व्यवस्था का अभाव :-

1. शिवाजी के नेतृत्व में मराठों का उत्तर में साम्राज्य विस्तार नहीं हुआ।
2. अत्यधिक केन्द्रीकृत प्रशासन के कारण उत्तराधिकारी शासन का संचालन नहीं कर पाये और समस्त शक्तियां पेशवा के अधीन हो गईं।

इस प्रकार शिवाजी का शासन प्रबन्ध श्रेष्ठ था। सर जदुनाथ सरकार ने इसे मध्ययुगीन राजतंत्र की एक अनोखी घटना बताया है। औरंगजेब शिवाजी को पहाड़ी चूह्य कहकर पुकारता था, परन्तु प्रसिद्ध मराठा इतिहासकार सर जदुनाथ सरकार ने लिखा है मैं उन्हें हिन्दू जाति द्वारा उत्पन्न किया हुआ अंतिम महान क्रियात्मक व्यक्ति एवं राष्ट्र निर्माता मानता हूं।

6) शिवाजी के उत्तराधिकारी

शिवाजी की मृत्यु उपरांत मराठा साम्राज्य में उत्तराधिकार को लेकर विवाद खड़ा हो गया। शिवाजी की दो पत्नियों से उत्पन्न 2 पुत्र थे - शम्भाजी और राजाराम । शिवाजी की इच्छा के अनुरूप 21 अप्रैल 1680 ई को 10 वर्ष की अवस्था में राजाराम का राज्य अभिषेक रायगढ़ में कर दिया गया परंतु पन्हाला किले में कैद शम्भाजी ने किलेदार की हत्या करके प्रधान सेनापति हम्मीरराव मोहिते को अपने पक्ष में कर लिया तथा राजाराम और उसकी माता सोयराबाई को बैठ करके स्वयं 20 जुलाई 1680 को गद्दी पर बैठ गया

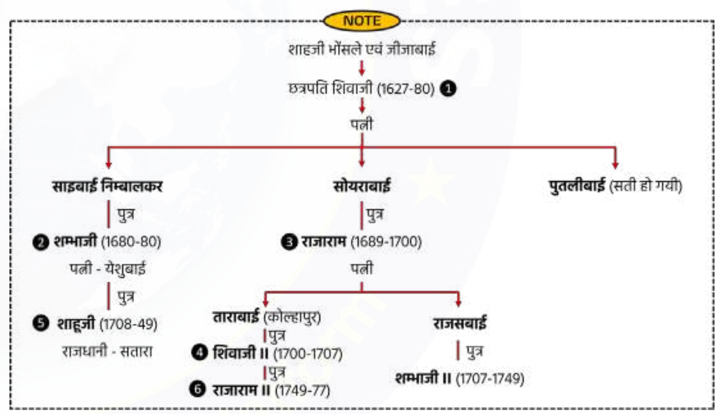

6.1) शम्भाजी (1680-89)

1. जन्म :- 1657
2. माता :- साईं बाई
3. गुरु व शिक्षक :- केशव भट्ट और उमा जी पंडित
4. पत्नी :- येसुबाई
5. पुत्र :- शाहू
6. राज्य अभिषेक :- 16 जनवरी 1681
7. राजधानी :- रायगढ़
8. संभाजी के शासनकाल में मराठों में एकता नहीं रही
9. नीलोपंत को अपना पेशवा नियुक्त किया
10. साथ ही कन्नौज के कवि कलश नामक विद्वान ब्राह्मण को अपना सलाहकार नियुक्त किया

6.2) राजाराम (1689-1700)

1. शम्भाजी की मृत्यु के समय उनका पुत्र शाहू 7 वर्ष का था इसलिए उनके

सौतेले भाई राजाराम को 19 फरवरी 1689 को मराठों का राजा घोषित किया गया

2. वह चरित्रवान, साहसी और दृढ़ निश्चयी था
3. राजाराम ने अंत तक यही कहा कि वह शम्भाजी के पुत्र शाहू का, जो औरंगजेब की कैद में था प्रतिनिधि मात्र है
4. शम्भाजी की विधवा येसुबाई ने राजाराम को विशालगढ़, भेज कर खुद सेना की कमान संभाल ली
5. इस वीरांगना ने मुगल सेना को कई जगह मात दी
6. किंतु एक अधिकारी सूर्य जी पिसाल के विश्वासघात के कारण मुगल सेनापति ने 13 नवंबर 1689 को येसूबाई और उसके पुत्र शाहूजी को अनेक मराठाओं समेत गिरफ्तार कर लिया
7. 1698 में जिजी से भागकर राजाराम सतारा पहुंचा और उसे अपनी राजधानी बनाई
8. 1700 में राजाराम की सतारा में मृत्यु हो गई परंतु वह जब तक जीवित रहा मराठों की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहा
9. राजाराम ने एक नए पद "प्रतिनिधि" का सृजन किया
10. इस प्रकार शिवाजी के अष्टप्रधान में प्रतिनिधि सहित नौ मंत्री हो गए

Chhatrapati Rajaram Maharaj

6.3) शिवाजी द्वितीय / ताराबाई (1700-1707)

1. राजाराम के बाद उसका 4 वर्षीय अल्पसंख्यक पुत्र शिवाजी द्वितीय मराठों का शासक बना तथा राजाराम की पत्नी ताराबाई संरक्षिका बनी
2. रायगढ़, सातारा तथा सिंहगढ़ आदि किलों को मुगलों से छीन लिया
3. जब औरंगजेब की मृत्यु हो गई तो सम्राट बहादुर शाह ने मराठों को आपसी झगड़ों में फंसा देने की दृष्टि से शाहू को दक्षिण भेज दिया
4. 12 अक्टूबर 1707 को शाहू तथा ताराबाई के मध्य खेड़ा का युद्ध हुआ जिसमें शाहू, बालाजी विश्वनाथ की मदद से विजई हुआ
5. 1708 में शाहू ने सतारा पर अधिकार कर लिया

6.4) शाहू (1708–1749)

1. शम्भाजी के पुत्र शाहू का 1708 ई में राज्याभिषेक हुआ इन्होंने सतारा को अपनी राजधानी बनाया
2. एक नवीन पद "सेनाकर्ते" का सृजन किया और उस पर बालाजी विश्वनाथ को नियुक्त किया
3. खेड़ा के युद्ध के बाद मराठा राज्य दो भागों में बंट गया- उत्तर में सतारा राज्य जो शाहू के अधीन था तथा दक्षिण में कोल्हापुर का राज्य शिवाजी द्वितीय (ताराबाई के पुत्र) के अधीन था
4. इन दो प्रतिद्वंदी शक्तियों (सतारा तथा कोल्हापुर) के मध्य शत्रुता का अंत 1731 ई में वारना की संधि द्वारा हो गया
5. शाहू ने 1731 में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा के पद पर नियुक्त किया इसी के साथ ही पेशवा का पद वंशानुगत हो गया

6.5) राजाराम द्वितीय (1749–1750)

1. शाहूजी के दत्तक पुत्र राजाराम द्वितीय को छत्रपति बनाया गया
2. 1750 में पेशवा बालाजी बाजीराव से राजाराम द्वितीय ने संगोला की संधि कर ली जिसके अनुसार मराठा संगठन का वास्तविक नेता पेशवा बन गया
3. छत्रपति नाम मात्र का प्रधान रह गया तथा सतारा के किले में बंदी की तरह जीवन व्यतीत करने लगा

7) प्रमुख पेशवा

छत्रपति शाहू के शासन काल में बालाजी विश्वनाथ के रूप में पेशवा शक्ति का उदय हुआ तथा छत्रपति राजाराम द्वितीय ओर् पेशवा बालाजी विश्वनाथ के मध्य संगोला की संधि के बाद मराठा राजनीति में पेशवा पद को स्थायित्व मिला

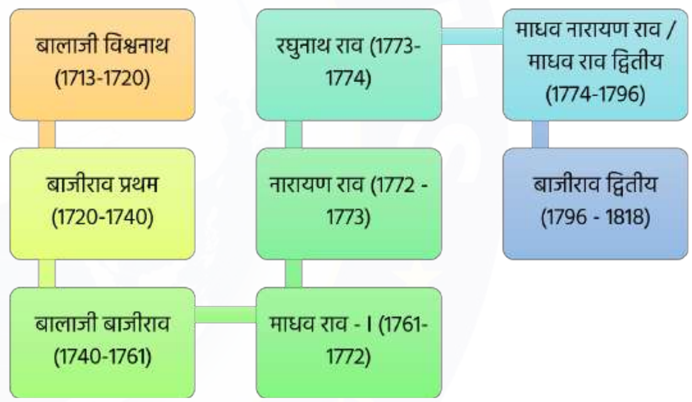

7.1) बालाजी विश्वनाथ (1713–20)

1. मराठा प्रशासन में पेशवा युग के आरम्भकर्ता व मराठा साम्राज्य के द्वितीय संस्थापक
2. खेड़ा के युद्ध में शाहू की सहायता
   - 1708 : शाहू द्वारा सेनाकर्ते का पद
   - 1713 : शाहू द्वारा पेशवा का पद
3. ये अत्यंत प्रतिभाशाली थे
4. दिल्ली की संधि (1719)
   - पक्ष - मुगल सूबेदार सैयद हसन अली खान तथा पेशवा बालाजी विश्वनाथ
   - प्रावधान -
     - ✓ दक्कन के 6 मुगल सूबों पर मराठाओं को चौथ एवं सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार
     - ✓ हैदराबाद, गोंडवाना, खानदेश और बरार के जो क्षेत्र मराठाओं ने जीता पुनः मराठों को
     - ✓ साहू की माता येशुबाई को भी मुगल कैद से मुक्त
   - रिचर्ड टेम्पल - मराठा साम्राज्य हेतु मैग्नाकार्टा

5. सैय्यद बन्धुओं (सैयद हसन अली खान और सैयद अब्दुल्लाह) को फरुखसियर को गद्दी से हटाने में अपना सहयोग दिया
6. बालाजी की मृत्यु के पश्चात 17 अप्रैल 1720 ई को उसका पुत्र बाजीराव प्रथम पेशवा बना

7.2) बाजीराव प्रथम (1720-1740)

1. एक अद्वितीय सेनानायक व बालाजी विश्वनाथ के पुत्र व मराठा पेशवा
2. **मुख्य कार्य :-**
   - मराठा सरदारों के मतभेद को मिटाकर मराठा एकता का संचार
   - हैदराबाद, बुंदेलखंड, मालवा, गुजरात, बसीन आदि में विजय अभियान
   - मराठा संघ की स्थापना
   - मराठा साम्राज्य को 5 भागों में बांटा -
     - i. ग्वालियर के सिंधिया
     - ii. इंदौर के होलकर
     - iii. नागपुर के भोंसले
     - iv. बड़ौदा के गायकवाड़
     - v. पुणे को मुख्यालय बनाया
3. **विजय अभियान :-**
   - मुगल
   - हैदराबाद
   - बुंदेलखंड
   - मालवा

1) मुगल विजय अभियान

- मुगल साम्राज्य (मोहम्मद शाह) पर आक्रमण करने वाला प्रथम पेशवा
- कथन : हमें इस जर्जर वृक्ष के तने पर प्रहार करना चाहिए शाखाएं तो स्वयं ही गिर जाएंगी और इस प्रकार मराठाओं की पताका कृष्णा से लेकर अटक तक फहराने लगेगी

2) हैदराबाद (निजाम-उल-मुल्क आसफजाह) विजय अभियान

1. 1728 - पालखेड़ा का युद्ध
2. 16 मार्च 1728 मुंशी शिवगांव की संधि
   - निजाम शाहू को चौथ और सरदेशमुखी का शेष धन प्रदान करेगा
   - निजाम ने शाहूजी को समस्त महाराष्ट्र का स्वामी स्वीकार कर लिया
   - मराठों के अधिकार को विधिवत स्वीकार कर लिया था
3. **1738 - दुरई सराय की संधि :-**
   - सम्पूर्ण मालवा, नर्मदा तथा चंबल नदी के बीच की भूमि बाजीराव को दे दी
   - 2.50 लाख रुपया बाजीराव को दिया
   - निजाम ने बाजीराव से पूर्ण पराजय मान ली

2) बुंदेलखंड विजय

1. बुंदेलखंड राज्य मुगलों की इलाहाबाद की सूबेदारी में था
2. मोबाइल सूबेदार मोहम्मद खां बंगश
3. बुंदेल नरेश छत्रसाल ने मराठों से सहायता मांगी
4. मराठों ने मुगलों द्वारा विजित सभी बुंदेलखंड के प्रदेशों को छीन लिया तथा छत्रसाल को वापस कर दिया
5. छत्रसाल ने पेशवा की शान में एक दरबार का आयोजन किया
6. प्रतिवर्ष 33 लाख रुपए का राजस्व

4) मालवा विजय

1. 1728 ईस्वी में मालवा पर मराठों ने अदाजी पवार तथा मल्हार राव के नेतृत्व में आक्रमण किया
2. यहां के सूबेदार गिरधर बहादुर को अमझेरा के युद्ध में पराजित किया

5) बसीन की सन्धि

1. यूरोपीय शक्ति के विरुद्ध बसीन की विजय मराठों की पहली जीत थी
2. मराठों ने 1739 में चिमना जी के नेतृत्व में बसीन को पुर्तगालियों से छीन लिया साथ ही सालसेट पर भी अधिकार कर लिया
3. मूल्यांकन :-
   - पेशवा की श्रेष्ठता को स्थापित किया
   - शम्भाजी द्वितीय को परास्त करके शाहू से उसकी प्रतिद्वंदिता को समाप्त किया
   - निजाम को निरंतर परास्त किया
   - कोंकण में शाहू की शक्ति को स्थापित किया और मराठा शक्ति को पहली बार उत्तर भारत के उपजाऊ भू प्रदेश में फैला दिया गया
   - गुजरात, मालवा, बुंदेलखंड आदि पर मराठों की सत्ता स्थापित हुई और मराठों के आक्रमण दिल्ली तक होने लगे

- अपने 20 वर्ष के कार्यकाल में पेशवा बाजीराव ने मराठों को भारत की सर्वश्रेष्ठ शक्ति बना दिया

NOTE

1739
- 1.नादिर शाह (ईरान का नेपोलियन) का भारत पर आक्रमण | Nadir Shah (Napoleon of Iran) invaded India
- 2. करनाल का युद्ध | Battle of Karnal (1739)
  - नादिरशाह | Nadirshah
  - मुगल मोहम्मदशाह | Mughal Mohammad Shah
- 3. तख्ते ए ताऊस + कोहिनूर हीरा + 70 करोड़ संपत्ति | Takhte- e -Taus + Kohinoor diamond + 70 crore assets

7.3) बालाजी बाजीराव (1740-61)

1. बाजीराव प्रथम के पुत्र तथा शाहू द्वारा नियुक्त मराठा पेशवा
2. इन्हें नानासाहेब भी कहा जाता है
3. संगोला की संधि (14जनवरी 1750)
   - पक्ष - छत्रपति राजाराम द्वितीय तथा पेशवा बालाजी बाजीराव
   - प्रावधान -
     - ✓ राज्य के सभी प्रमुख विभाग छत्रपति ने पेशवा को सौंप दिया
     - ✓ छत्रपति राज्य का संवैधानिक प्रधान माना गया और सतारा में उसके निवास की व्यवस्था कर दी गई
4. **पानीपत का तृतीय युद्ध (14 जनवरी 1761)**

1) पक्ष :-
- अफगानी आक्रांता अहमद शाह अब्दाली
- मराठा :
  - ✓ पेशवा - बालाजी बाजीराव
  - ✓ सेनापति - पेशवा पुत्र विश्वास राव
  - ✓ वास्तविक सेनापति - चचेरा भाई
  - ✓ सदाशिव राव भाऊ
  - ✓ तोपखाना - इब्राहिम गर्दी

2) कारण :-
- मराठों द्वारा मुगल सम्राट की सहायता
- मराठों द्वारा अब्दाली के नवाब से पंजाब छीनना
- मुगल सम्राट की दुर्बलता
- मराठा विस्तारवादी नीति
- अब्दाली की विस्तारवादी नीति

3) परिणाम :-
- मराठा पराजय
- मृत्यु - विश्वास राव, सदाशिवराव,तुकोजी सिंधिया

4) कथन :-
- जे एन सरकार :- महाराष्ट्र में सम्भवतः ही कोई ऐसा परिवार होगा जिसने कोई न कोई सम्बंधी न खोया हो तथा कुछ परिवारों का तो सर्वनाश हो गया
- काशीराज पंडित :- पानीपत का तृतीय युद्ध मराठों के लिए प्रलयकारी सिद्ध हुआ
- बालाजी बाजीराव को एक व्यापारी :- दो मोती विलीन हो गए, सत्ताईस सोने की मुहरें लुप्त हो गयी और चांदी तथा तांबे की तो पूरी गणना ही नहीं की जा सकती है
- आर बी सरदेसाई :- पानीपत के तृतीय युद्ध ने यह निश्चित नहीं किया कि भारत पर कौन शासन करेगा बल्कि यह निश्चित किया कि भारत पर कौन शासन नहीं करेगा

5) पराजय के कारण :-
- सामंतवादी व्यवस्था
- चौथ या मराठा लूटमार नीति
- मराठों सरकार में आपसी मतभेद
- मराठा अनुशासन व दृढ़ता में कमी

7.4) माधवराव प्रथम (1761-1772)

1. बालाजी बाजीराव का पुत्र व अत्यंत प्रतिभाशाली मराठा पेशवा
2. अल्प वयस्क होने के कारण चाचा रघुनाथ राव (राघोबा) का संरक्षण
3. सरदेसाई :- माधवराव, पेशवाओं में सबसे महान था
4. **चुनौतियां :-**
   - राघोबा व दीवान सखाराम बापू का विद्रोह
   - पानीपत तृतीय के बाद मराठा शक्ति व एकता का विखराव
   - हैदराबाद के निजाम से संघर्ष
   - दक्षिण में हैदर अली व अंग्रेजों का उदय
   - राजकोश का अभाव
5. **समाधान :-**
   - दो बार निजाम को पराजित किया
   - 1772 तक मैसूर को चार बार पराजित किया
   - 1768 में रघुनाथ राव को पराजित किया
   - मालवा और बुंदेलखंड को पुनः विजित किया
   - जाटों और रुहेलों के आधिपत्य को कम किया
   - मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय को पेंशनर सम्राट बनाया
6. **मृत्यु :-** 27 वर्ष की आयु में 1772 में मृत्यु
   - ग्रांड डफ :- उसकी मृत्यु मराठों के लिए पानीपत की पराजय से भी अधिक हानिकारक सिद्ध हुई
   - सरदेसाई :- माधवराव प्रथम की असामयिक मृत्यु मराठों के लिए पानीपत के युद्ध से भी महंगी पड़ी

7.5) नारायण राव (1772-1773)

1. माधवराव की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई नारायणराव पेशवा बना,
2. 1773 ई. में उसके चाचा रघुनाथराव ने पेशवा बनने के लिए नारायणराव की हत्या कर दी

7.6) माधवराव - II (1774-1795)

1. नारायणराव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र माधवराव नारायण पेशवा बना।
2. नाना फड़नवीस के नेतृत्व में मराठा सरदारों ने मराठा राज्य की देखभाल के लिए बारा भाई कौंसिल की नियुक्ति हुई
3. रघुनाथराव पूना से भागने पर विवश हो गया और बम्बई जाकर नाना फड़नवीस के विरुद्ध अंग्रेजों से सहायता (सूरत की संधि) माँगी

7.7) बाजीराव द्वितीय (1796-1818)

1. यह रघुनाथराव का पुत्र था। नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद जिन मराठा नेताओं के हाथों में शक्ति रही, उनमें पेशवा बाजीराव द्वितीय, दौलतराव सिंधिया व जसवंतराव होल्कर प्रमुख थे
2. पेशवा बाजीराव द्वितीय और दौलतराव सिंधिया ने जसवंतराव होल्कर के भाई बिठूजी की निर्मम हत्या कर दी गई
3. होल्कर ने पूना पर आक्रमण कर पेशवा व सिंधिया की सेनाओं को 1802 ई. में हृदयसर नामक स्थान पर पराजित किया तथा पूना पर अधिकार कर लिया। उसने अमृत राव के पुत्र विनायक राव को पूना की गद्दी पर बैठा दिया
4. बाजीराव द्वितीय ने भाग कर बसीन में शरण ली थी तथा 31 दिसंबर, 1802 को अंग्रेजों से एक संधि कर ली, जिसे बसीन की संधि कहा जाता है।

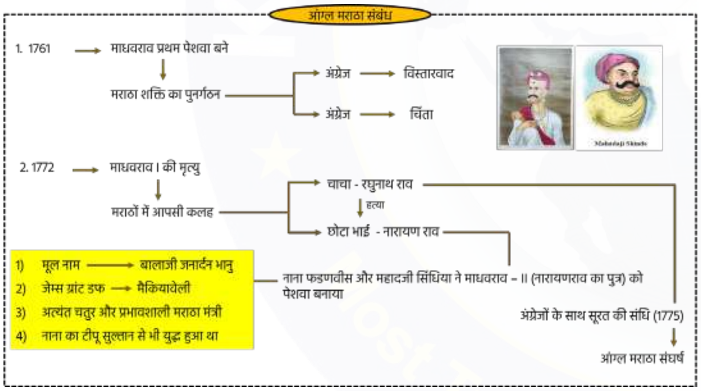

8) आंग्ल मराठा संघर्ष

8.1) प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775 -82)

1) कारण

1. **पेशवा पद हेतु आपसी संघर्ष :-**
   - 1772 में पेशवा माधवराव की मृत्यु के बाद उनके भाई नारायणराव पेशवा बने
   - चाचा रघुनाथ राव द्वारा नारायणराव की हत्या
   - नाना फडणवीस ने अल्पवयस्क माधवराव द्वितीय को पेशवा बनाया
   - राघोबा सहायता हेतु अंग्रेजों के पास गया
2. **रघुनाथ राव व अंग्रेजों के मध्य सूरत की संधि (7 मार्च 1775) :-**
   - अंग्रेज, रघुनाथराव (राघोबा) को पेशवा बनाने के लिए 2,500 सैनिकों की सहायता देंगे।
   - इन सैनिकों का व्यय रघुनाथराव देगा।
   - सालसेट, बेसीन और आसपास के टापू अंग्रेजों को दे दिये जायेंगे
   - सूरत तथा भड़ौंच के जिलों की आय का कुछ भाग भी अंग्रेजों को मिला करेगा।
   - मराठे, बंगाल और कर्नाटक पर आक्रमण करना बन्द कर देंगे।
   - यदि रघुनाथराव ने पूना-दरबार से कोई सन्धि की तो उसमें अंग्रेजों को सम्मिलित किया जायेगा।

2) महत्वपूर्ण घटनाएं

1. आरा के मैदान का युद्ध (1775) :- सूरत की सन्धि के तहत अंग्रेजी कर्नल कीटिंग बनाम पूना की सेना। इसमें पूना की आंशिक हार हुई
2. पुरंदर की संधि (1777) :- कलकत्ता परिषद ने सूरत संधि को अमान्य कर पूना दरबार से पुरंदर की संधि की -
   - अंग्रेजों और मराठों के मध्य शांति
   - कम्पनी रघुनाथराव का पक्ष नहीं लेगी
   - सालसेट कंपनी को मिलेगा
   - पूना सरकार अंग्रेजों को युद्ध के खर्च हेतु 12 लाख रुपया प्रदान करेगी
   - पूना दरबार रघुनाथ राव को 25000 प्रति माह पेंशन के रूप में देगा और वह गुजरात चला जाएगा
3. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम व मराठों की फ्रांसीसी नजदीकियों के कारण अंग्रेजों ने पुरंदर की संधि को तोड़कर पुनः सूरत की संधि को मान्य किया
4. तालेगांव का युद्ध (1779) :-
   - मराठों ने अंग्रेजी कर्नल कोकबर्न को हराया
   - परिणाम - अंग्रेजों की पराजय व अपमानजनक बड़गांव की संधि
     - ✓ अंग्रेजों ने समस्त विजित प्रदेश मराठों को लौटा दिए तथा राघोबा का पक्ष लेना बंद कर दिया
     - ✓ सिंधिया को भड़ोंच के राजस्व का कुछ हिस्सा देना स्वीकार किया गया
     - ✓ वारेन हेस्टिंग्स इस अपमान को आसानी से सहन नहीं कर सका
     - ✓ किंतु इसी समय ज्ञात हुआ कि हैदर अली और निजाम भी

अंग्रेजों के विरुद्ध मराठों की सहायता के लिए आ रहे हैं अतः इन खतरों के बीच अंग्रेजों ने महादजी सिंधिया की मध्यस्थता में सालाबाई की संधि हुई

5. सीपरी का युद्ध (1780) :-
   - वारेन हेस्टिंग्स ने एक अन्य सेना पोफाम के नेतृत्व में भेज दी थी उसने अगस्त 1780 में ग्वालियर पर अधिकार कर लिया
   - कैमक के नेतृत्व में एक अंग्रेजी सेना ने सिंधिया को सीपरी (आधुनिक शिवपुरी) के युद्ध में हराया
   - इन पराजय से सिंधिया घबरा गया उसने अंग्रेजों से संधि वार्ता आरंभ कर दी और पूना दरबार तथा अंग्रेजों के बीच मध्यस्थता करने का भी वचन दिया
   - 17 मई 1782 को सालाबाई की संधि हुई और युद्ध बंद हो गया

3) परिणाम का महत्व

सालाबाई की सन्धि - 17 मई 1782 को अंग्रेजों व मराठों के मध्य :-
- सालसेट तथा एलिफेंटा अंग्रेजों को प्राप्त हो गया।
- अंग्रेजों ने रघुनाथराव का पक्ष त्याग दिया और पेशवा की ओर से उसकी पेंशन की व्यवस्था की गयी।
- सिन्धिया को यमुना नदी के पश्चिम की अपनी समस्त भूमि पुनः प्राप्त हो गयी।
- बम्बई तथा दक्षिण में एक-दूसरे के जीते हुए भू-क्षेत्र वापस
- इस संधि के परिणामस्वरुप हैदरअली को अर्काट के नबाव से जीती गई भूमि छोड़नी पड़ी।

सालाबाई की संधि का महत्व :-
- इस युद्ध और संधि से अंग्रेजों को भूमि और साम्राज्य की दृष्टि से कुछ विशेष लाभ प्राप्त ना हो सका क्योंकि उन्हें केवल सालसेट ही प्राप्त हुआ था जबकि इस युद्ध से उनकी आर्थिक कठिनाइयां बहुत बढ़ गयी थीं
- डोडवेल के अनुसार सालबाई की संधि भारत में अंग्रेजी प्रभुसत्ता के इतिहास को एक नवीन मोड़ देने वाली थी
- इससे मराठों और कंपनी में अगले 20 वर्षों तक शांति रही और भारतीय राजनीति में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ा

8.2) द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-1805)

1) कारण

1. लॉर्ड वेलेजली की साम्राज्यवादी नीतियां :-
   - सहायक संधि व्यवस्था के तहत भारतीय राज्यों (निजाम, अवध) आदि पर नियंत्रण
   - 1801 में कर्नाटक, 1799 में तंजौर तथा 1800 में सूरत को कंपनी के राज्य में मिलाया
2. मराठा साम्राज्य में योग्य नेतृत्वकर्ता का अभाव :-
   - माधवराव द्वितीय के बाद अयोग्य बाजीराव द्वितीय (राघोबा का पुत्र) पेशवा बना
   - 1794 में महादजी सिंधिया की मृत्यु
   - 1795 में अहिल्याबाई होल्कर की मृत्यु
   - 1800 में नाना फडणवीस की मृत्यु
3. मराठों की आंतरिक कलह व हृदयसर का युद्ध (1802) :-
   - बाजीराव द्वितीय तथा दौलतराव सिंधिया द्वारा जसवंत राव होलकर के भाई बिठूजी जी की हत्या
   - हृदयसर के युद्ध में जसवंत राव ने पेशवा व सिंधिया की संयुक्त सेना को हराया
   - बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों से बसीन (बेसीन) की संधि की
4. बसीन की संधि (दिसंबर 1802) :- जसवंतराव होल्कर से हृदयसर के युद्ध में हारने के बाद पेशवा बाजीराव द्वितीय तथा लार्ड वेलेजली के मध्य –
   - पेशवा अपनी रक्षा के लिए अपने राज्यों में कम्पनी की एक सहायक सेना रखेगा
   - सेना के खर्च के लिए 26 लाख रुपये की आय का अपना एक क्षेत्र कम्पनी के हवाले कर देगा।
   - पेशवा ने सूरत पर अपना दावा त्याग दिया।
   - पेशवा किसी यूरोपीय को अंग्रेजों की आज्ञा के बिना अपने राज्य में नहीं रखेगा।
   - पेशवा भविष्य में किसी राज्य से अंग्रेजों की अनुमति के बिना युद्ध, सन्धि अथवा पत्र-व्यवहार नहीं करेगा।
   - निजाम तथा गायकवाड़ के साथ अपने झगड़ों के निपटारे में वह अंग्रेजों की मध्यस्थता स्वीकार करेगा।

Note :
- सिडनी ओवन :- कंपनी को अप्रत्यक्ष रूप से भारत का साम्राज्य मिला,
- मराठा संघ का प्रमुख नेता अंग्रेजों के अधीन हो गया, मराठा शक्ति की प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगा। जिससे मराठा सरदार भी औपचारिक रूप से अंग्रेजों के अधीन थे।

5. बसीन की सन्धि के परिणामस्वरूप सिंधिया और भोंसले का अंग्रेजों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा

2) युद्ध की प्रमुख घटनाएं

1. दक्षिण में लॉर्ड वेलेजली के भाई आर्थर वेलेजली ने कंपनी की सेनाओं का संचालन किया और उत्तर में जनरल लेक ने
2. आर्थर वेलेजली ने सिंधिया तथा भोंसले की संयुक्त सेनाओं को असायी (औरंगाबाद से 6 किमी उत्तर में) के युद्ध में परास्त
3. नवंबर में भोंसले की सेना की अरागांव (बुरहानपुर से लगभग 80 किलोमीटर पूर्व में) के युद्ध में पराजय हुई
4. जनरल लेक ने अगस्त 1803 में अलीगढ़ पर और सितंबर में दिल्ली पर अधिकार कर लिया
5. सबसे भीषण युद्ध अलवर के निकट लासवाड़ी में हुआ जिसमें सिंधिया की सेनाओं ने अद्भुत वीरता का परिचय दिया
6. सिंधिया तथा भोसले दोनों ने कंपनी से अलग-अलग संधिया कर ली

3) युद्ध का परिणाम

मराठा पराजय
- भोंसले से देवगांव की संधि (17 दिसम्बर, 1803)
- सिंधिया से सुर्जी अर्जुनगांव की संधि (30 दिसंबर 1803)

भोंसले से देवगांव की संधि (17 दिसम्बर, 1803)

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान 17 दिसम्बर, 1803 को रघुजी भोंसले एवं कम्पनी के बीच यह संधि हुई :-
- भोंसले ने कटक एवं बालासोर छोड़ा
- मद्रास तथा बंगाल को प्रेसीडेंसियों को मिलाने के लिए पूर्वी समुद्री किनारे को कम्पनी को सौंपा
- अपनी सेवा से सभी विदेशियों को निकाल देना।
- निजाम एवं पेशवा के साथ मतभेदों को सुलझाने के लिए अंग्रेजों की मध्यस्थता
- अपने दरबार में अंग्रेज रेजीडेण्ट रखना। (माउंट स्ट्राट एलफिन)

सिंधिया से सुर्जी अर्जुनगांव की संधि (30 दिसंबर 1803)

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान 30 दिसंबर 1803 को दौलतराव सिंधिया एवं कम्पनी के बीच यह संधि हुई :-

- गंगा और यमुना नदी के बीच की अपनी समस्त भूमि तथा जयपुर, जोधपुर और गोहद के उत्तर की सम्पूर्ण भूमि अंग्रेजों को दे दी
- अहमदनगर, भड़ौंच, अजन्ता तथा गोदावरी नदी के बीच की समस्त भूमि अंग्रेजों को दे दी;
- मुगल बादशाह, पेशवा, गायकवाड़ और निजाम से अपने समस्त अधिकारों को वापस ले लिया
- किसी भी यूरोपियन, अमरीकन या अंग्रेजों के शत्रु-राज्य के व्यक्ति को अंग्रेजों की स्वीकृति के बिना अपनी सीमाओं में न रखने का वायदा
- एक अंग्रेज रेजीडेण्ट रखना स्वीकार किया। (प्रथम अंग्रेज रेजीडेण्ट मेजर माल्कम)
- बेसीन की सन्धि को स्वीकार कर लिया

मराठा शक्ति और ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ संधि के स्थान का सही युग्म है – (IAS-2004)
पेशवा – बसीन की संधि 1802 - बाज़ीराव-II
होल्कर – राजघाट की संधि 1805 - यशवंतराव
भोंसले – देवगांव की संधि 1803 - रघुजी
सिंधिया – सुर्जी अर्जुन गांव की संधि 1803 - दौलतराव
- मराठों के साथ की गई संधियों का सही क्रम है – (IAS-2002)

4) युद्ध का महत्व

1. द्वितीय अंग्रेज मराठा युद्ध ने कंपनी को सचमुच भारत की सर्वोच्च सत्ता बना दिया
2. उत्तर भारत की दो प्रमुख नगर आगरा और दिल्ली, कंपनी के अधिकार में आ गए
3. मद्रास और बंगाल के प्रदेशों के बीच संपर्क स्थापित हो गया
4. वेलेजली :- अंग्रेज अब पूर्णता भारत के स्वामी हो और हमारी शक्ति को कोई नियंत्रित नहीं कर सकता शर्त यह है कि हम उसके स्थायित्व के लिए समुचित प्रयत्न करते रहें
5. इस युद्ध ने सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर दिया था मराठा सरदारों ने पराजय स्वीकार नहीं की और उनके तथा कम्पनी के बीच एक बार पुनः टक्कर हुई

क्र.सं.	क्षेत्रीय शक्तियाँ	संधि	वर्ष	महत्वपूर्ण बिंदु
1.	भोसले	देवगाँव की संधि	1803 ई.	अंग्रेजों को कटक तथा वर्धा नदी का पश्चिमी भाग प्राप्त हुआ।
2.	सिंधिया	सुर्जीअर्जन गाँव की संधि	1803 ई.	गंगा यमुना के दोआब प्रदेश, राजस्थान के कुछ क्षेत्र, अहमदनगर का दुर्ग, भड़ौच, गोदावरी और अजंता घाट का क्षेत्र अंग्रेजों को प्राप्त हुआ।
3.	होल्कर	राजपुरघाट की संधि	1805 ई.	चम्बल नदी के उत्तरी प्रदेश और बुंदेलखंड का क्षेत्र अंग्रेजों को प्राप्त हुआ।

8.3) तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-1818)

1) कारण

1. लार्ड मोरिया / लार्ड हेस्टिंग्स की साम्राज्यवादी नीतियां
2. पिंडारियों व पठानों द्वारा कम्पनी की लूट मार
3. मराठों सरदारों पर थोपी गई अपमानजनक संधियां :-
   - सिंधिया के साथ 5 नवंबर 1817 में ग्वालियर की संधि की गई, जिसके अनुसार उसने पिंडारियों को कुचलने में अंग्रेजों के समर्थन का वादा किया और राजपूत राज्यों पर से अपना प्रभाव हटाया
   - पेशवा के साथ 13 जून 1817 ई में पूना की संधि की गई जिसके अनुसार पेशवा ने मराठा संघ की अध्यक्षता त्याग दी और कुछ सामरिक महत्व के क्षेत्र अंग्रेजों को दे दिए
   - 27 मई 1816 में नागपुर के भोसले ने सहायक संधि स्वीकार कर ली

पिंडारी :

- पिंडारी मराठा सेना में अवैतनिक सैनिकों के रूप में अपनी सेवा देते थे। ये लूटमार करने वाले दलों के रूप में होते थे जिनकी नियुक्ति बाजीराव-प्रथम के समय शुरू हुई थी
- पानीपत के युद्ध में मराठों की पराजय के बाद ये सिंधिया तथा होल्कर की सेना में थे, इनके प्रमुख नेता वासिल मुहम्मद, हीरू, चीतू, अमीर खां, करीम खां आदि थे।
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान लॉर्ड हेस्टिंग्स के द्वारा थॉमस हिसलोप की सेना के नेतृत्व में पिंडारियों का दमन किया गया।

2) युद्ध की प्रमुख घटनाएं व परिणाम

1. किरकी में पेशवा की, सीताबाल्दी में भोंसले की और महीदपुर में होल्कर की सेनाओं को हराकर अंग्रेजों ने मराठों की सैन्य शक्ति समाप्त कर दी
2. 6 जनवरी 1818 में होल्कर ने मंदसौर की संधि पर हस्ताक्षर किए जिससे उसने राजपूत राज्यों पर से अपना नियंत्रण समाप्त कर लिया तथा सहायक संधि स्वीकार कर लिया
3. पेशवा बाजीराव द्वितीय अभी लड़ता रहा लेकिन कोरेगांव (जनवरी 1818) और अष्टी (फरवरी 1818) की लड़ाईयों में हार जाने के बाद उसने 3 जून 1818 को सर जॉन मैल्कम के सामने आत्मसमर्पण कर दिया

4. अंग्रेजों ने पेशवा पद को ही समाप्त घोषित कर दिया और उसे 8लाख वार्षिक पेंशन दे कर कानपुर के निकट बिठूर में रहने दिया
5. सातारा को एक छोटा राज्य बना दिया गया और मराठों की संस्तुष्टि हेतु उसको शिवाजी के वंशज प्रताप सिंह के अधीन कर दिया गया

पठान :

- इसी प्रकार का एक झुण्ड पठानों का था। उनके नेता अमीरखाँ और मुहम्मद शाहखाँ थे।
- पठानों के झुण्डों का रूप कुछ संगठित सेनाओं जैसा था और उनके पास अच्छे हथियार भी थे।
- उनका कार्यक्षेत्र राजस्थान तक सीमित था।
- 1799 ई. में अमीरखाँ जसवन्तराव होल्कर से जा मिला था और उसकी मृत्यु के बाद भी होल्कर राज्य की राजनीति पर उसका प्रभाव था।

9) मराठा असफलता के कारण

1. परस्पर विश्वास व एकता का अभाव :-
    - मराठा एक संघ राज्य था नाम मात्र की एकता पेशवा माधवराव प्रथम के समय तक रही
    - सिंधिया, होल्कर, भोंसले और गायकवाड जैसे मराठा सरदार स्वतंत्र शासक की तरह व्यवहार करने लगे
2. दोषपूर्ण आर्थिक संगठन :-
    - मराठा साम्राज्य महाराष्ट्र के साधनों पर नहीं अपितु बलपूर्वक एकत्रित की गई धनराशि पर निर्भर था
    - 1804 में दक्कन में एक भीषण अकाल पड़ा जिससे अनंत जानमाल की हानि हुई
    - उद्योग तथा विदेशी व्यापार अभाव
3. कूटनीतिक असफलता :- भारत के मुसलमान शासकों, राजपूत और जाट शासकों को अपने साथ नहीं मिला सके बल्कि इसके विपरीत अपने दुर्व्यवहार से उन्होंने उन्हें असंतुष्ट ही किया
4. अन्य कारण :-
    - चौथ व सरदेशमुखी से जनता व पड़ोसी राज्यों का असहयोग
    - आधुनिक सैन्य व्यवस्था व प्रशिक्षण का अभाव
    - जागीरदारी प्रथा
    - राष्ट्रीयता की भावना का अभाव
    - सुदृढ़ शासन व्यवस्था व केंद्रीयकरण का अभाव
    - अंग्रेजों की श्रेष्ठता व आयोग्य नेतृत्व

युद्ध	अंग्रेज	कारण	परिणाम
प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82) पेशवा माधवराव – II	वॉरेन हेस्टिंग्स	1) पेशवा पद को लेकर मतभेद (माधवराव व रघुनाथ राव) 2) अंग्रेजों का वाणिज्यिक व राजनीतिक लाभ	1) 1782 - सालबाई की संधि (हेस्टिंग्स और फडणवीस) 2) 1775 - सूरत की संधि (रघुनाथ राव और अंग्रेज) 3) 1779 - वडगाँव की संधि (मराठा और अंग्रेज)
द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-05) पेशवा बाजीराव II	लॉर्ड वैलेस्ली	1) पेशवा बाजीराव द्वितीय द्वारा अंग्रेजों के साथ बसीन की संधि (सहायक संधि) करना 2) नेपोलियन का उदय व फ्रांसीसी आक्रमण का भय	1) 1803 - भोसले - देवगांव की संधि 2) 1803 - सिंधिया - सुर्जीअर्जन गाँव की संधि 3) 1805 - होलकर - राजपुर घाट की संधि
तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-19) पेशवा बाजीराव द्वितीय	लॉर्ड हेस्टिंग्स	1) लॉर्ड हेस्टिंग्स के द्वारा पिंडारियों की शक्ति का दमन 2) पिंडारी पहले मराठा सेना का हिस्सा थे, जो स्वतंत्र रूप से लूटपाट करने लगे 3) सिंधिया (1817 - ग्वालियर की संधि) और होलकर (181 8- मंदसौर की संधि) के साथ अपमानजनक संधि	1) पेशवा बाजीराव द्वितीय को कीर्कि के युद्ध में परास्त करके पुणे पर अधिकार 2) भोंसले को सीताबर्डी और होलकर को महिदपुर में पराजित किया 3) मराठा संघ का विघटन

5) सिंध में ब्रिटिश विस्तार (1843)

1. प्रथम आंग्ल अफगान युद्ध (1839- 42)
    - सिंध ने अंग्रेजों की मदद की
2. 1843 :- चार्ल्स नेपियर ने सिंध का विलय किया
3. इतिहासकारों और राजनीतिज्ञों ने इसे "निंदनीय'' बताया
4. चार्ल्स नेपियर :- हमें सिंध को अपने अधीन करने का कोई अधिकार नहीं है किंतु फिर भी हम ऐसा करेंगे और यह एक बहुत लाभदायक उपयोगी एवं मानवता पूर्ण नीचता होगी

Maull and Fox
LORD ELLENBOROUGH
Governor-General from 1841 to 1844, during the Afghan troubles.

6) सिख साम्राज्य तथा पंजाब पर ब्रिटिश आधिपत्य

5.1) सिख धर्म II Sikhism

1. गुरु नानक देव (1469-1539)
2. गुरु अंगद (1504-1552)
3. गुरु अमरदास (1479-1574)
4. गुरु रामदास (1534-1581)
5. गुरु अर्जुन (1563-1606)
6. गुरु हरगोविंद (1595-1644)
7. गुरु हरराय (1630-1661)
8. गुरु हरकिशन (1656-1664)
9. गुरु तेग बहादुर (1621-1675)
10. गुरु गोविंद सिंह (1675-1699)

1) गुरुनानक देव (1469-1539)

1. सिख धर्म के संस्थापक व प्रथम गुरु
2. जन्म :- 15 अप्रैल 1469 ननकाना साहिब, तलवंडी (पाकिस्तान)
3. माता व पिता :- तृप्ता देवी व कालू जी
4. पत्नी :- सुलक्षणा देवी
5. प्रभाव :- बाबा फरीद
6. मृत्यु :- 22 सितंबर 1539, करतारपुर (डेरा बाबा)
7. **मुख्य कार्य :-**
   - सिख धर्म की स्थापना
   - उदासीस :- देश की पांच बार यात्रा
   - ईश्वर को निराकार व अकाल पुरुष माना
   - पुनर्जन्म व कर्म का सिद्धान्त
   - कीर्तन द्वारा उपदेश
   - लंगर व्यवस्था के आरंभकर्ता
8. **अन्य तथ्य :-**
   - पानीपत के प्रथम युद्ध के प्रत्यक्षदर्शी
   - बाबर, हुमायूं, इब्राहिम लोदी, चैतन्य महाप्रभु व कबीरदास के समकालीन
   - "काली बेईं" नदी के किनारे ज्ञान प्राप्ति
   - इनके उपदेशों का संलग्न गुरु अर्जुन के आदिग्रन्थ के जपुजी में संकलित किया गया

2) गुरु अंगद (1539-1552)

1. सिखों के दूसरे गुरु व गुरु नानक के शिष्य
2. मूलनाम :- लहना
3. मुख्य कार्य :-
   - लंगर व्यवस्था को स्थायी बनाया
   - "गुरुमुखी" लिपि का अविष्कार
   - खादुर में गुरु गद्दी का निर्माण
   - हुमायूं ने पंजाब में भेंट की

3) गुरु अमरदास (1552-1574)

1. सिखों के तीसरे गुरु
2. मुख्य कार्य :-
   - 22 गद्दियों की स्थापना की और प्रत्येक गद्दी पर महंत की नियुक्ति
   - सिखों के लिए नई विवाह पद्धति "लवन" को प्रारंभ किया
3. अकबर के समकालीन
4. अकबर स्वयं गोइंदवाल जाकर गुरु अमरदास से भेंट की और गुरु की पुत्री बीबी भानी को सम्मान स्वरूप कुछ गांव प्रदान किए थे

4) गुरु रामदास (1574-1581)

1. सिक्खों के चौथे गुरु तथा गुरु अमरदास के शिष्य व दामाद
2. अकबर ने इन्हें 500 बीघा भूमि प्रदान की, जहां गुरु रामदास द्वारा अमृतसर की स्थापना की गई
3. हरमिंदर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का निर्माण प्रारंभ किया
4. इन्होंने अपने तीसरे पुत्र अर्जुन देव को अपना उत्तराधिकारी बना कर गुरु पद को पैतृक बना दिया

5) गुरु अर्जुन देव (1581-1606)

1. पांचवे सिक्ख गुरु तथा गुरु रामदास के पुत्र
2. मुख्य कार्य :-
   - 1589 :- अमृतसर सरोवर के मध्य हरमिंदर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का निर्माण
   - शिलान्यास :- कादरी संप्रदाय के संत मियां मीर
   - तरनतारन, करतारपुर एवं गोविंदपुर नामक शहरों का बसाव
   - निर्माण कार्य के निमित्त धन एकत्रित करने वाले अनुयायियों को रामदासी कहा जाता था कुछ लोगों उन्हें मसंद वा मेउरा की संज्ञा से अनुमोदित करते थे
   - अर्जुनदेव अपने अनुयायियों से अनिवार्य आध्यात्मिक कर लेने लगे थे
   - गुरु ग्रंथ साहिब/आदिग्रंथ का संपादन - इसमें 5 सिख गुरुओं के, 18 हिंदू संतो के उपदेशों का संग्रह किया गया
   - सूफी संत बाबा फरीद, बौद्धमतावलंबी जयदेव, कबीरदास, रैदास, नामदेव एवं रामानंद जैसे संतों का उल्लेख आदि ग्रंथ में किया गया है
3. अकबर के समकालीन
4. जहांगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो को अर्जुन देव ने आशीर्वाद तथा कुछ आर्थिक सहायता प्रदान की थी कारण स्वरूप मुगल शासक जहांगीर ने कठोर यात्रा देकर उन्हें 30 मई 1606 में बंदी गृह में मार डाला था

6) गुरु हर गोविंद (1606-1644)

1. छटवें सिख गुरु
2. मुख्य कार्य :-
   - सिखों को राजसत्ता के प्रतीकों को धारण करने की व्यवस्था दी
   - सिखों को एक लड़ाकू जाति के रूप में परिवर्तित किया
   - अकाल तख्त का निर्माण
   - दरबार में नगाड़ा बजाने की व्यवस्था
   - अमृतसर की किलेबंदी
   - शिष्यों से धन के बदले शस्त्र एवं घोड़े प्राप्त किए
3. जहांगीर ने 2 वर्ष तक ग्वालियर के किले में कैद रखा था
4. कश्मीर में किरतपुर नामक नगर बसाया था और वहीं पर 1644 में उनकी मृत्यु भी हो गई

7) गुरु हरराय (1644-1661)

1. शाहजहां के पुत्रों के उत्तराधिकार में दारा शिकोह के पक्षधर थे
2. अपना उत्तराधिकारी अपने छोटे पुत्र हरकिशन को बनाया

8) गुरु हरकिशन (1661-64)

1. गुरु हरराय के छोटे पुत्र एवं रामराय के भाई थे
2. रामराय ने देहरादून में अपनी एक अलग गद्दी स्थापित की थी। उनके अनुनायियों को रामरायी कहा जाता था

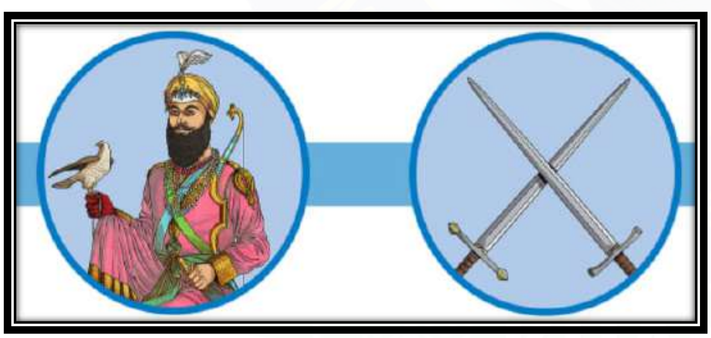

9) गुरु तेगबहादुर (हिन्द की चादर : 1664-1675)

1. सिक्खों के छटवें गुरु तथा गुरु हरगोविंद के पुत्र
2. मुख्य कार्य :-
   - असोम में गुरु टीला
   - अमृतसर के माखोवल में गद्दी
   - मुगलों के विरुद्ध करतारपुर का युद्ध
   - औरंगजेब की धार्मिक नीतियों का विरोध
   - आनन्दपुर की स्थापना
3. मृत्यु :- 1675 में औरंगजेब द्वारा हत्या
   - दिल्ली में शीशगंज गुरुद्वारा

10) गुरु गोविंद सिंह (1675-1708)

1. सिक्खों के दसवें व अंतिम गुरु तथा गुरु तेग बहादुर के पुत्र, इनके बाद गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मान लिया गया
2. जन्म :- 22 दिसम्बर 1666, पटना (बिहार)
3. मुख्य कार्य :-
   - 1699 में दल खालसा की स्थापना
   - सिखों को सैनिक संप्रदाय खालसा में परिवर्तित
   - सिखों के लिए 5 ककार - केश, कच्छा, कंघा, कड़ा व कृपाण को अनिवार्य कर दिया
   - पाहुल नामक एक त्यौहार
   - पाओन्टा (हिमाचल प्रदेश) नामक स्थान की स्थापना
   - दसम ग्रंथ व कृष्ण अवतार नामक ग्रंथों की रचना
     - ✓ आत्मकथा :- विचित्रनाटक
     - ✓ फारसी में जफरनामा (औरंगजेब से पत्रव्यवहार)
   - लौहगढ़, फतेहगढ़, आनंदगढ़ और केशगढ़ के किले
   - पुरुष सिखों को सिंह और महिला सिखों कौर नामक टाइटल धारण करने को कहा :- मैं चार वर्णों को सिंह बना दूंगा और मुगलों को भारत से मिटा दूंगा
   - बहादुर शाह ने गुरु गोविंद सिंह को 5000 जात तथा 5000 सवार का मनसब प्रदान किया था
   - 1708 में नांदेड़ (महाराष्ट्र) नामक स्थान पर एक पठान अजीम खान ने उनकी हत्या कर दी
   - उनकी मृत्यु के बाद गुरु की परंपरा समाप्त हो गई तथा सिखों का नेतृत्व बंदा बहादुर ने संभाला

4) इनके चार बेटे थे

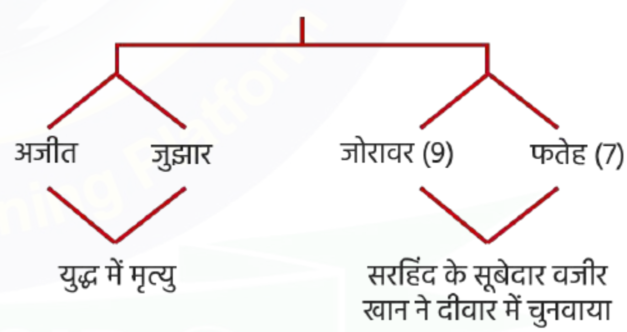

बंदा बहादुर (1708-1716)

1. गुरु गोविंद सिंह के बाद सिख नेतृत्व
2. मूल नाम :- लक्ष्मण देव / माधव दास बैरागी
3. नांदेड़ में गुरु गोविंद सिंह से मुलाकात
4. राजधानी :- लौहगढ़
5. नारा :- फ़तहदर्शन
6. मुख्य कार्य :-
   - सिख राज्य की स्थापना
   - कत्लगढ़ी में हजार मुगलों की हत्या
   - गुरुनानक व गुरु गोविन्द सिंह के नाम के सिक्के
7. मृत्यु :- 1716 में गुरुदासपुर युद्ध के बाद फरुखसियर द्वारा हत्या

2) आरंभिक सिख साम्राज्य

बंदा बहादुर - सिख साम्राज्य की स्थापना
↓
1716 में बंदा बहादुर की मृत्यु
↓
पुनः सिख कमजोर
↓
नादिरशाह आक्रमण (1739) व पानीपत तृतीय (1761) के बाद पुनः उत्थान
↓
1748 में कर्पूर सिंह द्वारा दल खालसा का निर्माण
↓
1773 में दल खालसा का 12 मिसलों में विभाजन
↓
1) अहलूवालिया 2) निशानवाला 3) फुलकिया
4) रामगढ़िया 5) सुकरचकिया → संस्थापक - चरतसिंह; → महाराजा रणजीत सिंह
↓
महाराजा रणजीत सिंह द्वारा पुनः एकीकरण

3) महाराजा रणजीत सिंह (1780-1839)

3.1) सामान्य परिचय

1. जन्म :- 13 नवंबर 1780 (सुकरचकिया मिसल)
2. पिता :- महासिंह
3. माता :- राजकौर
4. राजधानी :- लाहौर
5. धार्मिक राजधानी :- अमृतसर
6. मृत्यु :- 1839

3.2) विजय अभियान

1. 1798/99 :- अफगान शासक जमानशाह की 12 तोपे चिनाब नदी से निकालकर काबुल भेजी परिणामस्वरूप जमान ने लाहौर व राजा की उपाधि प्रदान की
2. 1805 :- रणजीत सिंह ने अमृतसर को भंगी मिसल से छींन लिया
3. 1807 :- अम्बाला, थानेश्वर, नारायणगढ़ और फिरोजपुर
4. 1808 :- फरीदकोट, मालेरकोटा तथा अम्बाला
5. 25 अप्रैल 1809 :- अंग्रेजों के साथ अमृतसर की संधि (फ्रांस का भय) - सतलज नदी को सीमा बनाया
6. 1811 – 1836 :- कश्मीर(सुपेर का युद्ध), अटक, डेराजाट, पेशावर, लद्दाख, शिकारपुर(सिंध का द्वार)
7. 1814 :- अफगान शासन शाहशुजा से कोहिनूर हीरा मिला
8. 1831 :- लॉर्ड विलियम बैंटिक की मध्यस्थता से सिंध व महाराजा के मध्य रोपड़ की संधि
9. 1838 :- प्रथम अफगान युद्ध

3.3) अमृतसर की संधि (1809)

अंग्रेजों को उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत से नेपोलियन के आक्रमण का भय था इस कारण चार्ल्स मैटकॉर्प ने 1809 में रणजीत सिंह के साथ अमृतसर की संधि की :

1. सतलज नदी को रणजीत सिंह के राज्य की दक्षिणी सीमा मान लिया गया
2. लुधियाना में अंग्रेजी सेनाएं रखी गयीं
3. अंग्रेजों ने सतलज के उत्तर की ओर हस्तक्षेप नहीं करने का वायदा किया
4. रणजीत सिंह ने सतलज के पूर्व के राज्यों में हस्तक्षेप नहीं करने का

वायदा किया

Note :

- अफगानिस्तान का शासक दोस्त मुहम्मद रणजीतसिंह से पेशावर छीनना चाहता था तथा इस कार्य में वह अंग्रेजों की सहायता का इच्छुक था। यद्यपि रूस के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए दोस्त मुहम्मद से सन्धि करना अंग्रेजों के लिए अत्यन्त आवश्यक था किन्तु रणजीतसिंह को भी वे लोग क्रुद्ध करना नहीं चाहते थे।
- इसलिए दोस्त मुहम्मद को सहायता देना अंग्रेजों ने स्वीकार नहीं किया। अतः अब दोस्त मुहम्मद ने रूस से मित्रता स्थापित कर ली तो आकलैण्ड ने उसे पदच्युत करने के लिए षड्यन्त्र रचा तथा शाहशुजा को अफगानिस्तान का अमीर बनाने के लिए 1838 ई0 में एक त्रिपक्षीय सन्धि कर ली। इस सन्धि में महाराजा रणजीतसिंह भी सम्मिलित थे। इस सन्धि के पश्चात् ही प्रथम अफगान युद्ध प्रारम्भ हो गया।

3.4) शासन व्यवस्था

1) केंद्रीय प्रशासन

1. एक उदार शासक
2. राज्य को "सरकार ए खालसा" कहा
3. सहायता हेतु 5 मंत्रियों की नियुक्ति
   - वजीर - ध्यानसिंह
   - वित्त - दीनानाथ व भगवानदास
   - विदेश - फकीर अजीमुद्दीन
4. 12 विभाग :- इसमें 4 विभाग प्रमुख थे –
   - दफ्तर-ए-आबवाब-उल-माल - भू-राजस्व
   - दफ्तर-ए-तोहिजात - राज परिवार के व्यय और व्यवस्था
   - दफ्तर-ए-मवाजात - कर्मचारियों के वेतन का विवरण
   - दफ्तर-ए-रोजनामचा - राजा के प्रतिदिन के खर्चों का विवरण

2) प्रांतीय व्यवस्था

संपूर्ण राज्य को चार प्रांतो में विभाजित किया था - लाहौर, मुल्तान, कश्मीर और पेशावर

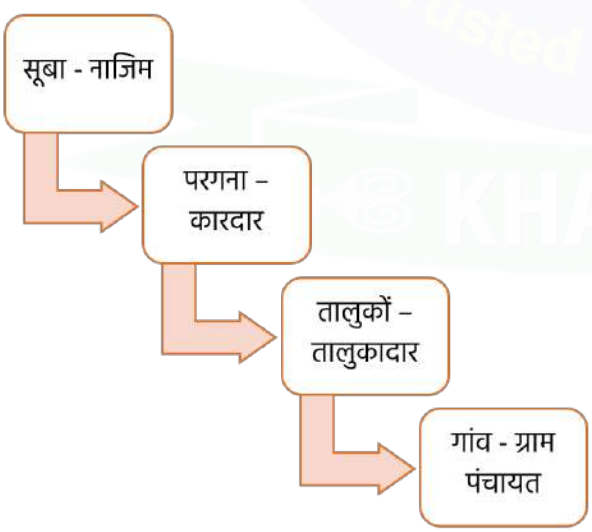

3) राजस्व

1. भूमिकर राज्य की आमदनी का प्रमुख स्त्रोत था
2. भूमिकर उत्पादन के 33 से लेकर 40% तक होता था
3. 1824-34 ई तक कनकूत व्यवस्था थी, जिसके तहत कर वसूली उपज को आधार बनाकर नकद ली जाती थी
4. आय के दो अन्य साधन सीमा शुल्क व आबकारी कर थे।

4) सैन्य प्रशासन

1. यूरोपीय पद्धति पर आधारित सुप्रशिक्षित सेना का निर्माण
2. सेना :-
   - फ़ौज ए खास (नियमित सेना)
   - फौज ए बेकवायद (अनियमित सेना)
3. अश्वारोही सेना :- फ्रांसीसी सेनापति एलॉर्ड द्वारा प्रशिक्षित
4. पैदल सेना :- इटालियन सेनापति बंतुरा द्वारा प्रशिक्षण
5. तोपखाना :- फ्रांसीसी जनरल कोर्ट एवं कर्नल गार्डनर द्वारा संगठित

5) रणजीत सिंह - आंग्ल सम्बंध

रणजीत सिंह ने अंग्रेजों से अच्छे संबंध बनाए रखने का प्रयत्न किया जबकि अंग्रेजों ने उनके प्रति मित्रता के भाव नहीं रखे । जिन्हें निम्न आधारों पर समझा जा सकता है :-

- रणजीत सिंह द्वारा अमृतसर की संधि का पालन
- आंग्ल नेपाल तथा आंग्ल बर्मा युद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध सहायता ना देना
- नागपुर के भोसले और होलकर को अंग्रेजों के विरुद्ध सहायता ना देना
- 1838 में शाह शुजा के साथ त्रिदलीय संधि करना
- सिंध पर अपने युद्ध अभियान को रोकना

जबकि अंग्रेजों ने फिरोजपुर पर अधिकार किया तथा वहाबी जाति को रणजीत सिंह के विरुद्ध सहायता दी। कुछ इतिहासकार रणजीतसिंह की इस नीति को यथार्थवादी और उचित बताते हैं जबकि कुछ दुर्बल और आदूरदर्शी।

उचित कहने वाले इतिहासकारों का मानना है की रणजीत सिंह को अंग्रेजों की शक्ति का आभास था जबकि आदूरदर्शी मानने वाले इतिहासकारों का कहना है की उसे नेपाल मराठा और अन्य भारतीय राजाओं से संधि करके अंग्रेजों को

परास्त करने का प्रयास करना चाहिए था क्योंकि अवसर आने पर अंग्रेज पंजाब पर आक्रमण जरूर करते।

4) दिलीप सिंह (1843- 1849)

1. अल्प वयस्क शासक :- संरक्षिका (महारानी जिन्द कौर)
2. चिलयावाला का युद्ध (1849) :- लॉर्ड डलहौजी
3. प्रथम और द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध
4. 1849 :- पंजाब पर शासन करने हेतु डलहौजी ने तीन लोगों की परिषद बनाई

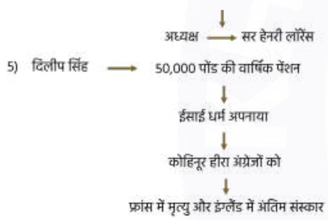

5) महारानी जिन्द कौर (1817 – 1 अगस्त 1863)

1. महारानी जिन्द कौर :- 1843 से 1846 तक सिख साम्राज्य की संरक्षिका थीं।
2. वे महाराजा रणजीत सिंह के सबसे छोटी महारानी थीं।
3. अन्तिम महाराजा दिलीप सिंह उनके ही पुत्र थे।
4. वे अपने सौन्दर्य, ऊर्जा तथा उद्देश्य के प्रति समर्पण के लिये प्रसिद्ध थीं। इसलिये उन्हें 'रानी जिन्दा' भी कहते थे।
5. उनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण अंग्रेजों का उनसे डरना है।
6. अंग्रेज उनको पंजाब का मेस्सालिना (Messalina) कहा करते थे जिनके विद्रोह को दबाना अत्यन्त कठिन था।

6) पंजाब का महत्व

1. रणजीत सिंह द्वारा पंजाब में शक्तिशाली राज्य की स्थापना
2. पश्चिम में इसकी सीमाएं दिल्ली तक पहुंच गई, अतः कंपनी के लिए पंजाब सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण
3. नेपोलियन ने यूरोप में ऑस्ट्रिया, हंगरी साम्राज्य तथा जर्मनी के प्रशा राज्य के विरुद्ध विजय अर्जित की और वह तुर्की तथा ईरान में होकर भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाने लगा
4. अतः भारत में कंपनी के राज्य के लिए खतरा उत्पन्न हो गया इस प्रकार यूरोप की राजनीति ने भारत में ब्रिटिश सरकार की नीति को बहुत प्रभावित किया

7) प्रथम आंग्ल सिख युद्ध (1845-46)

1) कारण

1. अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीतियां
2. रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद पंजाब में राजनीतिक अराजकता - 1839 से 1845 के मध्य 4 राजा व 4 वजीर बदले
3. लॉर्ड हार्डिंग की उत्तेजनात्मक कार्यवाहियों के कारण सिखों द्वारा अमृतसर संधि का उल्लंघन करने सतलज नदी पार करके अंग्रेजों पर हमला
4. महारानी झिन्दन / जिंद कौर के दल तथा खालसा सेना के मध्य विवाद
5. सिख दरबार की आंतरिक कलह व सेना की अनुशासनहीनता

2) युद्ध की घटनाएं

1. 11 दिसंबर 1845 को सिख सेना ने सतलज को पार किया और अंग्रेज सेना से टक्कर ली
2. इस युद्ध में चार लड़ाइयां, मुदकी, फीरोजशाह, बद्दोवाल, आलीवाल ऐसी हुईं जो कि निर्णायक नहीं थीं।
3. केवल पांचवीं सबराओं की लड़ाई (10 फरवरी, 1846) निर्णायक सिद्ध हुई।
4. लालसिंह, और तेजासिंह के विश्वासघात के कारण ही सिक्खों की पूर्णतया हार हुई।
5. अंग्रेज सेना ने लाहौर पर अधिकार कर लिया और 9 मार्च, 1846 को सिक्खों को 'लाहौर की संधि' पर हस्ताक्षर करने पर बाध्य किया

3) लाहौर की संधि (9 मार्च 1846)

1. सतलज नदी के दक्षिणी ओर के सभी प्रदेशों पर अंग्रेजों का अधिकार मान लिया गया।
2. सिक्खों की सेना में कमी कर दी गई। उसमें केवल 20 हजार पैदल और 12,000 घुड़सवार रहने दिए गये
3. लाहौर-दरबार को डेढ़ करोड़ रुपये अंग्रेजों को हर्जाना देना था। चूँकि, दरबार के पास इतना रुपया न था अतएव अंग्रेजों ने व्यास से सिन्ध तक का प्रदेश गुलाबसिंह को एक करोड़ रुपये में बेच दिया
4. लालसिंह को दलीपसिंह का मंत्री और जिन्दा (झिंदन) को उसकी संरक्षिका बनाया गया।

4) भैरोंवाल की संधि (22 दिसंबर 1846)

लॉर्ड हार्डिंग लाहौर की संधि से भी संतुष्ट नहीं हुआ क्योंकि संधि की एक शर्त यह थी कि कंपनी की सेना पंजाब में दिसंबर 1846 के अंत तक रहेगी। जैसे ही सेना को वापस बुलाने की तिथि निकट आई हार्डिंग ने उसको वहां स्थाई रूप से बनाए रखने के लिए कुचक्र आरम्भ कर दिए। रानी तथा लालसिंह पर विद्रोह भड़काने का आरोप लगाया गया लाहौर दरबार पर भैरोंवाल संधि थोप दी :

- लाहौर में ब्रिटिश सेना सितम्बर, 1854 ई. तक बनी रहेगी
- सेना के खर्च के लिए लाहौर दरवार 22 लाख रुपये वार्षिक कम्पनी को देता रहेगा।
- हेनरी लॉरेन्स को रेजीडेण्ट नियुक्त किया गया।

इस सन्धि ने पंजाब में सिक्खों की शक्ति का अन्त कर दिया और अंग्रेज पंजाब के वास्तविक शासक बन गये।

NOTE

अमृतसर की सन्धि

- गुलाब सिंह ने अपने राजा तथा देश के साथ विश्वासघात करके कंपनी की बहुमूल्य सहायता की थी इसलिए हार्डिंग में उसे पुरस्कृत किया
- **16 मार्च 1846** को अमृतसर में उसके साथ एक संधि की गई जिसके अनुसार **कश्मीर** उसे दे दिया गया
- गुलाब सिंह ने 1 करोड़ रुपए देने का वचन दिया, बाद में यह धनराशि कुछ कम कर दी गई
- अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी यूरोपीय या अमेरिकी को अपने यहां नौकर नहीं रखेगा
- धन के बदले गुलाब सिंह को कश्मीर का स्वतंत्र शासक बना देना दिलीप सिंह की पीठ में छुरा भोंकना था किंतु यह सब अंग्रेजों के राष्ट्रीय चरित्र के अनुरूप था

8) द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध (1848-49)

1) कारण

1. रानी झिन्दन पर देशद्रोह का आरोप, पेंशन में कमी तथा अपमान
2. विश्वासघाती गुलाब सिंह को कश्मीर सौंपना
3. लाहौर व भैरोवाल की अपमानजनक संधियां
4. अंग्रेजों द्वारा गौवध की अनुमति तथा प्रशासनिक पदों से सिखों को हटाना
5. मुल्तान में सेना द्वारा दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या
6. लॉर्ड डलहौजी की आक्रामक विस्तारवादी नीतियां

2) युद्ध की घटनाएं

1. 13 जनवरी 1849 को चिलयावाला नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ जिसमें सिखों की विजय हुई
2. तोपों का युद्ध (21 फरवरी 1849) :- चेनाब के निकट गुजरात में। सिखों ने अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया (पराजय)

3) युद्ध का परिणाम

1. लॉर्ड डलहौजी ने चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में, पंजाब का अंग्रेजी राज्य में विलय
2. पंजाब का प्रशासन 3 सदस्यों की कमेटी को सौंपा, जिसका अध्यक्ष हेनरी लॉरेंस था
3. अल्प वयस्क दिलीप सिंह को 50000 की वार्षिक पेंशन लेकर ब्रिटेन भेजा
4. दिलीप सिंह ने कोहिनूर हीरा अंग्रेजों को दिया

6) अवध II Awadh

6.1) सामान्य परिचय

अवध :- पश्चिम में कन्नौज से लेकर पूर्व में कर्मनाशा नदी तक फैला

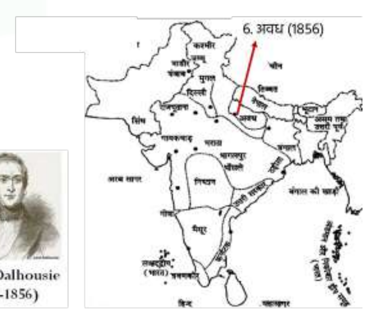

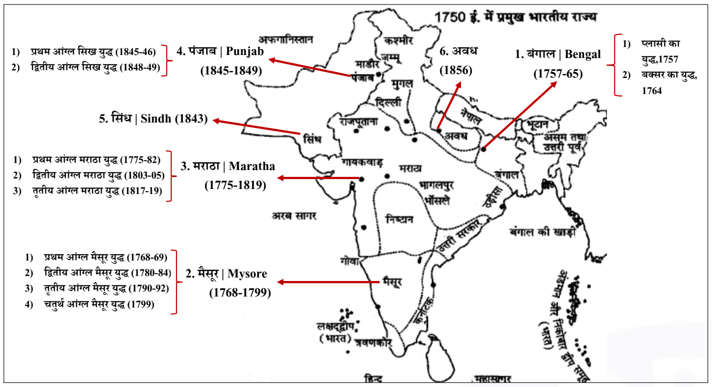

6.2) प्रमुख नवाब

1) सआदत अली खान प्रथम

1. अवध का संस्थापक
2. उपाधि :- बुरहान उल मुल्क
3. राजधानी :- फैजाबाद
4. मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीला ने 1720 में बयाना का सूबेदार नियुक्त किया
5. सैयद बंधुओं के विरुद्ध षड्यंत्र में मदद
   - 1722 - अवध का सूबेदार (स्वतंत्र)
6. 1723 :- अवध में नया राजस्व बंदोबस्त लागू किया
7. 1739 :- विष खाकर आत्महत्या

2) सफदरजंग (1739 -54)

1. शहादत खान का भतीजा और दामाद
2. बेहद नैतिक कुशल और सादा जीवन जैसे (मुर्शिद कुली खां अलीवर्दी खां निजाम उल मुल्क)
3. रुहेला और बंगश पठान के विरुद्ध युद्ध
   - पश्चिम-उत्तर सीमा की पर्वत श्रेणियों से आए अफगान
4. लखनवी संस्कृति :-
   - साहित्य, व्यापार
   - 1775 के बाद अवध के नवाबों का निवास

3) शुजाउद्दौला (1754-75)

1) सफदरजंग का पुत्र
2) शुजाउद्दौला :-
   - पानीपत III में अहमद शाह अब्दाली का साथ (14 जनवरी 1761)
   - बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर 1764) → इलाहाबाद की II संधि
     - अंग्रेज और ने इलाहाबाद और कड़ा का क्षेत्र छिना
     - चुनार दुर्ग और कर मुक्त व्यापार
3) 1773 :- बनारस की संधि — वारेन हेस्टिंग्स / शुजाउद्दौला
   - शुजाउद्दौला ने 50 लाख रुपए देकर अंग्रेजों से इलाहाबाद और कड़ा लिया

4) आसफ-उद्दौला (1775-97)

1. हेस्टिंग्स के साथ फैजाबाद संधि
2. बनारस पर अंग्रेज अधिकार
3. बेगम के साथ दुर्व्यवहार :- महाभियोग
4. लखनऊ में बिना स्तंभ वाले इमामबाड़े का निर्माण ।
5. राजधानी :- फैजाबाद से लखनऊ

5) सआदत अली खान II (1798-1814)

1. शुजाउद्दौला का पुत्र
2. 1801 :- वेलेजली ने सहायक संधि
3. राजा की उपाधि
4. इलाहाबाद अंग्रेजों को

6) गाजी उद्दीन हैदर अली खान (1814-27)

1. सहादत II का पुत्र
2. हेस्टिंग्स ने 1815 में " बादशाह'' की उपाधि दी

7) वाजिद अली शाह (1847-1856)

1. अवध का अंजेम्स ऑउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर कुशासन का आरोप
2. अंतिम नवाब :-
   - 1856 - अंग्रेजी राज्य में विलय
3. परिणाम :- यह अनैतिक था
   - सैन्य विद्रोह और प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

Note :

- अवध अंग्रेजों के लिए एक बफर राज्य था
- 1722 :- सआदत अली खान प्रथम ने स्वतंत्र अवध की स्थापना की
- सफदरजंग के समय लखनवी संस्कृति का विकास हुआ
- 22 अक्टूबर 1764 :- शुजाउद्दौला ने मीर कासिम और मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के साथ बक्सर के युद्ध में भाग लिया
- 16 अगस्त 1765 :- शुजाउद्दौला ने रॉबर्ट क्लाइव के साथ इलाहाबाद की द्वितीय संधि पर हस्ताक्षर किया
- 1773 :- वारेन हेस्टिंग और शुजाउद्दौला के मध्य बनारस की संधि
- आसफ-उद्दौला ने हेस्टिंग के साथ फैजाबाद की संधि की
- 1801 :- सआदत अली खान द्वितीय ने वेलेजली के साथ सहायक संधि पर हस्ताक्षर किया
- 1815 :- गाजी उद्दीन हैदर अली खान को हेस्टिंग्स ने बादशाह की उपाधि दी
- 1856 :- जेम्स ऑउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर कुशासन का आरोप लगाकर अवध का विलय अंग्रेजी राज्य में किया

1) घेरे की नीति II Policy of Ring Fence (1765-1813)

1. आरम्भकर्ता :- वारेन हेस्टिंग्स
2. कारण :- ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आरंभिक व नाजुक अवस्था (मराठा, मैसूर व हैदराबाद से संघर्ष)
3. **नीति :-**
   - बफर जोन बनाकर कम्पनी की सीमाओं की रक्षा,
   - उदाहरण - अवध
   - सीमित उत्तरदायित्व व राज्यों के प्रति अहस्तक्षेप की नीति
   - नीति में शामिल राज्यों की सुरक्षा की जिम्मेदारी
   - सहायक संधि की पूर्ववर्ती

2) अधीनस्थ पृथक्करण की नीति II Policy of subordinate isolation (1813-1858)

1. आरम्भकर्ता :- लॉर्ड हेस्टिंग्स
2. कारण :- कंपनी का भारत में स्थायित्व व साम्राज्यवाद प्रकृति
3. **नीति :-**
   - आक्रामक विस्तारवाद
   - देशी रियासतों पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण
   - राज्यों की बाह संप्रभुता खत्म कर दी गई
   - रियासतों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप
   - इस नीति का विकसित स्वरूप व्यपगत का सिद्धांत था
   - निदेशक मंडल ने 1834 में राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में जोड़ने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए

3) अधीनस्थ संघ की नीति II Policy of subordinate union (1858-1935)

1. 1857 के बाद की ब्रिटिश सरकार की नीति को अधीनस्थ संघ की नीति कहा जाता है।

2. इसमें सरकार ने देशी रियासतों को अलग-अलग करने की बजाय ब्रिटिश शासन के नजदीक लाने की योजना अपनाई।
3. 1858 के बाद भारत का शासन कम्पनी के हाथों से सीधा ब्रिटिश ताज के पास चला गया।
4. अब अंग्रेजी सरकार ने नीति अपनाई कि भारतीय राजाओं के साथ अच्छे संबंध बनाए जाए ताकि वे आवश्यकता होने पर काम आ सके।

4) समान संघ की नीति I Policy of equal federation (1935-1947)

1. इस समय तक भारतीय राष्ट्रवाद परिपक्व हो चुका था तथा राष्ट्रीय भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए अस्त्र के रूप में संवैधानिक सुधारों को लक्ष्य बनाया गया।
2. इसी संदर्भ में 1935 ई0 का भारत शासन अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम में भारतीय राज्यों का एक संघ बनाने की बात की गई, यद्यपि ऐसा नहीं हुआ और संघ अस्तित्व में नहीं आया।
3. क्रिप्स मिशन, वैवेल योजना, कैबिनेट मिशन आदि के माध्यम से संवैधानिक सुधारों की बात की गई। माउंटबेटन योजना में ब्रिटिश सर्वोच्चता के समाप्ति की बात की गई
4. अन्ततः 1947 ई0 में भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित हुआ और भारत से ब्रिटिश सत्ता की समाप्ति हुई।

1) लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि

1) पृष्ठभूमि व परिचय

1. सहायक संधि प्रणाली का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले ने किया था, उसने सैनिक सहायता देने के बदले भारतीय नरेशों से धन लेने की प्रथा शुरू की।
2. इस अवधारणा को रॉबर्ट क्लाइव ने अवध के संदर्भ में लागू किया
3. सहायक संधि को व्यवहारिक व सैद्धांतिक रूप 1798 में बंगाल का गवर्नर जनरल बनकर आए अंग्रेजी साम्राज्यवादी गवर्नर लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) ने दिया।
4. लॉर्ड वेलेजली का उद्देश्य कंपनी को भारत की सर्वोच्च शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करना था

समस्या या कारण

1. नेपोलियन का उदय और भारत में क्षेत्रीय राज्यों के साथ फ्रांसीसी गठजोड़
2. अंग्रेज समर्पित राजनीतिक प्रणाली का अभाव
3. भारत में ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं की मांग का अभाव
   - **सहायक संधि व्यवस्था :** एक प्रकार की सैन्य व मैत्री व्यवस्था

2) सहायक संधि की विशेषताएं

1. देशी रियासतें एक ब्रिटिश रेजिडेंट रखेंगी जो शासन-प्रबंधन में परामर्श देगा ।
2. भारतीय रियासतों के आंतरिक शासन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।
3. वह देशी रियासत, जो संधि स्वीकार करेगी; कंपनी की स्वीकृति के बिना अपने राज्य में शत्रु राज्य या अन्य यूरोपीय शक्ति के लोगों को शरण, व्यापार या नौकरी नहीं देगी ।
4. देशी रियासतों की रक्षा के लिये कंपनी वहाँ अंग्रेजी सेना रखेगी, जिसका खर्च उस रियासत को ही उठाना होगा सेना के खर्च के लिये नकद धनराशि या राज्य का कुछ इलाका कंपनी को सौंपना होगा।
5. देशी रियासत कंपनी की अनुमति के बिना किसी अन्य राज्य से युद्ध, संधि या मैत्री नहीं कर सकेगी अर्थात् वह अपनी विदेश नीति कंपनी के सुपुर्द कर देगी।

- किसी अन्य यूरोपीय शक्ति को सेवा में न रखना
- राज्य की विदेश नीति कम्पनी के अधीन
- राज्य में ब्रिटिश सेना की नियुक्ति
- रियासत में ब्रिटिश रेजिडेंट की नियुक्ति
- आंतरिक एवं बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा
- रियासत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं

लॉर्ड वेलेजली से सहायक संधि करने वाली रियासतों / राज्यों की Trick?

Trick :- हम तुझे अब पेशवा से नहीं मिलने देंगे

1. हम	-	हैदराबाद	-	1798		
2. हम	-	मैसूर	-	1799		
3. तुझे	-	तंजौर	-	1799		
4. अब	-	अवध	-	1801		सहायक संधि ✓
5. पेशवा	-	पेशवा	-	1802		
6. पेशवा	-	बरार + भोंसले	-	1803		
7. से	-	सिंधिया	-	1804		
8. नहीं	-	होलकर	-	सहायक संधि ✗		
मिलने देंगे	-	silent				

3) सहायक संधि का क्रियान्वयन

1. ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार के लिए अपनाई गई सहायक संधि को कुछ देशी राज्यों ने स्वतः स्वीकार कर लिया तो कुछ राज्यों ने युद्ध में पराजित होकर इस प्रणाली को स्वीकार किया ।
2. इसके अलावा कुशासन के आरोप लगाकर भी वेलेजली ने कर्नाटक , तंजौर और सुरत को भी ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया ।
3. बेलेजली द्वारा की गई कुछ प्रमख सहायक संधिया :-

क्र	संधिया द्वारा ली गई रियासतें	संधि वर्ष
1.	हैदराबाद (निजाम - II)	1798
2.	मैसूर (वाडयार वंश)	1799
3.	तंजौर	1799
4.	अवध (सआदत अली खान II)	1801
5.	मराठा (पेशवा बाजीराव द्वितीय)	1802
6.	बरार (भोसलें)	1803
7.	सिंधिया	1804
8.	होलकर (मल्हार राव होलकर II)	1818

हैदराबाद → मैसूर → तंजौर → अवध → मराठा → बरार → सिंधिया → होलकर

4) सहायक संधि का मूल्यांकन

-: लाभ :-

- आंतरिक विद्रोह तथा बाह्य आक्रमण से सुरक्षा
- देशी राज्यों के बीच युद्ध की समाप्ति
- आर्थिक उन्नति
- कम्पनी को लाभ
- कंपनी की सैनिक सीमाओं में वृद्धि
- फ्रांसीसियों के भय से मुक्ति

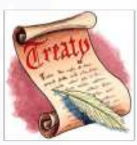

-: हानियाँ :-

- संरक्षित राज्यों की आर्थिक व्यवस्था को आघात
- संरक्षित राज्यों में प्रशासन के मामलों में उदासीनता
- देशी राज्यों में भ्रष्टाचार तथा विलासिता को बढ़ावा
- देशी राज्यों में सैनिक तथा कूटनीतिक प्रतिभा की कमी

5) वेलेजली द्वारा राज्यों का अपहरण

1) कर्नाटक नवाब हुसैन अली के मृत पिता व दादा पर देशद्रोह का आरोप लगाकर विलय
2) अक्टूबर 1799 में तंजौर पर कुशासन का आरोप लगाकर विलय
3) आर्थिक कुप्रशासन का आरोप लगाकर मार्च 1800 में सूरत का विलय

2) लॉर्ड डलहौजी का व्यपगत का सिद्धांत / गोद निषेध नीति / हड़प नीति

- परिचय
- व्यपगत का सिद्धांत
- व्यपगत के सिद्धान्त का क्रियान्वयन
- व्यपगत के सिद्धांत का मूल्यांकन

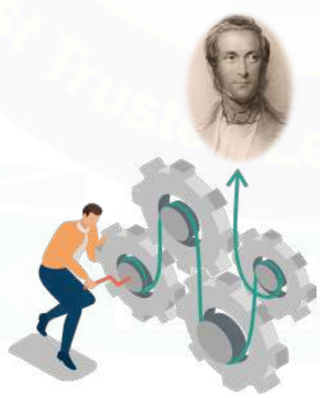

1) परिचय

1. लॉर्ड हार्डिंग के स्थान पर 1848 में 36 वर्ष की आयु में डलहौजी भारत का गवर्नर बना। वह अत्यंत प्रतिभाशाली तथा सम्राज्यवादी प्रकृति का था। जिसने भारत में ब्रिटिश विस्तार हेतु निम्न नीतियां अपनाई :-
    - युद्ध द्वारा विलय - पंजाब (1849), वर्मा (1852), सिक्किम-दार्जिलिंग (1850)
    - व्यपगत का सिद्धांत - सतारा, सम्भलपुर, नागपुर, जैतपुर
    - कुशासन का आरोप
2. लॉर्ड डलहौजी अपने प्रशासनिक व परिवहन नीति हेतु भी जाना जाता है। डलहौजी की नीतियों के निम्नलिखित कारण थे :-
    - ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की आवश्यकताओं की पूर्ति
    - भारत में ब्रिटिश राज्य की सुरक्षा, सुदृढ़ता व स्थायित्व
    - कम्पनी का अधिकतम आर्थिक लाभ

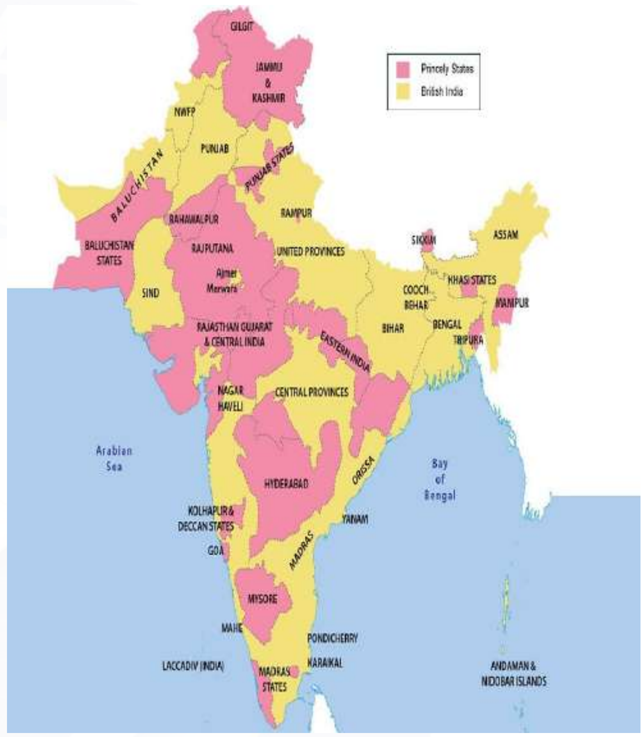

2) व्यपगत का सिद्धांत

1. लॉर्ड डलहौजी द्वारा ब्रिटिश अधीनस्थ भारतीय राज्यों के विलय की नीति
2. सिद्धांत :- पैतृक वारिस न होने की स्थिति में कंपनी ब्रिटिश अधीनस्थ रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाएगी हालांकि दत्तक पुत्र को सम्पत्ति का अधिकार मिलेगा
3. डलहौजी का तर्क :- जो शक्ति अधिकार देती है, वह ले भी शक्ति है
4. नीति के क्रियान्वयन हेतु रियासतों को निम्न तीन श्रेणियों में बांटा :-

श्रेणी	परिभाषा	गोद लेने का अधिकार
प्रथम श्रेणी	वे राज्य जिनके निर्माण में ब्रिटिश सरकार का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष योगदान था	गोद लेने पर पूर्णत: पाबंदी
द्वितीय श्रेणी	वे राज्य जो अंग्रेजी सरकार के अधीनस्थ थे	गोद लेने से पहले अंग्रेजी सरकार की सहमति
तृतीय श्रेणी	रियासत जो कभी ब्रिटिश शासन के अधीन नहीं रही	गोद लेने की प्रथा में कोई हस्तक्षेप नहीं

3) व्यपगत के सिद्धान्त का क्रियान्वयन

डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत का क्रियान्वयन करते हुए निम्नलिखित देशी को ब्रिटिश

साम्राज्य में मिलाया

देशी रियासतें	विलय का वर्ष	देशी रियासतें	विलय का वर्ष
1. सतारा	1848	5. उदयपुर	1852
2. जैतपुर	1849	6. झाँसी	1852
3. संभलपुर	1849	7. नागपुर	1854
4. बघाट	1850		

सतारा ➜ जैतपुर ➜ संभलपुर ➜ बघाट ➜ उदयपुर ➜ झाँसी ➜ नागपुर

4) व्यपगत के सिद्धांत का मूल्यांकन

1. धार्मिक व सामाजिक रूप से स्वीकृत प्राचीन भारतीय परम्पराओं में अंग्रेज़ों का हस्तक्षेप
2. देशी रियासतों का अतार्किक व काल्पनिक विभाजन
3. देशी रियासतों में असंतोष की भावना
4. 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
5. डलहौजी ने कुशासन का आरोप लगाकर बरार तथा अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया जो अनैतिक था
   - **जॉन शेपर्ड:** यह विलय भारतीयों की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने में उतना ही सफल होगा जितना उनके अधिकारों और हितों की रक्षा करने में है
     - ✓ लॉर्ड डलहौजी के व्यपगत सिद्धांत की समीक्षा करते हुए यह कहा जा सकता है कि इसका प्रयोग मुख्य रूप से साम्राज्य विस्तार के लिए किया गया.
     - ✓ पुत्र गोद लेने की प्रथा हिन्दुओं में बहुत प्राचीन थी.
     - ✓ वे इसे बड़ी धूमधाम से और धार्मिक कर्मकाण्डों के अनुसार मानते थे.
     - ✓ मुगलों और पेशवाओं के अधीन इस कार्य के लिए सम्राट को केवल नज़राना ही देना होता था किन्तु डलहौजी ने इस प्रथा की आड़ में पूरी रियासत को ही हड़पना शुरू कर दिया.
     - ✓ इसके अलावा आश्रित रियासतों (Dependent States) और संरक्षित मित्र (Protected Allies) रियासतों का भेद एक कल्पना मात्र था.
     - ✓ इस संबंध में विवादित मामलों पर अंतिम निर्णय कम्पनी या कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्ज का होता था.
     - ✓ इस संबंध में निष्पक्ष निर्णय देने के लिए किसी उच्चतम न्यायालय की कोई व्यवस्था न थी.

5) लॉर्ड डलहौजी के प्रमुख सुधार

1) प्रशासनिक सुधार	○ गवर्नर जनरल के कार्यभार को कम करने के लिए बंगाल में लेफ्टिनेंट गवर्नर नियुक्ति ○ "नॉन रेग्यूलेशन पद्धति" (Non-Regulation System) को लागू किया = प्रत्येक नए प्रदेश में एक कमिश्नर नियुक्त किया गया. = कमिश्नर सीधे गवर्नर जनरल के प्रति उत्तरदायी होता था.
2) सैनिक सुधार	○ बंगाल तोपखाने का कार्यालय कलकत्ता से मेरठ में स्थानांतरित ○ 1865 में शिमला में एक सैन्य मुख्यालय स्थापित किया गया. ○ सेना में तीन और रेजिमेंटें बनाई गई. ○ पंजाब में एक नई अनियमित सेना का गठन किया गया.
3) शैक्षणिक सुधार	○ 1853 में भारतीय भाषाओं में शिक्षा का प्रस्ताव स्वीकार किया गया. ○ जुलाई, 1854 में सर चार्ल्स वुड ने भारत सरकार को शिक्षा की एक नई योजना भेजी. ○ जिलों में एंग्लो-वर्नेक्यूलर स्कूलों, प्रमुख नगरों में सरकारी कॉलेजों तथा तीनों प्रेजिडेन्सी नगरों में एक-एक विश्वविद्यालय की स्थापना

4) रेलवे	○ 1853 में प्रथम रेलवे लाइन बम्बई से थाना तक ○ भारत में रेलवे लाइन बिछाने के काम में सरकार का नहीं वरन्, ब्रिटिश पूंजीपतियों का पैसा लगा हुआ था.
5) टेलीग्राफ	○ भारत में विद्युत तार का प्रारंभ ○ ओ. औंघनैसी (O'Shanghnessy) के अथक प्रयासों से लगभग 4000 मील लम्बी तार लाइन बिछा दी गई.
6) डाक	○ आधुनिक डाक व्यवस्था का आधार ○ 1854 में डाकघर अधिनियम ○ सारे देश में कहीं भी 2 पैसे की दर पर पत्र भेजा जा सकता था. ○ देश में पहली बार डाक टिकटों का प्रचलन आरंभ हुआ.

7) वाणिज्य-सुधार	○ डलहौजी ने भारत के बन्दरगाहों को अन्तरराष्ट्रीय वाणिज्य के लिए खोल दिया. ○ कराची, बम्बई और कलकत्ता के बन्दरगाहों का भी विकास किया गया.
8) सार्वजनिक निर्माण विभाग	○ डलहौजी ने एक अलग सार्वजनिक निर्माण विभाग का गठन किया. ○ 8 अप्रैल, 1854 को सिंचाई हेतु गंगा नहर खोल दी गई. ○ ग्राण्ड ट्रंक रोड़ का निर्माण कार्य भी प्रारंभ हुआ.

6) लॉर्ड डलहौजी ने अपनी सृजनात्मकता के बल पर आधुनिक भारत की नींव रखी। चर्चा कीजिये।

डलहौजी ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार का कोई अवसर नहीं खोया। साथ ही अपनी सृजनात्मक क्षमता के बल पर आधुनिक भारत की नींव रखी।

1. 1853 में प्रथम रेलवे लाइन बिछाई गई तथा शीघ्र ही समस्त भारत को रेलवे लाइनों द्वारा जोड़ा गया। इससे भौगोलिक एकता की स्थापना हुई।
2. शिक्षा सुधार के लिये चार्ल्स वुड की अध्यक्षता में प्राएक व्यापक योजना बनाई। जिसमें ज़िलों में एंग्लो-वर्नाकुलर स्कूल तथा 3 प्रेसिडेंसी नगरों में लंदन विश्वविद्यालय के आदर्श पर एक-एक विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।
3. पहली बार सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की
4. कराची, बंबई और कलकत्ता के बंदरगाहों का विकास तथा प्रकाश स्तंभों का निर्माण
5. टेलीग्राफ का प्रारंभकर्ता - कलकत्ता से लेकर पेशावर, बंबई तथा मद्रास तक देश के भिन्न-भिन्न भागों को टेलीग्राफ व्यवस्था से जोड़ दिया।
6. आधुनिक डाक व्यवस्था की आधाराशिला भी डलहौजी के समय ही रखी गई।

इस प्रकार डलहौजी के आधुनिकीकरण के प्रयास औपनिवेशिक हितों से प्रेरित थे, लेकिन उसके प्रयासों ने नए भारत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

अध्याय – 03
ब्रिटिश कालीन आर्थिक नीतियां (British Economic Policies)

पृष्ठभूमि 01

उपनिवेशवाद 02

भू राजस्व व्यवस्था 03

कृषि का वाणिज्यकरण 04

विऔद्योगिकरण 05

06 आधुनिक उद्योगों का विकास

07 रेलवे का विकास

08 धन का निष्कासन

09 ब्रिटिश भारत में अकाल नीति

10 भारत में बैंकिंग प्रणाली

Previous Year Question

2019	Short	1) भारतीय उद्योग और व्यापार पर ब्रिटिश शासन के प्रभाव का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए ‖ Critically examine impact of British rule kauwa Indian industry and trade .
2019	Short	2) "ब्रिटिश शासन ने भारत में दरिद्रता को बढ़ाया " इस कथन की तथ्यों के प्रकाश में समीक्षा कीजिए ‖ "British rule increased poverty in India " review this statement in the light of the facts.
2018	Short	3) आर्थिक दोहन की व्याख्या कीजिए तथा इसके कारणों की समीक्षा कीजिए ‖ Explain 'economic drain' and discuss its causes.
2016	Short	4) स्थाई बंदोबस्त ने कृषकों को किस प्रकार प्रभावित किया ? वर्णन कीजिए ‖ In what way did the permanent settlement affect the prasants ? Discuss .
2016	Short	5) भारत में परंपरागत कुटीर उद्योगों के पतन के कारण लिखिए ‖ Write the causes of decline of traditional cottage industries in India.
2015	Long	6) ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा ? वर्णन कीजिए ‖ What was the effect of British economic policies on Indian economy? Discuss.
2020	Short	7) भारत में परंपरागत कुटीर उद्योगों के पतन के कारण लिखिए ‖ Write the causes of decline of traditional cottage industries in India.

3.2) उपनिवेशवाद II Colonialism

1. परिभाषा :- एक देश द्वारा दूसरे देश पर आर्थिक शोषण करने के उद्देश्य से आधिपत्य स्थापित करना
2. चरण :- रजनी पाम दत्त ने अपनी पुस्तक इंडिया टुडे में निम्न तीन चरण बताएं -
   - वाणिज्यिक पूंजीवाद चरण :- भारत से धन का निष्कासन तथा भारत के व्यापार पर कंपनी का एकाधिकार (1757-1813 ई)
   - औद्योगिक पूंजीवाद चरण :- मुक्त व्यापार की नीति तथा कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति(1813-1860 ई)
   - वित्तीय पूंजीवाद चरण :- ब्रिटिश पूंजी का भारत में निवेश(1860-1947ई)

(i) वाणिज्यिक पूंजीवाद चरण II Phase of Commercial Capitalism (1757-1813)

1. उद्देश्य :- यह चरण प्लासी विजयोपरांत प्रारंभ हुआ, जिसके निम्नलिखित उद्देश्य थे -
   - प्रतिद्वंदियों को समाप्त करके भारतीय व्यापार पर एकाधिकार
   - भारत से न्यूनतम मूल्यों पर वस्तुएं खरीददार, यूरोप में अधिकतम मूल्य पर बेचना
   - व्यापार व साम्राज्यवाद हेतु भारतीय धन का उपयोग करने हेतु राजनैतिक नियंत्रण (घेरे की नीति)
2. प्रभाव :-
   - खुली और बेशर्म लूट - पर्सिवल स्पीयर
   - भारतीय हस्तकला उद्योग का विनाश
   - बंगाल की लूट से ब्रिटेन में औद्योगिकरण

(ii) औद्योगिक पूंजीवाद का चरण (1813-60) Phase of Industrial Capitalism

1. इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के बाद इस चरण का आरंभ, जिसकी निम्नलिखित विशेषताएं हैं :-
   - इंग्लैंड के उद्योगों हेतु भारत कच्चे माल का निर्यात
   - ब्रिटिश उद्योगों द्वारा निर्मित उत्पादों का भारत में आयात
   - 1813 के चार्टर द्वारा कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति व मुक्त व्यापार की नीति
   - विभेदकारी सीमा शुल्क
2. प्रभाव :-
   - भारत में व्यापार घाटा (निर्यात<आयात)
   - विभेदकारी सीमा शुल्क से स्थानीय उद्योगों का विनाश
   - व्यापारिक फसलों के अधिक उत्पादन से खाद्यान्न संकट
   - रेलवे व अंग्रेजी शिक्षा
   - भारतीय क्षेत्रों का विलय व सांस्कृतिक हस्तक्षेप

(iii) वित्तीय पूंजीवाद चरण (1860-1947) Phase of financial capitalism

1. ब्रिटेन में औद्योगिक पूंजीपतियों के पास धन आधिक्य के कारण इस चरण का आरम्भ हुआ, जिसकी निम्न विशेषताएं हैं :-
   - लाभ प्राप्ति हेतु भारत में निवेश (मुख्यतः रेलवे 5%- लाभांश)
   - बागानी कृषि, खनन आदि में निवेश
   - भारत में बैंकिंग, बीमा, जहाजरानी उद्योग में निवेश
   - भारत सरकार को ऋण (1939 तक 88 करोड़)
2. प्रभाव :-
   - भारत में आधुनिक बैंकों की स्थापना
   - भारत के उद्योगों का विनाश
   - भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास

3.3) ब्रिटिशकालीन भू राजस्व व्यवस्था II British Land Revenue System

1) परिचय II Introduction

1. भारत में साम्राज्यवादी विस्तार, निवेश व लाभ हेतु निम्न भू राजस्व नीतियां :-
   - इजारेदारी/पंचशाला (वारेन हेस्टिंग्स)
   - स्थाई बंदोबस्त (लार्ड कार्नवालिस)
   - रैयतवाड़ी (टॉमस मुनरो)
   - महालवाड़ी (हॉल्ट मैकेंजी)
2. परिणाम :- कृषक निर्धनता व धन का निष्कासन

2) इजारेदारी/पंचशाला (वारेन हेस्टिंग्स)

1. प्रवर्तक - वारेन हेस्टिंग्स
2. क्षेत्र - बंगाल और बिहार
3. इजारेदार - जमीदार / ठेकेदार

4. व्यवस्था :-
   - सबसे अधिक बोली लगाने वाले को भूमि का ठेका
   - यह ठेका पंचवर्षीय था
5. परिणाम :-
   - असफल
   - 1777 में एकवर्षीय रूप में परिवर्तन

3) स्थाई बंदोबस्त Permanent settlement

1) परिचय व पृष्ठभूमि

1. भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भू-राजस्व मुख्य स्त्रोत था
2. उन्होंने द्वैध शासन, इजारेदारी आदि के द्वारा भू राजस्व वसूला परंतु उनमें अत्याधिक भ्रष्टाचार तथा अनियमितताएं थीं
3. पिट्स इंडिया एक्ट 1784 के माध्यम से कंपनी को बंगाल में स्थाई भू प्रबंध करने का सुझाव दिया गया
4. 1786 में कार्नवालिस बंगाल का गवर्नर जनरल बना - भू राजस्व व्यवस्था की समस्या पर विचार के लिए रेवेन्यू बोर्ड का गठन
   - जॉन शोर :- जमीदारों को भूस्वामी माना जाए
   - चार्ल्स ग्रांट :- सरकार को भूस्वामी माना जाए
5. कार्नवालिस ने जमीदारों को लगान वसूल करने का अधिकार दिया । 1790 में वार्षिक लगान की जगह 10 वर्षीय लगान व्यवस्था लागू की गई किंतु 22 मार्च 1793 में इसी व्यवस्था को स्थाई कर दिया गया जिसे स्थाई बंदोबस्त, इस्तमरारी बंदोबस्त, जमींदारी व्यवस्था या जागीरदारी व्यवस्था अथवा मालगुजारी व्यवस्था भी कहा गया

2) विशेषताएं

1. आरम्भकर्ता :- लार्ड कार्नवालिस(1793)
2. क्षेत्र :- बंगाल, बिहार, उड़ीसा, वाराणसी, उत्तरी कर्नाटक (कुल भूमि का 19%)
3. जमीदारों को भूमि का स्थायी मालिक बना दिया गया। भूमि पर उनका अधिकार पैतृक एवं हस्तांतरणीय था उन्हें उनकी भूमि से तब तक पृथक नहीं किया जा सकता था, जब तक वे अपना निश्चित लगान सरकार को देते रहें
4. सरकार का किसानों से कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं
5. भू राजस्व दर :-
   - कंपनी - कुल रकम का 10/11
   - जमीदार - कुल रकम का 1/11
6. तय की गई रकम से अधिक वसूली करने पर, उसे रखने का अधिकार जमीदारों को दे दिया गया गया
7. सूर्यास्त कानून :- लगान चुकाने की निर्धारित तिथि के सूर्यास्त तक लगान न चुकाने पर जमींदार की भूमि नीलाम कर दी जाती
8. ज़मींदार कृषकों की चल और अचल सम्पत्ति का अधिग्रहण कर सकते थे।
9. इस व्यवस्था के अंतर्गत ज़मींदार की मृत्यु होने के पश्चात् उसकी भूमि पर उसके उत्तराधिकारियों का अधिकार होता था तथा भूमि चल सम्पत्ति की भाँति विभाजित कर दी जाती थी।

3) स्थाई बंदोबस्त के सकारात्मक प्रभाव

1. ब्रिटिश सरकार की निश्चित आय :- बजट व प्रशासनिक योजना निर्माण में सरलता
2. ब्रिटिश समर्थित भारतीय जमींदार वर्ग का उदय :- भारतीय विद्रोह कुचलने में सरलता
3. सरकारी अपव्यय में कमी व आय वृद्धि
4. भारतीय जमींदार अत्याधिक समृद्ध :-
   - कृषि का वाणिज्यीकरण
   - भारत में उद्योग, व्यापार व शैक्षणिक विकास
   - राष्ट्रीय आंदोलन में सहायक

4) स्थाई बंदोबस्त के नकारात्मक प्रभाव

1. कृषक दुर्दशा :-
   - भूमि के परंपरागत अधिकारों की समाप्ति
   - जमींदारों द्वारा अधिक उत्पादन हेतु प्रताड़ना
   - कृषक कर्जदार होते गए
2. कृषि के वाणिज्यीकरण से खाद्यान्न उत्पादन में कमी
3. दूरवासी जमीदारी प्रथा से उपसामन्तीकरण
4. कृषि उत्पादकता में कमी
5. भूमि का क्रय विक्रय

स्थाई बंदोबस्त ने कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को बाहरी चोट पहुंचाई किसानों का निर्धनीकरण हुआ अकाल की बारंबारता बढ़ी। इस पद्धति को लागू करने में ब्रिटिश को इस दृष्टि से साहसी माना जाता है कि उन्होंने पहली बार संपत्ति अधिकारों की स्पष्ट पहचान की और जमीदार बिचौलियों को भूस्वामी बना दिया

5) उद्देश्य

1. भू राजस्व की अधिकतम राशि स्थाई रूप से प्राप्त करना
2. भारत में एक ऐसे समर्थक वर्ग का निर्माण करना जो ब्रिटिश सहयोगी हो
3. प्रशासनिक कठिनाइयों से बचते हुए ब्रिटिश आर्थिक हित प्राप्त करना
4. कृषि का विकास करना

6) कथन

1. आर. सी. दत्त के अनुसार :- "यदि स्थायी बन्दोबस्त का उद्देश्य बंगाल में पूर्णतया राजभक्त ज़मीदारों को उत्पन्न करना था तो इस उद्देश्य की पूर्ति में अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई।"
2. पी. ई. राबर्ट्स के अनुसार :- "स्थायी भूमि-व्यवस्था ने ब्रिटिश शासन को स्थायित्व और लोकप्रियता प्रदान की। प्रान्त को सबसे अधिक समृद्धिशाली बनाने में सहायता प्राप्त हुई।"

3. आर. सी. दत्त के अनुसार :- "लार्ड कार्नवालिस का 1793 ई. का स्थायी बन्दोबस्त बुद्धिमत्तापूर्ण और सफल था जिसने भारत में ब्रिटिश शासन के स्थायित्व को योगदान दिया।"
4. बेवरीज के अनुसार :- "यह भयानक भूल तथा अन्याय पर आधारित योजना थी जिसमें केवल ज़मींदारों के साथ समझौता हुआ जबकि कृषकों के अधिकारों की पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई।'
5. इस विषय में कारवर (Carver) महोदय ने लिखा है :- "इस व्यवस्था ने अनुपस्थित ज़मींदारों का एक ऐसा वर्ग निर्मित किया जो ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के लिए युद्ध, अकाल तथा महामारी जैसा घातक सिद्ध हुआ।"
6. पी. ई. राबर्ट्स के अनुसार :- "यदि स्थायी बन्दोबस्त केवल दस या बीस वर्षों के लिए लागू होता तो निश्चय ही उत्तरवर्ती (बाद में आने वाली) त्रुटियों को दूर किया जा सकता था।"

Note :

Q 1. स्थाई बंदोबस्त एक साहसी एवं बुद्धिमत्ता पूर्ण कदम था। टिप्पणी कीजिये?

उत्तर :-

1. भूमिका - स्थाई बंदोबस्त के उद्देश्य- अधिकतम भू राजस्व की राशि प्राप्त करने के लिए
2. साहसी कैसे - पहली बार संपत्ति के अधिकारों को स्पष्ट करते हुए जमींदार बिचौलियों को भूस्वामी बना दिया गया और किसानों को मात्र खेती करने वाले मजदूर । यह एक साहसी कदम था
3. बुध्दिमत्तापूर्ण कैसे -
   - ब्रिटिश को निश्चित व स्थायी आय की प्राप्ति
   - प्रशासनिक कठिनाइयों से मुक्त
   - समर्थक जमीदार की प्राप्ति
4. बुद्धिमत्ता पूर्ण कदम नहीं था क्योंकि बढ़ती आवश्यकता पूरी नहीं हो पा रही थी जमीदारों के शोषण से किसानों की परेशानियां बढ़ी कृषि का विकास नहीं हुआ
5. निष्कर्ष - इस प्रकार यह साहसी कदम तो था परंतु बुद्धिमत्ता पूर्ण कदम नहीं था

4) रैयतवाड़ी बंदोबस्त II Ryotwari Settlement

1) पृष्ठभूमि

1. दक्षिण - पश्चिम भारत में जमींदार वर्ग की अनुपस्थिति
2. स्थाई बंदोबस्त से ब्रिटेन को अपेक्षा अनुसार राजस्व ना मिलना
3. यूरोप में बेंथम, रिकार्डो (मध्यस्थ नहीं), जेम्स मिल की उपयोगितावादी विचारधारा

2) परिचय

1. प्रवर्तक :-
   - कर्नल रीड़ (1792) - बारामहल(मद्रास)
   - थॉमस मुनरो (1820) - संपूर्ण मद्रास
   - एलिफिंस्टन (1823) - बम्बई
   - सुधार - गोल्डस्मिथ, विंगेट
2. क्षेत्र :- सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत के 51% क्षेत्र पर (मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम व कुर्ग)

3) विशेषताएं

1. रैय्यतों (किसानों) को भूस्वामी मानकर, उनसे प्रत्यक्ष भू राजस्व समझौता :-
   - रैय्यतों का पंजीकरण
   - कृषि भूमि का सर्वेक्षण
   - भूमि विक्रय का अधिकार
2. भू राजस्व दरें :-
   - कुल उत्पादन का 2/5 भाग
   - आधार - भूमि का क्षेत्रफल व उत्पादन क्षमता
   - पुनः निर्धारण - 20-30 वर्षों के मध्य
   - संग्रहक - राजकीय कर्मचारी
3. लगान न देने पर भूमि जब्त
4. लगान चुकाने हेतु किसान अपनी भूमि गिरवी रख सकते थे - महाजनी व्यवस्था द्वारा कृषक शोषण
5. बंजर भूमि पर सरकारी स्वामित्व

4) सकारात्मक प्रभाव

1. राज्य की आय में वृद्धि
2. जमींदारों (बिचौलियों) के शोषण से किसानों को मुक्ति
3. सरकार व रैय्यतों के मध्य प्रत्यक्ष सम्बंध - अधिक कृषक स्वतंत्रता
4. निजी संपत्ति के लाभ का बेहतर वितरण

5) नकारात्मक प्रभाव

1. ज्यादा भू राजस्व दर
2. प्राकृतिक आपदा के समय लगान राहत नहीं
3. कृषक ऋणग्रस्तता - साहूकारों / महाजनों द्वारा कृषक शोषण
4. कृषि निवेश में कमी - उत्पादकता में कमी

5) महालवाड़ी बंदोबस्त II Mahalwari System

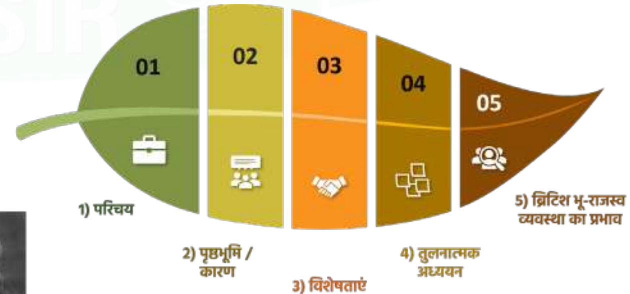

1) परिचय

1. आरम्भकर्ता
    - हॉल्ट मैकेंजी (1822)
    - सुधार :- मार्टिन बर्ड और जेम्स टॉमसन
2. क्षेत्र :- ब्रिटिश भारत की 30% भूमि (आगरा, अवध, मध्य प्रांत, पंजाब, उत्तर पश्चिम व दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्र)
3. भू राजस्व समझौता महाल (गांव/गांव समूह) से किया गया

2) पृष्ठभूमि / कारण

1. सत्तान्तरित (ceded) व नवीन विजित क्षेत्रों में नवीन भू राजस्व व्यवस्था की आवश्यकता
2. भौगोलिक व उत्पादकता सम्बंधी विविधताएं
3. स्थाई बंदोबस्त से सरकार को अपेक्षाकृत आय न मिलना
4. रिकॉर्डो, माल्थस आदि के विचार

3) विशेषताएं

1. लगान के निर्धारण हेतु महाल (गांव/गांव समूह) को इकाई माना
2. ब्रिटिश सरकार गांव के मुखिया से राजस्व वसूलती थी
3. भू राजस्व की दर 66% निश्चित की गई थी जिसे आगे बेंटिक ने 60% तथा डलहौजी ने 50% तक घटा दिया
4. ग्राम प्रधान या जमींदार को कृषकों से प्राप्त राजस्व का 83% हिस्सा ब्रिटिश सरकार को देना होता था
5. लगान न देने पर किसानों की भूमि ग्राम सभा के अधीन
6. लगान निर्धारण हेतु मानचित्रों व पंजियों का प्रयोग

अतः हम कह सकते हैं कि ब्रिटिश भू राजस्व नीति का मुख्य उद्देश्य अत्याधिक भू राजस्व की प्राप्ति करना था जिससे किसानों का अत्यधिक शोषण हुआ और इसकी अभिव्यक्ति किसान एवं जनजाति विद्रोह के रूप में हुई

4) तुलनात्मक अध्ययन

आधार	स्थाई बंदोबस्त	रैयतवाड़ी	महालवाड़ी
1. प्रवर्तक | Founder	लॉर्ड कार्नवालिस	1. एलेग्जेंडर रीड 2. टॉमस मुनरो 3. एलफिंस्टन	हाल्ट मेकेंजी
2. क्षेत्र | Area	बंगाल, बिहार, उड़ीसा, वाराणसी ,उत्तरी कर्नाटक	मद्रास, मुंबई, असम, पश्चिम भारत, पूर्वी बंगाल	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रांत, पंजाब - 30% क्षेत्रफल पर
3. भूमि पर हक	जमीदार	रैय्यत (किसान)	महाल (ग्राम)

5) ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था का प्रभाव

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार हेतु कंपनी को राजस्व की आवश्यकता थी जिस का मुख्य स्त्रोत भू राजस्व था अतः सभी भू राजस्व नीतियों का उद्देश्य शोषण था, ब्रिटिश सरकार की भू राजस्व नीतियों (इजारेदारी, स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी, महालवाड़ी) के भारतीय अर्थव्यवस्था पर निम्न प्रभाव हुए -

6) भू राजस्व व्यवस्था का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

1. भूमि क्रय-विक्रय की वस्तु बनी
    - जोतो के आकार में कमी
    - संयुक्त परिवार का विघटन व मुकदमेबाजी
    - किसानों की दुर्दशा
2. कृषि निवेश में कमी से उत्पादन में कमी
3. कृषक ऋणग्रस्तता
    - रैयतवाड़ी जैसी व्यवस्थाओ द्वारा साहूकारी/मालगुजारी द्वारा शोषण
4. कृषि के वाणिज्यीकरण पर जोर देने से अकाल व भुखमरी
5. किसान का मजदूर व दास के रूप में रूपांतरण
6. विऔद्योगिकरण बेरोजगारी कृषि क्षेत्र पर दबाव में बढ़ोत्तरी

3.4) ब्रिटिश कृषि नीतियां व कृषि का वाणिज्यीकरण

1) प्रमुख कृषि सुधार/कार्य

1. 1843 :- अधिक अन्न उपजाओ कार्यक्रम
2. 1850 :- ब्रिटिश सरकार ने सिंचाई के लिए विभिन्न साधनों का विकास
3. 1876 :- इंडियन कौंसिल ऑफ साइंटिफिक स्टडीज की स्थापना
4. 1880 :- एक दुर्भिक्ष आयोग की स्थापना
5. 1889 :- एक कृषि विशेषज्ञ डॉ वाचेल्कर ने कृषि भारतीय कृषि की अवस्था की जांच पड़ताल की
6. 1905 :- अखिल भारतीय कृषि बोर्ड की स्थापना की गई
7. 1911 :- बंगलोर में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसेज की स्थापना
8. 1919 :- मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों के फलस्वरुप कृषि हस्तांतरित विषय बन गया और इसके विकास का उत्तरदायित्व जनता के प्रतिनिधियों पर आ गया
9. 1929 :- इंपीरियल कौंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च सेंटर
10. कृषि के विकास के लिए कम ब्याज पर ऋण देना प्रारंभ किया गया
11. पूना में एक कृषि अनुसंधान तथा कृषि कॉलेज की स्थापना
12. भाखड़ा नांगल दामोदर घाटी आदि की योजनाएं
13. सिंध में सक्खर बैराज और पंजाब में नहरों का निर्माण
14. इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रिटिश शासन काल में कृषि क्षेत्र में कुछ प्रगति अवश्य हुई, किंतु कृषक पहले जैसे ही निर्धन रहे

2) ब्रिटिश कृषि नीतियों के प्रभाव

1. भूमि का हस्तांतरण की वस्तु बन जाना
2. भूमि के बंटवारे से संयुक्त परिवार प्रणाली का पतन
3. अत्यधिक मुकदमेबाजी - कृषकों का धन व समय व्यर्थ
4. कुटीर उद्योगों का विनाश
5. अनुपस्थित जमीदार वर्ग का उदय
6. भारतीय कृषकों पर ऋण का बोझ
7. व्यावसायिक फसलों पर जोर - खाद्यान्नों का अभाव व अकाल

3) कृषि का वाणिज्यीकरण

3.1) परिचय व अर्थ

19 वीं सदी से पूर्व भारतीय कृषि आजीविका आधारित थी, परन्तु इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति व ब्रिटिश औपनिवेशिक आवश्यकताओं ने भारतीय कृषि में मूलभूत परिवर्तन किया जो कृषि का वाणिज्यीकरण था

1. अर्थ :- व्यापारिक लाभ के उद्देश्य से खाद्यान्न फसलों के स्थान पर नकदी फसलों के उत्पादन पर बल
2. नकदी फसलें :-
   - चाय - असम
     - ✓ 1835 - प्रथम चाय बागान
     - ✓ 1839 - असम चाय कम्पनी
   - जूट - बंगाल
   - अफीम, कपास, नील, कॉफी, रेशम आदि
3. ब्रिटिश पूर्व भारत में नकदी फसलों के उत्पादन का उद्देश्य आत्मनिर्भरता मात्र थी
4. अंग्रेजों की औपनिवेशिक नीतियों के अंतर्गत कृषि के वाणिज्यीकरण ने जहां एक तरफ ब्रिटेन को समृद्ध किया वहीं दूसरी तरफ भारत को दरिद्रता से ग्रस्त कर दिया

3.2) उद्देश्य/कारक

1. भू राजस्व की राशि को पूरा करना - मद्रास के गवर्नर से किसान ने कहा "हम कपास इसलिए उगाते हैं ताकि इसको खा ना सकें और भू राजस्व की रकम को पूरा कर सकें"
2. ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हेतु कच्चे माल की आपूर्ति
3. चीन के साथ व्यापार संतुलन ब्रिटेन के पक्ष में करने हेतु अफीम एवं चाय का उत्पादन
4. ब्रिटिश खाद्यान्न आवश्यकता
5. अधिकाधिक कृषिगत निर्यात लाभांश की प्राप्ति
6. रेलवे का विकास का भारत का वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ाव

3.3) प्रक्रिया

1. नगदी फसलों जैसे कपास, नील, जूट, तंबाकू, चाय, अफीम आदि की खेती पर बल
2. 1773 में वारेन हेस्टिंग्स ने पहली बार अफीम की खेती को कंपनी के एकाधिकार में लाया और अफीम का निर्यात चीन किया गया
3. पूर्वी भारत में असम में चाय की खेती आरंभ की गई और पहला चाय बागान असम में 1835 में लगाया गया
4. चाय बागान में मुख्यत ब्रिटिश पूंजी लगी हुई थी और इसमें कार्य करने के लिए बंधुआ मजदूरों को रखा गया
5. इंग्लैंड में ब्रिटिश सरकार ने भारत से आयात किए जाने वाले कच्चे माल एवं खाद्यान्न पर नाम मात्र का आयात शुल्क रखा

भारत में सर्वप्रथम उद्योगों की स्थापना		
उद्योग	स्थापना वर्ष	स्थान
सूती वस्त्र	1818	फोर्ट ग्लोस्टर असफल(कोलकाता)
सूती वस्त्र	1853	बम्बई(सफल)
कागज	1832	सिरामपुर(पं बंगाल)
चीनी उद्योग	1840	बेतिया(बिहार)
सीमेंट	1904	चेन्नई
जूट	1855(ncert)	रिंशरा(पं बंगाल)
लोहा इस्पात	1870	कुल्टी(पं बंगाल)
ऊनी वस्त्र	1876	कानपुर
कृत्रिम रेशा रेयान	1920	त्रावणकोर(केरल)
एल्युमिनियम	1937	जे के नगर(पं बंगाल)

3.4) प्रभाव

-: सकारात्मक :-

- भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण
- ग्रामीण-शहरी संपर्क से राष्ट्रीय चेतना का विकास
- कृषि का पूंजीवादी रूपांतरण
- कृषि विशेषीकरण, नवाचार व तकनीकीकरण को बढ़ावा

-: नकारात्मक प्रभाव :-

- धन की तीव्रता से निकासी
- विऔद्योगीकरण को बढ़ावा
- ग्रामीण ऋणग्रस्तता, भुखमरी, बेरोजगारी आदि में वृद्धि
- मानवजनित अकालों (बंगाल का अकाल, उड़ीसा का अकाल) आदि की संख्या में वृद्धि
- व्यवसायिक कृषि ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा

कृषि का वाणिज्यीकरण ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों से परिचालित था फलतः इसका लाभ मुख्यतः इंग्लैंड व अंग्रेजों को मिला भारतीयों का इसमें अत्यधिक शोषण हुआ और भारतीय कृषि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा

3.5) प्रमुख तथ्य

1. चाय व कॉफी के बागान पूर्ण रूप से विदेशी पूंजी के नियंत्रण में थे किसी भारतीय का इनके उत्पादन में कोई हाथ नहीं होता था
2. चाय की फसल उगाने पर विशेष बल दिया गया ताकि ब्रिटेन को चाय के लिए चीन पर निर्भर न रहना पड़े
3. नील की खेती और उसके द्वारा कृषकों के शोषण की कहानी को नील दर्पण में प्रमुखता से दर्शाया गया
4. 1928 में कृषि पर शाही आयोग बनाया गया जिसने इस दासता को अपनी रिपोर्ट में दर्शाया है
5. बिहार और उड़ीसा में कमियोंटी नाम की प्रथा प्रचलित थी कमिया लोग अपने मालिक के बंधुआ नौकर थे
6. कृषि के व्यवसायीकरण का एक परिणाम बंधुआ मजदूरी के रूप में तो दूसरा अकाल के रूप में सामने आया
7. तमिलनाडु में पन्नियाल तथा गुजरात में हाली समूह के मजदूर कृषि दास होते थे 1920 में कमियोंटी को रोकने के लिए कानून बनाया गया, परन्तु व्यवहार में यह प्रथा बहुत बाद तक चलती रही

8. नकदी फसलों के लालच में खाद्यान्न उत्पादन न होने से 1866-67 ई में भयंकर अकाल पड़े इन्हें आपदा का महासागर कहा गया
9. डेनियल थार्नर ने 1890-1947 तक के काल को कृषि स्थिरता का काल बताया है
10. ब्रिटिश भू राजस्व नीति और कृषि नीति ने भारत में गरीबी बढ़ाई, अकाल पड़े, कुछ हद तक अर्थव्यवस्था का मौद्रीकरण हुआ तथा गावों की अर्थव्यवस्था ध्वस्त होने से मजदूरी के लिए शहर की ओर पलायन हुआ फलतः नए शोषण पूर्ण श्रम सम्बंधों की शुरुआत हुई

3.6) शोषणकारी प्रथाएं

1. तिनकठिया प्रथा :- इस प्रथा के अंतर्गत चंपारण (बिहार) के किसानों को अपने ब्रिटिश वागान मालिकों के साथ किये गए अनुबंध पर अपनी जमीन के करीब 3/20 वें भाग पर नील की खेती करना आवश्यक होता था
2. ददनी प्रथा :- इस प्रथा के अनुसार कंपनी के कर्मचारी जुलाहों को पेशगी (रुपए) देते थे और बदले में एक शर्तनामा लिखवा लेते थे कि वे एक निश्चित मात्रा में और निश्चित मूल्य पर कपड़ा उपलब्ध कराएंगे इस तरह अंग्रेजों के अत्याचारों से तंग आकर जुलाहों के हजारों परिवारों ने अपना पैसा छोड़ दिया और मजदूरी करना प्रारंभ कर दिया।
3. कमियौटी प्रथा :- बिहार एवं उड़ीसा में प्रचलित इस प्रथा के अन्तर्गत कृषि दास के रूप में खेती करने वाले कमियाँ जाति के लोग अपने मालिकों द्वारा प्राप्त ऋष्टा पर दी जाने वाली ब्याज की राशि के बदले में जीवन भर उनकी सेवा करते थे।
4. दुबला हाली प्रथा :- भारत के पश्चिमी क्षेत्र, मुख्यतः सूरत में प्रचलित इस प्रथा के अंतर्गत दुबला हाली नामक भूदास अपने मालिकों को ही अपनी संपत्ति और स्वयं का संरक्षक मानते थे

3.5) विऔद्योगिकरण व कुटीर उद्योग

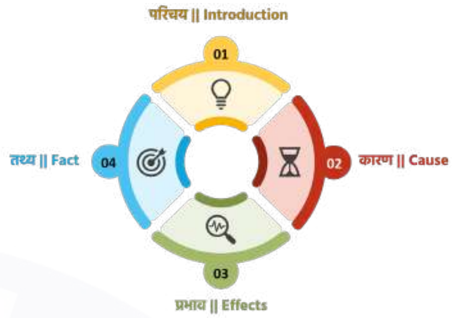

5.1) परिचय

ब्रिटिश सत्ता तथा औपनिवेशिक प्रकृति का प्रभाव भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों पर विऔद्योगिकरण के रूप में हुआ

1. अर्थ :- किसी देश के परंपरागत उद्योगों का क्रमागत विघटन तथा नवीन उद्योगों की स्थापना का अभाव
2. सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने भारतीय विऔद्योगिकरण का सिद्धांत दिया
3. ब्रिटिश शासन से पूर्व भारतीय हस्तकला उद्योग विश्व प्रसिद्ध
   - रॉबिन्सन क्रूसो - "भारतीय कपड़ा हमारे घरों, अलमारियों और शयनकक्ष तक में घुस गया है"
     - ✓ ढाका का मलमल,
     - ✓ लाहौर के गलीचे,
     - ✓ कश्मीर की शाल,
     - ✓ बनारस का जरी का काम,
     - ✓ अहमदाबाद की धोतियां,
     - ✓ लखनऊ का चिकन-बार्डर
     - ✓ नागपुर का सिल्क उद्योग
     - ✓ मुरादाबाद पीतल
     - ✓ शीशे का उद्योग कोल्हापुर, सतारा, गोरखपुर, आगरा और बालाघाट
     - ✓ वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त जहाज निर्माण उद्योग, चमड़ा उद्योग और संगमरमर पत्थर, हाथी दांत, लकड़ी व चंदन की तराशी व नक्काशी भी विश्व प्रसिद्ध था,

5.2) कारण

1. 1813 के चार्टर अधिनियम द्वारा मुक्त व्यापार नीति
2. हस्तशिल्प उद्योगों के संरक्षक व मुख्य क्रेता देशी रजवाड़ों की समाप्ति
3. ब्रिटेन द्वारा भारतीय उत्पादों पर प्रतिबंध व विभेदकारी कर
   - 1820 - ब्रिटेन में भारतीय वस्तुओं पर प्रतिबंध
   - ब्रिटिश उत्पादों पर 2.5% जबकि भारतीय उत्पादों पर 15% तक कर
   - 1877 में ब्रिटेन निर्मित कपड़ों पर आयात शुल्क समाप्ति
   - बर्नियर - बंगाल में धन के आने के 100 दरवाजे हैं परंतु बाहर जाने के लिए एक भी नहीं है
4. ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के उत्पादों हेतु भारत का बाजार रूपी प्रयोग
5. भारत में यातायात के साधनों का विकास
6. ददनी जैसी प्रथाओं द्वारा भारतीय शिल्पकारों का शोषण
7. अंग्रेजी शिक्षा व फैशन का अनुकरण

8. **अन्य कारण :-**
   - कच्चे माल की खपत की कोई उचित व्यवस्था ना होना,
   - उद्योगों का संगठित व व्यवस्थित ना होना,
   - भारतीयों में राष्ट्रीय भावना की कमी होना,
   - आधुनिक मशीनों द्वारा सस्ता माल तैयार करना,

इस काल में सभी प्रकार के हस्तशिल्प उद्योगों का पतन नहीं हुआ । इसके निम्नलिखित कारण थेः

- भारत में कुछ हस्तशिल्प उत्पाद ऐसे थे जिनका विकल्प ब्रिटिश उत्पादन हो ही नहीं सकते थे। उदाहरण - बढ़ईगिरी, कुंभकारी,
- उस काल में भारतीय बाज़ार एकीकृत नहीं था, अतः कुछ क्षेत्रों में चाहकर भी ब्रिटिश उत्पाद नहीं पहुँच सके।

Note :

1. रेलों के विकास से गांवों में ब्रिटिश कारखाना में निर्मित माल आसानी से एवं सस्ते दामों पर उपलब्ध होने लगा
2. 1813 का चार्टर एक्ट - मुक्त व्यापार की नीति तथा शून्य आयात शुल्क
3. इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति – भारतीय हस्तशिल्प अंग्रेजों के सस्ते एवं मशीन से निर्मित माल का मुकाबला नहीं कर पाए
4. शिल्पकारों को कम दरों पर काम करने तथा अपने उत्पाद अत्यंत कम मूल्यों पर बेचने हेतु विवश किया
5. लॉर्ड विलियम बेंटिक - भारतीय बुनकरों की हड्डियां भारत की मैदानों पर बिखरी पड़ी हैं
6. अंग्रेजों की देशी राज्यों के विलय की नीति ने भी भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
7. ब्रिटिश शिक्षा नीति का उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो जन्म से भारतीय हो किंतु अपने आचार विचार एवं व्यवहार से ब्रिटिश हो ताकि ब्रिटिश औद्योगिक बाजार का भारत में विस्तार हो सके
8. अंग्रेजी भाषा व फैशन का अनुसरण
9. अंग्रेजों ने समाज सुधार के माध्यम से भी अपने आर्थिक हितों की पूर्ति की
10. अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार करना तथा ब्रिटिश उदारवादी और उपयोगितावादी विचारों को फैलाना

5.3) प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

1. भारत में आधुनिक उद्योगों के विकास का आधार तैयार किया
2. हस्तशिल्पी वर्ग में विद्रोह की भावना का प्रसार हुआ

नकारात्मक प्रभाव

1. नवीन उद्योगों की स्थापना का अभाव
2. भारत में शिल्पकारों की बेरोजगारी
3. ग्रामों की ओर पलायन
4. कृषि पर दबाब व अकाल
5. भारतीय आय में कमी - 1800 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में 19.6% का योगदान जो 1913 में घटकर 1.4% हो गया
6. भारतीय औद्योगिकीकरण का मार्ग अवरुद्ध होना
7. ग्रामीण समाज का ह्रास
8. हस्तशिल्प केंद्र क्व रूप में विकसित शहरों, जैसे - ढाका, मुर्शिदाबाद, सूरत आदि का पतन हो गया
9. मानवजनित अकाल, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, ऋणग्रस्तता आदि में वृद्धि हुई जिससे कानून व्यवस्था चरमरा गई

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है की कंपनी तथा ब्रिटिश पूंजीपतियों ने मिलकर भारतीय हस्तशिल्प उद्योग को पूर्णतः नष्ट कर दिया करघा और चरखा जो पुराने भारतीय समाज की धुरी के रूप में प्रसिद्ध थे को तोड़ डाला तथा भारतीय बाजारों को लंकाशायर और मैनचेस्टर में निर्मित कपड़ों से भर दिया

5.4) प्रमुख तथ्य

1. सूती कपड़ों पर आयात कर लार्ड लिटन द्वारा घटाया गया था
2. भारतीय इतिहास का सबसे भयंकर अकाल 1876-78 में मद्रास, मैसूर, हैदराबाद, महाराष्ट्र संयुक्त प्रांत(पंजाब) में पड़ा
3. विलियम बैंटिक ने कहा इस दुर्दशा का भारतीय इतिहास में जोर नहीं भारतीय बुनकरों की हड्डियां भारत के मैदानों में बिखरी पड़ी हैं
4. इंपीरियल प्रेफसेस शब्द का प्रयोग भारत में ब्रिटिश आयातो पर दी गई विशेष रियायतों के लिए किया जाता है
5. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने साहित्य में धन निकासी सिद्धांत का उल्लेख किया है
6. 1861-62 में भारत से कपास निर्यात बढ़ने का कारण अमेरिका का गृह युद्ध था
7. 1800-50 को ब्रिटिश काल में अनुद्योगिकरण कालखंड के रूप में जाना जाता है
8. ब्रिटिश काल में भारत की अनुद्योगिकरण से आशय भारतीय परंपरागत हस्तशिल्प एवं लघु उद्योगों के पतन का से था
9. 1890 से 1947 तक कृषि स्थिरता का काल था
10. 1928 में कृषि क्षेत्र के लिए शाही आयोग का गठन किया गया

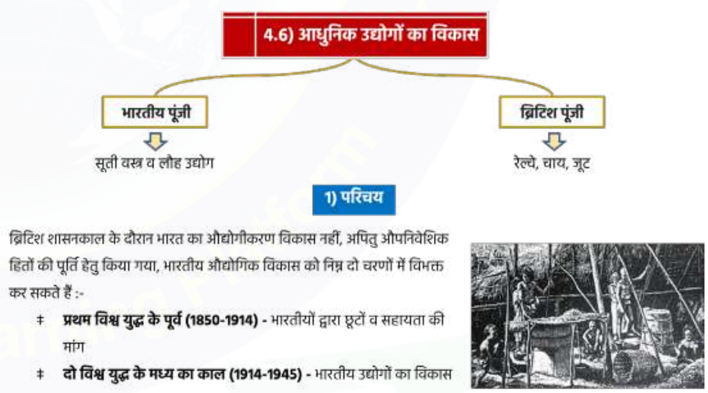

प्रथम चरण (1850 से 1914)

1. इस चरण में अधिकतम उद्योगों (जूट, बागानी, रेल्वे) में ब्रिटिश पूंजी पर आधारित थे फिर भी कवास डावर जैसे साहसी भारतीयों ने सूती वस्त्र जैसे उद्योगों को आरंभ किया
2. उद्योग के महत्वपूर्ण क्षेत्र जैसे रेल, परिवहन, बागान बैंक आदि ब्रिटिश पूंजी के नियंत्रण में ही रहें
3. महादेव गोविंद रानाडे ने देश में उद्योगों की स्थापना के लिए लोगों का आह्वान किया
4. भारतीय उद्योग में सूती वस्त्र पहला उद्योग था जिसमें भारतीयों द्वारा पूंजी लगाई गई

5. भारत में आधुनिक स्तर की प्रथम सूती कपड़ा मिल 1818 में कोलकाता के निकट फोर्ट ग्लोस्टर में लगाई गई थी किंतु यह मिल सफल ना हुई

द्वितीय चरण (1914-1945)

1. प्रथम विश्व युद्ध में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग ने ब्रिटिश का सहयोग
2. 1916 में होलैंड कमीशन - भारतीय उद्योगों को संरक्षण
3. 1921 में इब्राहिम रहीम के नेतृत्व में वित्तीय आयोग - ब्रिटिश सरकार से भारतीय उद्योगों को सहायता देने की सिफारिश की
4. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान युद्ध कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु देसी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन मिला भारतीय उद्योगों को विकसित होने का अवसर मिला
5. युद्ध के दौरान ही भारतीय पूंजीपतियों ने राष्ट्रीय आंदोलन की परिपक्व अवस्था के दौरान एक बॉम्बे योजना (घनश्याम दास बिरला, जॉन मथाई आदि) प्रस्तुत की
6. भारत की पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत बॉम्बे योजना के प्रावधान को शामिल किया गया

2) आधुनिक उद्योगों के सीमित विकास का कारण

1. भारत में पूंजी का अभाव :- बड़ी मात्रा में धन की निकासी
2. उद्योगों को सरकार का संरक्षण नहीं मिला
3. भारत में तकनीकी शिक्षा का प्रसार नहीं किया गया :- मशीनीकरण के लिए विदेशियों पर निर्भरता बनी रही
4. बैंकिंग एवं बीमा क्षेत्र पर ब्रिटिश का नियंत्रण
5. भारतीय उद्योग कुछ क्षेत्रों में और कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में केंद्रित रहे जिससे आर्थिक असंतुलन पैदा हुआ

3) मुख्य तथ्य

1. ब्रिटिश काल में भारत में चीन से मुख्यता चाय का आयात
2. विदेशी पूंजीपति भारतीय उद्योग की ओर आकृष्ट हुए क्योंकि सस्ता श्रम, कच्चे माल का बहुत आसानी से कम मूल्य पर उपलब्ध होना
3. लंकाशायर के सूती वस्त्रों का भारत में पहली - 1815
4. 1925 - भारतीय रेल बजट को सामान्य बजट से अलग करने की सिफारिश एकबर्थ समिति ने की थी
5. बैंक ऑफ़ बंगाल की स्थापना - 1808
6. बम्बई पोस्टल यूनियन की स्थापना - 1907
7. भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस - वल्लभ भाई पटेल
8. भारत का पहला श्रमिक संघ - बम्बई मिल हैंड एसोसिएशन (1884)
9. आधुनिक बैंकिंग का विकास - नीदरलैंड (1609)
10. पहला भारतीय बैंक - पंजाब नेशनल बैंक (1894)
11. इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया - 1921
12. एसबीआई का राष्ट्रीयकरण - 1 जुलाई 1955
13. ए. डी. गोरा वाला समिति - भारतीय स्टेट बैंक की स्थापना
14. भारत में बिछाई गई रेल लाइन को कार्ल मार्क्स ने आधुनिक युग का अग्रदूत की संज्ञा प्रदान की
15. पहला फैक्ट्री एक्ट 1881 में ब्रिटिश काल में बना
16. भारत में बैंकिंग संकट 1913 से 1917 के बीच हुआ
17. देश में कागज का प्रथम आधुनिक कारखाना - 1832 में सिरामपुर (WB)
18. कागज उद्योग का प्रथम सफल कारखाना - 1867 बालीगंज (WB)
19. प्रथम आधुनिक कारखाना (ऊनी वस्त्र) 1836 में कानपुर में
20. भारत में लोहा और इस्पात उद्योग - बंगाल आयरन एंड स्टील कंपनी (1870) में झारिया के निकट कुल्टी
21. यद्यपि भारत में आधुनिक स्तर की प्रथम सूती कपड़ा मिल 1818 में कोलकाता के निकट फोर्ट ग्लोस्टर में लगाई गई थी किंतु यह मिल सफल ना हुई
22. द्वितीय मिल मुंबई स्पिनिंग एंड वीविंग कंपनी 1853 में मुंबई में कवास जी एन डावर द्वारा स्थापित की गई
23. देश का प्रथम जूट कारखाना जॉर्ज ऑकलैंड द्वारा 1855 में कोलकाता के निकट रिंशरा नामक स्थान पर लगाया गया था भारत में जूट के कारखानों की संख्या 1885 में 11 से बढ़कर 1947 में 116 हो गई
24. चीनी उद्योग भारत में सबसे पहले बेतिया(बिहार) में 1840 में लगाया गया
25. सीमेंट एक महत्वपूर्ण अवसंरचना उद्योग है इसका अविष्कार 1824 में इंग्लैंड के पोर्टलैंड स्थान पर किया गया था
26. भारत में सीमेंट का प्रथम संयंत्र चेन्नई में 1904 में स्थापित किया गया था 1910 में कटनी सीमेंट कंपनी शुरू हुई

आर्थिक विकास से संबंधित समितियां/आयोग

समिति/आयोग	स्थापना वर्ष	सिफारिशें
दत्ता समिति	1915	कीमतों के उतार-चढ़ाव के संबंध में सुझाव
मैक्लागन समिति	1915	सहकारी संस्था से संबंधित मुद्दों पर सुझाव
औद्योगिक आयोग	1916	भारतीय उद्योगों तथा व्यापार में वित्त प्रयत्नों के लिए उन क्षेत्रों का पता लगाना जिसमें सरकार सहयोग कर सकें
राजस्व आयुक्त (रहीमुल्लाह आयोग)	1921	उद्योगों को अपने प्रारंभिक विकास की अवस्था में संरक्षण दिया जाना चाहिए
व्हिटले आयोग	1929	औद्योगिक कार्यशाला और बगीचों में श्रम की वर्तमान स्थिति के विषय में सुझाव
स्प्रू समिति	1934	मध्यमवर्गीय बेरोजगारी की जांच

3.7) रेलवे का विकास II Development of Railways

"अंग्रेजों द्वारा भारत में रेलवे का विकास दूसरों की पत्नी के श्रृंगार पर खर्च करने जैसा है I The development of railways in India by the British is like spending on the makeup of the wife of others."

— " बाल गंगाधर तिलक "

16 अप्रैल 1853 : भारत में पहली रेल II First rail in india

On April 16th, at 3:35pm, the first train in India leaves Bombay for Thane. Initial scheduled services consist of two trains each way between Bombay and Thane and later Bombay and Mahim via Dadar

7.1) परिचय और विकास

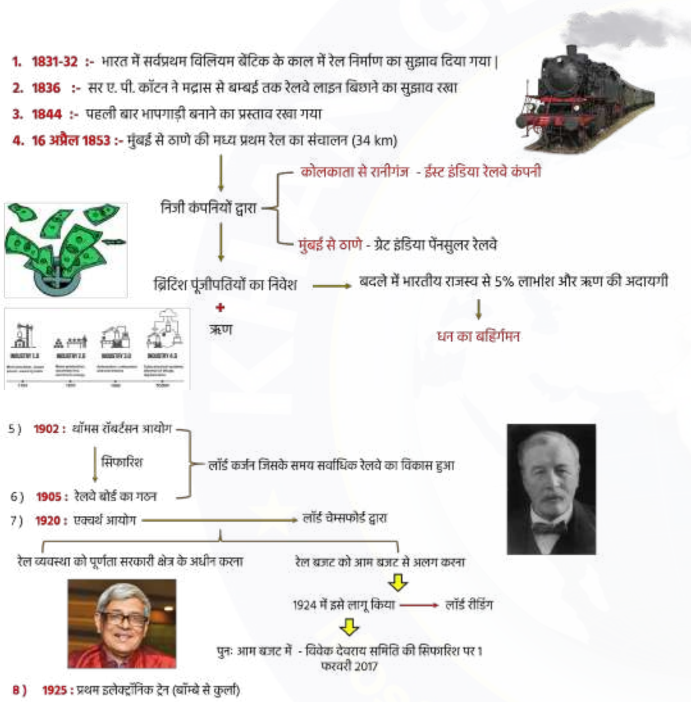

7.2) उद्देश्य/कारक

1. ब्रिटिश साम्राज्यवाद के आर्थिक, राजनैतिक, सैनिक तथा औपनिवेशिक हितों की पूर्ति
2. ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति से उपजी अधिशेष पूंजी के निवेश हेतु
3. भारत के दूरस्थ क्षेत्रों तक ब्रिटिश उत्पादों को पहुंचाना
4. सेना के तीव्र आवागमन को सुनिश्चित करना
5. ब्रिटिश लौह व इस्पात उद्योग को प्रोत्साहन देना
6. ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति हेतु भारतीय कच्चे माल तक आसान पहुंच सुनिश्चित करना

7.3) परिणाम

सकारात्मक प्रभाव

1. भारत को एक राजनीतिक इकाई बना दिया जिससे प्रशासन की दक्षता में वृद्धि एवं कानून व्यवस्था को मजबूती मिली
2. राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई
3. भारत के आंतरिक बाजारों को जोड़ा

नकारात्मक प्रभाव

1. भारत से धन निकासी का सशक्त माध्यम
   - रेलवे हेतु 5% लाभांश
   - रेलवे हेतु कर्ज व ब्याज अदायगी
2. भारतीय अर्थव्यवस्था की ऋणग्रस्तता
3. भारत में विऔद्योगिकरण
4. ब्रिटिश उत्पादों का भारत के बाजार में प्रवेश
5. कच्चे माल के निर्यात से भारतीय उद्योगों को क्षति
6. रेलवे कलपुर्जों व मशीनरी का पूर्णतः ब्रिटेन से निर्यात

7.4) मूल्यांकन

1. "जिस देश में कोयला व लोहा मौजूद हो और वहां परिवहन के साधनों का मशीनीकरण हो जाये तो उस देश में औद्योगिकरण होगा" - मार्क्स
2. उपरोक्त कथन मार्क्स ने रेलवे एवं औद्योगिकीकरण के बीच सहसंबंध को स्पष्ट करते हुए कहा वस्तुतः कोयला व लोहा आधारभूत उद्योगों के विकास के लिए सर्वप्रमुख तत्व है। लौह उद्योग के विकास से अन्य उद्योगों के लिए मशीनों की उपलब्धता होती है। फलतः औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिलता है। फलतः औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत लोगों की आवश्यकतापूर्ति के लिए अन्य सहायक उद्योगों का भी विकास होता है। परिवहन सुविधाओं के मशीनीकरण से व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है इस तरह एक औधोगिक वातावरण का निर्माण होता है । परिवहन के साधनों के मशीनीकरण अर्थात रेलवे के विकास से औद्योगिकीकरण की यह स्थिति ब्रिटेन जर्मनी जापान आदि देशों में देखी जा सकती है
3. इस दृष्टि से कार्ल मार्क्स का कथन सत्य साबित होता है किंतु भारत के संदर्भ में यह कथन लागू नहीं हो पाता यद्यपि भारत में अत्यंत कम समय में तीव्र गति से रेलवे का विकास हुआ है परंतु यहां औद्योगिकीकरण नहीं हो सका इसका कारण यह था कि भारत एक उपनिवेश था और ब्रिटेन अपने देश के औद्योगिक हितों को ध्यान में रखते हुए तथा भारत में अपने राजनीतिक प्रशासनिक सैनिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए रेलवे का विकास कर रहे थे रेलवे से संबंधित सभी कलपुर्जे रेल लाइन का निर्माण ब्रिटेन के उद्योगों में होता था और वहां से लाकर ने भारत में लगा दिया गया

ऐसे में भारत में औद्योगिकीकरण कैसे होता इतना ही नहीं ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं को भारतीय बाजार में लाकर रेलवे ने उसकी विऔद्योगिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान की और धन निकासी का मार्ग सुदृढ़ किया इस तरह भारत में रेलवे ने वही किया जो अन्यत्र नहीं किया

3.8) धन का निष्कासन II Drain of Wealth

8.1) परिचय

1. भारत से ब्रिटेन की ओर धन निष्कासन प्लासी युद्ध 1757 के बाद आरंभ हुआ जिसका वर्णन 1867 में दादा भाई नौरोजी ने अपने लेख "इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया" में प्रस्तुत किया
2. अर्थ :- भारत से ब्रिटेन को होने वाला धन (मुद्रा व वस्तु) हस्तांतरण जिसके समतुल्य भारत को प्रतिफल नहीं मिला
3. जॉन विनेगर :- 1834 से 51 भारत से प्रति वर्ष 42 लाख पौंड इंग्लैंड भेजे गए
4. 1896 के कलकत्ता अधिवेशन (अध्यक्ष-रहीमतुल्ला सयानी) में कांग्रेस की स्वीकृति
5. दादा भाई नौरोजी ने इसे "अनिष्टों का अनिष्ट"(Evil of all Evil) कहा

8.2) माध्यम/ स्त्रोत

1. कृषि भूमि पर लागू भू-राजस्व व्यवस्था विशेषकर बंगाल की स्थाई कर प्रणाली।
2. ब्रिटिश कम्पनी के अधिकारियों के वेतन, भत्ते, पेंशन आदि।
3. भारतीय सार्वजनिक ऋण पर दिया जाने वाला ब्याज।
4. 'व्यापार, उद्योग और बागानों में निवेश की गई पूंजी पर आय।
5. "विदेशी बैंक, बीमा और नौवहन कम्पनियों के द्वारा भारत से लाभ का अर्जन।
6. 'विदेशी पूंजी निवेश पर दिया जाने वाला ब्याज।
7. कम्पनी के शेयरधारकों को दिया जाने वाला लाभांश।
8. इंग्लैंड में रखा गया सुरक्षित कोष जिसमें भारतीय मुद्रा को रखा गया था।
9. गृह प्रभार (होम चार्जेज) के खर्च के अंतर्गत भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा ब्रिटेन में किया गया खर्च, जैसे- इंग्लैंड में नियुक्त यूरोपीय अधिकारियों के वेतन, भत्ते एवं पेंशन, रेलवे पर प्रत्याभूत ब्याज, सैनिक साम्रगियों की खरीद, सरकारी ऋण पर ब्याज आदि। 1857 के पूर्व 10% जो 1920 में 40% हो गया

8.3) प्रक्रिया

प्रथम चरण (1757-1813)

- प्लासी व बक्सर विजय से बंगाल की संपत्ति
- नवाबों से उपहार व रिश्वत
- बंगाल के राजस्व से युद्ध व व्यापार
- पर्सिबल स्पीयर - खुली व बेरहम लूट

द्वितीय चरण (1813-1858)

- ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति - भारत का विऔद्योगीकरण
- मुक्त व्यापार की नीति
- कृषि का वाणिज्यीकरण
- रेलवे में 5% लाभांश की गारंटी
- कार्ल मार्क्स - Bleeding Process

तृतीय चरण (1858 के बाद)

- गृह व्यय
- लाभांश
- दादाभाई नौरोजी - अनिष्टों का अनिष्ट

4) परिणाम

धन की निकासी का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी पक्षों पर गहरा प्रभाव पड़ा जिससे भारत को स्वतंत्रता के बाद भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा धन निकासी के प्रभाव इस प्रकार हैं -

1. राष्ट्रीय आय में कमी व निर्धनता में वृद्धि
2. भारत में पूंजी संचय के अभाव से औद्योगिक पिछड़ापन
3. कृषि का विनाश, निवेश में कमी व कृषक शोषण
4. भारत में विऔद्योगीकरण व बेरोजगारी
5. कृषि के वाणिज्यीकरण पर अत्याधिक अकाल - 19वीं सदी में 24 अकालों से लगभग 3 करोड़ मौतें
6. भारत में प्रति व्यक्ति कर भार 14% था, जो इंग्लैंड से दोगुना था
7. धन निकासी ने गरीबी और ऋणग्रस्तता में वृद्धि - भारत में लोगों की क्रय शक्ति सीमित में कमी
8. धन निकासी से ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति को प्रेरणा और ब्रिटिश की समृद्धि

उदारवादी राष्ट्रीय नेताओं ने धन निकासी सिद्धांत को स्पष्ट कर ब्रिटिश के शोषक चेहरे को उजागर किया फलतः भारतीय बुद्धिजीवियों को ब्रिटिश द्वारा भारत के शुभचिंतक होने का दावा एक धोखा नजर आया इसी क्रम में ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का विरोध शुरू हुआ और राष्ट्रवादी भावनाएं तीव्र हुईं

Note :

1. समर्थक :- आर.सी. दत्ता (इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया), सुरेंद्रनाथ बनर्जी, जी सुब्रमण्यम, एमजी रानाडे, जी.बी. जोशी
2. विरोध :- सर सैयद अहमद खान
3. 1896 के कोलकाता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी के धन निष्कासन के सिद्धांत को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वीकार किया था
4. 1901 में इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में धन के बहिर्गमन के सिद्धांत को गोपाल कृष्ण गोखले ने प्रस्तुत किया
5. राष्ट्रीय आय का प्रथम वैज्ञानिक आकलन डॉ वी के आर वी राव ने किया
6. नैतिक निकास की व्याख्या दादा भाई नौरोजी ने की :- भारतीयों को उनके ही देश में विश्वास तथा उत्तरदायित्व पूर्ण पदों से वंचित करने की ब्रिटिश नीति ही नैतिक निकास है
7. दादा भाई नौरोजी :- "ब्रिटिश शासन भारत से निकलने वाला खून का एक दरिया है"
8. दादा भाई नौरोजी द्वारा धन के बहिर्गमन के सिद्धांत को पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया में प्रतिपादित किया था
9. दादा भाई नौरोजी :- भारत का धन बाहर जाता है और फिर वही धन भारत में ऋण के रूप में आ जाता है और इस ऋण के लिए और अधिक ब्याज एक प्रकार का यह ऋण कुचक्र सा बन जाता है

10. वेल्वी आयोग ने धन संपत्ति के दोहन के मामले को लेकर दादाभाई नौरोजी से प्रश्न किया था
11. भारत में प्रति व्यक्ति आय का 20रुपये/वर्ष (1867-68ई) अनुमान दादाभाई नौरोजी ने किया था
12. मार्क्स ने इसे Bleeding Process की उपमा प्रदान की
13. राष्ट्रवादी नेता रमेश चंद्र दत्त ने अपनी पुस्तक इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया में धन निष्कासन के सिद्धांत पर बल दिया
    - आर्थिक इतिहास की पहली प्रसिद्ध पुस्तक
    - उन्होंने धन के निष्कासन को नादिर शाह जैसे विदेशी आक्रांताओं द्वारा की गई लूटमार से भी अधिक घातक बताया
14. जॉन सॉल्विन :- हमारी व्यवस्था बहुत कुछ स्पंज की तरह काम करती है, जो गंगा के तट से सभी अच्छी चीजों को सोख कर टेम्स नदी के किनारे लाकर निचोड़ देती है
15. ब्रिटिश शासन काल में संपत्ति दोहन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत होम चार्जेज(गृह कर) था
16. स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर अर्थात 1944-46 के मध्य कुल राष्ट्रीय आय 4931 करोड़ तथा प्रति व्यक्ति आय 204 थी
17. सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने धन निष्कासन के सिद्धांत का वर्णन अपनी पुस्तक "द पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया" में किया, जिसे 1867 में लंदन में हुई ईस्ट इंडिया एशोसिएशन की बैठक में इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया नामक अपने लेख के माध्यम में इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया
18. 1872 में न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे ने पुणे में भारतीय व्यापार और उद्योग पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने धन के बहिर्गमन के सिद्धांत की आलोचना की और कहा कि राष्ट्रीय पूंजी का 1/3 भाग किसी ना किसी रूप में भारत से बाहर ले जाया जा रहा है

दादा भाई नौरोजी I Dada Bhai Naoroji

1. जन्म | Birth → नवसरी मुंबई | Navsari Mumbai
2. मृत्यु | Death → मुंबई | Mumbai
3. भारत के वयोवृद्ध पुरुष (Grand old man of India)
4. भारत के औपचारिक राजदूत (Official Ambassador of india)
5. कांग्रेस के अध्यक्ष | President of congress
    - 1886 – कोलकाता | Kolkata
    - 1893 - लाहौर | Lahore
    - 1906 - कोलकाता | Kolkata → पहली बार स्वराज शब्द का प्रयोग | Use of the word Swaraj for the first time
6. 1865 में डब्ल्यू. सी. बनर्जी के साथ | In 1865, W.W. With C. Banerjee → लंदन इंडियन सोसायटी | London Indian Society

7. 1892 - 1895 → ब्रिटिश के हाउस ऑफ कॉमंस में चुने जाने वाले प्रथम भारतीय | First Indian to be elected to the British House of Commons
    - लिबरल पार्टी के टिकट पर | On Liberal Party Ticket
    - फिंसबेरी से निर्वाचित | Elected from Fins berry

8. पुस्तकें और लेख || Books and articles
    1) इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया | England debt to India (1867)
    2) पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया | Poverty and Un-british Rule in India (1902)
    3) द वॉन्टस एंड मींस ऑफ इंडिया | The wants and means of india (1876)
    4) ऑन द कॉमर्स ऑफ इंडिया | On the commerce of india (1871)

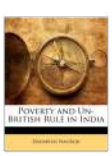

3.9) भारत में अकाल II Famine in india

- परिचय || Introduction — 01
- ब्रिटिश काल में पड़ने वाले अकाल || British famine — 02
- ब्रिटिश काल में अकाल का कारण || Cause of famine in British period — 03
- अकाल के प्रभाव || Effects of famine — 04
- अकाल दूर करने हेतु ब्रिटिश नीतियां || British policies to end famine — 05
- प्रमुख अकाल आयोग || Major famine commission — 06

9.1) परिचय

1. ब्रिटिश पूर्व भी भारत में अकाल पड़ते रहते हैं परंतु ब्रिटिश काल में औपनिवेशिक कारणों से अकालों की बारंबारता हेतु ब्रिटिश नीति उत्तरदायी थी
2. भारतीय कृषि मुख्यता वर्षा पर निर्भर है और भारत में मानसून द्वारा होने वाली वर्षा की प्रकृति प्रायः अनिश्चित देखी गई है
3. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अकाल को कम करने के लिए अनेक राहत कार्यों का वर्णन किया गया है

9.2) ब्रिटिश काल में पड़ने वाले अकाल

A) कंपनी शासन में अकाल (1757-1857)

1. 1769-70 :- बंगाल बिहार एवं उड़ीसा की एक तिहाई आबादी नष्ट हो गई कंपनी ने अकाल पीड़ित व्यक्तियों को सहायता एवं राहत पहुंचाने के ठीक विपरीत इस विषम परिस्थिति में लाभ कमाया
    - प्रतिक्रिया - बंगाल में सन्यासी विद्रोह (बंकिम चंद्र चटर्जी - आनंदमठ उपन्यास)
    - सन्यासियों के नेतृत्व में कंपनी के गोदामों पर आक्रमण
    - वारेन हेस्टिंग्स द्वारा कठोरता पूर्वक दमन
2. इसी प्रकार 1781-82, 1784 और 1792 में मद्रास और उत्तरी भारत में सूखा तथा अकाल पड़ा
3. 1792 की पूर्व कंपनी ने अकाल पीड़ितों को राहत पहुंचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया

B) क्राउन शासन में अकाल (1858-1947)

1. 1860-61 में दिल्ली आगरा क्षेत्र में भीषण अकाल
    - दो लाख लोगों की मृत्यु
    - पहली बार दरिद्र शालाओं का प्रयोग राहत कार्य के लिए
2. 1865-66 के दौरान उड़ीसा, बंगाल और बिहार में भीषण अकाल पड़ा
    - लगभग 20 लाख लोगों की मृत्यु
3. 19 वी सदी का सबसे भयंकर अकाल 1876-78 में पड़ा इसमें मद्रास, मैसूर, बम्बई तथा उत्तरप्रदेश मुख्यतः प्रभावित हुए जिसमें 50 लाख लोगों को अपनी जान गवानी पड़ी
4. विलियम डिग्बी के अनुसार 1854 से 1901 के बीच पड़ने वाले अकालों में दो करोड़ से अधिक लोग मारे गए
5. 1943 में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा जिसमें 30 लाख लोगों की मृत्यु

तत्कालीन भारत में पड़ने वाले इन अकालों और उनमें मरने वालों की भारी संख्या यह स्पष्ट करती है कि ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाई गई अकाल नीति में अपेक्षित राहत एवं सहायता का अभाव था

9.3) ब्रिटिश काल में अकाल का कारण

1. ब्रिटिश आर्थिक नीतियां
2. कृषि का वाणिज्यीकरण
3. भारतीय हस्तशिल्पियों का पतन
4. खाद्यान्न का अधिकाधिक निर्यात
5. उचित प्रबंधन एवं नीतियों का अभाव

9.4) अकाल के प्रभाव

1. जान एवं माल की क्षति
2. ग्रामीण ऋणग्रस्तता को बढ़ावा
3. हस्तशिल्पों का पतन
4. कृषक असंतोष एवं विद्रोह का प्रोत्साहन
5. मानव मृत्यु दर में वृद्धि की एवं अत्यधिक पशुधन का ह्रास हुआ
6. पाबना दंगे, दक्कन उपद्रव, खेड़ा सत्याग्रह आदि

9.5) अकाल दूर करने हेतु ब्रिटिश नीतियां

A) कम्पनी शासन (1757-1857)

B) क्राउन शासन (1857-1947)

A) कम्पनी शासन (1757-1857)

1) कंपनी राज्य विस्तार व औपनिवेशिक हितों की पूर्ति में व्यस्त

⇩

स्पष्ट नीति व राहत कार्यों का अभाव

1) 1792 में मद्रास अकाल पीड़ितों की सीमित सहायता

B) क्राउन शासन (1857-1947)

1) अकाल हेतु स्पष्ट नीति बनाने हेतु आयोगों का गठन व सुधारात्मक कदम

2) 1860-61 के दिल्ली आगरा अकाल में राहत हेतु केंद्रीय सहायता

2) **उड़ीसा अकाल :-** जॉर्ज कैम्पबेल आयोग (1866)

⇩

सरकार को राहत कार्यों का भार उठाना चाहिए

4) लिटन द्वारा रिचर्ड स्ट्रेची की अध्यक्षता में प्रथम अकाल आयोग (1878) :-

‡ लगान / करों में राहत

‡ अकाल संहिता का निर्माण

‡ 1883में अकाल कोष(प्रति वर्ष 1 करोड़ रुपये)

5) **1943** में बंगाल दुर्भिक्ष आयोग (अंतिम) - भारतीय खाद्यान्न परिषद

कुल मिलाकर कंपनी के शासनकाल में ब्रिटिश अकाल नीति पूर्णता अस्पष्ट थी और बाद में जब क्रमशः स्पष्ट नीति का विकास हुआ तब इस पर पूर्ण अमल नहीं किया गया

9.6) प्रमुख अकाल आयोग

समिति/आयोग का नाम	गठन का वर्ष	मुख्य सिफारिशें	परिणाम
कर्नल स्मिथ समिति	1860-61	समिति ने 1860-61 में **दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्रों** में आये अकाल के कारणों तथा उनकी उग्रता की जांच की	रिपोर्ट का कोई विशेष परिणाम नहीं निकला
जॉर्ज कैम्पबेल समिति	1866-67	1866-67 में **उड़ीसा** में आए अकाल के संदर्भ में इस समिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की समिति का मानना था कि सिर्फ स्वयंसेवी संस्थाएं ही राहत कार्यों के लिए उत्तरदाई नहीं है	सरकार ने आयोग की सिफारिशों के अनुरुप अकाल राहत कार्यों को अंजाम दिया परंतु अनमने ढंग से किए गए इस प्रयास से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ
स्ट्रेची आयोग (लॉर्ड लिटन)	1880	इस प्रथम अकाल आयोग ने सिफारिश की कि जरूरतमंद लोगों को सहायता पहुंचाना राज्य का कर्तव्य है और असक्षम तथा अशक्त लोगों को भोजन दिया जाए। प्रत्येक प्रांत में '**अकाल कोष**' होना चाहिए	सरकार ने **अकाल कोष** स्थापित करने के प्रयास किये। **1883 में अकाल संहिता** निश्चित की गई
लायन आयोग(लॉर्ड एल्गिन II)	1897	1896-97 के महान अकाल के संदर्भ में इस आयोग ने **स्ट्रेची आयोग की सिफारिशों से सहमति** प्रकट की तथा उसमें लचीलापन लाने की दृष्टि से कुछ परिवर्तन करने की अनुशंसा की	आयोग की सिफारिशों को मान लिया गया
सर एंटनी मैकडोनल आयोग(लार्ड कर्जन)	1900	आयोग ने 1901 में सिफारिश की कि अकाल सहायता और अनुदान सहायता और अनुदान में दी गयी सहायता पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया है। इसमें **नैतिक नीति तथा ग्राम स्तर के कार्यों को प्राथमिकता** दी	आयोग की सिफारिशों के आधार पर आगे की अकाल सहायता नीति निर्धारित हुई
जान वुडहेड आयोग	1945	1945 में आये अकाल की जांच के लिए **सर जान वुडहेड** की अध्यक्षता में एक **अकाल जांच कमीशन** बैठाया गया	

3.10) भारत में बैंकिंग

1) 1770 :- बैंक ऑफ हिंदुस्तान | Bank of Hindustan
- यूरोपीय पद्धति पर आधारित भारत का प्रथम बैंक | First bank of India based on European system
- अलेक्जेंडर एंड कंपनी द्वारा | By Alexander & Company

2) 1806 :- बैंक ऑफ़ बंगाल | Bank of Bengal

↓

प्रथम प्रेसिडेंसी बैंक | First Presidency Bank

3) 1840 :- बैंक ऑफ बांबे | Bank of Bombay

4) 1843 :- बैंक ऑफ़ मद्रास | Bank of Madras

तीनों प्रेसिडेंसी बैंकों का विलय | Merger of three presidency banks

⇩

1921 - इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया | Imperial Bank of India

⇩ गोरेवाला समिति की सिफारिश

1 जुलाई 1955 - राष्ट्रीयकरण और नाम परिवर्तन | Nationalization and name change

⇩

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया | State Bank of India

5) 1894 :- पंजाब नेशनल बैंक | Punjab National Bank
- I. प्रथम भारतीय बैंक | First Indian Bank
- II. लाला हरकिशन | Lala Harkishan

6) 1 अप्रैल 1935 :- रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया | Reserve Bank of India
- I. आरबीआई एक्ट 1934 | RBI Act 1934
- II. 5 करोड़ पूंजी | 5 crore capital
- III. 1 जनवरी 1950 – राष्ट्रीयकरण | Nationalization

3.11) संभावित प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. उपनिवेशवाद
2. वाणिज्यिक पूंजीवाद
3. स्थाई बंदोबस्त
4. रैयतवाड़ी
5. महालवाड़ी
6. कृषि का वाणिज्यिकरण
7. भारत में प्रथम चाय बागान कहां लगाया गया?
8. तिनकठिया पद्धति
9. ददनी प्रथा
10. कमियोंटी प्रथा
11. दुबला हाली प्रथा
12. विऔद्योगिकीकरण
13. भारत में प्रथम रेल
14. एकवर्थ आयोग
15. दादा भाई नौरोजी
16. पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया
17. धन का निष्कासन
18. प्रथम अकाल आयोग
19. जॉर्ज कैंपबेल समिति

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चरणों को समझाइए ?
2. स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था की मुख्य विशेषताएं ?
3. "स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था ने किसानों को दरिद्र बनाया" इस कथन की विवेचना करें ?
4. रैयतवाड़ी व्यवस्था को समझाते हुए इसकी मुख्य विशेषताएं बताएं ?
5. ब्रिटिश भू राजस्व व्यवस्था का भारतीय कृषि तथा उद्योगों पर क्या प्रभाव हुआ?
6. कृषि के वाणिज्यकरण को समझाते हुए, इसके प्रभावों को स्पष्ट करें।
7. विऔद्योगिकीकरण के कारणों को समझाइए ?
8. भारतीय परंपरागत उद्योगों के विनाश के लिए ब्रिटिश उत्तरदाई है, समझाइए।
9. ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति से भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों का पतन हो गया, समझाइए।
10. ब्रिटेन के औपनिवेशिक हितों के कारण जहां एक ओर इंग्लैंड में बड़े बड़े उद्योगों का विकास हुआ तो वहीं दूसरी ओर भारत में आधुनिक उद्योगों का विकास नहीं हो सका, तथ्यों के आलोक में इस कथन को समझाएं।
11. ब्रिटेन के द्वारा भारत में रेलवे तथा अन्य यातायात के साधनों का विकास क्यों किया गया?
12. किस प्रकार रेलवे के विकास में भारत की एकता तथा राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाया?
13. धन निष्कासन के सिद्धांत को समझाते हुए उसके माध्यमों की चर्चा करें।
14. जिस देश में कोयला व लोहा मौजूद हो और परिवहन के साधनों का मशीनीकरण हो जाए तो उस देश में औद्योगिकीकरण होगा, भारत के संदर्भ में कार्ल मार्क्स के इस कथन को समझाइए।
15. रमेश चंद्र दत्त के अनुसार भारत की वार्षिक आय का आधा हिस्सा ब्रिटेन भेज दिया जाता था, इस पूरी प्रक्रिया का भारतीय अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा? समझाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

1. ब्रिटेन की भू राजस्व व्यवस्था पर एक निबंध लिखें।
2. ब्रिटेन की प्रमुख आर्थिक नीतियों को समझाते हुए भारत पर इसके प्रभाव को रेखांकित करें।
3. धन के निष्कासन सिद्धांत पर निबंध लिखें ?

अध्याय 04 - ब्रिटिश कालीन प्रशासनिक नीतियां
(British Administrative Policies)

4.1) सिविल सेवाओं का विकास

1. लॉर्ड कार्नवालिस को भारत में सिविल सेवा का जनक कहा जाता है।
2. लार्ड कार्नवालिस ने कार्नवालिस संहिता का निर्माण किया और राजस्व और न्यायिक मामलों को अलग अलग कर दिया।
3. लार्ड कार्नवालिस ने सिविल सेवा का यूरोपीय करण किया अर्थात सभी भारतीयों को उच्च पदों से दूर रखा।
4. सन 1800 में लॉर्ड वेलेजली ने कोलकाता में सिविल सेवकों के प्रशिक्षण हेतु फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की हालांकि बाद में इसे बंद करवा दिया गया।
5. 1806 में लंदन में इंडिया कॉलेज या हैलिबरी कॉलेज की स्थापना की गई, जिसमें सिविल सेवकों को 2 वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता था।
6. 1833 का चार्टर अधिनियम की धारा 87 में कहा गया कि बिना किसी भेदभाव के सिविल सेवकों की नियुक्ति प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से होगी हालांकि इसे लागू नहीं किया गया।
7. 1855 में इंग्लैंड में प्रथम प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन किया गया तथा 1863 में सत्येंद्र नाथ टैगोर आई सी एस की परीक्षा में सफलता पाने वाले प्रथम भारतीय बने।
8. 1886 : एचिसन आयोग (लॉर्ड डफरिन)
    - ✓ अनुबद्ध (Covenanted) और अ-अनुबद्ध (Non-covenanted) शब्दों को समाप्त करें
    - ✓ आयु सीमा पुनः 23 वर्ष हो

▪

1853	23	डलहौजी
1860	22	कैनिंग
1866	21	लॉरेंस
1878	19	लिटन

9. 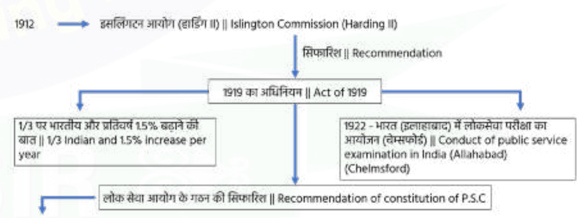

10. 1924 → ली आयोग (रीडिंग)
    - ✓ भारत सचिव नियुक्ति जारी रखें
    - ✓ 1926 - लोक सेवा आयोग का गठन
    - ✓ भारत & यूरोप
11. भारत सरकार अधिनियम 1935
    - ✓ संघ लोक सेवा आयोग
    - ✓ प्रांतीय लोक सेवा आयोग
12. 26 जनवरी 1950 → संविधान के भाग 14 के लेख 308 से 323

4.2) पुलिस प्रशासन II Police administration

1. भारत में पुलिस व्यवस्था का जनक लॉर्ड कार्नवालिस को माना जाता है।
2. 1861 में पुलिस अधिनियम बनाया गया।
3. 1902 में फ्रेजर कमीशन की सिफारिश पर केंद्र में केंद्रीय जांच ब्यूरो और प्रांतों में सीआईडी नामक संस्था ने बनाई।

4.3) न्याय व्यवस्था

3.1) पृष्ठभूमि / कारण

1. भारत की अस्पष्ट न्याय प्रणाली
2. विधि की समानता और विधि के शासन का अभाव
3. औपनिवेशिक शासन संचालन की सुगमता

वारेन हेस्टिंग्स || Warren Hastings → लॉर्ड कार्नवालिस || Lord cornwallis → विलियम बेंटिक || William Bentick → काऊन || Kaun

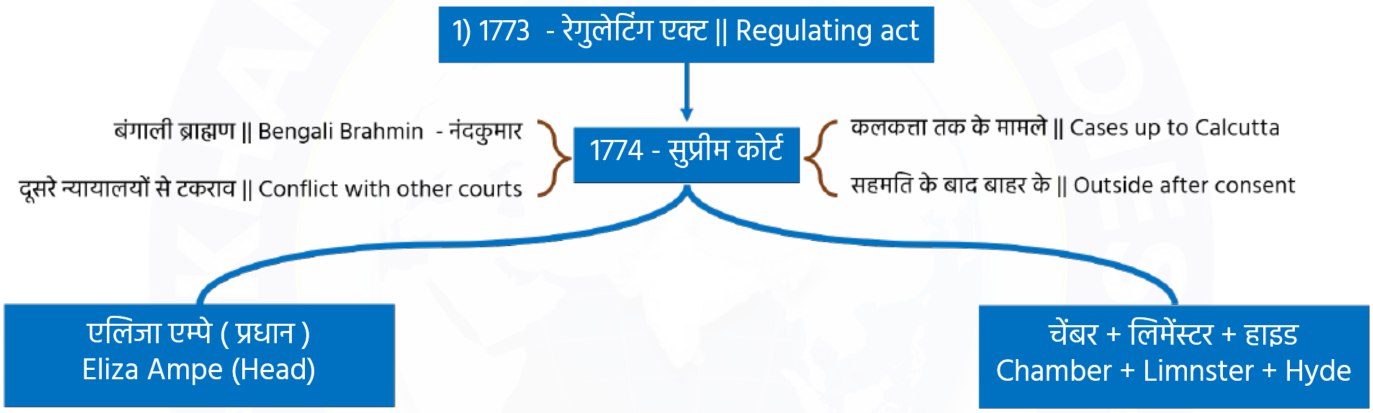

4. अन्य
   - ✓ लिखित रिकॉर्ड रखने की परंपरा की शुरुआत
   - ✓ अंग्रेजी अनुवाद

III. कार्नवालिस संहिता (1793)

1. शक्ति के पृथक्करण पर आधारित
   - कर प्रशासन
   - न्याय प्रशासन
2. कानून की सर्वोच्चता
3. भारत में यूरोपीय न्याय पद्धति लागू
4. सरकारी अधिकारी —सरकारी कार्य→ दीवानी अदालत

क्राउन के अधीन सुधार (1858 -1947)

1) प्रथम (1834-मैकाले) व द्वितीय (1853-जॉन रोमिली) विधि आयोग
   - दीवानी नियम संहिता (1859)
   - भारतीय दंड संहिता (1860)
   - फौजदारी नियम संहिता (1861)

2) उच्च न्यायालय अधिनियम
   - सदर न्यायालय की समाप्ति
   - कलकत्ता
   - बॉम्बे
   - मद्रास
   - इलाहाबाद

3) भारत शासन अधिनियम (1935) → संघीय न्यायालय का प्रावधान 1937

NOTE

इल्बर्ट बिल || Ilbert bill

i. वायसराय :- रिपन (1880-84)

ii. प्रावधान :- भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय लोगों के मामले की सुनवाई का अधिकार

iii. 1883 : यूरोपीय लोगों द्वारा विरोध

↓

परिणाम || Result

- वापस || back
- रिपन द्वारा त्यागपत्र || Resignation by Rippon

4.3) सैन्य व्यवस्था

A) 1857 से पूर्व B) 1857 के बाद

A) 1857 से पूर्व

1. ब्रिटिश भारतीय सेना के जनक - मेजर स्ट्रेंजर लॉरेंस
2. भारतीय सैनिक :-
   - कम वेतन
   - सर्वोच्च पद - सूबेदार

   } ब्रिटिश नस्लीयता

B) 1857 के बाद

1. भारतीय सैनिकों की संख्या में कमी और संतुलन :-
   - बंगाल – 2 : 1
   - मद्रास और बम्बई - 5 : 2
2. तोपखाने पर यूरोपीय नियंत्रण
3. भारतीय सेना में जाति, नस्ल और क्षेत्रवाद का आरंभ
4. सैन्य प्रशिक्षण :-
   - द इंपीरियल कैडेट कोर (1901 कर्जन)
   - किचनर टेस्ट (1902 क्वेटा)

आयोग

महत्त्वपूर्ण आयोग

कमीशन	वर्ष	गवर्नर जनरल
पील कमीशन	1860	लार्ड कैनिंग
इशर कमीशन	1920	चेम्सफोर्ड
स्किन कमीशन (सैंडहर्स्ट कमीशन)	1925	लार्ड रीडिंग
गैरन कमीशन	1932	लार्ड विलिंग्टन
चैटफील्ड कमीशन	1939	लार्ड लिनलिथगो

4.4) स्थानीय शासन

4.1) पृष्ठभूमि और कारण

1. स्थानीय स्वशासन :- ऐसी शासन प्रणाली, जिसमें निचले स्तर पर लोगों को भागीदार बनाकर लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को सुनिश्चित किया जाता है
2. भारत में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं का अस्तित्व प्राचीन मौर्य काल से ही था
3. चोल वंश के काल में इन संस्थाओं का विकास अपने चरम पर था
4. मध्यकाल में मुगलों के अधीन भी यह संस्थाएं अस्तित्व में रही परंतु अंग्रेजों ने स्थानीय स्वशासन का केंद्रीकरण कर दिया
5. किंतु शीघ्र ही उन्हें लगा कि वे बिना भारत की सहभागिता के प्रशासन संचालित नहीं कर पाएंगे तब अंग्रेजों ने समय-समय पर विविध अधिनियम द्वारा भारतीय जनमानस को स्वशासन के अधिकार प्रदान किए

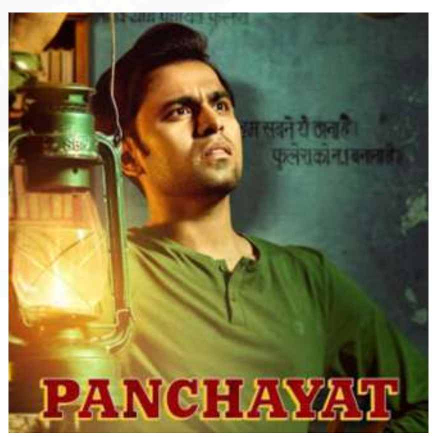

4.2) विकास क्रम

2.1) 1857 से पूर्व

1. 1687 : मद्रास नगर निगम || Madras Municipal Corporation
2. 1726 : कोलकाता और मुंबई नगर निगम || Kolkata and Mumbai Municipal Corporation
3. 1793 : चार्टर एक्ट 1793 द्वारा स्थानीय निकायों को वैधानिक मान्यता || Statutory recognition of local bodies by 1793 act
4. 1842 : नगर पालिकाओं को अप्रत्यक्ष कर लगाने के अधिकार || Municipalities have the right to impose indirect taxes

→ 1. शक्ति का विकेंद्रीकरण नहीं || No decentralization of power
→ 2. अधिकांश सदस्य सरकार द्वारा मनोनीत || Most members nominated by the gov.
→ 3. जिला दंडाधिकारी के अधीन || Under district magistrate

2.2) 1870 में लार्ड मेयो का प्रस्ताव

1. 1861 के भारत परिषद अधिनियम द्वारा वैधानिक विकेंद्रीकरण की नीति
    - 1870 का मेयो का वित्तीय विकेंद्रीकरण प्रस्ताव
        - ✓ स्थानीय कर और केंद्रीय कोष से धन
        - ✓ सड़क शिक्षा आदि प्रांतीय सरकार को
        - ✓ 1871 (बंगाल जिला बोर्ड उपकर एक्ट)

2.3) 1882 - लार्ड रिपन

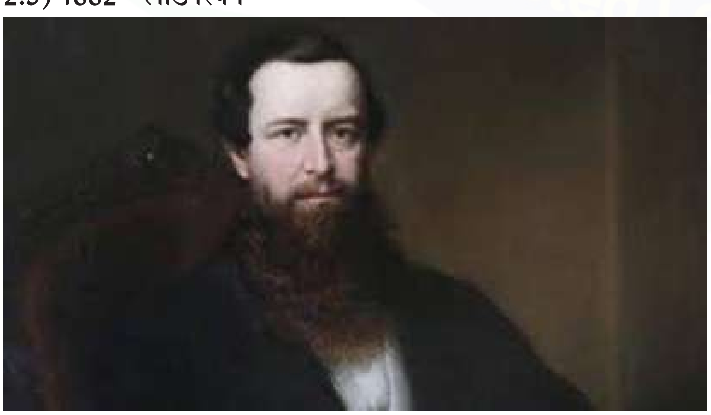

- 1882 - का रिपन प्रस्ताव
    - ✓ लार्ड रिपन को स्थानीय स्वशासन का जनक कहा गया

1. स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं का विकास
2. यह राजनीतिक शिक्षा का साधन है
3. मेयो कि वित्तीय विकेंद्रीकरण नीति को लागू करना
4. गैर-सरकारी सदस्यों का बहुमत (चुनाव)
5. न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप हालांकि नवीन करारोपण आदि हेतु सरकार की अनुमति आवश्यक

2.4) भारत सरकार अधिनियम 1919

1. स्थानीय स्वशासन को हस्तांतरित विषय बनाया (प्रांतीय सरकार)
2. वित्त अब भी आरक्षित विषय
3. नोट :- 1930 में साइमन कमीशन ने इस व्यवस्था को व्यर्थ बताया तथा पुनः सरकारी नियंत्रण बढ़ाने की सिफारिश की

2.5) भारत सरकार अधिनियम 1935

1. कार्यभार में वृद्धि परंतु कर व्यवस्था यथावत
2. वित्त का नियंत्रण निर्वाचित प्रांतीय सरकारों को
3. स्थानीय निकाय, कर में वृद्धि करने से पूर्व प्रांतीय सरकार की अनुमति ले

2.6) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद

1. गांधीवादी विचारधारा
    - अनुच्छेद – 40
        - ✓ परंतु राज्य के नीति निर्देशक तत्व के रूप में
2. संवैधानिक दर्जा, 1973 :-
    - 73 वा संविधान संशोधन अधिनियम, 1992
    - 74वां संविधान संशोधन अधिनियम, 1992

4.5) देसी रियासत - नरेंद्र मंडल (Chambers of Princes)

1. भारतीय नरेशों की सेना को भारतीय सेना का एक अंग स्वीकार किया गया
2. भारतीय नरेशों को आपस में संपर्क स्थापित करने का अवसर दिया गया
3. भारतीय नरेशों को एक सलाहकार समिति बनाने का सुझाव सर्वप्रथम लॉर्ड लिटन ने 1876 में दिया था
4. प्रथम महायुद्ध :- भारतीय नरेशों को ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा के कार्य में सम्मिलित किया जाए

5. मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट :- भारतीय नरेशों की एक स्थाई परिषद होनी चाहिए और इस आधार पर 1921 में एक नरेंद्र मंडल स्थापित
6. भारतीय रियासतों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया जो निम्न हैं –
   - सीधे प्रतिनिधित्व करने वाली 109 रियासतें जिन्हें पूर्ण वैधानिक अधिकार प्राप्त था
   - सीमित वैधानिक क्षेत्राधिकार वाली 127 रियासतें जिन्हें नरेंद्र मंडल हेतु 12 प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार था
   - सामंत अथवा जागीरो के मालिकों की श्रेणी में 326 रियासतें रखी गई
7. संपूर्ण भारत के लिए किसी भी नीति को निश्चित करते समय भारतीय नरेशों से सलाह ली जाएगी
8. रियासतों के सम्बन्ध निर्धारण हेतु सुझाव देने के लिए 1927 में हरकोर्ट बटलर समिति गठित की गई :- शासन में परिवर्तन हेतु किसी भी जन-आन्दोलन की स्थिति में भारत सरकार भारतीय नरेशों के राज्यों में हस्तक्षेप करेगी।

4.6) ब्रिटिश शिक्षा नीतियां

प्राचीन काल में भारत विश्व भर में शिक्षा का प्रमुख केंद्र हुआ करता था। तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, कांची एवं विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए छात्रों से भरे रहते थे। मध्यकाल में जौनपुर एवं अजमेर आदि भी विश्वविख्यात शिक्षा के केंद्र थे, परंतु 18वीं शताब्दी में देश की राजनीतिक उथल-पुथल से हिंदू और मुस्लिम दोनों के शिक्षा केंद्र लुप्तप्राय होने लगे।

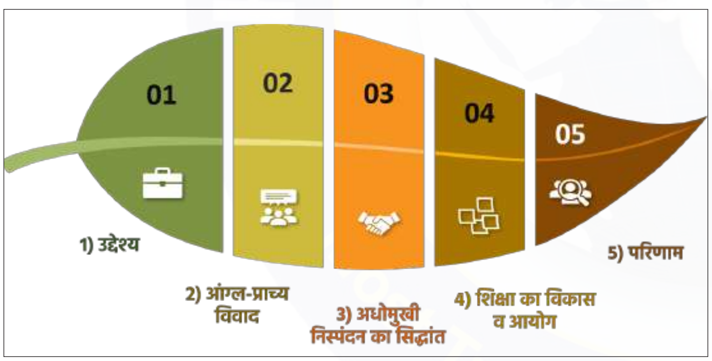

1) अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के कारण/ उद्देश्य

1. ब्रिटिश प्रशासन हेतु न्यून वेतन वाले भारतीय कर्मचारी हेतु
2. ब्रिटिश शासन का सामाजिक आधार बनाना
   - **"ऐसा भारतीय बनाना, जो रंग व रक्त से भारतीय हो परन्तु अचार, विचार और रुचि से अंग्रेज"**
3. ब्रिटिश संस्कृति व फैशन का प्रचार - ब्रिटिश उत्पादों की मांग हेतु
4. व्हाइट मैन बर्डन सिद्धान्त को न्यायोचित ठहराने हेतु
5. ईसाई धर्म प्रचार हेतु
6. भारतीय जनता के मध्य भेदभाव बढ़ाने हेतु

2) आंग्ल प्राच्य विवाद

1. 1813 का चार्टर अधिनियम :- भारत में शिक्षा हेतु प्रतिवर्ष 1 लाख रुपये का अनुदान
2. समस्या :- शिक्षा का माध्यम व विषय
3. समाधान :- लार्ड विलियम बेंटिक द्वारा 10 सदस्यीय सामान्य समिति का गठन

आधार	प्राच्यवादी	आंग्लवादी
समर्थक	विलियम जेम्स, जेम्स प्रिंसेप, चार्ल्स विल्किन्स HH विल्सन	जेम्स मिल, मैकाले, ट्रूवेलियन, चार्ल्स ग्रांट, एलिफिंस्टन, मुनरो
भाषा	स्थानीय(संस्कृत/अरबी)	अंग्रेजी
विषय	पारंपरिक शिक्षा ज्ञान व विज्ञान	पश्चिमी विज्ञान, तकनीकी तथा व्यवासायिक शिक्षा

4. परिणाम :- 7 मार्च 1835 को विलियम बैंटिक ने मैकाले स्मरणपत्र को स्वीकार किया
   - **"अंग्रेजी को भारत में शिक्षा का माध्यम व अधोमुखी निस्पंदन सिद्धान्त"**
5. लार्ड मैकाले :-
   - भारतीय शिक्षा को निम्न दर्जे का बताया
   - यूरोप के एक अच्छे पुस्तकालय की अलमारी का एक कक्ष भारत और अरब के समस्त साहित्य से अधिक मूल्यवान है
   - रक्त और रंग से भारतीय किंतु अपनी प्रवत्ति विचार नैतिक मापदंड और प्रज्ञा से अंग्रेजों हो

3) अधोमुखी निस्पंदन सिद्धान्त

1. लार्ड मैकाले व लार्ड ऑकलैंड द्वारा प्रस्तुत सिद्धान्त
2. सिद्धान्त :- उच्च भारतीय वर्ग अंग्रेजी शिक्षा पाकर निम्न भारतीय वर्ग को शिक्षित करेगा
3. परिणाम :-
   - असफल, चार्ल्स वुड डिस्पैच द्वारा समाप्त
   - सार्वजनिक शिक्षा का ह्रास
   - ब्रिटिश उत्तरदायित्व का अभाव
   - उच्च वर्गीय भारतीयों की रुचि का अभाव व सरकारी नौकरियां

7.4) ब्रिटिश द्वारा भारत में शिक्षा का विकास

1) प्रारम्भिक / प्रथम चरण (1757-1813)

1. चार्ल्स ग्रांट :- आधुनिक विद्यालयों की स्थापना का विचार- भारत में आधुनिक शिक्षा के जनक
2. 1781 : वारेन हेस्टिंग्स द्वारा कलकत्ता में मदरसा - अरबी व फारसी का अध्ययन
3. 21 फरवरी 1784 : वारेन हेस्टिंग्स द्वारा भारतीय जर्जर शिक्षा व्यवस्था को सुधारने हेतु कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स को पत्र
4. 1784 : विलियम जॉन्स द्वारा कोलकाता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल की स्थापना
   - भारत के अतीत, ग्रंथों व पुस्तकों का अध्ययन तथा अनुवाद
   - पत्रिका - एशियाटिक रिसर्चेच
   - अंग्रेजी अनुवाद –
     - ✓ विल्किन्स द्वारा श्रीमद्भागवत गीता (1784) व हितोपदेश

(1787)

- ✓ विलियम जॉन्स द्वारा कालिदास कृत अभिज्ञान शकुंतलम (1789) व गीत गोविंद(1792)
- ✓ 1794 में मनुस्मृति का “ए कोड ऑफ हिंदू लॉ” के रूप में अनुवाद

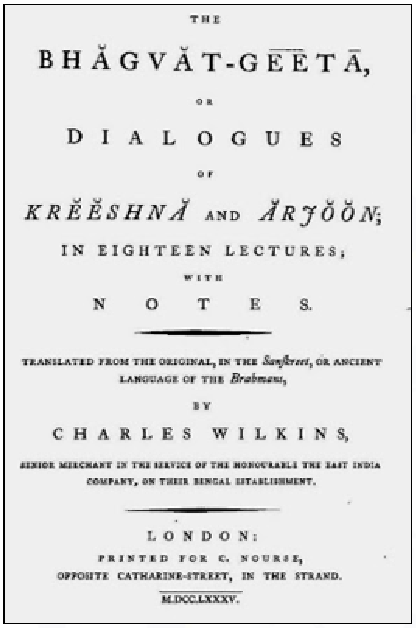

THE
BHĂGVĂT-GEĒTĀ,
OR
DIALOGUES
OF
KRĔĔSHNĂ AND ĂRJŎŎN;
IN EIGHTEEN LECTURES;
WITH
NOTES.
TRANSLATED FROM THE ORIGINAL, IN THE *Sanskreet*, OR ANCIENT LANGUAGE OF THE *Brahmans*,
BY
CHARLES WILKINS,
SENIOR MERCHANT IN THE SERVICE OF THE HONOURABLE THE EAST INDIA COMPANY, ON THEIR BENGAL ESTABLISHMENT.
LONDON:
PRINTED FOR C. NOURSE,
OPPOSITE CATHARINE-STREET, IN THE STRAND.
M.DCC.LXXXV.

5. 1791 : जोनाथन डंकन द्वारा बनारस में संस्कृत कॉलेज
    - हिंदू धर्म, साहित्य व कानून का अध्ययन
    - कलकत्ता व आगरा में भी विस्तार
6. 1796 : दक्षिण भारत में डेनमार्क मिशनरी द्वारा शिक्षा
7. 1799 : बंगाल के सीरामपुर में त्रयी मिशनरी द्वारा शिक्षा (विलियम केरी+विलियम वार्ड+जोशुवा मार्शमैन)
8. 1800-1802 : लॉर्ड वेलेजली ने कलकत्ता में अधिकार प्रशिक्षण हेतु फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की
9. 1813 : चार्टर अधिनियम द्वारा शिक्षा हेतु 1 लाख / प्रति वर्ष
10. 1817 : राजा राममोहन राय, डेविड हेयर व हाइड ईस्ट द्वारा कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना
    - अंग्रेजी माध्यम में पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा
    - वित्तीय समस्याओं के कारण कंपनी को हस्तांतरण
    - धर्म निरपेक्ष शिक्षा पर बल
    - 1854 में महाविद्यालय में रूपांतरित
11. 1822 : राजा राम मोहन राय द्वारा कलकत्ता में एंग्लो हिन्दू कॉलेज (इंडियन एकेडमी) की स्थापना - “भारतीय प्रबुद्ध वर्ग में अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य ज्ञान का पक्षधर था उनका मानना था कि पाश्चात्य शिक्षा के माध्यम से ही देश की सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं का समाधान संभव है”

4.2) द्वितीय चरण (1813-1947)

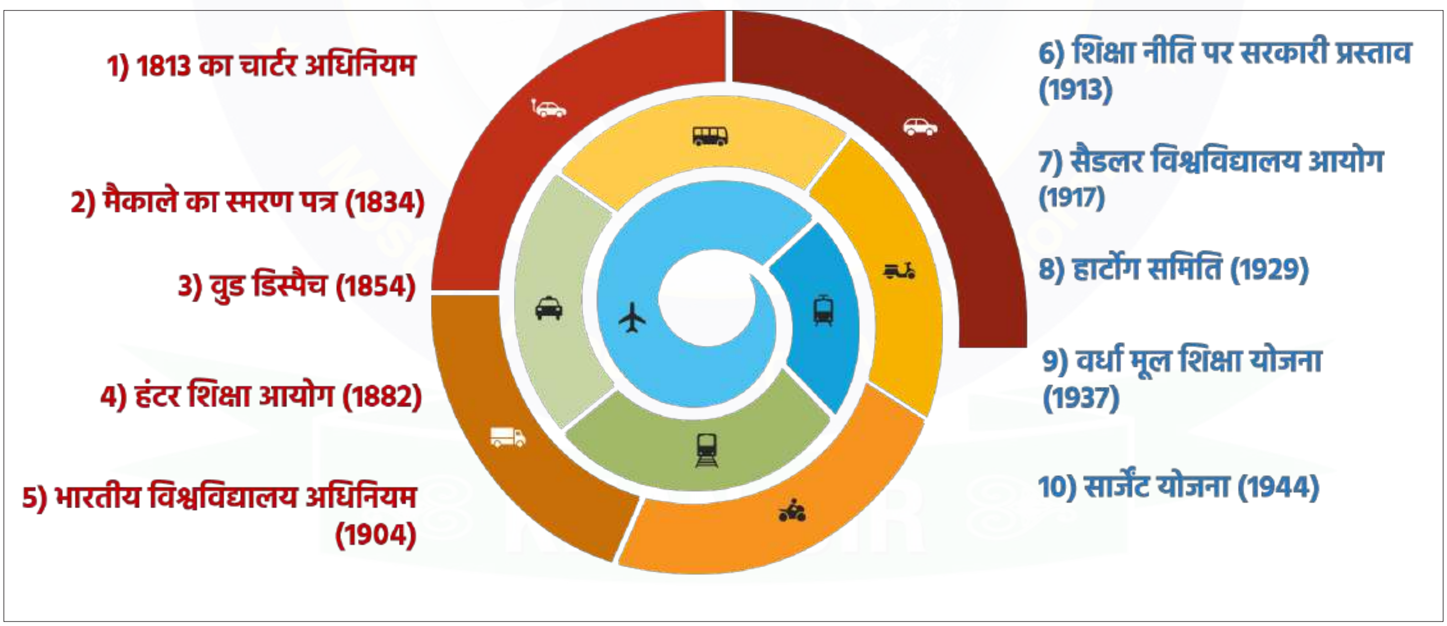

A) 1813 का चार्टर अधिनियम

1. शिक्षा हेतु एक लाख का बजट
2. 1823 के बाद उपलब्ध

B) मैकाले का स्मरण पत्र

1. लॉर्ड मैकाले वर्ष 1834 में भारत आया तथा उसे गवर्नर-जनरल की कार्यकारी परिषद् के विधि सदस्य के तौर पर नियुक्त किया गया
2. उसकी नियुक्ति सार्वजनिक शिक्षा समिति के अध्यक्ष पद पर कर दी गई, जिसका कार्य प्राच्यवादी तथा पाश्चात्यवादी विवाद पर मध्यस्थता करना था।
3. वर्ष 1835 में लॉर्ड मैकाले ने अपना प्रसिद्ध स्मरण-पत्र (Minute)

गवर्नर-जनरल की परिषद् के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसे लॉर्ड विलियम बैंटिक ने स्वीकार करते हुए अंग्रेजी शिक्षा अधिनियम, 1835 पारित किया।

4. मैकाले के स्मरण-पत्र के मुख्य प्रावधान निम्नलिखित थे :-
   - पाश्चात्य शिक्षा विज्ञान व साहित्य पर जोर
   - शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी
   - अधोगामी निस्पंदन का सिद्धांत
   - अनेक विद्यालयों के स्थान पर सीमित विद्यालयों व कॉलेज
5. कथन :-
   - यूरोप के एक अच्छे पुस्तकालय की अलमारी का एक कक्ष भारत और अरब के समस्त साहित्य से अधिक मूल्यवान है
   - रक्त और रंग से भारतीय किंतु अपनी प्रवत्ति विचार नैतिक मापदंड और प्रज्ञा से अंग्रेजों हो

C) वुड डिस्पैच, 1854

1. लॉर्ड डलहौजी के कार्यकाल में शिक्षा हेतु चार्ल्स वुड (बोर्ड ऑफ कंट्रोल के प्रधान) समिति द्वारा प्रस्तुत 100 अनुच्छेदों वाली योजना
2. भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा
3. उद्देश्य :- उच्च शिक्षा व पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार
4. **मुख्य सिफारिशें :-**
   - **माध्यम -**
     - उच्च शिक्षा - अंग्रेजी
     - स्कूली शिक्षा - स्थानीय भाषा
   - **संरचना -**
     - **गांव -** स्थानीय भाषा वाली प्राथमिक शालाएं
     - **जिला -** एंग्लो वर्नाकुलर हाई स्कूल व कॉलेज
     - **प्रान्त -** 1857 में बॉम्बे, कलकत्ता व मद्रास विश्वविद्यालय(अंग्रेजी)
5. 1855 में पांच प्रान्तों (बंगाल, बम्बई, पंजाब, मद्रास व उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त) में लोक शिक्षा विभाग का गठन
6. महिला शिक्षा को प्रोत्साहित
7. इंग्लैंड जैसे अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना
8. निजी प्रयासों हेतु अनुदान
   - वुड डिस्पैच की लगभग सभी सिफारिशें लागू कर दी गयी जिस कारण इसे भारतीत शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा गया

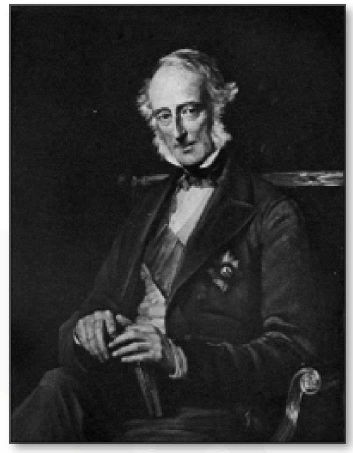

D) हंटर शिक्षा आयोग (लॉर्ड रिपन-1882 से 83)

1. परिचय :-
   - लॉर्ड रिपन द्वारा विलियम विल्सन हंटर की अध्यक्षता में 20 सदस्यीय आयोग (8 भारतीय) का गठन
   - उद्देश्य - प्राथमिक शिक्षा व वुड डिस्पैच के सुधारों की समीक्षा
2. सिफारिशें :-
   - प्राथमिक शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा हो
   - प्राथमिक स्कूलों का नियंत्रण जिला व नगर बोर्डों को सौंपा जाए
   - शिक्षा उपकर
   - स्त्री शिक्षा हेतु ज्यादा संस्थान
   - निजी विद्यालयों को बढ़ावा
   - माध्यमिक शिक्षा दो प्रकार :-
     - ✓ साहित्यिक शिक्षा (विश्व विद्यालय में प्रवेश हेतु)
     - ✓ व्यावसायिक शिक्षा
3. प्रभाव :-
   - माध्यमिक शिक्षा का तीव्र विकास
   - व्यवसायिक व तकनीकी कॉलेजों की संख्या में वृद्धि
   - पंजाब (1882) व इलाहाबाद (1887) में विश्वविद्यालय

E) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (कर्जन-1904)

1. परिचय :-

- लॉर्ड कर्जन द्वारा मैकाले की शिक्षा नीति का विरोध
- 1902 में विश्वविद्यालय शिक्षा की समीक्षा हेतु टॉमस रैले आयोग का गठन
- दो भारतीय - सैय्यद हुसैन बिलग्रामी व जस्टिस गुरुदास बनर्जी
- परिणाम - 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित

2. भारतीय विश्विद्यालय अधिनियम 1904 :-

- शोध को बढ़ावा देने हेतु पुस्तकालय व योग्य प्राध्यापक
- विश्वविद्यालयों की सीनेट के सदस्यों की संख्या कम से कम 50 और अधिक से अधिक 100 निश्चित की गई। उनके कार्यकाल की अवधि 6 वर्ष निर्धारित की गई
- उच्च शिक्षा हेतु 5 वर्षों हेतु 5 लाख वार्षिक का अनुदान
- कलकत्ता, मद्रास और बम्बई विश्वविद्यालयों की सीनेट के सदस्यों में 20 निर्वाचित सदस्य रखे गए और अन्य विश्विद्यालयों में यह संख्या केवल 15 थी
- विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा दिया जाए
- सरकार को सीनेट द्वारा पारित प्रस्तावों पर निषेधाधिकार दिया
- विश्वविद्यालयों का नियंत्रण अपने अधीनस्थ कॉलेजों पर बढ़ा
- विश्वविद्यालयों की क्षेत्रीय सीमाओं को सुनिश्चित करने का अधिकार गवर्नर जनरल को प्रदान कर दिया गया

3. प्रभाव :-

- सरकार द्वारा विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों पर पूर्ण नियंत्रण
- राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा आलोचना
- सैंडलर आयोग (1917) द्वारा आलोचना
- गोपाल कृष्ण गोखले - राष्ट्रीय शिक्षा को पीछे ले जाने वाला अधिनियम

4. लार्ड कर्जन की शिक्षा नीतियां :-

- लार्ड कर्जन का समय शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति का रहा
- कर्जन उच्च शिक्षा के बजाय प्राथमिक शिक्षा पर शहरों में शिक्षा प्रदान करने के बजाय ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्रसार पर और व्यवसाय शिक्षा के स्थान पर कृषि शिक्षा पर अधिक बल देता था
- यद्यपि इसका मुख्य कारण नगरों के शिक्षित व्यक्तियों का अंग्रेजी शासन के विरुद्ध बढ़ता हुआ असंतोष था
- उसकी शिक्षा नीति से स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई
- कर्जन की इस नीति के तहत 1902 में 5 वर्ष हेतु 5 लाख रुपया वार्षिक शिक्षा सुधार के निमित्त निर्धारित किया गया
- शिक्षा महानिदेशक की नियुक्ति कर्जन के समय ही है हुई और H.W.U. ऑरेंज को प्रथम महानिदेशक नियुक्त किया गया

F) शिक्षा नीति पर सरकारी प्रस्ताव (1913)

1. 1906 में बड़ौदा रियासत में निशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा आरंभ कर दी गई जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रवादी नेताओं ने ब्रिटिश सरकार से इसी तरह के प्रगतिशील कदमों को लागू करने की मांग की
2. 1910 से 1913 तक गोपाल कृष्ण गोखले ने विधान परिषद में अनिवार्य एवं निशुल्क प्राथमिक शिक्षा को लागू करने की मांग को प्रस्तुत किया
3. 21 फरवरी 1913 को ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा नीति पर सरकारी प्रस्ताव जारी किया
4. इस प्रस्ताव में अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा की मांग को तो स्वीकार नहीं किया गया परंतु निरक्षरता समाप्त करने की नीति को अवश्य स्वीकार कर लिया गया
5. प्रांतीय सरकारों को समाज के निर्धन वर्गों को निशुल्क शिक्षा
6. प्रत्येक प्रांत में एक विश्वविद्यालय स्थापित करने की घोषणा

G) सैडलर विश्विद्यालय आयोग (1917-19) लॉर्ड चेम्सफोर्ड

1. परिचय :-

- 1917 में कलकत्ता विश्विद्यालय की समीक्षा हेतु सैडलर आयोग
- दो भारतीय :- डॉ आशुतोष मुखर्जी व डॉ जियाउद्दीन अहमद

2. मुख्य सिफारिशें :-

- 1904 के विश्विद्यालय अधिनियम की कटु आलोचना
- माध्यमिक शिक्षा 12 वर्ष की होनी चाहिए अर्थात विद्यार्थियों को हाई स्कूल के पश्चात नहीं अपितु इंटरमीडिएट परीक्षा के पश्चात विश्वविद्यालय में प्रवेश लेना चाहिए
- विश्वविद्यालय के नियमों के निर्माण में कठोरता नहीं
- स्नातक की उपाधि के लिए 3 वर्ष की शिक्षा होनी चाहिए
- ऑनर्स और स्नातक की उपाधि का पाठ्यक्रम अलग हो
- पूर्ण स्वायत्त, आवासीय एवं एकात्मक स्वरूप के विश्वविद्यालयों की स्थापना
- कलकत्ता विश्वविद्यालयों में महिलाओं की शिक्षा के लिए एक महिला शिक्षा बोर्ड के गठन का सुझाव
- व्यावहारिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के पाठ्यक्रम का प्रबंध करना चाहिए तथा डिप्लोमा व डिग्री उपाधि दी जानी चाहिए

3. प्रभाव :-

- शिक्षा अब प्रांत का विषय बन गई और विश्विद्यालयों के संचालन का दायित्व प्रांतों पर डाल दिया गया
- आयोग के सुझाव के बाद 1916 से 1921 के बीच 7 विश्वविद्यालयों की स्थापना
  - ✓ 1916 में मैसूर एवं बनारस
  - ✓ 1917 में पटना
  - ✓ 1918 में उस्मानिया
  - ✓ 1920 में अलीगढ़
  - ✓ 1921 में लखनऊ तथा ढाका विश्वविद्यालय

4. 1919 का भारत शासन अधिनियम :-

- 1919 के मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों के तहत प्रान्तों में शिक्षा विभाग लोक निर्वाचित मंत्री के सुपुर्द कर दिया गया
- केंद्रीय सरकार ने शिक्षा में रुचि लेना बंद कर दिया और इस विभाग को अन्य विभागों में समाहित कर दिया
- शिक्षा के लिए केंद्रीय अनुदान को रोक दिया गया
- वित्तीय कठिनाइयों के कारण प्रांतीय सरकारों ने यथेष्ठ शिक्षा योजनाओं को कार्यान्वित नहीं किया। तथापि लोकोपकारी महापुरुषों की सहायता से शिक्षा में बहुत विकास हुआ

H) हार्टोग समिति (1929) लॉर्ड इर्विन

1. 1929 में शिक्षा व्यवस्था के प्रति बढ़ते असंतोष को देखते हुए ब्रिटिश सरकार के भारतीय सांविधिक आयोग द्वारा सर फिलिप हार्टोग की अध्यक्षता में एक समिति का गठन
2. इस समिति द्वारा प्रस्तुत प्रमुख सिफारिशें निम्नलिखित हैं -
   - प्राथमिक शिक्षा हेतु एकीकरण की नीति
   - ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को वर्नाकुलर मिडिल स्कूल के स्तर पर ही रोका जाए
   - ग्रामीण विद्यार्थियों को व्यवसायिक और औद्योगिक शिक्षा
   - उन्हीं विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में प्रवेश की अनुमति देने की सिफारिश की गई जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने के योग्य हों
3. परिणाम - 1935 में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड का पुनर्गठन

I) वर्धा मूल शिक्षा योजना, 1937 (लॉर्ड लिनलिथगो)

1. परिचय :-
   - महात्मा गांधी द्वारा हरिजन नामक पत्रिका में वर्णित
   - जाकिर हुसैन द्वारा प्रस्तुत
   - अक्टूबर 1937 (शिक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन ,वर्धा)
2. सिफारिशें :-
   - प्रथम सात वर्ष निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा (मातृभाषा में)
   - कक्षा 2 से कक्षा 7 तक की शिक्षा का माध्यम हिन्दी
   - अंग्रेजी भाषा में शिक्षा कक्षा आठ के पश्चात दी जाये
   - इंटरमीडिएट पाठ्यक्रमों को समाप्त कर दिया जाये
   - 20 वर्षों में वयस्कों को साक्षर बना दिया जाये
   - शिक्षकों के प्रशिक्षण पर बल
   - विकलांगों को शिक्षा दिये जाने पर बल
   - शिक्षा हस्त उत्पादित कार्यों पर आधारित होनी चाहिये।

J) सार्जेंट योजना 1944 (लॉर्ड वेवेल)

1944 में तत्कालीन शिक्षा सलाहकार जॉन सार्जेंट के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा योजना तैयार की गई जिसके मुख्य प्रावधान निम्नलिखित हैं :-

- 6 वर्ष से 11 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा का प्रबंध किया जाना चाहिए
- 11 से 17 वर्ष तक के छात्र-छात्राओं के लिए 6 वर्ष तक शिक्षा की अतिरिक्त व्यवस्था की जाए
- उच्च विद्यालय की स्थापना पर भी जोर दिया गया जो विद्या विषयक (Academic) तथा व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करें
- इंटरमीडिएट विद्यालय की श्रेणी को समाप्त किए जाने की सिफारिश की गई
- सार्जेंट योजना के अनुसार देश की शिक्षा व्यवस्था का पुनर्निर्माण 40 वर्षों में होना था जिसे खेर समिति ने घटाकर 16 वर्ष कर दिया

K) सारांश

अधिनियम या आयोग	वर्ष	गवर्नर जनरल	सम्बंधित विषय
1) कोलकाता मदरसा	1781	वारेन हेस्टिंग्स	फारसी, अरबी, मुस्लिम कानून और अनुवादक। प्रमुख - मुल्ला मुजद्दीन
2) बनारस संस्कृत कॉलेज	1791	लॉर्ड कार्नवालिस	जोनाथन डंकन द्वारा निर्मित
3) फोर्ट विलियम कॉलेज	1800	लॉर्ड वेलेजली	कोलकाता - सिविल सेवकों के प्रशिक्षण हेतु
4) 1813 का चार्टर एक्ट	1813	लॉर्ड मिंटो	शिक्षा हेतु एक लाख का बजट
5) हिंदू कॉलेज, कलकत्ता	1817	लॉर्ड हेस्टिंग्स	डेविड हेयर, एलेग्जेंडर डफ और राजा राममोहन राय
6) लॉर्ड मैकाले का स्मरण पत्र	1835	विलियम बेंटिक	अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया
7) वुड डिस्पैच (चार्ल्स वुड)	1854	लॉर्ड डलहौजी	भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा
8) हंटर आयोग (विलियम हंटर)	1882	लॉर्ड रिपन	1854 के बाद प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा की प्रगति की समीक्षा करना
9) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम	1904	लॉर्ड कर्जन	गोपाल कृष्ण गोखले - राष्ट्रीय शिक्षा को पीछे की ओर ले जाने वाला अधिनियम
10) बड़ौदा रियासत	1906	लॉर्ड मिंटो	बड़ौदा रियासत में निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा
11) सैडलर विश्वविद्यालय आयोग	1917	लॉर्ड चेम्सफोर्ड	कलकत्ता विश्वविद्यालय परंतु सभी विश्वविद्यालय पर लागू

12) 1919 का मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार	1919	लॉर्ड चेम्सफोर्ड	शिक्षा विभाग प्रांतीय सरकारों को हस्तांतरित कर दिया गया
13) वर्धा योजना	1937	लॉर्ड लिनलिथगो	1937 के शिक्षा हेतु वर्धा सम्मेलन में जाकिर हुसैन द्वारा प्रस्तुत
14) सार्जेंट योजना	1945	लॉर्ड वेवेल	6-11 वर्ष के आयु समूह के बच्चों के लिये निःशुल्क, व्यापक और अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था

3) तृतीय चरण (1947 से)

1. डॉक्टर राधाकृष्ण आयोग (1948-49)
2. डॉ डी.एस. कोठारी आयोग
3. 1976 :- शिक्षा को समवर्ती सूची में सम्मिलित किया
4. 1986 :- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986
5. 2002 :- 86 वा संविधान संशोधन अधिनियम
   - अनुच्छेद 21(A) - 6 से 14 वर्ष अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा
6. 2010 :- शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित
7. 2020 :- के. कस्तूरीरंगन समिति की सिफारिश पर नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति

7.5) परिणाम

A) सकारात्मक परिणाम

1. अंग्रेजों की औपनिवेशिक प्रकृति का प्रकटीकरण
2. भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध
3. पत्रकारिता व पुस्तकों के द्वारा राष्ट्रवाद का उदय
4. वैश्विक विचारों व गतिविधियों की जानकारी

B) नकारात्मक

1. ब्रिटिश औपनिवेशिक व सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के अनुरूप
2. आर्थिक रूप से महंगी - शिक्षा पर संपन्न वर्ग का अधिकार- असमानता में वृद्धि
3. स्थानीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी में शिक्षा - 1931 तक 92% निरक्षरता
4. तकनीकी वैज्ञानिक व व्यवसायिक शिक्षा की अवहेलना
5. महिला शिक्षा की अवहेलना
6. शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि
7. नवीन शिक्षित वर्ग का उदय जो रंग व रक्त से भारतीय परंतु विचारों से यूरोपीय था
8. भारतीय साहित्य संस्कृति व संस्कारों का पतन
9. मुस्लिम वर्ग की न्यून भागीदारी ने सांप्रदायिकता को बढ़ाया

Q 1. पश्चिमी हथौड़ी से ही भारतीयों ने पश्चिम की बेड़ियों को तोड़ा

उत्तर :- आधुनिक शिक्षा, रेलवे, संचार, प्रेस, नवीन शिक्षित मध्यमवर्ग

NOTE

- हिंदू कॉलेज की स्थापना 1817 में राजा राममोहन राय डेविड हेयर और एलेग्जेंडर डफ के प्रयत्नों से हुई
- डेविड हेयर ने शिक्षा में धर्मनिरपेक्षता को महत्व दिया
- चार्टर अधिनियम 1813 के तहत भारत में शिक्षा के लिए 100000 दिए गए
- आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा का भारत में प्रचार करने का श्रेय ईसाई मिशनरियों को दिया जाता है
- प्राच्य विद्या के समर्थक एच प्रिंसेप, विल्सन थे
- भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव 1835 के मैकाले के स्मरण पत्र से पड़ी
- ग्राम शिक्षा योजना जेम्स थॉमसन ने तैयार की
- लॉर्ड विलियम बैंटिक के समय अंग्रेजी शिक्षा आरंभ हुई
- भारत में प्रथम इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना रुड़की में 1847 में हुई
- मुंबई में ग्रांट मेडिकल कॉलेज की स्थापना 1854 में हुई

8) भारत में प्रेस विकास

आधुनिक विश्व में समाचार-पत्र संचार के प्रमुख माध्यम माने जाते हैं। इनके द्वारा सरकार की नीतियाँ जनता तक पहुंचती हैं।

8.1) पृष्ठभूमि II Background

1. 1550 : पुर्तगाली मिशनरियों ने 16 वीं शताब्दी में सर्वप्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की
2. 1557 : गोवा के पादरियों ने पहली पुस्तक भारत में छापी
3. 1684 : ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना पहला प्रिंटिंग प्रेस बम्बई में लगाया
4. 1776 : कंपनी के असंतुष्ट कार्यकर्ता विलियम बोल्टस ने त्यागपत्र देकर एक समाचार पत्र प्रकाशित करने का प्रयास किया परंतु कंपनी ने इंग्लैंड भेज दिया
5. 29 जनवरी 1780 : जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने सर्वप्रथम द बंगाल गजट अथवा द कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर नाम से पहला समाचार पत्र प्रकाशित किया परंतु कंपनी के अधिकारियों की आलोचना के कारण 23 मार्च 1782 में वारेन हेस्टिंग्स ने बंद करवा दिया
6. 1816 : गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक बंगाल गजट अंग्रेजी का प्रथम समाचार पत्र था जिसे किसी भारतीय ने प्रकाशित किया था यह समाचार पत्र प्रायः धार्मिक विषयों पर विचार व्यक्त करता था भारतीय भाषा में समाचार पत्र निकालने की वास्तविक शुरुआत मार्शमैन के बंगाली मासिक पत्रिका दिग्दर्शन(1818) के साथ हुई
7. 1818 : मार्शमैन ने दूसरा साप्ताहिक पत्र अपने संपादन में समाचार दर्पण का भी प्रकाशन किया था

8.2) मुख्य समाचार पत्र

समाचार	वर्ष	स्थान	सम्पादक/संस्थापक	विशेष
बंगाल गजट(अंग्रेजी)	1780	कलकत्ता	जेम्स ऑगस्टस हिक्की	भारत का प्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र, इसे कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर की संज्ञा दी गयी।
कलकत्ता गजट(अंग्रेजी)	1784	कलकत्ता	सरकारी सहायता	प्रकाशन पर प्रतिबंध के बाद भी यह समाचार पत्र प्रकाशित हुआ
बॉम्बे हेराल्ड(अंग्रेजी)	1789	बम्बई	------------	बम्बई से प्रकाशित पहला समाचार पत्र जिसे भारतीय जनता का दर्पण दिया गया। यह पत्र 1791 ई में बॉम्बे गजट में परिवर्तित हो गया
बम्बई कुरियर(अंग्रेजी)	1790	बम्बई	ल्यूक एशनवर्नर	1838 में रॉबर्ट नाइट के संपादन में इसका नाम परिवर्तित कर बॉम्बे टाइम्स के दिया गया
इंडिया हेराल्ड(अंग्रेजी)	1795	मद्रास	आर विलियम हैम्फ्री	सरकार समर्थित पत्र
द टेलीग्राफ(अंग्रेजी)	1796	--------	हॉल मैकेंजी	-------------
बंगाल गजट(अंग्रेजी)	1818	कलकत्ता	गंगाधर भट्टाचार्य हारुचन्द्र राय	प्रथम भारतीय अंग्रेजी समाचार पत्र । प्रथम बंगाली मासिक तथा भारतीय भाषा का प्रथम समाचार पत्र था जो बाद में साप्ताहिक हो गया एवं इसका नाम समाचार दर्पण हो गया
दिग्दर्शन(बंगाली)	1818	कलकत्ता	जे सी मार्शमैन	प्रथम भारतीय अंग्रेजी समाचार पत्र
संवाद कौमुदी(बंगाली)	1821	कलकत्ता	राजाराम मोहन राय	यह राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित बंगाली भाषा का साप्ताहिक पत्र था
समाचार दर्पण (बंगाली)	1818	कलकत्ता	जे सी मार्शमैन	बांग्ला भाषा में प्रकाशित प्रथम साप्ताहिक
मिरातुल अखबार(फारसी)	1822	कलकत्ता	राजा राममोहन राय	फारसी भाषा का प्रथम पत्र था
बंगदूत	1829	कलकत्ता	राजा राममोहन राय	यह हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली तथा फारसी भाषा में निकाला गया एक साप्ताहिक पत्र था
बॉम्बे समाचार(गुज.)	1822	बम्बई	फरदुंजी मार्जबान	गुजराती भाषा का प्रथम समाचार पत्र
उदन्त मार्तंड(हिंदी)	1826	कोलकाता	जुगल किशोर	भारत का प्रथम हिंदी समाचार पत्र
बॉम्बे टाइम्स(अंग्रेजी)	1838	बम्बई	थॉमस वेटेन/ रॉबर्ट नाइट	1861 के बाद इसका नाम द टाइम्स ऑफ इंडिया हो गया
रास्त गोफ्तार(गुजराती)	1851	बम्बई	दादा भाई नौरोजी	पारसी धर्म सुधारकों का समाचार पत्र
हिन्दू पैट्रियाट(अंग्रेजी)	1853	कलकत्ता	गिरीश चंद्र घोष बाद में हरिश्चंद्र मुखर्जी	---------
सोमप्रकाश(बंगाली)	1859	कलकत्ता	ईश्वर चंद्र विद्यासागर	प्रथम बंगाली राजनीतिक समाचार पत्र
अलीगढ़ इंस्टिट्यूट गजट(अंग्रेजी, उर्दू)	1866	उ.प्र.	सर सैयद अहमद खान	मुसलमानों में अंग्रेजी राज भक्ति पैदा करना तथा उन्हें शिक्षा के प्रति जागृत करना था
अमृत बाजार पत्रिका(बंगाली)	1868	कलकत्ता	शिशिर कुमार घोष एवं मोतीलाल घोष	इस पत्रिका की भाषा 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट से बचने के लिए अंग्रेजी कर दी गई इसके प्रथम वार संपादन मोतीलाल घोष ने किया था
मद्रास मेल	1868	मद्रास	------------	भारत का प्रथम सांध्य दैनिक समाचार पत्र
स्टेट्स मैन(अंग्रेजी)	1875	कलकत्ता	के. रंग हैरी	--------------
हिंदी प्रदीप (हिंदी)	1877	--------	बालकृष्ण भट्ट	-------------
द हिन्दू(अंग्रेजी)	1878	मद्रास	जी एस अय्यर/वी राघवाचारी	यह 1889 के पहले साप्ताहिक पत्र था

केसरी(मराठी)	1881	बम्बई	बाल गंगाधर तिलक	पहले इस पत्र के संपादक प्रो केलकर थे
मराठा(अंग्रेजी)	1881	बम्बई	बाल गंगाधर तिलक	पहले इस पत्र के सम्पादक आगरकर जी थे
युगांतर	1906	कलकत्ता	बारीन्द्र घोष, भूपेंद्र नाथ दत्त	------------
इंडिया	1890	लंदन	दादा भाई नौरोजी	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्रिटिश समिति का मुख्य साप्ताहिक पत्र था
संध्या	1906	बंगाल	ब्रह्मबांधव उपाध्याय	--------------
प्रताप(हिंदी)	1913	कानपुर	गणेश शंकर विद्यार्थी	--------------
गदर (उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, पंजाबी, हिंदी)	1913	सैन फ्रांसिस्को	लाला हरदयाल	प्रवासी भारतीय क्रांतिकारियों का पत्र था
भवानी मंदिर	1904	कलकत्ता	बारीन्द्र कुमार घोष	यह बम तथा हथियार बनाने की गुप्त पत्रिका थी
वन्देमातरम	1906	कलकत्ता	अरविंद घोष तथा विपिन चन्द्र पाल	क्रांतिकारियों का प्रेरणास्त्रोत
अल हिलाल (उर्दू)	1912	कलकत्ता	अबुल कलाम आजाद	--------------
मद्रास स्टेंडर्ड (हिंदी)	1914	मद्रास	एनीबेसेन्ट	--------------
कॉमन वील (अंग्रेजी)	1914	मद्रास	एनीबेसेन्ट	--------------
न्यू इंडिया (अंग्रेजी)	1916	मद्रास	एनीबेसेन्ट	मद्रास स्टेंडर्ड को ही एनीबेसेन्ट ने न्यू इंडिया नाम से प्रकाशित किया
डॉन	1917	करांची	अली जिन्ना	--------------
द लीडर (अंग्रेजी)	1909	-------	मदन मोहन मालवीय	--------------
यंग इंडिया (अंग्रेजी)	1919	अहमदाबाद	महात्मा गांधी	गुजराती में भी प्रकाशित
हिंदुस्तान टाइम्स (अंग्रेजी)	1922	दिल्ली	के एम पणिक्कर	--------------
हरिजन	1933	पूना	महात्मा गांधी	--------------
स्वराज (गुजराती)	1936	-----	एन पी पारुलेकर	--------------
नेशनल हेरॉल्ड (अंग्रेजी)	1938	------	जवाहरलाल नेहरू	--------------
तलवार	-----	पेरिस	मैडम भीकाजी कामा	--------------
फ्री हिंदुस्तान	------	वर्लिन	बीरेंद्र नाथ चट्टोपाध्याय	--------------
रेशवां	------	सैन फ्रांसिस्को	गदर दल द्वारा	--------------
आज (हिंदी)	1920	वाराणसी	शिव प्रसाद गुप्ता	--------------
कामरेड (अंग्रेजी)	1911	कलकत्ता	मौलाना मु. अली	--------------
हमदर्द (उर्दू)	1913	दिल्ली	मौलाना मु. अली	--------------

8.3) मुख्य समाचार एजेंसी

क्रम.संख्या	समाचार एजेंसी	स्थापना वर्ष
1.	रायटर(प्रथम समाचार एजेंसी)	1860
2.	एसोसिएट प्रेस ऑफ इंडिया	1905
3.	फ्री प्रेस न्यूज सर्विस	1927
4.	यूनाइटेड प्रेस ऑफ़ इंडिया	1934

8.4) मुख्य पुस्तकें

पुस्तक/ रचनाएं	लेखक
पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया	दादाभाई नौरोजी
गीता रहस्य	बाल गंगाधर तिलक
आर्कटिक होम ऑफ द वेदास	बाल गंगाधर तिलक
इंडिया विंस फ्रीडम	मौलाना अबुल कलाम आजाद
डिस्कवरी ऑफ इंडिया	जवाहरलाल नेहरू
ग्लिम्पेज ऑफ द वर्ल्ड हिस्ट्री	जवाहरलाल नेहरू
फिलासफी ऑफ द बॉम्ब	भगवती चरण वोहरा
इंडिया डिवाइडेड	राजेंद्र प्रसाद
अनहैप्पी इंडिया	लाला लाजपतराय
द इंडियन स्ट्रगल	सुभाष चंद्र बोस
एन इंडियन पिलग्राम	सुभाष चंद्र बोस
आनंदमठ	बंकिम चंद्र चटर्जी
दुर्गेशनंदिनी	बंकिम चंद्र चटर्जी
कपालकुंडला	बंकिम चंद्र चटर्जी
गीतांजलि, गोरा	रविंद्र नाथ टैगोर
माई अर्ली लाइफ, हिन्द स्वराज	महात्मा गांधी
माय एक्सपेरिमेंट विथ ट्रुथ	महात्मा गांधी
लाइफ डिवाइन	अरविंद घोष
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम	वीडी सावरकर
भवानी मंदिर	बरिंद्र घोष
इंडिया अनरेस्ट	वैलेंटाइन शिरोल
दा इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया	आरसी दत्त
अ नेशन इन मेकिंग	सुरेंद्रनाथ बनर्जी
द स्कोप ऑफ हैप्पीनेस	विजय लक्ष्मी पंडित
बंदी जीवन	शचीद्र सान्याल
सॉन्ग ऑफ इंडिया	सरोजिनी नायडू
द एंसीएन्ट विजडम	एनी बेसेंट
रिविजन एंड सोशल रिफॉर्म	एमजी रानाडे
पाकिस्तान एंड द पार्टीशन ऑफ इंडिया	बी.आर अंबेडकर
सत्यार्थ प्रकाश	दयानंद सरस्वती
गुलामगिरी	ज्योतिबा फुले
इंडियन पॉलिटिक्स	डब्ल्यू सी बनर्जी

8.5) प्रेस से संबंधित अधिनियम

अधिनियम	गवर्नर जनरल/वायसराय	विशिष्ट तथ्य
प्रेस नियंत्रण अधिनियम 1799	लॉर्ड वेलेजली	लागू करने का कारण फ्रांसीसी आक्रमण
अनुज्ञप्ति नियम 1823	जॉन ऐडम्स	यह मुख्यता भारतीय भाषाओं, संपादकों एवं स्वामियों के लिए था
भारतीय प्रेस अधिनियम 1835	चार्ल्स मेंटकॉफ़	प्रेस का सभी प्रतिबंध हट गया
अनुज्ञप्ति अधिनियम 1857	लॉर्ड कैनिंग	
पंजीकरण अधिनियम 1867	जॉन लॉरेंस	
वर्नाकुलर प्रेस एक्ट 1878	लॉर्ड लिटन	सोम प्रकाश के विरुद्ध सर्वप्रथम यह अधिनियम पास हुआ
समाचार पत्र अधिनियम 1908	लॉर्ड मिंटो द्वितीय	
भारतीय प्रेस अधिनियम 1910	लॉर्ड मिंटो द्वितीय	
भारतीय प्रेस अधिनियम 1931	लॉर्ड इरविन	
समाचार पत्र अधिनियम 1951	स्वतंत्र भारत	सांप्रदायिक दंगों की चपेट के कारण

प्रेस नियंत्रण अधिनियम	1799	लॉर्ड वेलेजली	भारत का प्रथम प्रेस नियंत्रण कानून समाचार पत्रों पर प्री सेंसरशिप लगाया लॉर्ड हेस्टिंग्स 1818 में प्री सेंसरशिप समाप्त की
द लाइसेंसिंग रेगुलेशन एक्ट या अनुज्ञप्ति नियम	1823	जॉन ऐडम्स	मजिस्ट्रेट को प्रेस जब्ती का अधिकार मिला प्रेस की स्थापना के लिए लाइसेंस लेना अनिवार्य किया राजा राममोहन राय को अपनी पत्रिका मिरात उल अखबार का प्रकाशन बंद करना पड़ा
लिबरेशन ऑफ द इंडियन प्रेस एक्ट या मैटकॉर्प अधिनियम	1835	चार्ल्स मेटकॉफ	पुराने प्रतिबंधों को रद्द कर दिया प्रकाशक को केवल प्रकाशन के स्थान की सूचना देनी होगी यह कानून 1857 तक चलता रहा और इस अवधि में देश में समाचार पत्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई चार्ल्स मेटकॉफ भारतीय समाचार पत्रों का मुक्तिदाता
वर्नाकुलर प्रेस एक्ट	1878	लॉर्ड लिट्टन	भारतीय भाषा के समाचार पत्रों पर नियंत्रण प्रत्येक मुद्रक तथा प्रकाशक के लिए जमानत राशि जमा कराना जरूरी होगा जिला दंडाधिकारी को यह अधिकार दिया गया कि वे स्थानीय सरकार की आज्ञा से किसी भी भारतीय भाषा के समाचार पत्र के प्रकाशक को बुलाकर बंधन पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए कह सकते हैं जिसमें यह लिखा होता था की कोई ऐसी सामग्री प्रकाशित नहीं की जाएगी जिससे सरकार के विरुद्ध संतोष भड़के इस अधिनियम से बचने हेतु समाचार पत्र को अपने पत्र की एक प्रमाण प्रति सरकारी पत्रेक्षण को देनी होगी इससे मुंह बंद करने वाला अधिनियम कहा गया बांग्ला पत्रिका अमृत बाजार रातों-रात अंग्रेजी भाषा में परिवर्तित हो गई ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा प्रकाशित पत्र सोम प्रकाश पर यह अधिनियम सर्वप्रथम लागू हुआ। इसे 1882 में लॉर्ड रिपन ने रद्द कर दिया
समाचार पत्र अधिनियम	1908		मजिस्ट्रेट को अधिकार दिया गया कि वह हिंसा उकसाने वाले समाचार पत्रों की संपत्ति को जप्त कर ले हालांकि उच्च न्यायालय में अपील करने की अनुमति दी गई।

8.6) समाचार पत्रों की भूमिका एवं प्रभाव

अध्याय - 05
ब्रिटिश कालीन नीतियों के विरुद्ध भारतीय प्रतिक्रिया
(Indian reaction against British policies)

1857 की क्रांति

प्रमुख जनजाति विद्रोह

प्रमुख कृषक विद्रोह

Previous Year Question

1.	2020	Very Short	अहोम विद्रोह
2.	2020	Very Short	मोपला विद्रोह
3.	2020	Very Short	भील विद्रोह
4.	2019	Very Short	उलगुलान
5.	2019	Very Short	भीमा नायक
6.	2019	Short	ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आदिवासियों की प्रतिक्रिया के कारणों को आदिवासी विद्रोह के प्रकाश में उद्घाटित कीजिए
7.	2018	Short	बिरसा मुंडा आंदोलन का एक संक्षिप्त वर्णन दीजिए
8.	2018	Short	कुंवर सिंह पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए
9.	2018	Long	1857 ईसवी के विद्रोह की असफलता के कारणों को चिन्हित कीजिए तथा इसके महत्व पर प्रकाश डालिए
10.	2017	Very Short	बिरसा मुंडा
11.	2017	Short	1857 के विद्रोह की प्रकृति की विवेचना कीजिए। क्या है स्वतंत्रता संग्राम था?
12.	2016	Very Short	कोल विद्रोह
13.	2016	Short	1855-56 का संथाल विद्रोह शोषण के विरुद्ध एक तीव्र प्रतिक्रिया थी। व्याख्या करें
14.	2014	Long	1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए

5.1.1) 1857 की क्रांति

"भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ही उसका विरोध शुरू हो गया था ब्रिटिश विस्तारवादी नीतियों, आर्थिक शोषण और विभिन्न वर्षो में प्रशासनिक नवोन्मेष ने भारतीय राज्यों के शासकों, सिपाहियों, जमींदारों, किसानों, व्यापारियों, शिल्पकारो, पंडितों, मौलवियों इत्यादि की स्थिति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया। यह धीमी गति से बढ़ता असंतोष 1857 में एक हिंसक तूफान के रूप में भड़का जिसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया।"

1. 10 मई 1857 को मेरठ में भारतीय सैनिकों द्वारा ब्रिटिश कंपनी शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह
2. तात्कालिक कारण :- सेना में चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग
3. वास्तविक कारण :- 1757 के बाद की ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियां
4. अन्य नाम :- प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, सिपाही विद्रोह आदि
5. प्रभाव :- भारत से कंपनी शासन का अंत तथा क्राउन शासन का आरम्भ
6. इसमें सैनिकों के अलावा भारतीय कृषक, मजदूर, जनजातियां, शिल्पकार व कुछ रियासते भी शामिल थी

- ‡ **ब्रिटेन प्रधानमंत्री :- पामस्टर्न**
- ‡ **ब्रिटेन की महारानी :- विक्टोरिया**
- ‡ **गवर्नर जनरल :- कैनिंग**
- ‡ **मुख्य सेनापति :- जॉर्ज एनिसन**
- ‡ **भारतीय सम्राट :- बहादुरशाह जफर (द्वितीय)**
- ‡ **प्रतीक :- कमल और रोटी**
- ‡ **प्रथम घटना :- 12 मई 1857 को लाल किले पर अधिकार**
- ‡ **परिषद :- बख्त खां (बरेली)**
- ‡ **अंग्रेजी आपातकालीन मुख्यालय :- इलाहाबाद**

1857 से पूर्व के प्रमुख सैनिक विद्रोह

1. ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के दो अंग थे - एक वह जिसमें सैनिक तथा अफ़सर सभी अंग्रेज थे और दूसरा वह जिसमें कमीशन प्राप्त अधिकारी तो अंग्रेज थे किंतु सिपाही तथा जूनियर अफसर भारतीय थे
2. अंग्रेज सैनिकों की तुलना में उनका वेतन कम था और उच्च पदों के द्वार उनके लिए बंद थे
3. इसके अतिरिक्त छोटे से छोटा अंग्रेज अफसर भी अनुभवी और पुराने हिंदुस्तानी अफ़सर का अपमान कर दिया करता था
4. कभी कभी अंग्रेजों के दुर्व्यवहार के कारण उनमें विद्रोह फूट पड़ता था
5. सिपाहियों को आदेश दिया गया कि वे अपनी दाढ़ी मुड़वाये, अपने माथे पर तिलक ना लगाएं, कानों में बालियां ना पहने और पगड़ी के स्थान पर विशेष प्रकार का कड़ा गोल हैट पहने जिसमें चमड़े का तुर्रा लगा होता था। चमड़े का तुर्रा सुअर या गाय की खाल का बना होता था
6. 6 मई 1806 में एक बटालियन ने विद्रोह कर दिया किंतु उसे दबा दिया गया। 10 जुलाई को पुनः विद्रोह फूट पड़ा भारतीय सिपाही उठ खड़े हुए संतरियों को मार डाला तथा लगभग 100 अंग्रेज अफसरों एवं सैनिकों का वध कर दिया गया और किले की दीवारों पर मैसूर का पुराना झंडा फहरा दिया गया

1) **1764 :** बक्सर विद्रोह
2) **1766 :** का सैनिक विद्रोह (क्लाइव)
3) **1806 :** वेल्लोर विद्रोह (सेना में प्रथम धार्मिक विरोध)
4) **1824 :** बैरकपुर 47 वीं रेजिमेंट
5) **1825 :** असम तोपखाने का विद्रोह
6) **1838 :** शोलापुर विद्रोह
7) **1844 :** फिरोजपुर 64 वीं रेजिमेंट
8) **1849-50 :** गोविंदगढ़ विद्रोह

5.1.2) विद्रोह का विस्तार

1. ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियां
2. नई एनफील्ड राइफल व चर्बी वाला कारतूस
3. 29 मार्च 1857 :- बैरकपुर छावनी की 34 वी रेजीमेंट के सैनिक मंगल पांडे द्वारा सार्जेंट ह्यूसन व लेफ्टिनेंट को गोली
4. 8 अप्रैल 1857 :- मंगल पांडे को फांसी
5. 24 अप्रैल 1857 :- मेरठ की घुड़सवार सेना ने कारतूस इस्तेमाल करने से मना किया
6. सभी को जेल(10वर्ष)
7. 10 मई 1857 मेरठ सैनिकों का खुला विद्रोह
8. 12 मई 1857 :-
   - दिल्ली पर अधिकार
   - बहादुर शाह जफर को नेतृत्वकर्ता
   - सेनानायक - जनरल बख्त खां
   - कर्नल रिप्ले की हत्या
9. 20 सितंबर 1857 :- हेनरी बर्नार्ड, विल्सन व जॉन निकलसन(मृत्यु) द्वारा दिल्ली पर पुनः अधिकार
10. बहादुर शाह जफर :- बर्मा - जीनतमहल के साथ(7 नवंबर 1862 को मृत्यु)
11. जफर के दो बेटों को लाल किले पर गोली मारी(हडसन द्वार)
12. बख्त खां की 1859 में मृत्यु
13. मिर्जा गालिब :- "यहां मेरे सामने रक्त का एक विशाल सागर है, केवल खुदा ही जानता है कि और क्या देखना बढ़ा है"
14. लार्ड एलफिंस्टन :- "ब्रिटिश सेना द्वारा दिल्ली का नरसंहार नादिरशाह के आक्रमण से भी भयावह था"
15. कम भागीदारी :- पंजाब, बंगाल, मद्रास, कश्मीर, राजपुताना, हैदराबाद, इंदौर के होलकर, ग्वालियर के सिंधिया, बड़ौदा के गायकवाड़, भोपाल, भोपाल, टीकमगढ़, हेनरी

A) 1857 का विद्रोह : प्रमुख स्थल एवं नेता

अवधि	विद्रोह केंद्र	नेता	विद्रोह दमन
1) 11 मई, 1857-20 सितंबर, 1858ई	दिल्ली	बहादुरशाह द्वितीय	निकोलसन, हडसन लारेंस
2) 4 जून, 1857-1 मार्च, 1858 ई	लखनऊ	बेगम हजरत महल	कॉलिन कैम्पबेल
3) 5 जून, 1857- 15 मार्च, 1858 ई	कानपुर	नाना साहब	कैम्पबेल, हैवलॉक
4) 5 जून, 1857 - 4 अप्रैल, 1858 ई	झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
5) 20 जून, 1857 - 10 जून 1858 ई	इलाहाबाद	लियाकत अली	कर्नल नील
6) 2 जुलाई 1857 - 15 जून 1858 ई	बनारस	सेना, जनसाधारण	कर्नल नील
7) 15 जुलाई 1857 - 20 जून, 1858 ई	बिहार	कुंवर सिंह	विलियम टेलर
8) 20 जुलाई 1857 - 20 जून, 1858 ई	पंजाब सेना	जनसाधारण	जान लारेंस
9)	फतेहपुर	अजीमुल्ला	जनरल रेनॉर्ड
10)	फैजाबाद	मौलवी अहमद उल्ला	जनरल रेनॉर्ड
11)	बरेली	खान बहादुर खां, बख्त खाँ	विसेंट आयर

1. लखनऊ और कानपुर के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश में अन्य स्थानों पर भी विद्रोह का प्रसार हुआ जिसमें इलाहाबाद में मौलवी लियाकत अली के नेतृत्व में जून के प्रारंभ में विद्रोह हुआ तथा इसी समय बनारस में भी विद्रोही सक्रिय हो गए परंतु कर्नल नील द्वारा दोनों स्थानों पर विद्रोह को दबा दिया गया

2. इसी प्रकार फैजाबाद में मौलवी अहमद उल्ला ने भी जून 1857 में विद्रोह की अगवानी की। उन्होंने विभिन्न धर्मानुयायियों को जेहाद के नाम पर एकत्रित करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि "सारे लोग अंग्रेज काफिर के विरूद्ध खड़े हो जाओ और उन्हें भारत से बाहर खदेड़ दो।" अहमदउल्ला की कार्यवाहियों से त्रस्त होकर अंग्रेजों ने उस पर 50,000 रू0 का नकद इनाम घोषित कर दिया था फिर भी वे उसको जीवित न पकड़ सके। जनरल रेनार्ड ने 5 जून 1858 को विद्रोह को कुचल दिया और अहमदउल्ला को रूहेलखण्ड की सीमा पर पोवायाँ में गोली मार दी गयी

3. बरेली में खान बहादुर खाँ ने मोर्चा संभाला और शीघ्र ही समस्त रूहेलखण्ड विद्रोह की अग्नि में जल उठा, परन्तु 1858 में विंसेट आयर व कैम्पबेल ने,इस विद्रोह को दबा दिया और बहादुर खान को फांसी दे दी गयी।

4. मन्दसौर (म.प्र.) में मुगल घराने के शहजादे फिरोजशाह ने विद्रोह का नेतृत्व किया किंतु बाद में इन्हें रंगून निर्वासित कर दिया गया, जहां पर इनकी मृत्यु हो गयी

B) क्रांति के मुख्य नेतृत्वकर्ता

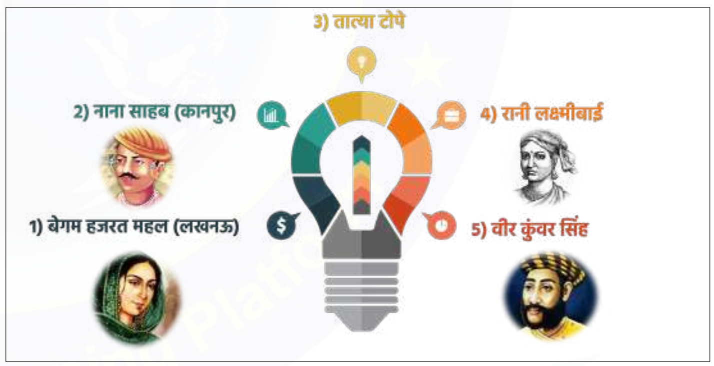

1) बेगम हजरत महल

1. अवध नवाब वाजिद अली शाह की बेगम
2. 4 जून 1857 :- लखनऊ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व
3. लखनऊ में आलमबाग की लड़ाई का नेतृत्व
4. प्रमुख सहयोगी :- राजा जयपाल सिंह,मौलवी अहमदुल्लाह व रहीमी बाई
5. 1858 में हैवलॉक व कैम्पवेल द्वारा लखनऊ में विद्रोह का दमन
6. रसेल :- उन्होंने पूरे अवध को उत्साहित कर दिया था
7. 1820 में फैजाबाद में जन्म
8. अन्य नाम :- महक परी
9. मृत्यु :- नेपाल, 1879

2) नाना साहब

1. पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र (मूल नाम - धोबू पंत)
2. 5 जून 1857 :- कानपुर में 1857 की क्रांति का नेतृत्व
3. सहयोगी :- तात्या टोपे (सेनापति), अजीमुल्ला खां (क्रांति दूत)
4. कारण :- डलहौजी द्वारा1 पेशवा की उपाधि व पेंशन से इंकार
5. मुख्य घटना :- सत्तीचौरा कांड (अंग्रेजों की हत्या)
6. दिसंबर 1857 :- हैवलॉक व कैम्पवेल द्वारा विद्रोह का दमन
7. मृत्यु :- 1858, नेपाल

3) तात्या टोपे

1. 1857 की क्रांति के अग्रणी वीर व नाना साहब के सेनापति
2. जन्म :- 1814, नासिक
3. मूल नाम :- रामचन्द्र पांडुरंग
4. ईस्ट इंडिया कंपनी की बंगाल शाखा में तोपची
5. झांसी की रानी की सहायता करके ग्वालियर पर अधिकार
6. ग्वालियर के शासक जयाजी राव सिंधिया तथा ह्यूरोज द्वारा विद्रोह का दमन
7. छापामार युद्ध प्रणाली
8. अंग्रेजों द्वारा 50 हज़ार का इनाम
9. मानसिंह द्वारा विश्वासघात
10. 18 अप्रैल 1859 :- शिवपुरी में तात्या टोपे को फांसी

4) रानी लक्ष्मीबाई

1. 5 जून 1857 में झांसी में क्रांति का नेतृत्व
2. कारण :- डलहौजी द्वारा हड़प नीति के तहत झांसी का विलय
3. 18 जून 1858 को ह्यूरोज से लड़ते हुए शहीद
4. ह्यूरोज :- विद्रोहियों में एकमात्र मर्द झांसी की रानी थी
5. जन्म :- वाराणसी 1828
6. मूल नाम :- मणिकर्णिका
7. पति :- गंगाधरराव निबालकर(1842)
8. दत्तक पुत्र :- दामोदर राव

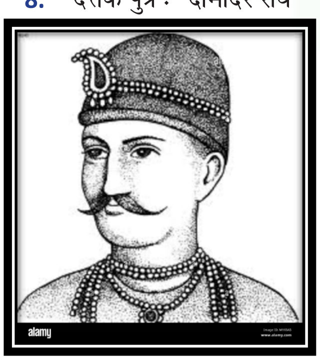

5) कुंवर सिंह

9. जगदीशपुर (बिहार) में 80 वर्षीय कुंवर सिंह द्वारा 1857 की क्रांति का नेतृत्व
10. छापामार युद्ध प्रणाली
11. विलियम टेलर और आयर द्वारा विद्रोह का दमन
12. मृत्यु :- 1858 जगदीशपुर
13. जन्म :- 1777, भोजपुर (मालवा शासक भोज परमार के वंशज)

Note :

- बिहार में दानापुर, आरा, पटना, गया, शाहाबाद (जगदीशपुर) एवं मुजफ्फरपुर आदि स्थान विद्रोह के प्रमुख केन्द्र बन गये। शाहाबाद में जगदीशपुर के जमींदार कुँवर सिंह (80 वर्षीय) ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया। कुँवर सिंह अंग्रेज अधिकारियों की सहायता से अपनी जमींदारी का प्रबंध बोर्ड ऑफ रेवेन्यू को सौंपना चाहते थे। परन्तु उनका यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ तथा गिरती आर्थिक स्थिति ने उन्हें दीवालियेपन की स्थिति में पहुँचा दिया। कुँवर सिंह ने सर्वप्रथम अपने जिला शाहाबाद को अंग्रेजी राज्य से मुक्त करवाया और वहाँ से आगे बढ़ते हुए आजमगढ़ जिले (उ.प्र.) में अतरौलिया पहुँचे जहाँ मिलमैन के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना को हराया। कुँवर सिंह ने अपने विद्रोह का झण्डा बिहार से बाहर, मिर्जापुर, रीवा, बांदा तथा लखनऊ तक फहराया। कुँवर सिंह को पराजित करने के लिए मिलमैन व डेम्स की संयुक्त सेना भेजी गयी, परंतु वह भी पराजित हुई। पुनः कैनिंग ने मार्क के नेतृत्व में सेना भेजी। कुँवर सिंह ने इसे भी धूल चटा दिया, किंतु बांह में गोली लगने से वह घायल हो गये, गोली का जहर शरीर में न फैले इसलिए अपनी बांह को काटकर गंगा में अर्पित कर दिया तथा 22 अप्रैल 1858 को जगदीशपुर पहुँच गये। वहाँ पर इन्होंने ली ग्रैण्ड के नेतृत्व में सिक्ख सेना को भी परास्त कर दिया। घायल होने के कारण 26 अप्रैल 1858 ई. को कुँवर सिंह की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के पश्चात् कुँवर सिंह के भाई अमर सिंह ने अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष जारी रखा। अन्त में दिसम्बर 1858 में विलियम टेलर व विंसेट आयर ने बिहार के विद्रोह को सीमित कर दिया।

5.1.3) कारण II Cause

(1) आर्थिक कारण :-

1. भारतीय धन का निष्कासन
2. कठोर व दमनकारी भूराजस्व नीतियां
3. विऔधोगिकरण :- भारतीय कारीगर, शिल्पी आदि बेरोजगार
4. 1813 में एकतरफा मुक्त व्यापार व्यवस्था व कर विभेदीकरण(भारतीय वस्त्रों पर 71% तक आयात शुल्क)
5. न्यायालयों, साहूकारों व महाजनों द्वारा कृषक शोषण
6. ढाका, सूरत जैसे व्यापारिक केंद्रों का पतन
7. ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति हेतु भारत का बाजार रूपी प्रयोग
8. कृषि का वाणिज्यीकरण :- अकाल व भखमरी

(2) राजनीतिक व प्रशासनिक कारण :-

1. वेलेजली की सहायक सन्धि व्यवस्था ने रियासतों को पंगु बनाया
2. डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत का प्रयोग करके सतारा, जैतपुर, झांसी आदि राज्यों का अनैतिक विलय
3. कुप्रशासन का आरोप लगाकर ब्रिटिश मित्र अवध रियासत का विलय
4. नाना साहेब की पेंशन व कर्नाटक, तंजौर, सूरत के राजाओं की उपाधियों का अंत
5. 1852 में ईनाम कमीशन की सिफारिशों के आधार पर 20000 जागीरों की जब्ती
6. विभेदकारी नियम व कानून :-
    - नस्लीय सर्वोच्चता व विभेद
    - फारसी के स्थान पर अंग्रेजी
    - नवीन व जटिल न्यायिक व्यवस्था
    - मुगल बादशाह का डलहौजी द्वारा अपमान
    - कार्नवालिस द्वारा उच्च प्रशासनिक सेवाओं से भारतीय को वंचित रखने की नीति

(3) धार्मिक कारण :-

1. ईसाई मिशनरी :-
    - जबरन ईसाई धर्म में धर्मांतरण
    - 1813 के अधिनियम द्वारा भारत में धर्म प्रचार की अनुमति
    - भारतीय धर्म व परम्पराओं का तिरस्कार
2. 1850 का धार्मिक अयोग्यता(लेक्स लोकी) कानून द्वारा ईसाई धर्म अपनाने पैतृक सम्पत्ति का अधिकार मिलेगा
3. मंदिर, मस्जिद व अन्य धार्मिक संस्थानों पर कर
4. विद्यालयों में अनिवार्य बाइबिल शिक्षा
5. मेजर एडवर्ड :- "भारत पर हमारे अधिकार का अंतिम उद्देश्य देश को ईसाई बनाना है"

(4) सामाजिक कारण :-

1. भारतीय सामाजिक परंपराओं में हस्तक्षेप
2. नस्लीय भेदभाव व भारत के प्रति हीन दृष्टिकोण
3. ब्रिटिश समाज सुधार नीतियों यथा सती प्रथा (1829), कन्या वध (1795), बाल विवाह, नरबलि प्रथा (1844) का दमन तथा विधवा पुनर्विवाह आदि का कट्टरपंथियों द्वारा विरोध
4. शिक्षा द्वारा पाश्चात्य संस्कृति व फैशन का प्रसार

(5) सैन्य कारण :-

1. नस्लीय व पारिश्रमिक भेदभाव :-
    - यूरोपीय सैनिकों की तुलना में अत्यंत कम वेतन व सुविधाएं
    - पेंशन व पदोन्नति में भेदभाव (सर्वोच्च पद सूबेदार)
    - अंग्रेज सैनिकों द्वारा दुर्व्यवहार
2. ब्रिटिश सेना में प्रत्येक 6 में से 5 भारतीय सैनिक थे, जिनमें से 60% बंगाल, अवध व उत्तर प्रदेश से थे
3. हिंदुओं को तिलक, मुस्लिम को दाढ़ी व सिखों को पगड़ी की पाबंदी
4. 1854 के डाकघर अधिनियम द्वारा सैनिकों को प्राप्त निशुल्क डाक व्यवस्था की समाप्ति
5. 1856 के सामान्य सेना भर्ती अधिनियम(General Service Enlistment Act) द्वारा सैनिकों को समुद्र पार भी सेवा हेतु बुलाया जा सकता था जो हिंदू धार्मिक परंपरा के प्रतिकूल था
6. अफगान(1839-42) व क्रीमिया युद्ध में ब्रिटिश पराजय से ब्रिटिश अजेय छवि की समाप्ति

(6) तात्कालिक कारण :-

1. 1856 में ब्राउन बैस के स्थान पर नवीन एनफील्ड राइफल का प्रयोग
2. इस राइफल की कारतूस के ऊपरी भाग को मुंह से काटना पड़ता था जो गाय व सुअर की चर्बी से निर्मित था
3. भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावना आहत
4. मंगल पांडे द्वारा सार्जेंट बाग की हत्या
5. 10 मई 1857 को मेरठ में सैनिकों द्वारा क्रांति का आरंभ

5.1.5) विद्रोह का स्वरूप

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रकृति के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद है यूरोप इतिहासकार इस को एक सैनिक विद्रोह, मुसलमानों का ईसाइयों के विरुद्ध षड्यंत्र मानते हैं किंतु भारतीय इतिहासकार स्कोर भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानते हैं 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रकृति के संदर्भ में निम्न तर्क दिए गए हैं

(1) सैनिक विद्रोह :-

1. प्रतिपादक :- साम्राज्यवादी इतिहास जैसे जॉन लारेंस, जॉन सीले, भारत सचिव अर्ल स्टेनले, सर सैय्यद अहमद खान, H.C. मुखर्जी आदि
2. असत्यता के प्रमाण :-
   - तीन में से सिर्फ एक प्रान्तीय सेना द्वारा विद्रोह
   - अनेक स्थानों पर मात्र जनता द्वारा विद्रोह
   - मात्र एक चौथाई सैनिकों की भागीदारी

(2) मुस्लिम विद्रोह या हिंदू मुस्लिम षड्यंत्र :-

1. प्रतिपादक :- जेम्स आउट्रम, रॉबर्ट्स, कुपलैंड, टेलर आदि
2. असत्यता के प्रमाण :-
   - हिंदू मुस्लिम एकता का प्रकटीकरण
   - स्वेच्छा से बहादुरशाह जफर को सम्राट चुनना
   - हिन्दू व मुस्लिम नेतृत्वकर्ता

(3) ईसाइयों के प्रति धर्म युद्ध :-

1. प्रतिपादक :- LER रीच
2. असत्यता के प्रमाण :-
   - क्रांतिकारियों ने धर्म के आधार पर आव्हान नहीं किया
   - कुछ हिन्दू मुस्लिम द्वारा ब्रिटेन का समर्थन
3. गुप्त विभाग के सचिव J. केयी ने इसे "काले लोगों का गोरों के प्रति विद्रोह" कहा

(4) पुनर्स्थापनावादी || Restorationist :-

1. अर्थ :- पुनर्स्थापना का व्यावहारिक अर्थ भारतीयों द्वारा उन सभी ब्रिटिश आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नीतियों का विरोध करना था, जिनके द्वारा भारतीयों के परंपरागत रीति रिवाजों तथा प्रथाओं में हस्तक्षेप किया जा रहा था
2. प्रतिपादक :- पर्सिबल स्पीयर
3. प्रमाण :-
   - मुगल बादशाह को सम्राट चुनना
   - ब्रिटिश सामाजिक नीतियों का विरोध

(5) राष्ट्रीय विद्रोह :-

1. प्रतिपादक :- बेंजामिन डिजरायली, अशोक मेहता
2. पक्ष में तर्क :-
3. क्रांति का लक्ष्य ब्रिटिश शासन की समाप्ति व भारतीय शासन की स्थापना
4. विद्रोह का क्षेत्रीय प्रसार व व्यापक जनभागीदारी
5. विपक्ष में तर्क :-
6. जनसाधारण व नेतृत्वकर्ता के लक्ष्यों व प्रवृत्तियों में अंतर
7. सांझा राष्ट्रीय हित के स्थान पर क्षेत्रीय / निजी हितों हेतु संघर्ष
8. अधिकांश जनमानस व रजवाड़ों की तटस्थता

(6) भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम :-

1. प्रतिपादक :- विनायक दामोदर सावरकर(पुस्तक - द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस, 1857)
2. समर्थक :- पट्टाभि सीतारमैया, डॉ एस एन सेन
3. पक्ष में तर्क :-
   - क्रांतिकारियों द्वारा चपाती व कमल के फूल द्वारा में प्रचार - प्रसार
   - क्रांति का एक सांझा उद्देश्य - भारत से ब्रिटिश शासन की समाप्ति
   - हिन्दू - मुस्लिम एकता
   - जन साधारण की भागीदारी
   - किसान, मजदूर, दस्तकार आदि की भागीदारी
   - डॉ एस एन सेन - राष्ट्रीयता के अभाव में भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
   - बहादुरशाह जफर व नाना साहेब का देशी रजवाड़ों को पत्र व्यवहार
4. विरोध :- आर सी मजूमदार ने कहा है कि "यह तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न तो प्रथम था, न राष्ट्रीय, न ही स्वतंत्रता संग्राम।
5. बहस :-
   - इस विद्रोह ने अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग रूप धारण किए।
   - यह पंजाब और मध्य प्रदेश में एक सैन्य विद्रोह था, फिर इसने उत्तर प्रदेश और बिहार के पश्चिमी हिस्सों में एक जन आंदोलन का रूप ले लिया।
   - राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे कुछ हिस्से ऐसे क्षेत्र थे जहां लोगों ने विद्रोहियों के प्रति सहानुभूति तो जताई लेकिन कानून की सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया।
   - इस विद्रोह का राष्ट्रीय महत्व प्रत्यक्ष और तात्कालिक था
6. निष्कर्ष :- उपरोक्त उदाहरणों की चर्चा से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह विद्रोह एक राष्ट्रीय विद्रोह था क्योंकि इसमें सैनिकों के साथ-साथ आम लोगों ने भी भाग लिया था।

1857 के विद्रोह का स्वरूप

इतिहासकार / विद्वान	विद्रोह का स्वरूप
के. मालेसन, ट्रेबिलियन, सर जान लारेंस व सीले, सर सैयद अहमद खाँ	यह पूर्णतया सिपाही विद्रोह था
डॉ. ईश्वरी प्रसाद	यह स्वतंत्रता संग्राम था।
मिस्टर के, एस.बी. चौधरी	एक सामंतवादी प्रतिक्रिया थी
डा. रामविलास शर्मा, डफ, मालेसन	जनक्रांति थी
बेन्जामिन डिजरेली, अशोक मेहता	यह 'राष्ट्रीय विद्रोह' था
जेम्स आउट्रम, डब्लू टेलर	अंग्रेजों के विरुद्ध, 'हिंदू-मुस्लिम षड्यंत्र' था
एल. आर. रीस	'ईसाईयों के विरुद्ध धर्मयुद्ध था
सर जे. केयी	'श्वेतों के विरूद्ध काले लोगों का संघर्ष' कहा।
रार्बट्स एवं श्रीमती कूपलैण्ड	'मुस्लिम विद्रोह' कहा।
पर्सिवल स्पीयर	'प्राचीन पुरातनवाद भारत का अंतिम प्रयास'
टी. आर. होम्स	'सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष' था।
वीर सावरकर, पट्टाभि सीता रमैया	यह 'सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम था।
कार्ल मार्क्स	1857 को एक 'राष्ट्रीय क्रान्ति' कहा।

आर. सी. मजूमदार	"तथाकथित प्रथम स्वतंत्रता संग्राम न प्रथम, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था।"
पी. राबर्ट्स	1857 का विद्रोह एक सैनिक विद्रोह था जिसका तत्कालिक कारण चर्बीयुक्त कारतूस था
डा. एस. एन सेन	यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।

1857 के विद्रोह पर प्रमुख पुस्तकें

लेखक	चर्चित पुस्तकें
आर.सी. मजूमदार	द सिपोय म्यूटनी एण्ड दि रिवोल्ट ऑफ 1857
एस.एन. सेन	1857 (अठारह सौ सत्तावन)
एस.बी. चौधरी	थ्योरीज आफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857 तथा सिविल रिबेलियन इन द इंडियन म्यूटिनीज 1857-59
ऐरिक स्टोक्स	पीजेन्ट एण्ड द राज
पी.सी. जोशी	रिबेलियन 1857
वी.डी. सावरकर	फर्स्ट वार ऑफ इण्डियन इंडिपेण्डेंस
टी.आर. होम्स	हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटिनी
जी.बी. मालसेन	इंडियन म्यूटिनी ऑफ 1857
अशोक मेहता	द ग्रेट रिबेलियन
जे.डब्ल्यू.के.	ए हिस्ट्री ऑफ द सिपॉय वार इन इंडिया
ए.पी. चट्टोपाध्याय	द सिपॉय म्यूटिनी ऑफ 1857; ए सोशल स्टडी एण्ड एनेलिसिस
के. के. सेनगुप्त	रीसेन्ट राइटिंग्स ऑन द रिवोल्ट ऑफ 1857
सैयद अहमद खाँ	असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द (भारतीय भाषा में विद्रोह की प्रथम पुस्तक) व द कॉज़ेज ऑफ द इंडियन रिवोल्ट

5.1.5) विद्रोह की असफलता के कारण

1. निश्चित उद्देश्य का अभाव :- सांझा राष्ट्रीय उद्देश्य के स्थान पर निजी उद्देश्य जैसे नाना साहब पेंशन हेतु, सैनिक समानता हेतु आदि
2. संगठन का अभाव :-
   - मजबूत केंद्रीय संगठन का अभाव
   - क्रांति में निश्चित योजना का अभाव - विद्रोह 31 मई 1857 को आरंभ होना था, किंतु 10 मई को ही हो गया
3. देसी रियासतों व सामंतों का ब्रिटिश शासन को समर्थन :-
   - पटियाला, ग्वालियर, हैदराबाद आदि के राजा और सामंतों ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों का सहयोग दिया।
   - कैनिंग :- "यदि सिंधिया भी विद्रोह में सम्मिलित हो जाए तो मुझे कल ही भारत छोड़ना पड़ेगा"
   - विद्रोह के दमन के पश्चात इन भारतीय राजाओं को पुरस्कृत किया गया
4. कुशल नेतृत्व का अभाव :-
   - बहादुर शाह और नाना साहब कुशल संगठनकर्ता थे परंतु उनमें सैन्य नेतृत्व क्षमता की कमी थी
   - तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह के नेतृत्व को अखिल भारतीय मंच ना मिलना
5. आधुनिक हथियार व प्रौद्योगिकी का अभाव :-
   - भारतीयों के पास आधुनिक वस्तुओं का अभाव
   - नाना साहब - "यह नीली टोपी वाली राईफ़ल तो गोली चलने से पहले मार देती है"।
   - आवागमन व संचार के साधनों पर अंग्रेजों का अधिकार
6. शिक्षित वर्ग की उदासीनता :- यदि इस वर्ग ने लेखों और भाषणों द्वारा लोगों में उत्साह का संचार किया होता तो निसंदेह विद्रोह का परिणाम कुछ और होता

निष्कर्ष :

- इस प्रकार 1857 के विद्रोह की असफलता का मुख्य कारण सीमित विस्तार, सभी वर्गों का समर्थन ना होना, ब्रिटिश सैन्य सर्वोच्चता, साधनों का अभाव व शिक्षित वर्ग की उदासीनता थी जिसके कारण आंदोलन का कुशलता से नेतृत्व नहीं किया जा सका और यह अपने तात्कालिक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका किंतु इसके दूरगामी परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण रहे

5.1.6) विद्रोह का महत्व

1. 1857 के विद्रोह ने भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित कर राष्ट्रीय भावना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया
2. विद्रोह की असफलता से यह स्पष्ट हो गया था कि केवल सेना एवं शक्ति के बल पर ही ब्रिटिशों मुक्ति संभव नहीं है इसके लिए सभी वर्गों का सहयोग समर्थन एवं राष्ट्रीय भावना का होना आवश्यक था
3. विद्रोह के दौरान भारतीयों को रूस, तुर्की, ईरान, ब्रिटेन के चार्टिस्ट आंदोलन के नेता एवं चीन के ताइपिंग विद्रोहियों के नेताओं से सहानुभूति एवं मानसिक समर्थन मिला था इससे भारतीयों में अंग्रेजों के विरोध की इच्छा प्रबल होती गई
4. राजनीति जागृति आई एवं व्यापक संगठन की प्रेरणा प्राप्त हुई 1885 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन को एक निश्चित दिशा मिल गई

5.1.7) विद्रोह का परिणाम / प्रभाव

1857 का विद्रोह असफल रहा किंतु इसके निम्नलिखित दूरगामी परिणाम हुए :-

1. भारत सरकार अधिनियम 1858 द्वारा कंपनी शासन का अंत तथा ब्रिटिश क्राउन शासन की शुरुआत
   - घोषणा - 1 नवंबर 1858, लार्ड कैनिंग
   - शासन संचालन हेतु ब्रिटेन में भारत सचिव व 15 सदस्यीय समिति का गठन
   - गवर्नर जनरल का वायसराय(क्राउन का प्रतिनिधि) के रूप में

परिवर्तन(प्रथम - लॉर्ड कैनिंग)

2. देसी रियासतों के प्रति उदार नीति :-
   - विलय नीतियों (व्यपगत आदि) का त्याग
   - सभी राजा, ब्रिटिश ताज के अधीन
3. आर्थिक नीतियों में परिवर्तन :-
   - सरकारी खर्च में कटौती व 300 से अधिक वार्षिक आय वालों पर आयकर
   - रेल व्यवस्था, सिंचाई आदि में निवेश
4. उदारवादी नीतियां व 1861 का अधिनियम :-
   - महारानी विक्टोरिया कैसर ए हिन्द की उपाधि धारण की(1876)
   - सिविल सेवा हेतु प्रतियोगी परीक्षा
5. पील आयोग की सिफारिश पर सेना का पुनर्गठन :-
   - भारतीयों की संख्या में कमी
   - बंगाल में दो भारतीयों पर एक यूरोपीय सैनिक
   - महत्वपूर्ण पदों से भारतीय वंचित
   - सिख, गोरखा तथा पठान सैन्य वर्गों को पुरस्कृत किया गया
6. अन्य प्रभाव :-
   - जातीय भेदभाव व सांप्रदायिकता को बढ़ावा
   - फूट डालो और राज करो की नीति
   - राष्ट्रीय भावनाओं व राष्ट्रीय आंदोलन का प्रादुर्भाव
   - भारतीयों के सामाजिक धार्मिक जीवन में अहस्तक्षेप की नीति
   - भारत से मुगल सम्राट का अंत

5.1.8) 1857 की क्रांति में महिलाओं की भूमिका

1857 की क्रान्ति में पुरुषों का ही नहीं बल्कि महिलाओं का भी महान योगदान था, जिनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, झलकारीबाई तथा अवंतीबाई प्रमुख थीं।

1. लक्ष्मीबाई :- झाँसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई झाँसी राज्य की शासक बनीं। उस समय लक्ष्मीबाई की उम्र 18 वर्ष की थी, उन्होंने यह घोषणा की कि, “मैं झाँसी अंग्रेजों को नहीं दूंगी।” 1857 की मेरठ क्रान्ति की चिंगारी झाँसी तक पहुँची। रानी ने अंतिम समय तक अंग्रेजों से संघर्ष किया, उन्होंने अंग्रेजों की अधीनता कभी भी स्वीकार नहीं की। लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना भारत का गौरव थीं।
2. अवंतीबाई :- मण्डला के जागीरदार राव गुलजार सिंह की पुत्री थीं। उनका विवाह रामगढ़ के राजा विक्रमजीत से हुआ। सन् 1851 में राजा साहब की मानसिक विक्षिप्तता तथा पुत्र की अल्पवयस्कता को दृष्टिगत कर कम्पनी शासन ने अपना प्रतिनिधि यहाँ नियुक्त कर दिया। 1857 की क्रान्ति की चिंगारी रामगढ़ तक फैली। विजयदशमी के दिन रानी ने अंग्रेजों को मार भगाया और मण्डला पर अधिकार कर लिया। 15 जनवरी, 1858 ई. को सेनापति वेडिंग्टन को पराजित किया। 31 मार्च, 1857 को अंग्रेजी सेना ने रामगढ़ पर आक्रमण किया। पराजय के पूर्व बाएँ हाथ में गोली लगी। रानी ने पेट में तलवार घोंप कर आत्महुति दे दी।
3. झलकारीबाई का जन्म 22 नवम्बर, 1830 ई. में ग्राम भोजला में हुआ तथा उनका विवाह पूरनकोरी से हुआ। उसमें दुर्गादल के प्रशिक्षक से शस्त्र चलाना सीखा। उसने रानी लक्ष्मीबाई की जान बचाने हेतु स्वयं रानी का वेश धारण कर अंग्रेजों को छकाया तथा आत्महुति दे दी।

5.1.9) अन्य तथ्य

1. डॉ. एस.एन. सेन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सरकारी इतिहासकार थे
2. डॉ. एस.एन. सेन ने कहा था कि गर्मी की आंधी की भांति मेरठ का विद्रोह अप्रत्याशित और अल्पकालिक था
3. द ग्रेट रिबेलीयन नामक पुस्तक अशोक मेहता ने लिखी
4. डॉ. एस. बी. चौधरी ने 1857 के विद्रोह को सामंती क्षोभ कहा था
5. सर सैयद अहमद खान भारतीय भाषा में 1857 के विद्रोह के कारणों पर लिखने वाले प्रथम भारतीय थे
6. मौलवी लियाकत अली ने इलाहाबाद में विद्रोहियों का नेतृत्व किया
7. काले खान ने झांसी में विद्रोह का प्रारंभिक नेतृत्व किया था
8. खान बहादुर खा ने बरेली के विद्रोह का नेतृत्व किया
9. मंगल पांडे गाजीपुर(बलिया)(UP) के निवासी थे
10. कुंवर सिंह की मृत्यु के पश्चात बिहार के विद्रोह का नेतृत्व भाई अमर सिंह ने किया
11. 1857 के विद्रोह के दौरान कुंवर सिंह को “बिहार का सिंह” की उपाधि दी गयी
12. जनरल विंडहम को 1857 में विद्रोही सैनिकों ने कानपुर के निकट पराजित किया था
13. असम में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व मनीराम दत्त व कंदपरेश्वर ने किया
14. उड़ीसा में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संबलपुर की राजकुमार सुरेंद्रशाही और उज्जवल शाही ने विद्रोह किया
15. राधेकृष्ण दंड सेना के नेतृत्व में 18 57 का विद्रोह गंजाम उड़ीसा में हुआ
16. राजा प्रताप सिंह और भाई वीर सिंह 1857 के विद्रोह(कुल्लू की पहाड़ियों में) से संबंधित है
17. राजस्थान के कोटा में विद्रोह का नेतृत्व जयदयाल और हरदयाल ने किया
18. महाराष्ट्र में 1857 के विद्रोह के लिए रंगो बापूजी ने आम व्यक्तियों की सेना बनाई
19. अरनागिरी व कृष्ण ने 1857 में मद्रास विद्रोह का नेतृत्व किया
20. मध्यप्रदेश के मंदसौर में विद्रोह का झंडा शाहजादा फिरोजशाह ने बुलंद किया
21. ग्वालियर एक ऐसी देसी राज्य था जिसे अंग्रेजों ने उसकी प्रदेश तथा पेंशन से वंचित नहीं किया
22. 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा तात्या टोपे को इटली का गेरी बाल्डी उपमा प्रदान की गई
23. 1806 में वेल्लोर क्रांति को 1857 की क्रांति का पूर्वाभ्यास कहा जाता है
24. कोजेज ऑफ द इंडियन रिवोल्ट सर सैयद अहमद खान की कृति है
25. इंडियन काउंसिल एक्ट, इंडियन हाई कोर्ट एक्ट तथा इंडियन सिविल सर्विस एक्ट वायसराय कैनिग के समय में 1861 में पारित हुआ
26. तात्या टोपे का वास्तविक नाम रामचंद्र पांडुरंग था
27. 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का जोधपुर की संयुक्त सेना को परास्त करने वाले आउवा के ठाकुर कुशल सिंह थे
28. मिर्जा गालिब ने दिल्ली में 1857 के विद्रोह को अपनी आंखों से देखा
29. अंतिम मुगल बादशाह अकबर बेगम जीनत महल के साथ रंगून निर्वाचित किया गया
30. 1857 के विद्रोह के समय लॉर्ड कैनिंग ने इलाहाबाद को अपना मुख्यालय बनाया

31. झांसी के सिपाहियों और अफसरों को अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह के लिए लक्ष्मण राव ने उकसाया
32. 1857 के विद्रोह के नेता नानासाहेब थे जिन्होंने विद्रोह के दौरान फ्रांस के नेपोलियन तृतीय को तीन पत्र भेजे थे
33. अजीजन बाई वह नर्तकी थी जिसने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों से लोहा लिया
34. मुगल सम्राट 1803 में ब्रिटिश संरक्षण में आ गए
35. अकबर द्वितीय के दरबार में बराबरी के स्तर पर मिलने वाला अंग्रेज अधिकारी लार्ड एम्हर्सट(1823) था
36. मुगल सम्राट बहादुरशाह को लॉर्ड ऐलनबरो ने भेंट देनी बंद कर दी तथा सिक्कों से उसका नाम हटा दिया गया
37. लॉर्ड कैनिंग ने मुगल शासक को सम्राट की उपाधि से वंचित कर दिया
38. 1854 में ईनाम कमीशन जागीरों की जांच करने के लिए गठित किया गया
39. धार्मिक अयोग्यता अधिनियम या लेक्स लेकी कानून 1850 में पारित हुआ
40. 1806 में वेल्लोर विद्रोह धार्मिक कारण से हुआ
41. भारतीय सैनिकों को चार्ल्स नेपियर ने भाड़े का सैनिक कहा था
42. अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति का प्रमुख कारण ब्रिटिश साम्राज्य की नीतियां थी
43. रॉयल एनफील्ड का प्रयोग डम डम, अम्बाला, स्यालकोट में प्रयोग करने का निश्चय किया गया
44. तत्कालीन भारत सचिव अर्ल स्टेनले ने ब्रिटिश पार्लियामेंट को 1857 की घटनाओं पर रिपोर्ट देते हुए सर्वप्रथम इसे सिपाही विद्रोह का नाम दिया
45. उर्दू शायर मिर्जा गालिब का जन्म 1796 में आगरा में हुआ तथा मृत्यु फरवरी 1869 को दिल्ली में हुई थी
46. 1857 के विद्रोह में व्यापारी वर्ग(साहूकार), शिक्षित वर्ग(उच्च तथा मध्यम वर्ग के आधुनिक शिक्षा प्राप्त) तथा कुछ अंग्रेजी शासन समर्थक भारतीय शासकों(जमीदारों) ने भाग नहीं लिया
47. फैजाबाद में विद्रोह का नेतृत्व मौलवी अहमदुल्लाह शाह ने किया मौलवी अहमदुल्लाह शाह तमिलनाडु के रहने वाले थे किंतु फैजाबाद में आकर बस गए थे
48. ग्वालियर का सिंधिया राजवंश और हैदराबाद के निजाम ने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों की सर्वाधिक सहायता की।* सिंधिया के राजभक्ति के में कैनिंग ने कहा था, "यदि सिंधिया भी विद्रोह में सम्मिलित हो जाए तो मुझे कल ही बिस्तर गोल करना होगा।" ग्वालियर का मंत्री सर दिनकर राव और हैदराबाद का मंत्री सालारजंग ने अंग्रेजों की स्वामिभक्ति का खुलकर प्रदर्शन किया था।
49. 1857 के विद्रोह के समय बैरकपुर (मुर्शिदाबाद-बंगाल) में ब्रिटिश कमाण्डिंग ऑफिसर सर जॉन बेनेट हैरेस थे।
50. अवध की राजधानी लखनऊ में 1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेज रेजीडेंसी की सुरक्षा करते हुए सर हेनरी लारेंस, मेजर जनरल हैवलॉक तथा जनरल नील की मृत्यु हुई। जनरल जॉन निकलसन की मृत्यु दिल्ली में हुई थी।
51. कैप्टन गार्डन एक ऐसा अंग्रेज था जिसने 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया था यह मंगल पांडे का मित्र भी था
52. 1857 के विद्रोह में दण्डित अंतिम जीवित व्यक्ति का नाम मुसाई था जिसे 1907 में मुक्त किया गया
53. 1857 का विद्रोह का मुख्य कारण योजना व केंद्रीय संगठन में कमी थी
54. महारानी विक्टोरिया के 1858 के घोषणा पत्र को भारतीय जनता का मैग्नाकार्टा कहा गया
55. लार्ड क्रोमर ने कहा था कि "मैं चाहता हूं कि अंग्रेजों की नई पीढ़ी भारतीय विद्रोह के इतिहास को पढ़े, इसका मनन करे, यह तमाम शिक्षाओं और चेतावनियों से भरा है"

5.2) जनजातीय विद्रोह

5.2.1) पृष्ठभूमि

1. भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी जो अंग्रेजी नीति से त्रस्त हो चुके थे, 19वीं सदी में एकत्रित होकर अंग्रेजों के विरुद्ध कई विद्रोह किये
2. जनजातियों को आदिवासी नाम से सर्वप्रथम ठक्कर बापा ने संबोधित किया था
3. आदिवासियों जंगलों व पहाड़ों को अपना घर मानते थे
4. अंग्रेजों की कृषि नीति व वन नीति ने उनके जीवन में हस्तक्षेप करना आरंभ कर दिया
5. आदिवासी बाहरी लोगों को दिकू नाम से पुकारते थे, जिसमें महाजन, ठेकेदार, जमींदार, अधिकार आदि सम्मिलित होते थे। इन्हीं लोगों ने आदिवासियों का सर्वाधिक शोषण किया
6. कुंवर सुरेश सिंह द्वारा आदिवासी विद्रोहों को तीन चरणों में विभक्त किया गया है यथा :-
   - प्रथम चरण (1795-1860) जैसे - संथाल, कोल, खोंड, पहाड़ियां विद्रोह आदि
   - द्वितीय चरण (1869-1920) जैसे - भील, मुंडा, नैकदा, कोया, खारबाड़ आदि
   - तृतीय चरण (1920 के बाद) जैसे - ताना भगत, चेंचू, रम्पा आदि

5.2.2) कारण

1. आर्थिक
2. राजनैतिक
3. सामाजिक
4. सांस्कृतिक

(1) आर्थिक कारण :-

1. खूंट कट्टी (सामूहिक कृषि) व झूम कृषि पर प्रतिबंध
2. दमनकारी भूराजस्व नीतियों द्वारा कबीला व्यवस्था के स्थान पर जमींदारी प्रथा का आरंभ
3. 1822 में परम्परागत मदिरा पर आबकारी शुल्क
4. सरकार द्वारा आदिवासी वन अधिकारों की समाप्ति व वनोत्पाद पर कर
5. अनुबंध श्रमिक व बेगारी
6. ठेकेदारी, महाजनो द्वारा शोषण

(2) राजनैतिक कारण :-

1. आदिवासी कानूनों की समाप्ति
2. आदिवासी क्षेत्रों में पुलिस व सैन्य प्रशासन

(3) सामाजिक हस्तक्षेप :-

1. आदिवासी परंपरा में ब्रिटिश व दिकुओं का हस्तक्षेप
2. उड़ीसा की खोंड जनजाति में प्रचलित नरबलि प्रथा की समाप्ति

(4) धार्मिक कारण :-

1. 1813 के अधिनियम के द्वारा इसाई मिशनरी को धर्म प्रचार की अनुमति
2. ईसाई मिशनरी द्वारा बलपूर्वक धर्मांतरण
3. धार्मिक आदिवासी नेताओं (ओझा, मसीहा आदि) द्वारा प्रोत्साहन

5.2.3) प्रमुख जनजाति विद्रोह

1) पूर्वी भारत व बंगाल
2) पश्चिम भारत
3) मध्य व दक्षिण भारत

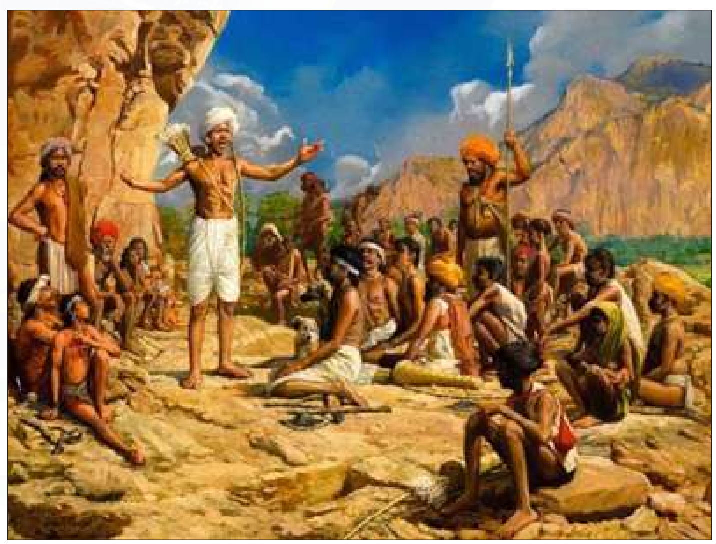

1) पूर्वी भारत व बंगाल

- कोल विद्रोह
- संथाल विद्रोह
- मुंडा विद्रोह
- खासी विद्रोह
- अहोम विद्रोह

- उरांव विद्रोह
- चुआर
- नागा आंदोलन

2) **पश्चिम भारत**
- रामोसी विद्रोह
- भील विद्रोह
- बिजौलिया

3) **मध्य व दक्षिण भारत**
- वेलुपंथी विद्रोह
- रम्पा विद्रोह
- चेंचू विद्रोह
- खोंड विद्रोह

A) संथाल विद्रोह (1855-56)

1. क्षेत्र :- दमन ए कोह (राजमहल से भागलपुर, झारखण्ड)
2. सबसे शक्तिशाली व महत्वपूर्ण आदिवासी विद्रोह(अन्य नाम - हुल आंदोलन)
3. नेतृत्वकर्ता :- सिद्धू व कान्हू, चांद एवं भैरव
4. कारण :-
   - स्थाई बंदोबस्त द्वारा संथालों की जमीन छीन जाना
   - दिकूओं द्वारा 50 से 500% तक ब्याज वसूली
   - पुलिस व न्याय व्यवस्था द्वारा दुर्व्यवहार व शोषण
   - आदिवासियों को बंधुआ मजदूर बनाना
5. विद्रोह का आरम्भ व दमन :-
   - 30 जून 1855 को भगनीडीह में सिद्धू व कान्हू के नेतृत्व में आंदोलन का आरम्भ
   - प्रारंभ में सिर्फ दिकूओं (महाजनों, जमीदारों) का विरोध फिर अंग्रेजों का
   - सिद्धू व कान्हू ने ईश्वरीय घोषणा की - "ठाकुर जी ने उन्हें निर्देश दिया है कि आजादी के लिए अब हथियार उठा लो "
   - महाजनों व जमीदारों पर हमला
   - पुलिस, पोस्ट व रेलवे स्टेशन पर हमला
6. विद्रोह का दमन :-
   - सरकार द्वारा मार्शल ला
   - सिद्धू व कान्हू को पकड़ने हेतु 10 हज़ार का इनाम
   - अगस्त 1855 में सिद्धू व फरवरी 1856 में कान्हू की गिरफ्तारी व मृत्यु दंड
   - 1856 के अंत तक भागलपुर कमिश्नर ब्राउन व मेजर लॉयड द्वारा विद्रोह का क्रूरतापूर्वक दमन
7. महत्व :-
   - संथालों के असीम शौर्य के कारण सरकार द्वारा नवंबर 1856 में संथाल परगना नामक जिले की स्थापना
   - संथालो के भू स्वामित्व संरक्षण हेतु "संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम"

B) मुंडा विद्रोह (1899-1900)

1. मुंडा आदिवासी बिहार के छोटा नागपुर पठार के रांची के दक्षिण भाग में निवास करते थे
2. क्षेत्र :- छोटानागपुर (बिहार)
3. नाम :- मुंडा/सरदारी/उलगुलान विद्रोह या महाविद्रोह
4. नेतृत्वकर्ता :- बिरसा मुंडा
5. उद्देश्य :-
   - शोषण मुक्त समाज व मुंडा राज्य की स्थापना
   - कर्मकांड के स्थान पर एकेश्वरवाद की स्थापना
   - अकाल व बीमारी से पीड़ित लोगों की सेवा करना
   - ब्रिटिश शासन से मुक्ति
6. राजनीतिक कार्यक्रम :-
   - सरकारी नियमों व कर्मचारियों की अवहेलना
   - ब्रिटिश सरकार को कर ना देना
   - जमीन पर किसानों का नियंत्रण स्थापित करना
   - आवश्यकता पड़ने पर सशस्त्र विद्रोह करना
7. कारण :-
   - अंग्रेजों द्वारा सामूहिक खेती(खूंटकट्टी / मुंडारी) पर प्रतिबंध
   - महाजनों का बढ़ता शोषण
   - स्थाई बंदोबस्त द्वारा संथालों की जमीनों का छीना जाना
   - पुलिस व न्याय व्यवस्था द्वारा शोषण व भ्रष्टाचार
8. विद्रोह का आरम्भ :-
   - 1895 में बिरसा मुंडा ने स्वयं को भगवान का दूत घोषित किया
   - 1899 में बिरसा मुंडा द्वारा विद्रोह का एलान – "दिकुओं से हमारी लड़ाई होगी और उनके खून से जमीन इस तरह लाल होगी जैसे लाल झंडा"
   - महिलाओं की भागीदारी
   - सशस्त्र विद्रोह
9. दमन :- 3 फरवरी 1900 को अंग्रेजों ने सिंहभूमि से (सेलरकैब पहाड़ी) से गिरफ्तार किया व जून 1900 में हैजा के कारण रांची जेल में मृत्यु
10. महत्व :- 1908 में छोटा नागपुर में काश्तकारी कानून (Tenancy Law) द्वारा कृषकों को राहत तथा बेगारी पर प्रतिबंध

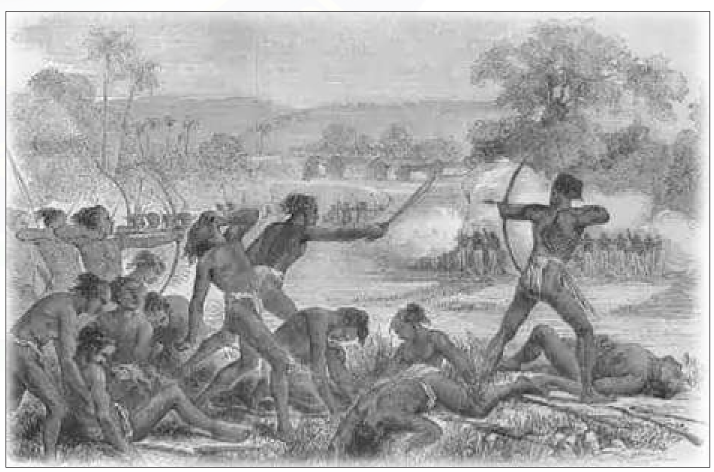

C) भील विद्रोह

1. महाराष्ट्र
2. मध्यप्रदेश
3. राजस्थान

महाराष्ट्र का भील विद्रोह (1820-1857) :-

1. क्षेत्र :- पश्चिमी तट का खानदेश जिला
2. नेतृत्वकर्ता :- सेवरम, भागोजी तथा काजल सिंह
3. मुख्य कारण :-
    - कृषि कर
    - अंग्रेजों की दमनकारी नीति
4. दमन :- 1857 तक अंग्रेजो द्वारा दमन

बिरसा मुण्डा (धरती अब्बा/जगत पिता)

- जन्म – 1875, लिहतु (रांची)
- लोकप्रियता का आधार - औषधीय व चिकित्सीय निपुणता
- ईसाई बने फिर वैष्णव धर्म
- एकेश्वरवाद व नैतिक आचरण पर बल
- अपने समर्थकों को सिंगबोंगा की पूजा करने को कहा
- 10 नवंबर, 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित करने को मंजूरी दी है। 15 नवंबर झारखंड राज्य का स्थापना दिवस भी है।

1. सिद्धू और कान्हू मुर्मू :-
    - 30 जून, 1855 को दो संथाल भाइयों सिद्धू और कान्हू मुर्मू ने 10,000 संथालों का एकत्र किया और अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह की घोषणा की।
    - अंग्रेज़ों को अपनी मातृभूमि से भगाने की शपथ ली।
    - मुर्मू भाइयों की बहनों फूलो और झानो ने भी विद्रोह में सक्रिय भूमिका निभाई।
2. शहीद वीर नारायण सिंह :-
    - छत्तीसगढ़ के सोनाखान का गौरव
    - 1856 के अकाल के बाद अनाज के स्टॉक को लूट लिया और गरीबों में बाँट दिया।
    - 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के पहले शहीद
3. श्री अल्लूरी सीता राम राजू :-
    - उनका जन्म 4 जुलाई, 1897 को आंध्र प्रदेश में भीमावरम के पास मोगल्लु नामक गाँव में हुआ था।
    - अल्लूरी को अंग्रेज़ों के खिलाफ 'रम्पा विद्रोह' का नेतृत्व, जिसमें उन्होंने विशाखापत्तनम और पूर्वी गोदावरी ज़िलों के आदिवासी लोगों को विदेशियों के खिलाफ विद्रोह करने के लिये संगठित किया।
4. रानी गौंडिल्यू :-
    - नगा समुदाय की आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता थीं, जिन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया।
    - 13 वर्ष की आयु में वह अपने चचेरे भाई हाइपौ जादोनांग के हेराका धार्मिक आंदोलन में शामिल हो गईं।
    - उन्होंने मणिपुर क्षेत्र में गांधी जी के संदेश का भी प्रसार किया।

राजस्थान का भील विद्रोह (1821) :-

1. क्षेत्र :- मेवाड़
2. नेतृत्व :- दौलत सिंह
3. कारण :-
    - तिसाला नामक भूमि कर
    - पारम्परिक सुरक्षा करों(भोलाई व रखाली) की अंग्रेजों द्वारा समाप्ति
    - लकड़ी काटने पर प्रतिबंध

D) रामोसी विद्रोह (1822-1841)

1. क्षेत्र :- पश्चिमी घाट (महाराष्ट्र)
2. रामोसी जनजाति के लोग मराठा सेना व पुलिस के कर्मचारी थे जिन्होंने सम्राज्य पतन के बाद कृषि को अपनाया
3. नेतृत्वकर्ता :- चित्तर सिंह, उमा सिंह एवं नरसिंह दत्तात्रेय पंतकर
4. कारण :-
    - अत्याधिक कर व क्रूरतापूर्ण वसूली प्रक्रिया (चित्तर सिंह)
    - 1825 में अकाल (उमा सिंह)
    - 1839 में अंग्रेज़ों द्वारा सतारा के राजा को निर्वासित करना (नरसिंह दत्तात्रेय पंतकर)

5. परिणाम :- नरसिंह दत्तात्रेय ने सतारा पर अधिकार किया परन्तु अंग्रेजों द्वारा पुनः अधिकार

E) रम्पा विद्रोह (1879 व 1922)

1. क्षेत्र :- आंध्रप्रदेश के गोदावरी जिले का उत्तरी तटवर्ती पहाड़ी क्षेत्र
2. नेतृत्वकर्ता :- राजू रम्पा(1879) तथा अल्लूरी सीताराम राजू(1922)
3. कारण :-
   - 1879 में ताड़ी निकालने पर प्रतिबंध
   - साहूकार व गुडेम नामक तहसीलदार द्वारा शोषण
   - झुमिंग कृषि पर प्रतिबंध
   - वन अधिकारों की समाप्ति
   - इमारती लकड़ी व चराई की कर दरों में वृद्धि
4. परिणाम :- 1924 में सीताराम राजू की मृत्यु के पश्चात आंदोलन समाप्ति
5. अल्लूरी सीताराम राजू :-
   - गैर आदिवासी
   - गांधी जी की अहिंसावादी विचारधारा से प्रभावित किंतु आदिवासी कल्याण हेतु हिंसा व गुरिल्ला युद्ध प्रणाली को अपनाया

F) उरांव विद्रोह / ताना भगत आंदोलन (1914)

1. क्षेत्र :- झारखण्ड
2. उरांव झारखण्ड का जनजाति समूह है जबकि भगत का अर्थ है संत है
3. नेतृत्वकर्ता :- जतरा भगत, बलराम भगत, गौ रक्षिणी भगत व देव मेनिया(महिला)
4. यह मूलतः गांधीवाद से प्रेरित अहिंसक व रचनात्मक आंदोलन था जो राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गया
5. उद्देश्य :-
   - कुरीतियों की समाप्ति
   - अंधविश्वासों की समाप्ति
   - शराब मुक्त समाज
   - पशुबलि की समाप्ति
   - ब्रिटिश शासन से मुक्ति
6. रचनात्मक :- लगान न देना, बेगार न करना आदि
7. परिणाम :-
   - 1948 में ताना भगत रैयत एग्रीकल्चरल लैंड रेस्टोरेशन एक्ट पारित
   - 1913 से 1942 तक अंग्रेजों द्वारा नीलाम जमीनों की वापसी
8. मुख्य तथ्य :-
   - जतरा उरांव का जन्म वर्तमान गुमला जिला के बिशनपुर प्रखंड के चिंगारी गांव में 1888 में हुआ था
   - जतरा उरांव ने 1914 में आदिवासी समाज में पशु बलि, मांस भक्षण, जीव हत्या, शराब सेवन आदि दुर्गुणों को छोड़कर सात्विक जीवन यापन करने का अभियान छेड़ा
   - 1922 में कांग्रेस के गया सम्मेलन और 1923 के नागपुर सत्याग्रह में बड़ी संख्या में ताना भगत शामिल हुए थे
   - 1940 में रामगढ़ काँग्रेस में तानाभगतों ने महात्मा गांधी को 400 रुपये की थैली दी थी

G) नागा या जियारलांग आंदोलन

1. क्षेत्र :- मणिपुर व नागालैंड
2. नेतृत्वकर्ता :- रोगमेई जदोनांग तथा रानी गैडिनल्यू
3. कारण :-
   - इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य रूढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा अतार्किक रीति-रिवाजों को समाप्त करना था।
   - ईसाई मिशनरियों का सामाजिक व्यवस्था में हस्तक्षेप
   - रूढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा अतार्किक रीति-रिवाजों
   - कष्टकारी करों एवं कानूनों
4. अन्य तथ्य :-
   - प्रारम्भ में इस आंदोलन का नेतृत्व एक युवा नेता रोंगमेई जदोनांग ने किया. जिसका लक्ष्य नाग राज्य' की स्थापना करना था। अगस्त 1931 में जदोनांग को गिरफ्तार करके फांसी दे दी गई।
   - इसके पश्चात सन् 1932 से इस आंदालन का नेतृत्व 17 वर्षीय नागा बालिका गाइदिन्ल्यू ने किया
   - गाधीवादी आदर्शों से प्रभावित होकर गैडिनल्यू ने इस आंदोलन को सविनय अवज्ञा आदोलन के साथ जोड़कर इसे राष्ट्रीय स्वरूप दिया।
   - गाइदिन्ल्यू को 'रानी' की उपाधि जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1937 ई. मे जेल मे मुलाकात के दौरान प्रदान की गई।
   - बाद में भारत सरकार द्वारा रानी गाइदिन्ल्यू को पद्म भूषण सम्मान से सम्मानित किया।

H) चुआर व हो विद्रोह

1. यह विद्रोह 1768 से 1772 के मध्य हुआ था।
2. इसे 'भूमि विद्रोह' की भी संज्ञा प्रदान की गई है।
3. चुआर लोग बंगाल में मेदिनीपुर जिले की आदिम जाति के लोग थे।
4. अकाल तथा बढ़े हुए लगान के कारण चुआर जाति ने हथियार उठा लिया।
5. इनका नेतृत्व राजा जगन्नाथ तथा दुर्जन सिंह ने किया और अपने ही इलाके को उजाड़ दिया तथा कम्पनी को लगान देना बंद कर दिया।
6. यह विद्रोह लगभग 30 वर्षो तक चलता रहा।
7. इसी तरह छोटा नागपुर तथा सिंह भूमि जिले की हो जनजाति ने भी बढ़े हुए राजस्व कर के प्रतिकार में जमींदारों व अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
8. 1820-22 ई. में तथा उसके पश्चात् 1831 से 1837 तक यह क्षेत्र विद्रोह ग्रस्त रहा।

I) पाइक विद्रोह

1. पाइक :- लगान मुक्त भूमि का उपयोग करने वाले उड़ीसा के खुर्दा क्षेत्र के सैनिक थे।
2. अंग्रेजों की भू-नीति ने पाइकों की लगान मुक्त भूमि पर भी कर लगा दिया और उसकी वसूली बड़ी कड़ाई के साथ करना प्रारम्भ किया
3. फलतः खुर्दा के राजा ने पाइकों को साथ लेकर 1804 ई. में विद्रोह किया और अंग्रेजों को परास्त किया।
4. कुछ वर्ष बाद 1817 ई. में पाइकों ने जगबन्धु के नेतृत्व में अंग्रेजी शासन के अत्याचार और शोषण के विरुद्ध पुनः विद्रोह किया और अंग्रेजी सेना को परास्त कर पुरी पर कर लिया

5. कठिन संघर्ष के बाद अंग्रेजों ने पाइकों के विद्रोह को 1825 ई. तक दमित कर दिया।

J) अहोम विद्रोह

1. अहोम असम में निवास करने वाले अभिजात वर्ग के लोग थे।
2. जब अंग्रेजों ने अहोम प्रदेश को अपने राज्य में सम्मिलित करना चाहा तो इस वर्ग ने इसका विरोध किया क्योंकि इसके पूर्व कम्पनी द्वारा बर्मा युद्ध से लौटने के पश्चात् अहोम के क्षेत्र को लौटाने का बचन दिया था।
3. 1828 में अहोम लोगों ने गोमधर कुंवर को अपना राजा घोषित कर दिया तथा रंगपुर पर चढ़ाई करने की योजना बनाई किन्तु वे सफल नहीं हो सके
4. 1830 में दूसरे विद्रोह की योजना बनाई गयी किन्तु अंग्रेजों ने अहोमो से समझौता कर लिया, जिसकेतहत उत्तरी असम के प्रदेश को महाराज पुरन्दर सिंह को दे दिया, जिससे अहोम विद्रोह शांत हो गया

K) खासी विद्रोह

1. अंग्रेजों ने वर्तमान की पूर्वोत्तर स्थित जयन्तिया तथा गारो
2. पहाड़ी क्षेत्र पर अधिकार करके ब्रह्मपुत्र घाटी तथा सिलहट को जोड़ने के लिए एक सैनिक मार्ग बनाने की योजना बनाई
3. जिसके लिए बहुत से अंग्रेज व बंगाली लोगों को वहाँ भेजा गया। सरकार के इस कृत्य का विरोध वहाँ पर निवास करने वाली खासी जनजाति ने किया
4. जिसका नेतृत्व इनके मुखिया तीरत सिंह ने किया। तीरत सिंह ने गारो, खाम्पटी तथा सिंहपो लोगों की सहायता से लगभग 10 हजार साथियों को लेकर अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया।
5. 1829 से 1833 तक यह संघर्ष जारी रहा इसमें तीरत सिंह की सहायता बारमानिक तथा मुकुंद सिंह ने भी किया
6. किंतु 1833 के अंत तक खासी लोगों ने कुछ शर्तों के साथ अंग्रेजों के समक्ष आत्म समपर्ण कर दिया और विद्रोह समाप्त हो गया

L) कोल विद्रोह

1. छोटानागपुर की कोल जाति, अंग्रेजों की भू- व्यवस्था से असंतुष्ट थी क्योंकि उनकी जमीन छीनकर मुस्लिम तथा सिक्खों को दे गयी
2. 1822 ई. में सरकार ने चावल से निर्मित शराब पर उत्पादन शुल्क लगा दिया
3. फलतः 1831 ई. में विद्रोह भड़क उठा जिसका नेतृत्व बुद्धो भगत ने
4. बुद्धो भगत के अतिरिक्त जोआ भगत, केशो भगत, नरेन्द्रशाह, मनीकी तथा मदरा महतो आदि ने इस विद्रोह को गति प्रदान की।
5. 1832 में बुद्धो भगत हजारो विद्रोहियों के साथ मारे गये।
6. 1832 ई. में गंगा नारायण ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया।
7. छिटपुट रूप से यह 1848 ई. तक चलता रहा। बाद में इसे दबा दिया गया।
8. ज्ञातव्य है कि इस विद्रोह को 'लरका विद्रोह' की भी संज्ञा प्रदान की गई है।

आंदोलन/विद्रोह	अवधि	प्रभावित क्षेत्र	नेतृत्वकर्ता	कारण व अन्य तथ्य
पहाड़िया विद्रोह	(1770 के दशक में)	राजमहल पहाड़ी(झारखण्ड)	--------	सरकार ने 1778 में समझौता करके विद्रोह को शांत कर दिया
चुआर विद्रोह	(1768-99)	मिदनापुर(प. बंगाल)	दुर्जन सिंह, जगन्नाथ	अकाल तथा बड़े हुए भूमि कर एवं अन्य आर्थिक संकटों के कारण सशस्त्र विद्रोह हुआ
खासी विद्रोह	(1830-33)	भारत के उत्तर पूर्वी पहाड़ी क्षेत्रों में	तीरत सिंह	विद्रोह का मुख्य कारण असम और सिलहट मार्ग को जोड़ने वाली सड़क के निर्माण हेतु खासी लोगों को बेगार हेतु बाध्य करना था
कोल विद्रोह	(1831-32)	छोटा नागपुर	बुद्धो भगत	गांव को छीनकर बाहरी लोगों को दिया जा रहा था और ये आदिवासी बाहरी लोगों को अपनी स्वतंत्रता में बाधक मानते थे
खोंड विद्रोह	(1837-56)	तमिलनाडु से बंगाल एवं मध्य भारत तक विस्तृत पहाड़ी क्षेत्र	चक्र बिसोइ	बाहरी लोगों का आगमन व मोरिया प्रथा पर प्रतिबंध
चेंचू विद्रोह	---------	आंध्र प्रदेश तेलंगाना उड़ीसा एवं कर्नाटक		साहूकारों, जमीदारों एवं पुलिस द्वारा किये जाने वाले शोषण
अहोम विद्रोह	---------	असम	गोमधर कुंवर	प्रथम वर्मा युद्ध(1824-26) के पश्चात कंपनी द्वारा असम से वापस लौटने का वचन पूरा न करने से अहोम जनजाति के लोग आक्रोशित हो गए

पोलिगारों का विद्रोह	1801-05	मालाबार एवं डिंडीगुल (तमिलनाडु)	वीर पी कट्टवामन	
वेलुथम्पी विद्रोह	1808-09	ट्रावनकोर(केरल)	वेलुथम्पी	
पाइक विद्रोह	1817-25	उड़ीसा	बख्शी जगबंधु	
खामती विद्रोह	1839-43	असम	खतागोहाई और रुनुगोटाई	
भुयान और जुआंग विद्रोह	1867-68	क्योंझर(उड़ीसा)	रत्न नायक	
गडकरी विद्रोह	1844	कोल्हापुर(महाराष्ट्र)	बाबाजी अहिरेकर	
विजयनगरम विद्रोह	1794	विजयनगर	------	
कित्तूर का विद्रोह	1824-29	कित्तूर(कर्नाटक)	रानी चेन्नमा एवं रायप्पा	
सूरत का नमक आंदोलन	1844	जनता		
कच्छ का विद्रोह	1819-31	कच्छ(गुजरात)	भारमल एवं झरेजा सरदार	
छोटा नागपुर विद्रोह (कोलारी विद्रोह)	1820-36	छोटा नागपुर क्षेत्र	कोलारी आदिवासी सरदारों द्वारा	

5.2.4) जनजाति आंदोलन का स्वरूप

1. जनजातीय/आदिवासी विद्रोह स्थानीय मुद्दों से सम्बंधित होते थे तथा इन विद्रोहों का प्रभाव भी स्थानीय क्षेत्र तक सीमित होता था।
2. आदिवासी विद्रोह वर्गीय आधार के बजाय जातीय आधार पर होते थे, यथा- संथाल, कोल, मुंडा, भील इत्यादि।
3. ये विद्रोह पुरातन मूल्यों एवं आदर्शों से प्रेरित होने के कारण सुधारवादी दृष्टिकोण से संचालित थे।
4. विद्रोहियों ने परम्परागत सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को बचाए रखने के साथ-साथ सामाजिक-धार्मिक सुधारों को भी प्राथमिकता दी।
5. ये विद्रोह हिंसक एवं उग्रवादी स्वरूप के थे।
6. जनजातीय विद्रोह औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध न होकर स्थानीय शक्तियों, जैसे-ज़मींदारी व्यवस्था, पुलिस व्यवस्था आदि के विरुद्ध होते थे। इन्होंने केवल शोषक वर्ग का विरोध किया।
7. जनजातीय वर्गों के पास विद्रोह के लिये परम्परागत हथियार ही उपलब्ध थे, जबकि अंग्रेज़ी सेना प्रशिक्षित एवं आधुनिक हथियारों से युक्त थी।

5.2.5) जनजातीय आंदोलन की सीमाएं

1. ये विद्रोह राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज नहीं करा सके। फलतः ब्रिटिश सरकार द्वारा व्यापक दमन एवं हिंसा से इन आंदोलनों को प्रायः शांत कराया दिया जाता था
2. इन विद्रोहों का तात्कालिक उद्देश्य केवल शोषणकारी व्यवस्था के अंत तक ही सीमित था और इसके पश्चात किसी नवीन व्यवस्था की योजना भी आदिवासियों के पास नहीं थी
3. आदिवासी अपनी क्षेत्रीय समस्याओं का समाधान चाहते थे, उन्हें ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों एवं गतिविधियों का पूरी तरह ज्ञान नहीं था, इसीलिए ये समग्र रूप से ब्रिटिश सरकार क्व खिलाफ संगठित रूप में विद्रोह नहीं कर सके
4. विद्रोहों का स्वरूप स्थानीय एवं क्षेत्रीय होने के कारण इनको राष्ट्रीय स्तर के नेताओं का नेतृत्व नहीं मिल सका
5. इनके पास तीर कमान, कुल्हाड़ी, भाला आदि पुराने एवं परम्परागत हथियार थे जो कि तोप एवं बंदूकों से लैस ब्रिटिशों की आधुनिक सेना का मुकाबला नहीं कर सके
6. ब्रिटिश सेना द्वारा आक्रामक एवं बर्बरतापूर्वक इन आंदोलनों को प्रायः नष्ट कर दिया जाता था

निष्कर्ष :- उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद भारत में घटित हुए ये जनजातीय विद्रोह साम्राज्यवादी एवं शोषणकारी शक्ति के विरुद्ध परम्परागत विद्रोह का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हालाँकि, इन विद्रोहों का दमन कर दिया गया, फिर भी इन आदिवासी संघर्षों ने राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया।

5.3) प्रमुख किसान विद्रोह || Major peasant revolt

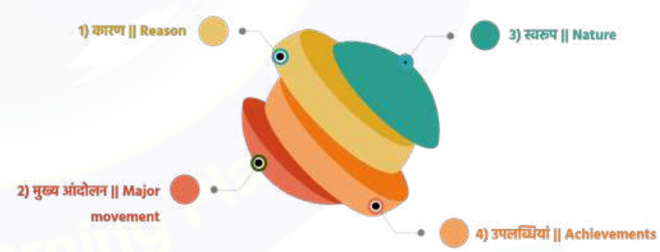

5.3.1) कारण

1. औपनिवेशिक आर्थिक व भू राजस्व नीतियां :-
   - रैय्यतवाडी, महालवाड़ी जैसे व्यवस्थाओं से अधिकतम भू राजस्व वसूली
   - जमींदारों का महाजनों द्वारा शोषण
   - कृषि का बलात वाणिज्यकरण
   - धन का निष्कासन
2. पारंपारिक कृषि प्रणाली का ह्रास :-
   - झूम कृषि पर प्रतिबंध
   - सामूहिक कृषि पर रोक

3. अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां :-
   - प्रथम विश्वयुद्ध व आर्थिक महामंदी के कारण खाद्यान्न समस्या
   - रूसी क्रांति (1917) के बाद राष्ट्रवादियो का कृषि समस्याओं के और ध्यान आकर्षण
4. अन्य कारण :-
   - 20 वी सदी में राष्ट्रीय व क्षेत्रों किसान संगठनों जैसे अखिल भारतीय किसान सभा (1936) का उदय
   - प्रेस व समाचार पत्रों द्वारा किसान आंदोलनों को समर्थन :- दीनबंधु मित्र के नाटक "नील दर्पण व हरिश्चंद्र मुखर्जी के साप्ताहिक समाचार पत्र "हिंदू पैट्रियाट" द्वारा जागरूकता
   - अकालो की पुनरावृत्ति व अकाल राहत नीति का अभाव
   - ब्रिटिश न्याय व पुलिस व्यवस्था द्वारा शोषण

5.3.2) मुख्य कृषक आंदोलन

1) 1857 के पूर्व
- रंगपुर, 1783
- पागलपंथी, 1824
- प्रथम मोपला विद्रोह

2) 1857 से 1900
- नील विद्रोह, 1859 -60
- पाबना विद्रोह, 1873- 1876
- दक्कन विद्रोह, 1875
- फड़के, 1879
- दिरांग, 1893

3) 1900 से 1947
- पाइक, 1904
- चंपारण सत्याग्रह. 1917
- खेड़ा सत्याग्रह, 1918
- मालाबार मोपला विद्रोह, 1921
- संयुक्त प्रांत किसान आंदोलन, 1919-22
- एका आंदोलन, 1921 -22
- बारदोली सत्याग्रह, 1928
- वर्ली आंदोलन, 1945
- तेभागा आंदोलन, 1946
- तेलंगाना आंदोलन, 1946 - 51

1) रंगपुर का कृषक विद्रोह, 1783
1. क्षेत्र :- बंगाल से सटे बह्मपुत्र घाटी का रंगपुर क्षेत्र
2. धीरज नारायण के नेतृत्व में जमीदार देवी सिंह के विरुद्ध
3. कारण :- ब्रिटिश भू राजस्व व्यवस्था

2) पागल पंथी विद्रोह (1824-1850)
1. पागल पंथी(वाउल संप्रदाय) की स्थापना करम शाह व पुत्र टीपू शाह ने की थी
2. क्षेत्र :- फिरोजपुर(बंगाल)
3. कारण :- ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था व जमीदारों द्वारा किसानों का शोषण

3) नील विद्रोह (1859-1860)
1. क्षेत्र :- बंगाल के नादियां जिले में स्थित गोविंदपुर गांव से आरंभ होकर जैसोर, खुलना, राजशाही, ठाका आदि
2. नेतृत्वकर्ता :- दिगम्बर विश्वास व विष्णु विश्वास
3. 1857 की क्रांति के पश्चात प्रथम संगठित विद्रोह
4. कारण :-
   - ब्रिटिश अशिकारियों द्वारा बंगाल व बिहार के किसानों से जबरन नील की खेती
   - किसानों को नील उत्पादन हेतु बाजार भाव से अत्यंत कम अग्रिम राशि देना
   - न्याय प्रणाली द्वारा यूरोपीय पक्ष में निर्णय
5. परिणाम :- 31 मार्च 1860 को अंग्रेजों द्वारा W. S. सीटोनकर की अध्यक्षता में नील आयोग का गठन - किसी भी किसान को नील की खेती हेतु बाध्य नहीं किया जाएगा
6. महत्व : -
   - नील विद्रोह की सफलता भारतीय कृषकों के अनुशासन, एकता तथा परस्पर सहयोग के कारण हुई
   - बुद्धिजीवियों का समर्थन
     - ✓ दीनबंधु मित्र का नाटक नील दर्पण
     - ✓ हरिश्चंद्र मुखर्जी का साप्ताहिक पत्र "हिन्दू पैट्रियाट"

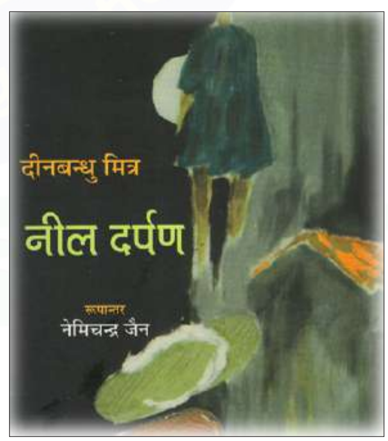

4) पाबना विद्रोह (1873-1876)
1. क्षेत्र :- पाबना (मध्य बंगाल)
2. नेतृत्वकर्ता :- ईशानचन्द्र राय, शंभूपाल, खोदी मल्लाह आदि ने मिलकर "किसान संघ" की स्थापना की

3. प्रमुख कारण :-
   - जमीदारों द्वारा लगान की दरों को कानूनी सीमा से अधिक बढ़ा देना
   - 1859 के अधिनियम के अधिनियम 10 के तहत काश्तकारों को जमीन पर मिले अधिकारों से जमीदारों द्वारा वंचित करना
4. मुख्य तथ्य :-
   - यह आंदोलन अहिसंक व रचनात्मक था
   - जमीदारों के विरुद्ध ना कि अंग्रेजों के – "हम महारानी और सिर्फ महारानी की रैय्यत होना चाहते हैं"
   - भारतीय बुद्धिजीवियों द्वारा समर्थन - सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने इंडियन एसोसिएशन के मंच से समर्थन किया
   - जमींदार दर्पण (नाटक) - मुशर्रफ हुसैन
5. परिणाम :-
   - 1885 में बंगाल काश्तकारी अधिनियम पारित
   - किसानों को उनकी जमीनें वापस कर दी गयी

5) दक्कन विद्रोह (1875)

1. क्षेत्र :- महाराष्ट्र (पूना, अहमदनगर, शोलापुर, सतारा आदि)
2. स्वरूप :- प्रारंभ में अहिंसक फिर हिंसक
3. कारण :-
   - साहूकारों व महाजनों का अत्याचार व शोषण
   - रैय्यतवाडी व्यवस्था में कर ना चुका पाने के कारण किसानों को अधिक दर पर महाजनों से ऋृण लेना पड़ा
   - 1864 में अमेरिकी गृह युद्ध समाप्ति के पश्चात कपास की कीमतों में भारी गिरावट
   - 1867 में सरकार द्वारा भू-राजस्व दरों में 50% की वृद्धि
4. विद्रोह :-
   - किसानों व बुलोटीदारों(नाई, धोबी, बढई आदि) द्वारा महाजनों का सामाजिक बहिष्कार
   - इकरारनामों का दहन
   - साहूकारों के घरों पर हमला
5. परिणाम :- 1879 में दक्कन कृषक राहत अधिनियम

6) दिरांग आंदोलन (1893-1894)

1. क्षेत्र :- कामरूप व दिरांग(असम)
2. कारण :- कामरूप व दिरांग क्षेत्रों में भू राजस्व दरों में 50 से 70% की वृद्धि
3. समर्थन न करने वालों का सामाजिक बहिष्कार
4. हुक्का पानी एवं नाई धोबी बंद

7) चंपारण सत्याग्रह (1917)

1. महात्मा गांधी का भारत में प्रथम सत्याग्रह
2. क्षेत्र :- उत्तरी बिहार का चंपारण जिला, मोतिहारी, बेतिया, मधुबनी
3. नेतृत्व :- महात्मा गांधी
4. कारण :-
   - तिनकठिया पद्धति - यूरोपीय बागान मालिकों का किसानों से अनुबंध जिसके अनुसार 3/20 हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था
   - रासायनिक रंगों के आविष्कार से नील की मांग में गिरावट
   - यूरोपीयों ने किसानों से अनुबंध समाप्त करने हेतु शरहवेशी व तावान(एक मुश्त मुआवजा) की दरों को बढ़ा दिया

5. सत्याग्रह :-
   - 1917 में राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर गांधी जी, बृजकिशोर, सी एफ एंड्रूज, नारायण सिंह, राजकिशोर प्रसाद, H. S. पोलाक, राजेन्द्र प्रसाद, महादेव देसाई, नरहरि पारिख, जे बी कृपलानी का चंपारण आगमन
   - गांधी जी ने किसानों को संग्रहित करके भारत में प्रथम अहिंसात्मक सत्याग्रह किया
6. परिणाम :-
   - अंग्रेजों द्वारा गांधी जी की सदस्यता वाले जांच आयोग का गठन
   - सरकार द्वारा तिनकठिया पद्धति की समाप्ति
   - यूरोपीय बागान मालिक अवैध वसूली का 25% हिस्सा किसानों को लौटा दे
   - रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा गांधी जी को महात्मा की उपाधि
   - एन जी रंगा द्वारा गांधी जी का विरोध

8) खेड़ा सत्याग्रह (मार्च 1918)

1. क्षेत्र :- खेड़ा (गुजरात)
2. नेतृत्वकर्ता :- महात्मा गांधी
3. सहयोगी :- सरदार पटेल, इंदुलाल याग्निक, मोहनलाल पांड्या, विट्ठल भाई पटेल
4. कारण :-
   - 1917-18 में अकाल के कारण कम कृषि उत्पादन के बाद भी लगान की मांग
   - यह लगान संहिता का उल्लंघन था, जिसके अनुसार 25% से कम उपज होने पर लगान माफी का प्रावधान था
5. परिणाम :- गांधी जी द्वारा सत्याग्रह के तहत कर ना देने की मांग के कारण ब्रिटिश सरकार का आदेश कि लगान सिर्फ सक्षम लोगों से लिया जाए

9) मालाबार का मोपला विद्रोह

- **1836-1854**
- **1921**

1. मोपला :- मालाबार तट पर निवास करने वाले अरब मूल के मुस्लिम किसान
2. 1836 से 1854 तक प्रथम विद्रोह :-
   - कारण :- जमींदारों(प्रायः हिन्दू उच्च जाति के लोग) द्वारा अत्याधिक लगान वसूली
   - नेतृत्व :- थंगल, सैयद अलावी, सैयद फजल
   - परिणाम :- सभी नेतृत्वकर्ताओं को भारत से निर्वासित करके मालाबार अत्याचार निवारण कानून को पारित किया
3. द्वितीय मोपला विद्रोह (1921) :-
   - कारण - लगान की उच्च दरें, जमीदारों ब्रिटिश राज की शोषण कारी नीतियां

- स्वरूप व विद्रोह -
  - ✓ प्रारम्भ में अहिंसक जो असहयोग आंदोलन से जुड़ा था
  - ✓ गांधी जी व अन्य राष्ट्रीय नेताओं का समर्थन
  - ✓ अप्रैल 1920 में मालाबार काँग्रेस कमेटी ने मंजेरी सभा का आयोजन किया
  - ✓ अंग्रेजों द्वारा तिरुरांगड़ी मस्जिद में छापे के बाद हिंसात्मक स्वरूप। मोपलाओं द्वारा सरकारी संपत्ति का विनाश व अधिकारियों की हत्या
- नेतृत्व - अलीमुसलियार, वेरियन कुन्नाथ आदि
- परिणाम - 2500 से अधिक मोपलाओं की हत्या करने अंग्रेजों द्वारा विद्रोह का दमन
- तथ्य -
  - ✓ इस विद्रोह को दबाने के लिए सरकार ने सेना का सहारा लिया तथा हिंदुओं को भड़काया जिससे विद्रोह सांप्रदायिक हो गया
  - ✓ मूलतः यह विद्रोह साम्राज्यवाद और सामंतवाद विरोधी था
  - ✓ अंग्रेजों की बर्बरता की एक मिसाल देते हुए सुमित सरकार ने लिखा, '20 नवम्बर को पोडुनूर में रेल के एक बन्द डिब्बे में 66 मोपलों के शव मिले जिनकी मौत दम घुटने के कारण हुई थी, स्कूल में पढ़ने वाला विद्यार्थी सिराजुद्दौला की 'कालकोठरी' के बारे में जानता है, जो पूर्णतः काल्पनिक नहीं तो अत्यन्त बढ़ा- चढ़ा कर अवश्य कही गई है, परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि स्वतन्त्र भारत में भी बहुत कम लोगों ने पोडुनूर की 'कालकोठरी' की निर्विवाद घटना के बारे में सुना है।'
  - ✓ मोपला संघर्ष में 2,337 संघर्षकर्ता मारे गए, 1,652 घायल हुए तथा 45,404 बन्दी बनाए गए

10) संयुक्त प्रान्त / अवध का किसान आंदोलन

1. क्षेत्र :- संयुक्त प्रान्त (प्रतापगढ़, रायबरेली, सुल्तानपुर, फैजाबाद आदि)
2. नेतृत्वकर्ता :- अवध किसान सभा, बाबा रामचन्द्र, जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, गौरी शंकर मित्र, दुर्गापाल सिंह, झिंगुरी सिंह आदि
3. कारण :-
   - अवध के जमीदारों को कृषक मामलों में पूरी छूट
   - जमीदारों द्वारा किसानों से अत्याधिक लगान वसूली
   - जमीदारों को ब्रिटिश सरकार का समर्थन
   - किसानों की बेदखली
4. आंदोलन :-
   - मदनमोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू, गौरीशंकर मिश्र, इंदु नारायण द्विवेदी द्वारा 1918 में उत्तर प्रदेश किसान सभा का गठन
   - 1919 में काँग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में व्यापक भागीदारी
   - 1919 में झींगुरीपाल सिंह व दुर्गापाल सिंह द्वारा प्रतापगढ़ के जमीदारों का सामाजिक बहिष्कार (नाई-धोबी बंद)
   - बाबा रामचन्द्र (महाराष्ट्र निवासी) के प्रयासों से 1920 में अवध किसान सभा का गठन, जिससे कालांतर में जवाहरलाल नेहरू जुड़े
   - दिसंबर 1920 में अयोध्या में विशाल कृषक सम्मेलन
5. परिणाम :- 1921 में अवध मालगुजारी अधिनियम द्वारा किसानों को सीमित राहते

11) बारदोली सत्याग्रह (1928)

1. क्षेत्र :- बारदोली, सूरत, गुजरात
2. नेतृत्वकर्ता :- सरदार वल्लभ भाई पटेल
3. सहयोगी :- महात्मा गांधी, मेहता बन्धु (कल्याण जी व कुंवर जी), दयालजी देशाई, केशवजी गणेश, नरहरि पारीख, जगतराम दवे
4. महिलाएं :- कस्तूरबा गांधी, मीठू बेन, भक्तिबा, मनीबेन पटेल, शारदाबेन शाह, शारदा मेहता आदि
5. कारण :-
   - सूरत की कालिपराज जनजाति (गांधी जी द्वारा नाम परिवर्तन - रानीपराज) में प्रचलित हाली पद्धति (बंधुआ मजदूर)
   - कपास की कम कीमत के बाद भी 30% लगान वृद्धि
   - विरोध करने पर भी मात्र 8% राहत
6. आंदोलन :-
   - मेहता बन्धुओं द्वारा कालिपराज साहित्य का सृजन
   - गांधी जी द्वारा उत्थान का प्रयास
   - KM मुंशी व लालजी नारंगी द्वारा बम्बई विधान परिषद की सदस्यता से त्यागपत्र
   - महिलाओं की सक्रिय भागीदारी
7. परिणाम :-
   - ब्रुमफील्ड और मैक्सवेल समिति की सिफारिश पर भूराजस्व दर को घटाकर 6.03% कर दिया
   - गांधी जी व बारदौली की महिलाओं के द्वारा वल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि
   - लंदन में प्रकाशित न्यू स्टेटमैन ने लिखा कि इस आंदोलन के दूरगामी परिणाम होंगे

12) एका आंदोलन

1. 1921-22 ई. में उत्तर प्रदेश के हरदोई, बहराइच और सीतापुर में
2. लगान में बढ़ोतरी एवं जमींदारों के शोषण के विरुद्ध
3. नेतृत्व – मदारी, पासी और सहदेव
   - किसानों को भूमि न छोड़ने, बेगार न करने आदि की शपथ दिलाई जाती
   - इस आंदोलन को छोटे ज़मींदारों का भी समर्थन प्राप्त हुआ।
4. मार्च 1922 ई. के अंत तक सरकार ने दमन का सहारा लेकर इस आंदोलन को समाप्त कर दिया
5. 1926 ई. में सरकार द्वारा आगरा काश्तकारी अधिनियम तथा 1939 ई. में यू.पी काश्तकारी अधिनियम पारित किया गया।

13) तेभागा आंदोलन

1. बंगाल में नवंबर 1946 से लेकर फरवरी 1947 तक
2. नेतृत्वकर्ता - कम्पाराम सिंह एवं भवन
   - बटाईदारों को जमीन के मालिकों को उपज का आधा और कभी-कभी तो उससे भी अधिक देना पड़ता था।
   - बंगाल भू-राजस्व आयोग (फ्लाउड कमीशन) ने अपनी रिपोर्ट में यह सिफारिश की थी कि किसान को उपज का 2/3 हिस्सा मिलना चाहिए और जमीन के मालिक को 1/3 भाग दिया जाए
   - फ्लाउड कमीशन की इस सिफारिश को लागू करने हेतु आन्दोलन
3. 1950 में काँग्रेस सरकार ने वर्गाधार विधेयक पारित कर आंदोलनकारियों की मांगों की पूर्ति की।

14) वर्ली आंदोलन

1. यह संघर्ष बम्बई क्षेत्र के बहुसंख्यक वर्ली किसानों द्वारा शुरू किया गया था
2. उच्चब्याज दरपर लिए गए ऋण का भुगतान न कर पाने के कारण किसानों की अधिकांश जमीनें महाजनों एवं जमींदारों ने हथिया ली, परिणामस्वरूप किसानों ने विद्रोह कर दिया
3. सरकारद्वारा पुलिस कार्यवाही के बाद विद्रोह धीरेधीरे शांत हो गया
4. गोदावरी पुरुलेकर इस आंदोलन के प्रमुख नेता थे

NOTE

अखिल भारतीय किसान सभा :-

- स्थापना - अप्रैल 1936
- स्वामी सहजानंद सरस्वती अध्यक्ष तथा एन.जी. रंगा सचिव चुने गए। 1929 ई. में बिहार किसान सभा की स्थापना भी सहजानंद सरस्वती ने की
- इंदुलाल याज्ञनिक द्वारा किसान घोषणा-पत्र जारी किया था।
- 1936 ई. में अखिल भारतीय किसान सभा का सम्मलेन फैज़पुर में आयोजित किया गया।
- 1937 ई. के प्रांतीय चुनावों में जारी कांग्रेस के घोषणा-पत्र में अखिल भारतीय किसान सभा की मांगों को सम्मिलित किया गया था।

15) तेलंगाना आंदोलन

1. तेलंगाना हैदराबाद के निजाम रियासत का एक अंग था।
2. इस भूमि पर लगभग 20 लाख किसान अपना जीवन यापन करते थे।
3. इस क्षेत्र के किसानों की लगान बढ़ा दी गई और कम दाम पर अपने अनाज को बेचने के लिए बाध्य किया जाने लगा।
4. फलतः किसानों ने जमींदारों, साहूकारों, व्यापारियों एवं निजाम के अधिकारी के विरुद्ध 1946 में विद्रोह कर दिया विद्रोह का नेतृत्व कम्युनिष्ट नेता कमरैया कर रहे थे
5. आन्दोलन के दौरान निजाम की पुलिस ने कमरैया की हत्या कर दी। फलतः आन्दोलन हिंसात्मक हो गया
6. छापामार युद्ध प्रणाली अपना कर यहाँ के किसानों ने भारतीय इतिहास में सर्वाधिक अवधि तक चलने वाले कृषक संघर्ष का नेतृत्व किया।
7. किसानों ने मांग किया कि हैदराबाद रियासत को समाप्त कर इसे भारत का अंग बना लिया जाए स्वतंत्रतोपरान्त यह आन्दोलन स्वतः समाप्त हो गया

NOTE

1. बिहार में तीन प्रकार की भूमि का उल्लेख है -
   - बकाश्त भूमि :- अस्थायी काश्तकारों को प्रत्येक वर्ष नीलामी या तय दरों के आधार पर प्रदत्त भूमि, बकाश्त भूमि कही जाती थी
   - रैय्यत भूमि :- इस भूमि पर स्थायी स्वामित्व किसानों का था
   - जिस्ती भूमि :- यह भूमि जमीदारों क्व स्वामित्व में आती थी जिस पर खेतिहर मजदूरों द्वारा खेती की जाती थी।

आंदोलन/अवधि	प्रभावित क्षेत्र	नेतृत्व	कारण	परिणाम
प्रारम्भिक मोपला विद्रोह (1836-54)	मालाबार	के. एम. हाजी, सिथी कोया थंगल	अंग्रेजों द्वारा नई राजस्व व्यवस्था लागू करना	अंग्रेज अधिकारियों व बिचौलियों पर हमला किया गया कई वर्षों तक ब्रिटिश सेना इन्हें दबा ना सकी
अवध किसान आंदोलन (1919-20)	प्रतापगढ़ रायबरेली सुल्तानपुर फैजाबाद	झिंगुरिपाल सिंह, बाबा रामचन्द्र	अवैध लगान व बेदखली अधिनियम लागू। अवध माल गुजारी(संशोधन अधिनियम) से लगान में बढ़ोत्तरी	1919 ई में प्रतापगढ़ में नाई धोबी सेवा बंद तथा सामाजिक बहिष्कार। बाबा रामचंद्र को जेल भेजने पर प्रदर्शन
एका आंदोलन (1921-22)	बाराबंकी, हरदोई, बहराइच, सीतापुर	मदारी पासी	लगान में बढ़ोत्तरी	इस आंदोलन में छोटे जमींदार भी शामिल हुए
मालाबार का मोपला विद्रोह (1921)	मालाबार	याकूब हसन, यू गोपाल मेनन, पी. मोयउद्दीन कोया, अली मुसलियार	अधिक लगान व बेदखली अंग्रेजों द्वारा अली मुदलियार को पकड़ने के लिए तिरुरांगड़ी की मस्जिद पर छापा मारा	पुलिस स्टेशन, सरकारी दफ्तर व जमीदारों के घर हमला। बाद में इसका स्वरूप साम्प्रदायिक हो गया। 1921 में विद्रोह को कुचल दिया गया। प्रशासन द्वारा 10000 मोपलाओं की हत्या
आंध्र आंदोलन (1923-38)	तटीय आंध्र	एन जी रंगा, पी सदरैया, बनली सत्य नारायण, दन्दू सत्य नारायण राजू	खेत जोतने व मछली मारने के अधिकारों को लेकर संघर्ष छेड़ा गया	आंध्र प्रांतीय कृषक एसोसिएशन की स्थापना एनजी रंगा द्वारा 1923 में हुई उन्हीं के द्वारा गुंटूर जिले के निडोबेल गांव में 1933 में भारतीय किसान परिषद का गठन

मालाबार कृषक आंदोलन (1934-40)	केरल का मालाबार क्षेत्र	आर. रामचन्द्र वेदुमगड़ी, वी.कृष्ण पिल्लै, टी. प्रकाशम	सामंती वसूलियां, नवीनीकरण शुल्क व लगान की अग्रिम अदायगी	संगठनों ने 1929 में कृषक मालाबार काश्तकारी अधिनियम में सुधार के लिए आंदोलन छेड़ा। कांग्रेस सरकार इस्तीफा देने से पहले ऋणों में राहत देने के लिए एक कानून पास कर चुकी थी
बिहार में किसान आंदोलन (1929-39)	बिहार	स्वामी सहजानंद	जमीदारी उन्मूलन, गैर-कानूनी वसूली, काश्तकारों की बेदखली व काश्त जमीन की वापसी	1929 में स्वामी सहजानंद द्वारा बिहार प्रादेशिक किसान सभा का गठन कार्यानंद शर्मा ने मुंगेर के बड़हिया ताल में वकाश्त भूमि की वापसी के लिए आंदोलन चलाया गया में यदुनंदन शर्मा ने आंदोलन चलाया । 1938-39 तक सरकार द्वारा किए गए सुधारों और कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी से आंदोलन शांत हो गया
पंजाब में किसान आंदोलन (1930-40)	जालंधर, अमृतसर, होशियारपुर, लावलपुर, शेखपुरा	सोहन सिंह भाकना, बेदी ज्वाला सिंह, तेज सिंह, मास्टर हरि सिंह, बाबा रूर सिंह	भू राजस्व में कटौती, ऋणों के भुगतान में स्थगन तत्कालीन कारण अमृतसर लाहौर में भू राजस्व का पुनर्निर्धारण, नहर कर में वृद्धि	नौजवान भारत सभा, कीर्ति किसान कांग्रेस व अकाली दल के प्रयत्नों से 1937 में पंजाब किसान समिति का गठन हुआ। 1943 में कानून के द्वारा काश्तकारों को उनकी जमीन वापस मिली
वर्ली आंदोलन (1945-49)	बम्बई के निकट वर्ली क्षेत्र	गोदावरी पुरुलेकर	जंगलों के ठेकेदारों, भूमिपतियों, धनी कृषकों के बेगार के विरुद्ध	ये साम्यवादियों के प्रभाव में आ गए
तेभागा आंदोलन (1946-50)	दिनाजपुर, रंगपुर, जलपाईगुड़ी, मिदनापुर, 24परगना, खुलना	कृष्ण विनोदी राय, अवनि लाहिरी, सुनील सेन, भवानी सेन व मोनी सिंह	बटाईदारों ने फैसला किया कि आधे की जगह वे जोतदारों को एक तिहाई उपज देंगे। सरकार ने वर्गादार विधेयक पारित कर किसानों की मांगों की पूर्ति की	सुहरावर्दी मंत्रिमंडल ने बंगाल बर्गादार अस्थायी नियमन विधेयक प्रकाशित कर आंदोलन को कानूनी वैधता प्रदान की
पुन्नप्रा वायलार विद्रोह(1946)	त्रावणकोर	पनम धातु पिल्लई साम्यवादी जन	अन्न की कमी, दीवान सी पी. रामास्वामी अय्यर का अमेरिकी नमूना, ताकि अंग्रेजों के जाने के बाद एक स्वतंत्र त्रावणकोर उसके नियंत्रण में रहे	लगभग 800 लोग इस खूनी विद्रोह में मारे गए दवाब की नीति द्वारा रामास्वामी अय्यर को अमेरिकी नमूना त्यागने पर मजबूर किया गया
तेलंगाना आंदोलन(1946-1951)	तेलंगाना	संदरैया	निजाम, जमींदारों, साहूकारों तथा व्यपारियों के विरुद्ध संघर्ष। बेगार करवाना, जमीन हथियाना	यह सबसे बड़ा कृषक गुरिल्ला युद्ध रहा।

5.3.3) कृषक आंदोलन का स्वरूप/ प्रकृति

- 19 वीं सदी
- 20 वीं सदी

19 वीं सदी

1. 19वीं सदी के विद्रोह में मूलभूत परिवर्तन की कल्पना नहीं की गई बल्कि किसानों ने अपने तात्कालिक शोषणकर्ता के खिलाफ सरकार से विधि सम्मत सुधार के लिए संघर्ष किया
2. स्थानीय प्रकृति
3. आधुनिक राष्ट्रवाद के विचारों का अभाव
4. प्रारंभिक कृषक आंदोलनों में हिंसा एवं दमन का व्यापक प्रयोग किया गया और ब्रिटिश सरकार ने भी आंदोलनों को शांत करने हेतु व्यापक हिंसा एवं बल का प्रयोग किया था

20 वीं सदी

1. आर्थिक मांगों के साथ-साथ राजनीतिक एवं संवैधानिक मांगे भी शामिल
2. राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ाव - 1937 के प्रांतीय चुनावों में अखिल भारतीय किसान सभा की मांगों को कांग्रेस पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में शामिल किया
3. राष्ट्रीय स्तर के के नेताओं द्वारा नेतृत्व, जैसे चंपारण सत्याग्रह का नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था
4. गांधीवादी सिद्धांतों एवं आदर्शों से प्रेरित - इन आंदोलनों में प्रायः सत्याग्रह, धरना, गिरफ्तारियां आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जाता था

5.3.4) कृषक आंदोलन की उपलब्धियां

1. ब्रिटिश सरकार की औपनिवेशिक एवं शोषणकारी नीतियों को उजागर किया
2. परम्परागत जमीदारी व्यवस्था एवं साम्राज्यवादी शासन की जड़ें हिला दी
3. राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान राजनीतिक दलों में कृषि सुधार भी एक प्रमुख मांग बन गई
4. किसानों के संघर्ष के कारण ब्रिटिश सरकार को समिति एवं जांच आयोग का गठन करना पड़ा साथ ही कानूनों में आवश्यक परिवर्तन किए गए जो कि तत्कालीन आंदोलन की प्रमुख उपलब्धियां रहीं
5. इस दौरान अनेक किसान संगठन स्थापित हुए जिन्होंने न केवल किसान आंदोलनों को नेतृत्व प्रदान किया अभी तो राष्ट्रीय आंदोलन को भी गति प्रदान की
6. वास्तव में इन आंदोलनों ने स्वाधीनता के उपरांत किए गए विभिन्न कृषि सुधारों के लिए एक अनुकूल वातावरण का निर्माण किया उदाहरण स्वरुप जमीदारी प्रथा का अंत

5.3.5) प्रमुख भारतीय नागरिक विद्रोह

1) सत्य शोधक समाज (मुम्बई, 1873)

1. निम्न जातियों के उत्थान हेतु ज्योतिराव गोविंदराव फुले द्वारा 1873 में बम्बई में स्थापित संस्था
2. ज्योतिबा फुले :-
   - जन्म - पुणे, 1827
   - कार्य - निम्न जातियों का उत्थान व स्त्री शिक्षा
   - प्रभाव - शिवाजी महाराज, जार्ज वाशिंगटन व टॉमस पेन की पुस्तक
   - पुस्तकें - गुलामगिरी (ब्राह्मण प्रभुत्व को चुनौती), सार्वजनिक सत्य धर्म, धर्मः तृतीय रत्न
   - 1851 में पुणे में कन्या विद्यालय

- 1888 में लोगों द्वारा महात्मा की उपाधि
- मृत्यु - 28 नवंबर 1890

3. अन्य तथ्य :-
   - दीनमित्र समाचार पत्र द्वारा प्रचार और गांव-गांव में जाकर सड़कों पर विभिन्न तमाशे करने से सत्यशोधक समाज की लोकप्रियता बहुत बढ़ गई थी
   - शंकर राव जाधव ने फुले के विचारों से प्रभावित होकर बहुजन समाज की स्थापना की

2) जस्टिस पार्टी आंदोलन, 1916

1. स्थापना :- 1916
2. संस्थापक :- सीएन मुदालियर, पी. त्यागराज चेट्टी, टीएम नायर
3. 1937 में रामास्वामी पेरियार के द्वारा अस्पृश्यता विरोधी आंदोलन
4. जस्टिस नामक समाचारपत्र
5. असहयोग आंदोलन में भाग
6. 1949 में इसी की एक शाखा के रूप में अन्नादुरई ने DMK(द्रविड मुन्नेत्र कड़गम) की स्थापना की

3) वायकोम सत्याग्रह (केरल, 1924)

1. उद्देश्य :- मंदिरों में निम्न जाति के प्रवेश हेतु
2. कारण :- सवर्ण जातियों द्वारा एझवा व पुलैया जैसे वर्गों को मंदिर में प्रवेश से रोकना
3. आंदोलन :-
   - इसके खिलाफ आवाज नारायण गुरु, एन कुमारन, टीके माधवन जैसे बुद्धिजीवी लोगों ने उठाई और त्रावणकोर रियासत के गांव वायकोम में इस सत्याग्रह का आरंभ हुआ
   - इस गांव के मंदिर में हरिजनों के प्रवेश के लिए श्री नारायण धर्म परिपालन योग क्षेम संगठन के श्री नारायण गुरु के नेतृत्व में लोगों ने मंदिर में प्रवेश किया
   - मार्च 1925 को गांधी ने त्रावणकोर की यात्रा की और इस आंदोलन का समर्थन करते हुए त्रावणकोर की महारानी से मंदिर में प्रवेश दिए जाने के विषय में समझौता किया

4) गुरुवायूर आंदोलन (1931,केरल)

1. केरल में मंदिर में प्रवेश को लेकर 1931 में कांग्रेस कमेटी केरल ने 1 नवंबर से गुरुवायूर नामक स्थान से आंदोलन आरंभ कर दिया
2. 1 नवंबर 1931 को केरल कांग्रेस कमेटी ने अखिल केरल मंदिर प्रवेश दिवस के रूप में मनाया
3. पी कृष्ण पिल्लई तथा ए के गोपालन ने सत्याग्रह का नेतृत्व किया
4. 21 दिसंबर 1932 को के केलप्पन ने आमरण अनशन आरंभ कर दिया
5. अंत में 1936 को त्रावणकोर के महाराज से एक समझौता हुआ जिसके तहत सभी मंदिरों को हिंदुओं की सभी जातियों हेतु खोल दिया गया

5) सन्यासी विद्रोह (बंगाल, 1763-1800)

1. बंगाल में अंग्रेजी राज्य की स्थापना से जमीदार कृषक व शिल्पी सभी नष्ट हो गए
2. राजस्व की वसूली में तेजी लाने ईस्ट इंडिया कंपनी और उसके मुलाजिमो द्वारा कारीगरों के शोषण और पुराने जमीदारों की समाप्ति ने परिस्थिति को विस्फोटक बना दिया
3. तीर्थ स्थानों पर आने जाने पर लगे प्रतिबंध से सन्यासी(गिरी सम्प्रदाय के सन्यासी) लोग बहुत क्षुब्द हुए
4. 1770 में बंगाल के भयंकर अकाल में भी राजस्व वसूलना तथा तीर्थयात्रा पर प्रतिबंध लगाना इस विद्रोह का प्रमुख कारण था
5. यह विद्रोह सन 1763 से 1800 तक चला
6. बंगाल में कार्यविरत सैनिकों और विस्थापित जमींदारों ने इस विद्रोह में भाग लिया
7. इस विद्रोह का नेतृत्व धार्मिक मठवासियों और बेदखल जमीदारों ने किया
8. बोगरा व मेनन सिंह नामक स्थान पर उन्होंने अपनी सरकार बनाई
9. ये लोग कम्पनी के सैनिकों के विरुद्ध बहुत वीरता से लड़े तथा वारेन हेस्टिंग्स एक लंबे अभियान के पश्चात ही इस विद्रोह को दबा पाया था
10. इसी सन्यासी विद्रोह का उल्लेख वंदे मातरम के रचयिता बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास आनंदमठ में किया है
11. इस विद्रोह की खासियत हिंदू मुस्लिम एकता थी इस विद्रोह की खासियत हिन्दू मुस्लिम एकता थी। इस विद्रोह की खासियत हिन्दू मुस्लिम एकता थी। इस विद्रोह के प्रमुख नेताओं में मजमून शाह, मूसा शाह, द्विजनारायण, भवानी पाठक, चिरागअली तथा देवी चौधरानी आदि के नाम उल्लेखनीय है

6) फकीर विद्रोह (बंगाल, 1776-77)

1. बंगाल में यह विद्रोह 1776 में घुमक्कड़ मुस्लिम फकीरों ने किया, जिसके प्रमुख नेता मजमून शाह और चिरागअली
2. ये लोग सूफी परम्पराओं से प्रभावित थे
3. इस विद्रोह का प्रमुख, कारण ज़मीदारों और कृषकों से अत्याधिक लगान वसूली था जो अकाल के दौरान की गई
4. इनकी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र दीनाजपुर, मालदा व रंगपुर था
5. जेम्स रेनल ने मजमुंशाह को पराजित किया
6. चिराग अली की सहायता भवानी पाठक व देवी चौधरानी जैसे हिन्दू नेताओं ने भी की
7. अंततः 19वीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह का दमन कर दिया

7) वहाबी विद्रोह (बंगाल, 1820-1870)

1. वहाबी आन्दोलन मूलतः अरब देश में मोहम्मद इब्न अबल के वाहिब(1703-1787) द्वारा आरम्भ किया गया धार्मिक आंदोलन था। जिसका प्रमुख उद्देश्य दारुल हरब(काफिरों का देश) को दारुल इस्लाम (मुसलमानों का देश) बनाकर इस्लाम का प्रचार प्रसार करना था
2. रायबरेली के सैय्यद अहमद बरेलवी व शाह अब्दुल अजीज ने इसे आंदोलन की शक्ल दी
3. सैय्यद अहमद इस्लाम में हो रहे नवीन परिवर्तनों को स्वीकार करने के बजाय इस्लाम की स्थापना मोहम्मद साहब की शिक्षाओं के अनुसार करना चाहते थे इसलिए इसे एक पुनरुद्धार आंदोलन का नाम भी दिया गया
4. 1821 में सैय्यद अहमद हज करने मक्का गए, जहां उनकी मुलाकात अब्दुल वहाब से हुई, जिनके विचारों से वे अत्यंत प्रभावित हुए और भारत में विशेषकर पंजाब के सिखों के विरुद्ध जेहाद की घोषणा कर दी 1830 में कुछ समय के लिए इन्होंने पेशावर पर अधिकार कर लिया तथा अपने नाम के सिक्के चलवाये और 1826 में उन्हें खलीफा घोषित किया गया
5. इनकी मृत्यु के पश्चात वहाबी आंदोलन का केंद्र पटना बन गया इसकी अन्य शाखाएं हैदराबाद, मद्रास, बंगाल, यूपी तथा बम्बई में स्थापित की गई पटना के अली बन्धु विलायत अली और इनायत अली इस आंदोलन

के प्रमुख नेता बन गए
6. 1860 में अंग्रेजों ने वहाबी आंदोलन का दमन करना शुरू कर दिया और 1870 तक यह आंदोलन पूरी तरह दबा दिया गया
7. इस प्रकार वहाबी आंदोलन ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना करने के उद्देश्य से प्रेरित था अतः इसका स्वरूप धार्मिक व राजनीतिक न होकर पूर्णत साम्प्रदायिक था फलतः इस आंदोलन से राष्ट्रीय भावना के बजाय अलगाव की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला

8) कूका आंदोलन (पंजाब, 1840)

1. इस आंदोलन का आरंभ 1840 में भगत जवाहर मल उर्फ सेन साहब ने पश्चिमी पंजाब में किया था
2. सेन साहब के शिष्य बालक सिंह के समय इसका मुख्यालय उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत के हजारा में बनाया गया
3. प्रारम्भ में यह आन्दोलन धर्म तथा तथा समाज सुधार से अनुप्राणित था किंतु बाद में यह राजनीतिक आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो गया, जिसका लक्ष्य अंग्रेजों को यहां से बाहर निकालना था
4. बालक सिंह के शिष्य रामसिंह जिन्हें गुरु गोविंद सिंह का अवतार माना जाता है
5. 1869 में फिरोजपुर में रामसिंह के नेतृत्व में प्रथम कूका विद्रोह हुआ
6. 1871 में मालोड व मालेरकोटला रियासतों पर आक्रमण कूका संघर्ष की मुख्य घटना थी
7. 17 जनवरी 1872 को 50 कूका विद्रोही तोप के मुंह से बांधकर उड़ा दिये गए
8. 1872 में ही इस आंदोलन के प्रमुख नेता रामसिंह को कैदकर रंगून निर्वासित कर दिया गया जहां 1885 में उनकी मृत्यु हो गयी

5.4) संभावित प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. सन्यासी विद्रोह
2. रामोसी विद्रोह
3. हिन्दू पैट्रियाट
4. नील विद्रोह
5. नील दर्पण
6. कूका आंदोलन
7. पाइक विद्रोह
8. खोंड विद्रोह
9. संथाल विद्रोह
10. भील विद्रोह
11. कोया विद्रोह
12. मुंडा विद्रोह
13. चेंचू विद्रोह
14. रम्पा विद्रोह
15. खासी विद्रोह
16. अहोम विद्रोह
17. नागा आंदोलन
18. एका आंदोलन
19. तेभागा आन्दोलन
20. कोल विद्रोह
21. विरसा मुंडा
22. अजीम उल्ला खां
23. बहादुरशाह जफर
24. बेगम हजरत महल
25. कुंवर सिंह
26. मंगल पांडे
27. नाना साहब
28. रानी लक्ष्मीबाई
29. तात्या टोपे

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. ब्रिटिश भारत में किसान विद्रोह के कारणों का उल्लेख कीजिए ?
2. ब्रिटिश भारत में जनजातीय विद्रोह के कारणों का वर्णन कीजिए ?
3. जनजातीय विद्रोहों की प्रकृति की विवेचना कीजिए ?
4. सन्यासी विद्रोह का संक्षिप्त विवरण दीजिए ?
5. संथाल विद्रोह का संक्षिप्त विवरण दीजिए ?
6. नील विद्रोह का संक्षिप्त विवरण दीजिए ?
7. मोपला विद्रोह का संक्षिप्त वर्णन दीजिए ?
8. चंपारण किसान आंदोलन का संक्षिप्त विवरण ?
9. खेड़ा किसान आंदोलन का संक्षिप्त विवरण दीजिए ?
10. अखिल भारतीय किसान सभा पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए ?
11. 1857 के पहले हुए सैनिक विद्रोहों का वर्णन कीजिए ?
12. 1855-56 का संथाल विद्रोह शोषण के विरुद्ध एक तीव्र प्रतिक्रिया थी
13. 1842 के बुंदेला विद्रोह का संक्षिप्त विवरण दीजिए ?
14. बिरसा मुंडा आंदोलनकारी संक्षिप्त विवरण दीजिए ?
15. 1857 के विद्रोह की असफलता के कारणों का वर्णन कीजिए
16. 1857 के विद्रोह के राजनीतिक कारणों का वर्णन कीजिए ?
17. 1857 के विद्रोह के सामाजिक कारणों का वर्णन कीजिए ?
18. 1857 के विद्रोह के सैनिक कारणों का वर्णन कीजिए ?
19. 1857 के विद्रोह के तात्कालिक कारणों का वर्णन कीजिए ?
20. 1857 के विद्रोह ने ब्रिटिश भारत में शासन की नीतियों में कौन से परिवर्तन किए?
21. 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए?
22. 1857 के विद्रोह की प्रकृति की विवेचना कीजिये ? क्या यह स्वतंत्रता संग्राम था?
23. कुंवर सिंह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

1. ब्रिटिश भारत में किसान विद्रोह के कारणों की विवेचना कीजिए ?
2. ब्रिटिश भारत में जनजातीय विद्रोह के कारणों की समीक्षा कीजिए ?
3. किसान एवं जनजाति विद्रोह की भारत में राष्ट्रवाद के विकास में भूमिका की विवेचना कीजिए?
4. नील विद्रोह के महत्व एवं परिणामों पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए ?
5. 1857 के विद्रोह के परिणामों का विस्तृत वर्णन कीजिए ?
6. 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जा सकता है विवेचना कीजिए?
7. 1857 के विद्रोह की असफलता के कारणों को जन्नत कीजिए तथा इसके महत्व पर प्रकाश डालिए ?

अध्याय – 06
भारतीय पुनर्जागरण (Indian Renaissance)

01 1) भारतीय पुनर्जागरण

02 2) ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीतियां

03 3) भारतीय पुनर्जागरण के उदय का कारण

04 4) भारतीय पुनर्जागरण का स्वरूप

05 5) भारतीय पुनर्जागरण के साधन

06 6) भारतीय पुनर्जागरण का योगदान

07 7) भारतीय पुनर्जागरण की सीमाएं

08 8) मुख्य समाज सुधार आंदोलन

Previous Year Question

2020	Long	1) "आर्य समाज मिशन" के सामाजिक तथा शैक्षणिक योगदानों का वर्णन कीजिए
2018	Short	2) रामकृष्ण मिशन के सामाजिक तथा शैक्षणिक योगदानों का सविस्तार वर्णन कीजिए
2017	VS	3) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
2017	Short	4) राष्ट्रवाद के विकास में आर्य समाज की भूमिका का विश्लेषण कीजिए
2015	Short	5) स्वामी दयानंद एवं आर्य समाज के योगदान पर प्रकाश डालिए
2014	Short	6) लॉर्ड विलियम बेंटिक के सामाजिक सुधारों का वर्णन कीजिए

1) भारतीय पुनर्जागरण

1. अर्थ :- भारत के प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करते हुए सामाजिक रूढ़ियों व कुरीतियों की समाप्ति
2. विशेषताएं :-
   - भारतीय पुनर्जागरण, पश्चिमी उदारवादी विचारधारा और भारतीय प्रगतिशील विचारधारा का सम्मिश्रण थी
   - इसमें कुछ पुनर्स्थापना वादी मूल्य भी थे
   - तर्कवाद, विज्ञानवाद व मानवतावादी मूल्यों पर आधारित
   - धार्मिक सार्वभौमिकता (सभी धर्म एक हैं)
   - क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग
   - सामाजिक समता व महिलाओं की स्वतंत्रता पर बल
   - शिक्षा के माध्यम से आधुनिक प्रगतिशील विचारों का प्रचार
   - पश्चिमी ज्ञान का समर्थन परन्तु पाश्चात्यकरण का विरोध
   - ऋग्वैदिक कालीन परम्पराओं, सामाजिक संस्कारों को पुनः जीवित करने का प्रयास

2) ब्रिटिश सामाजिक नीतियां I I British Social Policies

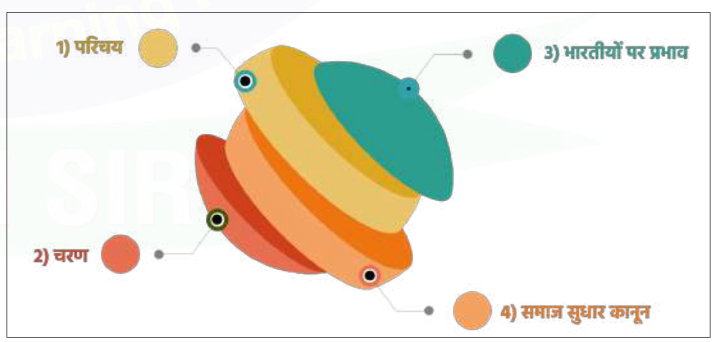

2.1) परिचय

1. ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय समाज की परंपराओं, विधानों एवं संस्कृति के प्रति एक सक्रिय नीति का विकास हुआ, जिसे साम्राज्यवादी या औपनिवेशिक सामाजिक सांस्कृतिक नीति कहते हैं

2. ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीतियों के परिवर्तनशील स्वरूप के अनुसार इन्हें चार चरणों में विभक्त किया जा सकता है -

2.2) ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीतियों के विकास के विभिन्न चरण

- प्रथम चरण (1772-1819)
  - ✓ उदासीनता की नीति
- द्वितीय चरण (1813-1857)
  - ✓ सक्रिय हस्तक्षेप की नीति
- तृतीय चरण (1857-1885)
  - ✓ रूढ़िवादिता को प्रोत्साहन एवं समर्थन
- चतुर्थ चरण (1885 के बाद)
  - ✓ राष्ट्रवादी नेतृत्व के प्रभाव में सरकार द्वारा सीमित सुधार

प्रथम चरण (1772-1813)

1. उदासीनता व अहस्तक्षेप की नीति
2. प्रमुख कारण :-
   - ब्रिटेन का भारत में साम्राज्यवादी विस्तार
   - कंपनी का अधिकतम लाभ व व्यवस्था पर ध्यान
   - भारतीय समाज व परम्पराओं से अनभिज्ञ
3. कार्य :-
   - एशियाटिक सोसायटी जैसी संस्थाओं का निर्माण
   - जेम्सप्रिंसेप, चार्ल्स विल्किन्स द्वारा भारतीय साहित्य के अध्ययन व अंग्रेजीअनुवाद
   - बंगाल अधिनियम 1795 की धारा 21 द्वारा शिशु वध को प्रतिबंधित करने का प्रयास

द्वितीय चरण (1813-1857)

1. सक्रिय हस्तक्षेप की नीति
2. कारण :-
   - ब्रिटिशऔद्योगिक क्रांति के उत्पादोंहेतु भारतीय बाजार को तैयारकरना
   - श्वेतव्यक्ति के भार जैसे सिद्धांतो को न्यायोचित सिद्ध करना
   - एक ऐसा भारतीय वर्ग तैयार करना जो रक्त व रंग से भारतीय हो परन्तु विचारों से अंग्रेज
3. मुख्य कार्य :-
   - 1829 में विलियम बेंटिक द्वारा सती प्रथा का उन्मूलन
   - 1830 में लॉर्ड विलियम बेंटिक ने कर्नल स्लीमैन की सहायता से ठगी प्रथा का उन्मूलन किया
   - 1843 में लॉर्ड एलनबरो द्वारा दास प्रथा पर प्रतिबंध
   - 1844-48 की अवधि में लॉर्ड हार्डिंग द्वारा नरबलि को प्रतिबंधित किया गया
   - 1856 में ईश्वर चंद्र विद्यासागर के प्रयासों से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ और विधवा पुनर्विवाह को वैध कर दिया गया
   - लार्ड मैकाले एवं चार्ल्स वुड की शिक्षा नीतियों के कुछ अंश का क्रियान्वयन किया गया
   - 1813 के चार्टर द्वारा ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म प्रचार की अनुमति

तृतीय चरण (1857-1885)

1. पुनः अहस्तक्षेप व उदासीनता की नीति
2. कारण :- ब्रिटेन ने 1857 की क्रांति का कारण समाज सुधार कानूनों को माना
3. कार्य :- नेटिव मैरिज एक्ट(1872)
   - बाल विवाह पर प्रतिबंध
   - न्यूनतम विवाह आयु -
     - ✓ लड़का - 18 वर्ष
     - ✓ लड़की - 14 वर्ष
   - बहु विवाह पर रोक

चतुर्थ चरण (1885 के बाद)

1. 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद राष्ट्रवादी नेताओं ने समाज सुधार हेतु ब्रिटिश शासन पर दवाब बनाया
2. मुख्य कार्य :-
   - सम्मति आयु अधिनियम(Age of Consent Act) 1891 - लड़कियों हेतु विवाह की न्यूनतम आयु 12 वर्ष कर दी
   - 1929 में राय हरविलास शारदा की सिफारिशों के फल स्वरुप शारदा एक्ट पारित किया गया इस अधिनियम को अप्रैल 1930 में लागू किया गया इसके तहत लड़कियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु 14 वर्ष तथा लड़कों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु 18 वर्ष कर दी गई
   - 1937 में हिंदू महिला संपत्ति अधिकार अधिनियम के माध्यम से विधवा को पति की संपत्ति में सीमित अधिकार प्रदान किया गया

2.3) ब्रिटिश सामाजिक नीतियों का प्रभाव

A) सकारात्मक **B) नकारात्मक**

सकारात्मक :-

1. भारतीय समाज में तर्कवाद, वैज्ञानिक चेतना का प्रसार/आधुनिक शिक्षा पद्धति का विकास
2. पाश्चात्य प्रगतिशील विचारों जैसे स्वतंत्रता समानता भाईचारा उपयोगितावाद आदि से भारतीय जनमानस का परिचय
3. ब्रिटिश शोषण के विरुद्ध भारतीयों को आवाज उठाने की प्रेरणा
4. नवीन मध्यवर्गीय समाज का उदय हुआ जिसकी राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका थी
5. सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु कानून निर्माण से शोषित वर्ग को राहत मिली

नकारात्मक :-

1. ब्रिटिश द्वारा तथाकथित नस्लीय श्रेष्ठता एवं श्वेत व्यक्ति का भार जैसे उद्बोधनो से भारतीयों में हीन भावना उत्पन्न हुई
2. अधिकांश जनता अशिक्षित रह गई
3. भारतीय समाज की रीढ़ मानी जाने वाली संयुक्त परिवार प्रणाली में दरार पैदा हुई
4. ईसाई मिशनरियों द्वारा बलपूर्वक धर्मांतरण को बल
5. समाज सुधारो का सीमित दायरा व सख्त क्रियान्वयन का अभाव

2.4) समाज सुधार कानून

अधिनियम	वर्ष	गवर्नर जनरल/वायसराय	सम्बंधित विषय
बालिका शिशु वध प्रतिबंध	1795	सर जॉन शोर	नवजात कन्याओं की हत्या पर रोक इसे साधारण हत्या के समान अपराध घोषित किया गया
शिशु वध प्रतिबंध	1795-1804	सर जॉन शोर, लॉर्ड वेलेजली	शिशु हत्या पर प्रतिबंध
सती प्रथा निषेध	1829	लॉर्ड विलियम बैंटिक	सती प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध
दास प्रथा पर प्रतिबंध	1843	लॉर्ड एलनबरो	दास प्रथा को समाप्त कर दिया गया
हिन्दू विधवा पुनर्विवाह	1856	लॉर्ड कैनिंग	विधवा पुनर्विवाह को अनुमति
सिविल मैरेज एक्ट / नेटिव मैरिज एक्ट	1872	लॉर्ड नॉर्थ ब्रुक	बहुपत्नी प्रथा पर प्रतिबंध, लड़कियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु 14 वर्ष निर्धारित
एज ऑफ कंसेंट एक्ट	1891	लॉर्ड लैंसडाउन	विवाह की न्यूनतम आयु 12 वर्ष निर्धारित
शारदा एक्ट	1930	लॉर्ड इर्विन	लड़कियों एवं लड़कों की विवाह योग्य न्यूनतम आयु 14-18 वर्ष निर्धारित
हिन्दू महिला सम्पत्ति अधिनियम	1937	लॉर्ड लिनलिथगो	हिन्दू महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार

3) भारतीय पुनर्जागरण के उदय के कारण

1. आधुनिक शिक्षा प्राप्त भारतीय प्रगतिशील एवं मध्यम वर्ग का उदय :-
   - प्रमुख सुधारक - राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फूले, पंडित रमाबाई, एनी बेसेंट आदि
   - इनके अलावा सरकारी कर्मचारी वकील डॉक्टर आदि द्वारा सुधार का प्रयास
2. पश्चात एवं भारतीय संस्कृति का संघर्ष :-
   - 1813 के अधिनियम के बाद ईसाई मिशनरियों द्वारा जबरन धर्मांतरण
   - ब्रिटेन द्वारा भारतीय संस्कृति का तिरस्कार व भारत के पश्चिमीकरण का प्रयास
   - सुधारको द्वारा प्राचीन गौरवशाली इतिहास की व्याख्या
3. भारतीय समाज की कुरीतियां :- भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयां जैसे सती प्रथा बाल विवाह आदि
   - अस्पृश्यता, जातिवाद, कर्मकांड आदि का विरोध
4. अन्य कारण :-
   - रेलवे, डाक, तार, प्रेस जैसी आधुनिक तकनीकों व संचार साधनों का विकास
   - पाश्चात्य आधुनिक शिक्षा व मानवतावाद, स्वतंत्रता, समानता जैसे मूल्यों का प्रसार
   - औपनिवेशिक नीतियों द्वारा भारतीय समाज के मूल ढांचे में परिवर्तन
   - रुसो - प्रकृति ने सभी को समान बनाया है

4) भारतीय पुनर्जागरण का स्वरूप

1. बौद्धिक व तार्किक :-
   - प्राचीन परंपराओं को तर्क की कसौटी पर परखना
   - बाह्य आडंबर व कुरीतियों की समाप्ति हेतु वैज्ञानिक तर्क देना
2. सुधारवादी :-
   - भारतीय समाज की बुराइयों जैसे सती प्रथा आदि को समाप्त करके समाज सुधार
   - धार्मिक आडम्बरों के विरोध द्वारा धर्म सुधार
3. मानवतावादी, उपयोगितावादी व प्रगतिशील विचार :-
   - धार्मिक व सामाजिक परम्पराओं की मानवतावादी व उपयोगितावादी व्याख्या
   - किसी भी प्रकार की परंपरा तभी उपयोगी है, जब उससे मानवकल्याण हो
4. प्रगतिशील मूल्य :- शांति, अहिंसा, भाईचारा, समानता आदि।
   - पुनः स्थापनावादी विचारधारा - भारतीय संस्कृति के गौरवशाली तत्वों की पुनः स्थापना
5. मध्यम वर्गीय चेतना :-
   - आंदोलनों का नेतृत्व आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यमवर्ग द्वारा
   - इसमें शिक्षक, डॉक्टर, वकील आदि शामिल थे
6. अन्य :-
   - महिला सुधारों पर बल
   - राजनैतिक चेतना - कुप्रथाओं की समाप्ति हेतु कानून निर्माण की मांग
   - परलौकिक विचारों(ईश्वर,आत्मा, मोक्ष) के स्थान पर इहलौकिक समस्याओं पर ध्यान
   - पश्चिमी ज्ञान का समर्थन परंतु पश्चिमीकरण का विरोध

इस प्रकार भारतीय समाज सुधार आंदोलन प्रगतिशील, लोकतांत्रिक व आधुनिक मूल्यों पर आधारित था जिसने कालांतर में ना सिर्फ राष्ट्रीय आंदोलन बल्कि राष्ट्रीय एकता का आधार तैयार किया

NOTE

- **प्रगतिशील विचारधारा :-** तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों का अंत तभी संभव है जब पाश्चात्य संस्कृति के कुछ ऐसे तत्वों को आत्मसात किया जाए जो मौलिक स्वरूप में भारतीय परंपरा से मेल खाते हों, किंतु ये विद्वान पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण नहीं करना चाहते थे। साथ ही वे संवैधानिक प्रक्रिया, तर्कवाद एवं बुद्धिवाद के तहत समाज में सुधार चाहते थे जिसका प्रबल उदाहरण 1829 ई. की सती-प्रथा निषेध था।
- **पुनर्स्थापनावादी विचारधारा :-** इस विचारधारा में अंतर्निहित मूल तत्त्व यह था कि भारत व भारतीय समाज की दुर्दशा का मूल कारण यह है कि हम अपने प्राचीन वास्तविक मूल्यों से विमुख हो गए हैं। अतः इन्होंने पाश्चात्य संस्कृति का विरोध एवं स्वदेशी को प्रोत्साहित करने का कार्य किया। इसके सटीक उदाहरण आर्यसमाज व देवबंद स्कूल हैं और इस प्रवृत्ति का प्रसार पंजाब तथा उत्तर-प्रदेश में रहा। इस विचारधारा के मार्गदर्शकों का नारा था- वेदों की ओर लौटो, किंतु उन्होंने तर्कवाद व बुद्धिवाद को भी महत्त्वपूर्ण माना।
- स्वरूप में अंतर होते हुए भी दोनों विचारधाराएँ मानवतावादी, तर्क एवं बुद्धि पर आधारित थीं। सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन मध्ययुगीन सुधार आंदोलन से भिन्न था क्योंकि 19वीं सदी के सुधारकों ने सुधार के क्रम में विधि व कानून निर्माण पर भी बल दिया।
- 19वीं सदी का सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन नारी के हितों पर केंद्रित था तो वहीं 20वीं सदी का आंदोलन जाति, दलित सुधार आंदोलनों से जुड़ गया था।

5) भारतीय पुनर्जागरण के साधन

1. भारतीय दर्शन की वैज्ञानिक व तार्किक व्याख्या :-
   - स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा कि वेदों की ओर लौटो तथा तार के आधारों पर कर्मकांडो की तुलना करो
   - पश्चिमी विचारों द्वारा जागरूकता
2. शिक्षा :-
   - पश्चिमी व आधुनिक शिक्षा का प्रसार
   - सुधार को न हिंदू कॉलेज, आर्य स्कूल जैसे शैक्षणिक संस्थान खोले
3. संस्थाओं का निर्माण :-
   - सुधारकों ने आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज जैसी संस्थाओं का निर्माण करके आंदोलन को व्यवस्थित रूप दिया
4. प्रेस का उपयोग :-
   - इंडियन मिरर, संवाद कौमुदी जैसे अखबारों व पुस्तकों द्वारा जागरूकता
   - पोस्टर आदि का प्रयोग
5. अन्य :-
   - समाज सुधार हेतु कानून निर्माण की सहायता
   - अंग्रेजो का समर्थन प्राप्त करने हेतु पत्र व्यवहार व निवेदन

6) भारतीय पुनर्जागरण का योगदान

1. राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार :-
   - दयानन्द सरस्वती द्वारा स्वदेशी व प्राचीन गौरवशाली संस्कृति का प्रसार
2. भारतीयों में आत्मविश्वास व आत्मसम्मान की भावना का प्रसार :-
   - अंग्रेजों द्वारा भारतीय संस्कृति को पिछड़ा बताया गया था जिसे सुधारकों ने तर्क व प्रमाण के साथ नकारा
3. महिलाओं की स्थिति में सुधार :-
   - अधिकांश कुरीतियों द्वारा महिलाओं का शोषण होता था
   - सती प्रथा, बाल विवाह आदि की समाप्ति जबकि विधवा पुनर्विवाह, महिला शिक्षा आदि द्वारा महिला की स्थिति में सुधार
4. भारतीयों में प्रगतिशील, विचारों का प्रसार :-
   - आधुनिक प्रगतिशील विचारों जैसे स्वतंत्रता, समानता, मानवतावाद आदि का प्रसार
   - परिणाम :- राष्ट्रीय एकता का विकास
5. अन्य :-
   - सामाजिक परम्पराओं का वैज्ञानिक व तार्किक परीक्षण
   - धर्म की मानवतावादी व उपयोगितावादी व्याख्या
   - आधुनिक शिक्षा का प्रचार प्रसार
   - निम्न जातियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास
   - सिंधु घाटी सभ्यता, प्राचीन शिलालेख, सिक्के इत्यादि ऐतिहासिक तथ्यों तथा साक्ष्यों की खोज
   - भारतीय विज्ञान तथा दर्शन का विकास जिसका प्रमाण सीवी रमन, जगदीश चंद्र बसु, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी जैसे महान व्यक्तित्व है

नकारात्मक प्रभाव

- भारतीय समाज की रीढ़ मानी जाने वाली संयुक्त परिवार प्रणाली में दरार पैदा हुई।
- भारतीय तथा यूरोपीयों के बीच नस्लवादी विभाजन को बल मिला।
- समाज सुधार आंदोलनों का प्रभाव मुस्लिम वर्ग में सीमित रहा जिसने कालांतर में सांप्रदायिकता और संकीर्णता को जन्म दिया
- शिक्षित-अशिक्षित तथा उच्च-निम्न वर्ग के मध्य भेदभाव में वृद्धि
- हालांकि समाज सुधारकों ने पश्चिमीकरण से बचने का प्रयास किया फिर भी कई व्यक्तियों तथा क्षेत्रों के द्वारा पश्चिमीकरण का अंधानुकरण किया गया

7) भारतीय पुनर्जागरण की सीमाएं

1. शिक्षित उच्च वर्ग एवं मध्य वर्ग तक सीमित
2. गांव व दूर दराज के क्षेत्रों तथा शहरी गरीब लोगों तक पहुंच का अभाव
3. गरीबी व बेरोजगारी जैसी समस्याओं पर कम ध्यान
4. निम्न जातियों की सीमित भागीदारी
5. यदा कदा नेतृत्व का स्वार्थवादी गुणों से ग्रसित होना जैसे केशवचन्द्र सेन बाल विवाह का विरोध किया गया परन्तु उन्होंने अपनी 13 वर्षीय पुत्री का विवाह कूच बिहार के राजा से कर दिया

NOTE

क्या नवीन भारत का निर्माण पाश्चात्य तत्त्वों की देन है?

- 19वीं सदी का भारतीय समाज तथा धर्म तत्त्वों का प्रभाव एवं पाश्चात्य तत्त्वों के विरुद्ध प्रतिक्रिया दोनों के लिये जाना जाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि पाश्चात्य अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त भारतीय बुद्धिजीवी पश्चिम की उदारवादी एवं प्रजातांत्रिक विचारधारा (स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व) के संपर्क में आए

और उनसे प्रभावित भी हुए। साथ ही ब्रिटिश भी भारतीयों के उद्धारक के रूप में अपनी छवि बनाए रखना चाहते थे और इसी क्रम में ब्रिटिश शासक भारतीय समाज पर पाश्चात्य संस्कृति को थोपने का प्रयास कर रहे थे। किंतु शीघ्र ही पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीय बुद्धिजीवी पाश्चात्य उदारवादी विचारधारा एवं भारत में स्थापित संस्थाओं के मध्य विरोधाभास को समझ गए और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पाश्चात्य समाज में समानता के स्तर पर उन्हें प्रवेश नहीं मिलेगा। अतः इन्होंने पाश्चात्य तत्त्वों के विरुद्ध प्रतिक्रिया दिखाई और देशी मॉडल की ओर मुड़ गए, जहाँ उन्होंने अपने अतीत एवं संस्कृति का तार्किकता के आलोक में अन्वेषण आरंभ किया।

- इस क्रम में उन्होंने वैदिक मॉडल के अच्छे तत्त्वों पर बल दिया और उपनिषदिक चिंतन का विश्लेषण किया। फिर राजा राममोहन राय से लेकर स्वामी विवेकानंद तक सभी भारतीय सुधारक अपने अतीत एवं संस्कृति से प्रेरित होकर आधुनिक भारत के निर्माण की ओर अग्रसर हुए किंतु स्वतंत्रता, समानता, नागरिक अधिकार, मानवाधिकार, मानवतावाद, व्यक्तिवाद जैसे पाश्चात्य तत्त्वों के संपर्क में भी भारतीय बुद्धिजीवी आए।
- इस प्रकार भारतीय बुद्धिजीवियों ने जहाँ एक तरफ देशी परंपरा एवं संस्कृति के रचनात्मक तत्त्वों का खंडन भी किया। अतः यह कहना उचित होगा कि आधुनिक एवं नवीन भारत का निर्माण पाश्चात्य एवं परंपरागत भारतीय मॉडल के मध्य एक रचनात्मक सामंजस्य का परिणाम था।

8) भारतीय समाज सुधार आंदोलन

- हिन्दू धर्म सुधार आंदोलन
  1. ब्रह्म समाज
  2. यंग बंगाल आंदोलन
  3. आर्य समाज
  4. थियोसोफिकल सोसायटी
  5. रामकृष्ण मिशन
  6. प्रार्थना समाज
- मुस्लिम धर्म सुधार आंदोलन
  1. वहाबी
  2. अहमदिया
  3. देवबंद
- पारसी धर्म सुधार आन्दोलन
  1. 'रहनुमाई मजदयासन सभा'

8.1) राजा राम मोहन राय एवं ब्रह्म समाज

"मानव सभ्यता का आदर्श अलग अलग रहने में नहीं, बल्कि आपसी भाईचारे में है"

A) राजा राममोहन राय का परिचय

1. सामान्य जानकारी :-
   - जन्म - 22 मई 1772, राधानगर, हुगली, बंगाल
   - माता पिता - नारिणी देवी तथा रमाकांत (बंगाल नवाब के यहां कार्यरत)
   - अरबी, फारसी, संस्कृत, लैटिन जैसी 12 भाषाओं का ज्ञान
   - 1803 में पिता की मृत्यु के बाद 1814 तक ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी
   - 1831 में मुगल सम्राट अकबर द्वितीय द्वारा राजा की उपाधि
   - मृत्यु - 27 सितंबर 1833, ग्रीन कॉलेज, ब्रिस्टल (इंग्लैंड), (मस्तिष्क ज्वर)
   - मुख्य कार्य - सती प्रथा उन्मूलन हेतु कानून (4 दिसम्बर 1829)
2. संस्थान :-
   - 1814 : आत्मीय सभा (द्वारिकानाथ ठाकुर के साथ एकेश्वरवाद को बढ़ावा देने हेतु)
   - 1816 : वेदांत सोसायटी
   - 1817 : हिन्दू कॉलेज कलकत्ता (डेविड हेयर की सहायता से आधुनिक शिक्षा के प्रसार हेतु)

- 1821 : कलकत्ता यूनीटेरियन कमेटी
- 1825 : वेदांत कॉलेज, कलकत्ता
- 1828 : ब्रह्म समाज (अद्वैतवादी हिंदुओं की संस्था)

3. मुख्य समाचार पत्र (भारतीय पत्रकारिता का अग्रदूत) :-
   - 1821 : बंगाली में "संवाद कौमुदी"(सती प्रथा विरोध) तथा प्रज्ञा का चांद
   - 1822 : फारसी में "मिरात उल अखबार"
   - अंग्रेजी में ब्रह्मनिकल मैगजीन
4. पुस्तकें :-
   - 1809 : फारसी भाषा में तुहकात-उल-मुवाहिदीन या एकेश्वर वादियों का उपहार (Gift to Monotheistic) - मूर्ति पूजा का खंडन
   - 1820-23 : प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस (जॉन डिग्बी की सहायता से लंदन में प्रकाशन)
   - अन्य - बंगला व्याकरण, हिन्दू उत्ताधिकार नियम, वेदों व उपनिषदों का बंगाली में अनुवाद
5. उपनाम/सम्मान नाम :-
   - युगदूत
   - भारतीय राष्ट्रवाद के जनक
   - भारतीय राष्ट्रवाद के पैगंबर
   - पूर्व (अतीत) और पश्चिम (भविष्य) के मध्य सेतु
   - भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत
   - भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा
   - आधुनिक भारत का जनक
   - भारतीय पत्रकारिता के अग्रदूत
   - नवजागरण का अग्रदूत
   - नवप्रभात का तारा
6. तथ्य :-
   - सती प्रथा के विरोध की प्रेरणा - 1811 में बड़े भाई जगमोहन की मृत्यु पर जबरन उनकी भाभी अलकामंजरी को सती होना पड़ा
   - 1821 : नेपल्स क्रांति की विफलता से ये दुखी थे परंतु 1823 में स्पेनिश क्रांति सफल रही तो उन्होंने भोज देकर खुशी मनाई
   - 1803 : ईस्ट इंडिया कंपनी के रंगपुर स्थित कलेक्ट्रेट में लिपिक की नौकरी ग्रहण की और बाद में दीवान भी बने किंतु 1814 में इस्तीफा दे दिया
   - वे संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, ग्रीक, यहूदी, फ्रेंच, लैटिन आदि 12 भाषाओं के ज्ञाता थे
   - शिक्षा के क्षेत्र में कार्य - 1817 में डेविड हेयर की सहायता से कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना की बाद में यही प्रेसिडेंसी कॉलेज बना 1817 में कलकत्ता में एक अंग्रेजी विद्यालय एवं 1825 में वेदांत कॉलेज की स्थापना की
   - साहित्य एवं पत्रकारिता - 1809 में फारसी भाषा में तुहफात उल मुवाहिदीन नामक पत्रिका प्रकाशित की। 1821 में बंगाली भाषा में प्रथम साप्ताहिक पत्रिका संवाद कौमुदी का शुभारंभ, 1822 में फारसी भाषा में मिरात उल अखबार पत्रिका का प्रकाशन आरंभ, 1820 में प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस पुस्तक का प्रकाशन वैदिक ज्ञान विज्ञान के अध्ययन हेतु वेद मंदिर नामक पत्र का संचालन किया
   - राजा राम मोहन राय प्रथम भारतीय थे जो समुद्र पार करके इंग्लैण्ड गये थे और भारतीय मुगल सम्राट अकबर द्वितीय का पक्ष अंग्रेज सरकार के सामने रखा, जो अपर्याप्त पेंशन राशि के संदर्भ में था। इन्हें 1831 में मुगल सम्राट अकबर द्वितीय ने 'राजा' की उपाधि प्रदान करके तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट विलियम चतुर्थ के दरबार में भेजा था।
   - सुभाष चन्द्र बोस ने इन्हें 'युगदूत' की उपाधि से सम्मानित किया।
   - इसमें राजाराम मोहन राय ने अपनी मृत्यु के बाद अपने दो शिष्य 'महर्षि द्वारकानाथ टैगोर तथा पंडित रामचन्द्र विद्यावागीश' को ब्रह्मसमाज का संचालक नियुक्त किया था इन्होंने 10 वर्षों तक ब्रह्मसमाज का संचालन किया।

राजा राममोहन राय :-

- 22 मई 1772 को बंगाल में जन्मे भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत
- ब्रह्म समाज द्वारा सती, बाल विवाह जैसी रूढ़ियों का विरोध
- इनके प्रयासों से विलियम बेंटिक ने अधिनियम 17 (1829) द्वारा सती प्रथा को समाप्त किया

B) राजा राममोहन राय के विचार

- धार्मिक
- सामाजिक
- आर्थिक
- राजनीतिक
- शिक्षा

1. धार्मिक विचार :-
   - हिंदू धर्म के साथ अन्य धर्मों की बुराइयों (मिथ्याचार, तर्कहीन,परम्पराएं) का विरोध
   - आद्यात्मिक तथा बौद्धिक तर्क के मध्य समन्वय
   - मूर्ति पूजा व धार्मिक आडम्बरों का विरोध
   - एकेश्वरवाद का समर्थन
   - साम्प्रदायिकता का विरोध(1827 के हिन्दू मुस्लिम जूरी एक्ट का विरोध)
2. सामाजिक विचार :-
   - सामाजिक कुप्रथाओं का प्रखर विरोध व समाप्ति हेतु कानून निर्माण की मांग
   - महिला सुधार उनकी विचार का केंद्र बिंदु
   - प्रमुख मांगे -
     - ✓ सती प्रथा की समाप्ति
     - ✓ बहु विवाह का विरोध
     - ✓ बाल विवाह की समाप्ति
     - ✓ अनमेल विवाह की समाप्ति
     - ✓ विधवा पुनः विवाह का समर्थन
     - ✓ नारी शिक्षा तथा कल्याण का समर्थन
     - ✓ समुद्र पार यात्रा निषेध का विरोध
     - ✓ जाति प्रथा व अस्पृश्यता का विरोध
     - ✓ अंतर्जातीय विवाह का समर्थन
     - ✓ बाल(कन्या) हत्या व पर्दा प्रथा का विरोध

3. शिक्षा सम्बंधी विचार :-
- सामाजिक दुर्दशा का मुख्य कारण आधुनिक शिक्षा का अभाव
- पाश्चात्य व आधुनिक शिक्षा द्वारा प्रगतिशील विचारों का प्रादुर्भाव
- गवर्नर लॉर्ड एमहर्स्ट को पत्र लिखकर भारत में विज्ञान व आधुनिक शिक्षा की मांग

4. राजनैतिक विचार :-
- ब्रिटिश शासन के पक्षधर परंतु नस्लीय नीतियों के विरोधी
- वे राजनैतिक के साथ आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे
- प्रमुख राजनैतिक मांगे -
  - ✓ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
  - ✓ कार्यपालिका व न्यायपालिका के पृथक्करण
  - ✓ न्यायपालिका की स्वतंत्रता
  - ✓ स्थानीय शासन का विकास
  - ✓ महिला अधिकार व स्वतंत्रता
  - ✓ अंतर्राष्ट्रीय समन्वय
  - ✓ प्रेस की स्वतंत्रता
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता से जुड़े सभी विश्वव्यापी आंदोलन का समर्थन उदाहरण स्वरूप स्पेनिश क्रांति (1823) की सफलता पर भोज का आयोजन

5. आर्थिक विचार :-
- तत्कालीन ब्रिटिश भू राजस्व जमीदारी जैसी शोषणकारी प्रथाओं का विरोध
- कृषकों की दयनीय स्थिति में सुधार हेतु सरकार से निवेदन
- स्वतंत्र व समान व्यापार का समर्थन तथा ब्रिटेन की विभेदकारी शुल्क नीति का विरोध

C) राजा राम मोहन राय का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान

- धार्मिक
- सामाजिक
- शिक्षा
- पत्रकारिता
- राजनीतिक

1. धार्मिक क्षेत्र में :-
- प्राचीन भारतीय आधुनिक विचारों का अध्ययन करने के बाद तर्कहीन धार्मिक कर्मकांडो का विरोध
- एकेश्वरवाद व धार्मिक सद्भाव स्थापित करने हेतु 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना
- उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित आत्मा की अमरता के सिद्धांत का समर्थन
- कथन – "सभी धर्म सत्य हैं परंतु तर्कहीन कर्मकांड इन्हें दूषित करते हैं"

2. सामाजिक क्षेत्र में :-
- महिलाओं के स्थिति में सुधार हेतु प्रयास
- सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं का विरोध
- 4 दिसंबर, 1829 को विलियम बैंटिक द्वारा अधिनियम 17 पारित करने सती प्रथा की समाप्ति

3. शिक्षा के क्षेत्र में :-
- आधुनिक, पाश्चात्य, विज्ञान व अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक
- कारण - भारतीय समाज सुधार हेतु आधुनिक मूल्यों का स्त्रोत शिक्षा को माना
- कार्य -
  - ✓ 1817 में डेविड हेयर के सहयोग से कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना
  - ✓ वेदांत कॉलेज (1825,कलकत्ता)
  - ✓ महिला शिक्षा को बढ़ावा

4. पत्रकारिता के क्षेत्र में :-
- निम्न कारणों से उन्हें "भारतीय पत्रकारिता का अग्रदूत" कहा जाता
  - ✓ प्रेस की स्वतंत्रता के पक्षधर - 1823 में एडम्स के प्रेस अध्यादेश के विरोध में कोर्ट गए
  - ✓ प्रेस, जनजागरूकता का माध्यम
- मुख्य अखबार -
  - ✓ 1821 : बंगाली में "संवाद कौमुदी"(सती प्रथा विरोध) तथा प्रज्ञा का चांद
  - ✓ 1822 : फारसी में "मिरात उल अखबार"
  - ✓ अंग्रेजी में ब्रह्मनिकल मैगजीन
- मुख्य पुस्तकें -
  - ✓ 1809 : फारसी भाषा में तुहकात-उल-मुवाहिदीन या एकेश्वर वादियों का उपहार (Gift to Monotheistic) - मूर्ति पूजा का खंडन
  - ✓ 1820-23 : प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस (जॉन डिग्बी की सहायता से लंदन में प्रकाशन)
  - ✓ अन्य - बंगला व्याकरण, हिन्दू उत्ताधिकार नियम, वेदों व उपनिषदों का बंगाली में अनुवाद

5. राजनीतिक क्षेत्र में (भारतीय राष्ट्रवाद का जनक) :-
- ब्रिटिश शासन के पक्षधर परंतु नस्लीय नीतियों के विरोधी
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के मूल तत्वों (एकता, भाईचारे, लोकतंत्र) का भारतीय जनमानस में प्रसार
- सिविल सेवा के भारतीयकरण का समर्थन
- ब्रिटेन की नस्लीय भेदभाव व विभदपूर्ण आर्थिक नीतियों का विरोध
- राजा राममोहन राय ने बोर्ड ऑफ कंट्रोल तथा हाउस ऑफ कॉमंस की प्रवर समिति के समक्ष साक्ष्य देते समय किसानों के लिए जाने वाले राजस्व की दरों को कम करने, जूरी द्वारा न्याय की व्यवस्था, न्यायाधीशों तथा राजस्व अधिकारियों की पृथकता, दीवानी एवं फ़ौजदारी कानूनों का संग्रह बनाने, फारसी के स्थान पर अंग्रेजी का प्रयोग, न्यायाधीशों की स्वतंत्रता और भारतीयों को उच्च पदों पर नियुक्त करने की अपील की

NOTE

- पश्चिमीकरण :- पश्चिम के तत्व या मूल्यों को बिना सोचे समझे अपनाना
- आधुनिकीकरण :- किसी भी तत्व को विवेकपूर्ण तरीके से या केवल आवश्यकता अनुसार तत्व को अपनाना
- राजा राममोहन राय पश्चिमीकरण में नहीं बल्कि आधुनिकीकरण में विश्वास रखते थे
- भाषा व शिक्षा के स्तर पर भी आधुनिकीकरण को अपनाया
  - ✓ राजा राममोहन राय पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों को मिलाने वाले थे उन्होंने पश्चिमी ज्ञान प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी भाषा का समर्थन तो

किया साथ ही बांग्ला व्याकरण भी संकलित किया उन्होंने भारतीय दर्शन के उपनिषदीय चिंतन एवं एकेश्वरवाद पर बल दिया तो दूसरी तरफ मानव का कल्याण करने की बात करने वाले ईसा के नैतिक वचनों का समर्थन भी किया उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता अर्थात अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसी पश्चिमी अवधारणाओं को भारत में लागू करने पर बल दिया वस्तुत वे सोच विचार कर पश्चिम के प्रगतिशील तत्वों को अपनाने पर बल देते थे इस दृष्टि से यह आधुनिकीकरण के समर्थन में थे पश्चिमीकरण के नहीं

D) ब्रह्म समाज (1828)

- परिचय व उद्देश्य
- मुख्य कार्य
- विभाजन

D.1) परिचय व उद्देश्य

1. राजा राममोहन राय व उनके समर्थकों (ताराचन्द्र चक्रवर्ती तथा चंद्रशेखर देव) द्वारा बंगाल (1828) में स्थापित समाज धर्म सुधार संस्था
2. इसे अद्वैतवादी हिंदुओं की संस्था कहा गया
3. उद्देश्य :- हिंदू धर्म समाज में सुधार तथा एकेश्वरवाद की स्थापना

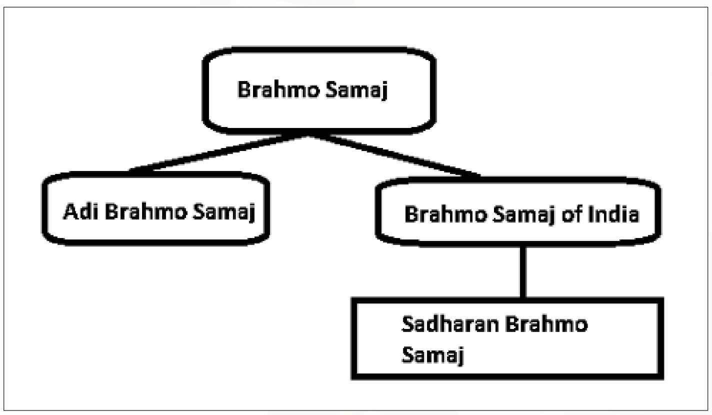

धार्मिक सिद्धान्त	सामाजिक सिद्धान्त
• एकेश्वरवाद का समर्थन व द्वैतवाद का खंडन • बहुदेववाद व मूर्ति पूजा का विरोध • निर्गुण ब्रह्मा की उपासना • सभी धर्मों की समानता व समन्वय पर बल • आत्मा की अमरता के विचार का समर्थन जबकि पुनर्जन्म सिद्धांत का खंडन • धार्मिक आडंबरों का विरोध तथा सभी रीति-रिवाजों के तार्किक मूल्यांकन का आग्रह	• बाल विवाह, सती प्रथा, कन्या हत्या, बहु विवाह जैसी महिला शोषणकारी सामाजिक प्रथाओं का बहिष्कार • महिला शिक्षा व अधिकारों का समर्थन • सामाजिक अंधविश्वासों व रूढ़ियों का तार्किक विरोध • नैतिकता, कर्मफल, एकता, सर्वधर्म समभाव जैसे विचारों का प्रसार • अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन कृषक शोषणकारी व विभेदकारी शुल्कों का विरोध

D.2) मुख्य कार्य

1. सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा, छुआछूत, कन्या विक्रय एवं कन्या वध आदि कुरीतियों को समाप्त करने के लिए ब्रह्म समाज ने आन्दोलन किया तथा स्त्री शिक्षा का समर्थन किया
2. ब्रह्म समाज के सदस्यों को साप्ताहिक अधिवेशन (शनिवार को) में वेदों का पाठ एवं उपनिषदों के बांग्ला भाषा के अनुभवों का वाचन करना होता था
3. सती प्रथा को बंद करवाने में उन्होंने अथक प्रयास किया तथा विलियम बेंटिक ने 1829 में सती प्रथा को बंद कर दिया राजा राममोहन राय ने सिद्ध कर दिया कि सती प्रथा का कोई धार्मिक आधार नहीं है
4. अंग्रेजी शासन के समर्थक होते हुए भी राजा राममोहन राय ने अनेक मामलों में अंग्रेजों से सुधारों की मांग की प्रेस पर प्रतिबंध लगाने वाले अध्यादेश का विरोध किया
5. 1827 के जूरी एक्ट के विरोध में भी एक स्मरण पत्र सरकार को प्रस्तुत किया इस अधिनियम में हिंदू व मुसलमानों को भारतीयों के मुकदमे में जूरी नियुक्त होने के अधिकार से वंचित किया गया था
6. कृषि के क्षेत्र में दमनकारी कानूनों का विरोध किया
7. राजा राममोहन राय ने बोर्ड ऑफ कंट्रोल तथा हाउस ऑफ कॉमंस की प्रवर समिति के समक्ष साक्ष्य देते समय किसानों के लिए जाने वाले राजस्व की दरों को कम करने, जूरी द्वारा न्याय की व्यवस्था, न्यायाधीशों तथा राजस्व अधिकारियों की पृथकता, दीवानी एवं फ़ौजदारी कानूनों का संग्रह बनाने, फारसी के स्थान पर अंग्रेजी का प्रयोग, न्यायाधीशों की स्वतंत्रता और भारतीयों को उच्च पदों पर नियुक्त करने की अपील की

NOTE

- **दर्शन :-** ज्ञान से देखना
- **वेदांत :-** उपनिषद के सिद्धांतों पर आधारित दर्शन
- **मुख्य बिंदु :-** जीव व ब्रह्मा के मध्य सम्बंध

D.3) ब्रह्म समाज का विभाजन

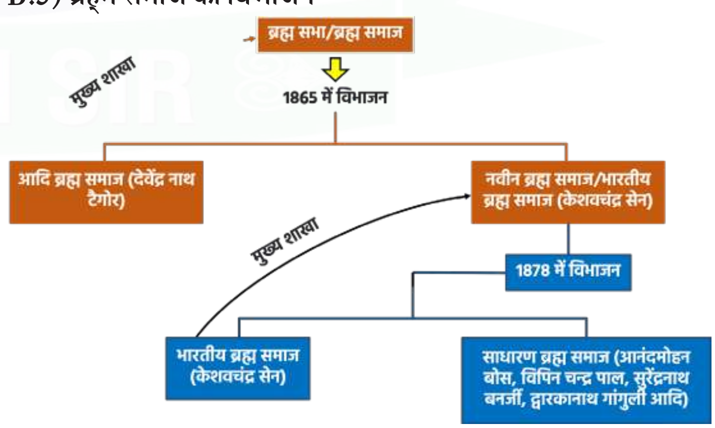

1. राजा राममोहन राय की मृत्यु के पश्चात ब्रह्म समाज का नेतृत्व महर्षि द्वारिका नाथ टैगोर (रविंद्रनाथ के पितामह) एवं पं. रामचंद्र विद्याबागीश ने संभाला
2. तदुपरांत द्वारिका नाथ टैगोर के पुत्र देवेंद्र नाथ टैगोर ने 21 दिसंबर 1843 को ब्रह्म समाज की बागडोर अपने हाथ में ले ली
3. 1857 में टैगोर ने केशव चंद्र सेन को ब्रह्म समाज की सदस्यता प्रदान की और आचार्य नियुक्त किया
4. केशव चंद्र सेन के अति उदारवादी व्यक्तित्व के कारण सभा में ईसाई, मुस्लिम, पारसी आदि की धर्म पुस्तकों का पाठ किया जाने लगा जिसके कारण 1865 में उनका देवेंद्र नाथ से टकराव हुआ और उन्होंने केशव चंद्र सेन को आचार्य की पदवी से पदच्युत कर दिया इस प्रकार ब्रह्म समाज में पहली फूट 1865 में पड़ी
5. 1872 में इनके प्रयासों से ब्रह्म विवाह एक्ट पारित हुआ जिसके द्वारा बाल विवाह तथा बहुपत्नी विवाह को अवैध घोषित किया गया
6. परंतु बाद में उन्होंने ही इस एक्ट का उल्लंघन करते हुए अपनी अल्पायु (13) पुत्री का विवाह कूचबिहार के राजा से कर दिया, जिसके कारण इनकी प्रतिष्ठा को बहुत धक्का लगा फलतः एक बार फिर ब्रह्म समाज का दोबारा विघटन हो गया

केशवचंद्र सेन

1. 1857 में ब्रह्म समाज के आचार्य बने तथा उदारवादी विचारों के कारण ब्रह्म समाज का पंजाब, उत्तर प्रदेश, बम्बई, मद्रास में विस्तार
2. मुख्य संस्थान :-
   - भारतीय ब्रह्म समाज (1865 में ब्रह्म समाज के विखंडन से निर्मित संस्था)
   - इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन
   - मद्रास में वेद समाज तथा महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज की स्थापना में योगदान
3. अखबार/पुस्तकें :- प्रथम दैनिक अंग्रेजी अखबार इंडियन मिरर (1861)
4. प्रमुख विचार :-
   - अत्यधिक उदारवादी - ब्रह्म समाज में ईसाई, मुस्लिम, पारसी आदि धर्म पुस्तकों का अध्ययन
   - जॉन दी वैप्टिस्ट, ईसा मसीह के जीवन से प्रभावित
   - महिलाओं के उद्धार, नारी शिक्षा, अंतरजातीय विवाह के समर्थक जबकि बाल विवाह के विरोधी
   - पश्चिमी शिक्षा के समर्थक
5. उपलब्धियां :-
   - ब्रह्म समाज को अखिल भारतीय स्वरूप
   - महाराष्ट्र में प्रार्थना सभा की स्थापना में योगदान
   - 1872 में बाल विवाह व बहु विवाह समाप्ति हेतु ब्रह्म विवाह अधिनियम पारित कराने में भूमिका
6. मृत्यु :- 8 जनवरी 1884 (भारत ने अपना श्रेष्ठतम पुत्र खो दिया - मैक्समूलर)

देवेंद्र नाथ टैगोर

1. जन्म :- 15 मई 1817, कलकत्ता
2. पिता :- द्वारिका नाथ टैगोर
3. भाई :- रविंद्र नाथ टैगोर व सत्येंद्र नाथ टैगोर
4. मुख्य कार्य :-
   - 1839 में कोलकाता में तत्वबोधिनी सभा की स्थापना
   - बंगाली भाषा में तत्वबोधिनी पत्रिका का संपादन
     - ✓ ब्रह्म समाज की मुख्य पत्रिका
     - ✓ अन्य संपादक :- ईश्वर चंद्र विद्यासागर, अक्षय कुमार दत्त, राजेंद्र लाल मित्र
5. 1840 में तत्वबोधिनी स्कूल की स्थापना (विज्ञान व धर्म शास्त्र के अध्ययन हेतु)
6. 21 दिसम्बर 1843 को ब्रह्म समाज प्रमुख बने
7. केशव चन्द्र सेन को आचार्य पद से हटाया, जिससे 1865 में ब्रह्म समाज में प्रथम विभाजन हुआ

केशवचंद्र सेन (3M)

1. 1838 को बंगाल में जन्मे समाज सुधारक व भारतीय ब्रह्म समाज के संस्थापक (1865)
2. प्रथम दैनिक अंग्रेजी अखबार इंडियन मिरर के संस्थापक (1861)
3. बाल व बहुविवाह समाप्ति हेतु "ब्रह्म अधिनियम 1872" पारित करवाया

8.2) स्वामी दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज

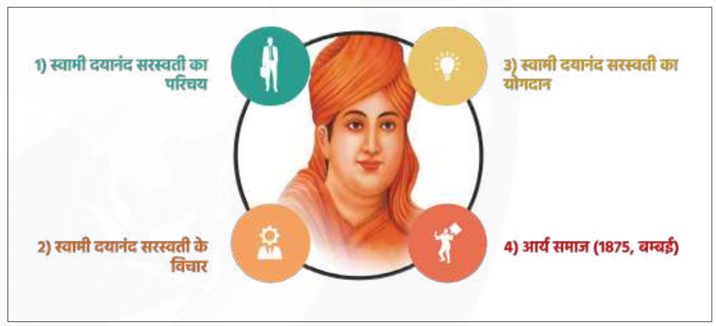

A) स्वामी दयानंद सरस्वती का परिचय

1. सामान्य जानकारी :-
   - 12 फरवरी 1824 को गुजरात में जन्मे स्वामी दयानंद ने उत्तर भारत में प्रभावशाली सामाजिक धार्मिक आंदोलन आरंभ किया
   - जन्म - 12 फरवरी 1824 मोरवी रियासत, मध्रकांटा नदी, काठियावाड़, गुजरात के ब्राह्मण परिवार में
   - बचपन का नाम - मूलशंकर
   - संस्कृत में शिक्षा व आरंभ में शैव धर्म के उपासक
   - 1845 में 21 वर्ष की आयु गृहत्याग
   - गुरु :-
     - ✓ दंडी स्वामी पूर्णानंद से दीक्षा लेकर दंड धारण किया, इन्होंने मूलशंकर को दयानन्द सरस्वती नाम दिया
     - ✓ विरजानंद स्वामी से वेदों की दार्शनिक व्याख्या का ज्ञान
   - मृत्यु :- 30 अक्टूबर 1883 अजमेर (उत्तर भारत या हिन्दू धर्म के मार्टिन लूथर)
2. मुख्य संस्थान :-
   - 1863 : हिन्दू धर्म के प्रचार हेतु आगरा में पाखंड खंडिनी पताका फहराई

- 10 अप्रैल 1875 : बम्बई में आर्य समाज (1877 में लाहौर को मुख्यालय बनाया)
- भारत में शुद्धि आंदोलन के प्रवर्तक
- 1882 : गौरक्षिणी समिति

3. मुख्य पुस्तकें :-
   - पुस्तक - सत्यार्थ प्रकाश (1874 में हिंदी भाषा में - मूल विचारों का संकलन)
   - अन्य पुस्तक - पाखंड खंडन, वेदभाष्य भूमिका, ऋग्वेद भाष्य, अद्वैत मंत्र का खंडन, पंच महायज्ञ विधि, वल्लभाचार्य मत खंडन
4. कथन :-
   - **"वेदों की ओर लौटो"**
   - स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में कहा था कि, बुरे से बुरा देशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है, अर्थात् अच्छा शासन स्वशासन का स्थानापन्न नहीं है।
   - श्रीमती एनी बेसेंट के अनुसार, दयानंद सरस्वती ने ही सबसे पहले भारत भारतवासियों के लिए है का नारा दिया।
   - "संसार अज्ञान तथा अंध विश्वास की श्रृंखला से जकड़ा हुआ है। मैं उस श्रृंखला को तोड़ने आया हूं।"
   - "मूर्तिपूजा, सीढ़ी नहीं किंतु एक बड़ी खाई है, जिसमें गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है। पुनः इस खाई से निकल नही सकता और उसी में मर जाता है"

B) स्वामी दयानंद सरस्वती के विचार

- धार्मिक विचार
- शिक्षा सम्बंधी विचार
- राजनीतिक विचार
- सामाजिक विचार

B.1) धार्मिक विचार

1. वेदों में आस्था :- देश का कल्याण इसी में है कि वैदिक धर्म तथा समाज व्यवस्था की मूल रूप में पुनः स्थापना की जाए। वेदों की ओर लौटो उनका नारा था
2. एकेश्वरवाद में विश्वास परन्तु अद्वैतवाद व मूर्तिपूजा का खंडन
3. कर्म, पूनर्जन्म व मोक्ष के सिद्धांतों का समर्थन
4. मोक्ष प्राप्ति का साधन :- परमात्मा की उपासना व नैतिक कृत्य
5. 16 संस्कारों व यज्ञ का समर्थन परन्तु अन्य धार्मिक कर्मकांडो का विरोध

B.2) शिक्षा सम्बंधी विचार

1. आधुनिक, स्वदेशी, संस्कारयुक्त शिक्षा का समर्थन
2. विषय :- अंग्रेजी, वेद, गणित, विज्ञान आदि
3. शिक्षा का मॉडल :-
   - गुरुकुल आधारित शिक्षा
   - सभी वर्णो, जातियों व स्त्रियों को समान शिक्षा
   - 18 वर्ष तक की निःशुल्क शिक्षा
   - सहशिक्षा(Co-Ed) के विरोधी

इस तरह स्वामी जी ने समतापूर्ण व वृहद अर्थों वाली शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया जिससे राष्ट्रीयता व स्वदेशी जैसे मूल्यों का सूत्रपात हुआ

B.3) सामाजिक विचार

1. जातिवाद, छुआछूत आदि का विरोध करके समाज को वैदिक धर्म के आधार पर ढालने का प्रयास
2. कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था के समर्थन
3. व्यक्तिगत स्वतंत्रता के समर्थन :- व्यक्ति अपने व्यक्तिगत कार्यों में पूर्ण स्वतंत्रता का उपभोग कर सकता है, जबकि सामाजिक कार्यों में उसे वहीं तक स्वतंत्रता प्राप्त है, जहां तक वह दूसरों को अपने कार्यों से नुकसान नहीं पहुंचाता
4. जबरन हिन्दू धर्म से अन्य धर्मों में धर्मांतरित किये गए लोगों को पुनः हिंदू धर्म में शामिल करने हेतु शुद्धि आंदोलन
5. स्त्रियों के उन्नति हेतु विचार :-
   - स्त्री शिक्षा व समानता के प्रबल समर्थक
   - पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह, कन्या वध का प्रबल विरोध
   - स्त्रियों को पुरुषों के समान समस्त राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक अधिकार मिला चाहिए
   - स्त्री को वेद अध्ययन व मनपसन्द विवाह का अधिकार मिले

मनु का कथन :-

राज्य तथा समाज दोनों को सब लोगों के लिए यह अनिवार्य कर देना चाहिए कि वे अपने बच्चों को पांचवें अथवा अधिक से अधिक आठवें वर्ष के बाद विद्यालय भेज दें। इस अवस्था के बाद बालकों को विद्यालय न भेजना एक दंडनीय अपराध होना चाहिए

B.4) राजनीतिक विचार

राज राममोहन राय की तरह स्वामी जी ने भी निम्न विचारों द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन व वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था को आधार प्रदान किया :-

1. सर्वप्रथम "स्वशासन" व "स्वदेशी" पर बल
2. भारतीय जनता में निर्भीकता व आत्म सम्मान के गुणों का प्रसार
3. सामाजिक समानता, न्याय, लोकतंत्र व वैदिक मूल्यों पर आधारित आदर्श राज्य की संकल्पना
   - निरंकुश सत्ता के स्थान पर तीन परिषदों द्वारा शासन
   - गांव को सबसे प्रमुख इकाई माना तथा ग्राम सभा के गणन की संकल्पना
4. लाला लाजपत राय, डॉ सत्यपाल, रामप्रसाद बिस्मिल श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे स्वतंत्रता प्रवर्तक के गुरु
5. कर्नल आल्कॉट :- "दयानंद ने अपने अनुनायियों पर महान राष्ट्रीय प्रभाव डाला"

इस प्रकार स्वामी जी ने आधुनिक भारत के सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक विचारों को आदर्शवादी राह दिखाई

C) स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान

- सामाजिक
- राजनीतिक
- धार्मिक
- शैक्षिक

C.1) सामाजिक योगदान

1. अनेक समाजिक बुराइयों जैसे - बाल विवाह, जाति प्रथा आदि का विरोध
2. धर्म व समाज को बेहतर बनाने हेतु 28 नियम
3. स्त्रियों को ब्राह्मणों व पुरुषों की तरह वेद अध्ययन व शिक्षा का समान अधिकार
4. जाति प्रथा, अस्पृश्यता का प्रबल विरोध परन्तु कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन

C.2) धार्मिक योगदान

1. वेदों को अंतिम सत्य मानकर "वेदों की ओर लौटने" का आव्हान
2. मूर्ति पूजा, अवतारवाद, बहुदेववाद, पशुबलि आदि कर्मकांडों का विरोध
3. आगरा में पाखंड खंडनी पताका फहराकर तथा शुद्धि आंदोलन द्वारा हिंदु धर्म की पुनः स्थापना का प्रयास, शुद्धि आंदोलन का उद्देश्य सकारात्मक था, परन्तु कहीं कहीं साम्प्रदायिक दृष्टि से देखा गया
4. अद्वैतवाद व पुरोहितवाद का खंडन
5. वैदिक यज्ञों, मोक्ष, कर्म आदि का समर्थन

C.3) राजनैतिक योगदान

1. अंग्रेजी शासन का विरोध :- "बुरे से बुरा देशी राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा होता है"
2. पहली बार स्वशासन, स्वदेशी व मातृभाषा पर बल
3. हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग आत्मसम्मान, स्वालंबन व राष्ट्रवाद की भावना का प्रसार

C.4) शैक्षिक योगदान

1. प्राचीन उपागम परंपरा व शिक्षा पर आधारित गुरुकुलों की स्थापना
2. आर्य समाज के सदस्यों जैसे लाला लाजपत राय व लाला हंसराज के द्वारा दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना
3. लाला लेखराम व मुंशीराम द्वारा 1902 में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना

इस प्रकार आर्यसमाज के एक पुनरुत्थानवादी आन्दोलन को जन्म दिया जिसमें समानता, राष्ट्रीयता, स्त्री उद्धार जैसे प्रगतिशील मूल्य शामिल थे

D) आर्य समाज

1. 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित हिन्दू समाज धर्म सुधार संस्था
2. इसकी स्थापना बम्बई में हुई, परन्तु मुख्यालय लाहौर
3. मुख्य उद्देश्य :- प्राचीन वैदिक धर्म को शुद्ध रूप से पुनः स्थापित करते हुए हिन्दू धर्म व समाज में सुधार
4. अन्य उद्देश्य :-
    - तत्कालीन हिन्दू धर्म एवं समाज में फैली कुरीतियों जैसे - धार्मिक कर्मकांड, मूर्तिपूजा, जाति प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि को दूर करने का प्रयास किया
    - लड़कों एवं लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु क्रमश 25 वर्ष एवं 16 वर्ष निर्धारित की गई
    - अंतर्जातीय विवाह एवं विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया गया
    - परम ईश्वर एक है और सभी को उसकी उपासना करनी चाहिए
    - ईश्वर निराकार है और उसकी उपासना में आध्यात्मिक चिंतन का सर्वश्रेष्ठ स्थान है
5. सिद्धान्त :- आर्य समाज के नियम एवं सिद्धांत सर्वप्रथम बंबई में बनाए गए किंतु इनका संपादन 1877 ई. में हुआ जो इस प्रकार है -
    - ईश्वर निराकार, सर्वशक्तिमान, निर्विकार, अजन्मा है।
    - सभी वेद सर्वोपरि हैं तथा उनको पढ़ना-पढ़ाना सभी आर्यों का परम धर्म है।
    - समाज का कल्याण करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है।
    - सभी को सत्य को अपनाना चाहिये तथा असत्य त्यागने के लिये सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।
    - स्त्रियों की शिक्षा को प्रोत्साहन।
    - तीर्थयात्रा और अवतारवाद का खंडन।
    - कर्म, पुनर्जन्म एवं आत्मा के बारंबार जन्म लेने पर विश्वास।

आर्य समाज का विभाजन (1892-93)

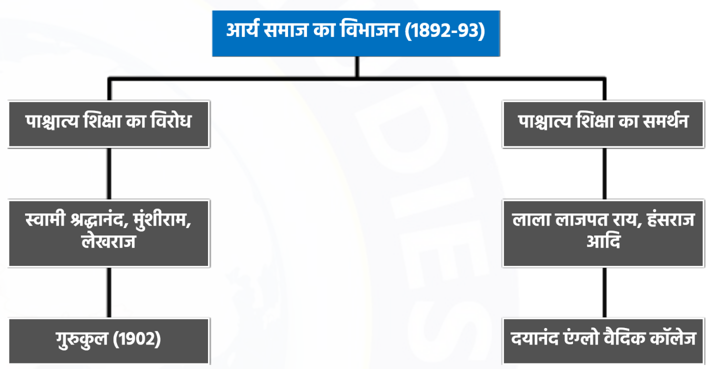

8.3) स्वामी विवेकानंद तथा रामकृष्ण मिशन

1) परिचय
2) विचार
3) योगदान
4) रामकृष्ण मिशन

A) स्वामी विवेकानंद का परिचय

1. सामान्य परिचय :-
    - जन्म :- 12 जनवरी 1863 कलकत्ता (1984 से राष्ट्रीय युवा दिवस)
    - बचपन का नाम :- नरेंद्र नाथ दत्त
    - गुरु :- रामकृष्ण परमहंस
    - खेतड़ी (जयपुर) के राजा अजीत सिंह द्वारा विवेकानंद नाम
    - शिष्या :- सिस्टर निवेदिता (मार्गरेट एलिजाबेथ नोबेल, आयरलैंड)
    - मृत्यु :- 4 जुलाई 1902, वेलूर, बंगाल
    - सुभाषचंद्र बोस :- आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का आद्यात्मिक पिता
2. मुख्य कार्य व संस्थाएँ :-
    - 1880 : रामकृष्ण परमहंस से भेंट
    - 1891 : सम्पूर्ण भारत की यात्रा करके गरीबी व भखमरी का प्रत्यक्ष अनुभव
    - 1893 : खेतड़ी के राजा के खर्च पर अमेरिका गए
    - 11 सितम्बर 1893 : अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में भाषण
        - ✓ द न्यूयॉर्क हेराल्ड - विवेकानंद का भाषण सुनने के पश्चात

ऐसा लगता है कि भारत जैसे देश में जहां स्वामी जैसे ज्ञानी रहते हैं सुधारने के लिए पश्चिम से प्रचारक भेजने की बात कितनी मूर्खतापूर्ण है

- 3 वर्षों तक विदेश यात्रा
- 1896 न्यूयॉर्क में वेदांत सोसाइटी व कैलिफोर्निया में शांति आश्रम की स्थापना
- फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड, स्विजरलैंड की यात्रा के बाद भारत आगमन
- 1 मई 1897 : रामकृष्ण मिशन (मुख्यालय बेलूर,बंगाल)
- 1899 : अल्मोड़ा(UK) में मायावती नामक स्थान पर बेलूर मठ की स्थापना
- 1899 : सैन फ्रांसिस्को, केलिफोर्निया व लॉस एंजिल्स में वेदांत सोसायटी की स्थापना
- 1900 : पेरिस में आयोजित द्वितीय धर्म सम्मेलन(काँग्रेस ऑफ हिस्ट्री ऑफ रिलिजन्स) में भाग लिया

3. मुख्य समाचार पत्र/पुस्तकें :-
    - समाचार पत्र - (1) प्रबुद्ध भारत(अंग्रेजी) (2) उदबोधन(बंगाली)
    - पुस्तकें - ज्ञानयोग, कर्मयोग, राजयोग आदि

प्रधान मंत्री, नरेंद्र मोदी, 125 वीं वर्षगांठ समारोह 'प्रबुद्ध भारत' को संबोधित करेंगे, जो 31 जनवरी, 2021 को आयोजित होने वाला है। इसका आयोजन अद्वैत आश्रम, मायावती द्वारा किया जाएगा।

- यह रामकृष्ण आदेश की मासिक पत्रिका है।
- इस पत्रिका की स्थापना वर्ष 1896 में स्वामी विवेकानंद के मार्गदर्शन में पी. अय्यासामी, बी.आर. राजम अय्यर, जी.जी. नरसिंहाचार्य और बी.वी. कामेश्वर अय्यर ने की थी।
- प्रबुद्ध भारत पत्रिका का प्रकाशन मद्रास (वर्तमान चेन्नई) से शुरू हुआ था। उसके बाद अल्मोड़ा से पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। अप्रैल 1899 से अद्वैत आश्रम लगातार पत्रिका का संपादन करता है और यह कोलकाता में प्रकाशित और मुद्रित होता है।

B) स्वामी विवेकानंद के विचार

1. मानव सेवा सबसे बड़ा धर्म - मानवतावादी
2. मूर्ति पूजा व बहुदेववाद के समर्थक
3. सभी धर्मों की बुनियादी एकता पर बल
4. जाति प्रथा तथा कर्मकांड की आलोचना
5. जनता से स्वाधीनता समानता एवं स्वतंत्र चिंतन की भावना
6. मोक्ष हेतु सन्यास के स्थान पर मानव सेवा पर बल
7. धार्मिक आडंबरो व कर्मकांडों का विरोध
8. गरीबी व अज्ञान की समाप्ति पर बल
9. पश्चिमी व पूर्वी सभ्यता के सामंजस्य से विश्व कल्याण हो सकता है - हम पश्चिम को अपने आध्यात्मिक संस्कृति मूल्य दे सकते हैं और वहां से वैज्ञानिक तकनीक ज्ञान एवं विकास की भावना को स्वीकार कर सकते हैं
10. पश्चिम हमारे अध्यात्म और संस्कृति को तब ग्रहण करेगा जब भारतीय समाज एवं स्वतंत्र होंगे तथा सामाजिक कुरीतियों से मुक्त होंगे
11. **कथन :-** जब तक लाखों करोड़ों लोग भूख और अज्ञान से ग्रस्त हैं तब तक मैं हर उस व्यक्ति को देशद्रोही समझता हूं जिन्होंने भारतीय जनता के धन पर शिक्षा प्राप्त कर अपने उत्तरदायित्व का पालन नहीं किया यहां विवेकानंद ने मध्यवर्गीय शिक्षित लोगों को भारत के अज्ञान व पिछड़ेपन के लिए दोषी माना है

इस तरह स्वामी जी ने अपने विचारों से ना सिर्फ मानव सेवा पर बल दिया बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद का आधार भी तैयार किया

C) स्वामी विवेकानंद का योगदान

1. पश्चिमी भौतिकवाद तथा पूर्वी अध्यात्म वाद के मिश्रण से नव हिंदूवादी अवधारणा का विकास
2. धार्मिक समन्वय तथा मानवतावाद की भावना पर अत्यधिक बल
3. छुआछूत जातिवाद अतार्किक धार्मिक कर्मकांड इत्यादि का विरोध
4. राष्ट्र की प्रगति हेतु व्यवहारिक, चारित्रिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा पर बल
5. शिकागो के धर्म सम्मेलन में विश्व को भारतीय अध्यात्म से रूबरू कराया
6. भारत के पुनरुत्थान तथा स्वतंत्रता हेतु युवाओं से आग्रह.
7. भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता स्वाभिमान जगा करके भारतीय राष्ट्रवाद का प्रचार

D) रामकृष्ण मिशन

1. स्वामी विवेकानंद द्वारा अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की शिक्षा व दरिद्र नारायण की सेवा हेतु 1 मई 1897 को स्थापित संस्था
2. मुख्य केंद्र :- वेलूर(बंगाल) व अल्मोड़ा(उत्तराखंड)
3. सैद्धान्तिक आधार :- वेदांत दर्शन
4. मुख्य उद्देश्य/कार्य :-
    - मानवता(दरिद्र नारायण) की सेवा - चिकित्सालय, अनाथालय, सेवासदन, विद्यालय आदि की स्थापना
    - हिन्दू धर्म एवं संस्कृति का प्रचार प्रसार
    - सभी धर्मों के आपसी समन्वय व शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना पर बल

रामकृष्ण मिशन आज भी मानव सेवा व रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद के आदर्शों को विश्व के कोने-कोने में पहुंचा रहा है

NOTE

रामकृष्ण परमहंस :-

- रामकृष्ण परमहंस (1836-86) का मूल नाम गदाधर चट्टोपाध्याय था।
- वह कलकत्ता में गंगा नदी के पूर्वी तट पर दक्षिणेश्वर में काली देवी मंदिर के पुजारी थे और दक्षिणेश्वर संत के नाम से विख्यात थे।
- इन पर भैरवी और तोतापुरी जैसे संतो का प्रभाव था।
- संसार के सभी धर्म सच्चे रूप में ईश्वर तक पहुँचने के विभिन्न मार्ग हैं।
- उन्होंने धर्म की एकता और मानव सेवा पर सर्वाधिक बल दिया।

8.4) थियोसोफिकल सोसायटी तथा एनी बेसेंट

A) परिचय

1. थियोसोफी शब्द दो ग्रीक शब्द थीयोस(ईश्वर)+सोफिया(ज्ञान) से बना है। जिसका अर्थ है ईश्वर का ज्ञान
2. स्थापना :- 7 सितंबर 1875 मैडम ब्लावात्स्की(रूसी महिला) एवं कर्नल हेनरी ऑल्काट (अमेरिकी सैनिक) द्वारा न्यूयॉर्क(संयुक्त राज्य अमेरिका) में कई गयी
3. 1882 : मुख्य कार्यालय अड्यार(मद्रास) में स्थापित
4. 1897 : एनी बेसेंट अध्यक्ष बनी जिन्होंने पूरे देश में आन्दोलन को फैलाया

B) उद्देश्य

1. धर्म को आधार बनाकर समाज सेवा करना
2. धार्मिक एवं भाईचारे की भावना को फैलाना
3. प्राचीन धर्म दर्शन एवं विज्ञान के अध्ययन में सहयोग करना
4. सैद्धान्तिक आदर्श :- हिंदू(सांख्य व वेदांत दर्शन) तथा बौद्ध धर्म
5. हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म व कर्म के सिद्धांतों पर विश्वास
6. इस सोसाइटी की विचारधारा को देव विज्ञान की संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है जिसमें धर्म दर्शन और रहस्य विद्या का अद्भुत मिश्रण है

C) एनी बेसेंट

1. 1847 में लंदन में जन्मी आयरिश समाज सुधारक जो 1893 में भारत आकर थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़ गई
2. मुख्य विचार :-
   - भारतीय संस्कृति व हिंदू धर्म से अत्यधिक प्रभावित
   - महिलाओं के समान अधिकार की समर्थक
   - बाल विवाह व जाति प्रथा का विरोध
   - बेहतर आवास सुविधाओं तथा बेहतर शिक्षा की प्रबल समर्थक
3. मुख्य कार्य :-
   - 1898 में सेंट्रल हिंदू कॉलेज (बनारस) की स्थापना जो बनारस हिंदू विश्वविद्यालय कहलाया
   - भारतीय स्वशासन की मांग को लेकर बाल गंगाधर तिलक के साथ 1916 में होमरूल आंदोलन की शुरुआत
   - न्यू इंडिया और कॉमन बिल नामक समाचार पत्रों का प्रकाशन
   - 1917 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में अध्यक्षता करके कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनी
   - इस अधिवेशन के बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति नकारात्मक रवैया
   - 1930 के प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया

8.5) प्रार्थना समाज व महादेव गोविंद रानाडे

A) प्रार्थना समाज

1. 1867 में बम्बई में आत्माराम पांडुरंग महादेव गोविंद रानाडे द्वारा स्थापित हिंदू धर्म व समाज सुधारक संस्था
2. मुख्य उद्देश्य :-
   - जाति व्यवस्था को अस्वीकृत करना
   - विधवा विवाह को प्रोत्साहित करना
   - स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करना
   - विवाह की आयु में वृद्धि करना
   - अछूत एवं दलित जाति की दशा को सुधारने के लिए कार्य करना
3. मुख्य कार्य :-
   - दलितों, अछूतों तथा पीड़ितों की दशा में सुधार हेतु दलित जाति मंडल, समाज सेवा संघ तथा दक्कन शिक्षा सभा का गठन किया
   - दक्कन एजुकेशन सोसाइटी (1884 रानाडे द्वारा) को ही बाद में पूना फर्ग्यूसन कॉलेज कहा गया
   - धोन्दो केशव कर्वे ने 1899 में विधवा आश्रम संघ की स्थापना पूना में की
   - स्त्री शिक्षा के लिए श्री कर्वे ने 1916 में बम्बई में प्रथम भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की
   - रानाडे ने विधवा विवाह को और अधिक प्रचारित करने के लिए 1891 में महाराष्ट्र में विडो रीमैरिज एसोसिएशन का गठन किया
   - दक्षिणी भारत में प्रार्थना समाज के प्रचार प्रसार का सबसे बड़ा श्रेय तेलुगु भाषा की उद्भट विद्वान वीरेसलिंगम को है। इसी भांति पंजाब में प्रार्थना समाज की विचारधारा को फैलाने के लिए दयाल सिंह ने 1910 में दयाल सिंह कॉलेज की स्थापना की थी

B) महादेव गोविंद रानाडे

1. 1842 में नासिक में जन्मे महान समाज सुधारक (पश्चिम के सुकरात)
2. 1867 में प्रार्थना समाज, 1891 में विधवा पुनर्विवाह संघ तथा 1884 में पाश्चात्य शिक्षा हेतु दक्कन शिक्षा समाज की स्थापना
3. रानाडे ने शुद्धि आंदोलन भी चलाया जिसमें वेश्याओं द्वारा किए जाने वाले नृत्य एवं मद्यपान तथा विवाह में होने वाले फिजूलखर्ची के विरुद्ध आवाज उठाई
4. एक आस्तिक की धर्म में आस्था नामक पुस्तक में रानाडे द्वारा आस्तिकता संबंधी विचारों को बताया गया
5. गोपाल कृष्ण गोखले के राजनीतिक गुरु

8.6) यंग बंगाल आन्दोलन

1. संस्थापक :- हिंदू कॉलेज के एंग्लो इंडियन शिक्षक हेनरी विवियन डेरोजियो (1809-31)
2. उद्देश्य :- प्रेस की स्वतंत्रता, जमीदारों के अत्याचारों से रैय्यतों की सुरक्षा, सरकारी नौकरी में उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति
   - फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होने के कारण स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व जैसे गुणों का प्रसार
   - डेरोजियोवादियों ने पुरानी पतनशील नीतियों एवं परंपराओं पर प्रहार किया
3. मुख्य कार्य :-
   - एकेडमिक एसोसिएशन एवं सोसाइटी फॉर द एग्जीबिशन ऑफ जनरल नॉलेज की स्थापना
   - इन्होंने एंग्लो इंडियन हिंदू एसोसिएशनः बंगहित सभा एवं डिबेटिंग क्लब की भी स्थापना की
   - डेरोजियो ने ईस्ट इंडिया नामक दैनिक पत्र का भी संपादन किया
4. महाराष्ट्र में इसी तर्ज पर एलफिंस्टन कॉलेज के विद्यार्थियों ने यंग बंगाल की तर्ज पर यंग बॉम्बे आंदोलन चलाया
5. तत्कालीन भारत के कट्टर हिंदुओं ने डेरोजियो का कड़ा विरोध किया उनके मूलगामी विचारों के कारण उन्हें 1831 में हिन्दू कॉलेज से बर्खास्त

कर दिया गया इसके कुछ ही दिनों बाद हैजे के कारण उनकी मृत्यु हो गई

6. हेनरी विवियन डेरोजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रपति कवि माना जाता है

7. सुरेंद्रनाथ बनर्जी :- बंगाल की आधुनिक सभ्यता के जन्मदाता

8.7) अन्य हिन्दू धर्म व समाज सुधार आंदोलन

आन्दोलन	तथ्य
1) परमहंस मंडली	• स्थापना - दादोबा पांडुरंग और बालकृष्ण जयकर की सहायता से आत्माराम पांडुरंग द्वारा 1849-50 में • 1840 के दशक में महाराष्ट्र में धर्म सुधार आंदोलन का आरंभ परमहंस मंडली की स्थापना से माना जाता है • यह संस्था एकेश्वरवाद एवं विश्व हिंदुत्व की भावना को प्रसारित करने के उद्देश्य से स्थापित हुई थी
2) स्वामीनारायण संप्रदाय	• स्थापना - स्वामी सहजानंद द्वारा गुजरात में 19वीं सदी के आरंभ में की गई • इस संप्रदाय ने पवित्र जीवन पद्धति एवं एकेश्वरवाद पर बल दिया • किस संप्रदाय की स्थापना वैष्णव धर्म में विद्यमान कर्मकांड और अंधविश्वासों के फल स्वरुप हुई • इस संप्रदाय द्वारा शाकाहारी भोजन अपनाने तथा मांस मदिरा एवं नशीले पदार्थों के सेवन का त्याग करने पर विशेष बल दिया गया
3) देव समाज	• इसकी स्थापना 1887 ई. में ब्रह्म समाज के अनुयायी शिवनारायण अग्निहोत्री द्वारा लाहौर में की गई • इस समाज का उद्देश्य प्रमुख मानवीय कर्म पर बल देते हुए आत्मा की शुद्धता, गुरु की श्रेष्ठता जैसे विचारों को प्रसारित करना था। • इसमें सामाजिक व्यवहारों यथा- रिश्वत न लेना, मांसाहार का त्याग, मद्यपान का निषेध आदि को अपनाने पर जोर दिया गया। • देव समाज की शिक्षाओं एवं सिद्धांतों को देवशास्त्र नामक पुस्तक में संकलित किया गया।
4) धर्मसभा	• धर्मसभा की स्थापना 1830 ई. में राधाकांत देव ने की थी। इसने सामाजिक-धार्मिक मामलों में रूढ़िवादी तत्त्वों के संरक्षण का प्रयास किया। यहाँ तक कि इसके द्वारा सती प्रथा को समाप्त किये जाने के प्रयासों का भी विरोध किया गया। • रूढ़िवादी विचारों से प्रेरित संस्था होने के बावजूद भी इसने बालिकाओं को पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त करने का समर्थन किया।
5) राधास्वामी आंदोलन	• 1861 ई. में आगरा के बैंकर तुलसीराम (जिन्हें शिवदयाल साहब के नाम से भी जाना जाता है) ने राधास्वामी आंदोलन की शुरुआत की। • इस आंदोलन के समर्थक सादगीपूर्ण सामाजिक जीवन-यापन पर बल देते हुए एक ही ईश्वर की सर्वोच्चता में विश्वास अनुपालन का प्रचार-प्रसार करते थे।
6) मद्रास हिंदू सुधार संघ	• 19वीं सदी में मद्रास प्रांत में 1892 ई. में वीरेशलिंगम पंतुलु द्वारा 'मद्रास हिंदू सामाजिक सुधार समिति' की स्थापना की गई। • यह एक सामाजिक शुद्धतावादी आंदोलन था, जिसमें तत्कालीन सामाजिक, आडम्बरों और देवदासी प्रथा का व्यापक एवं तीव्र विरोध किया गया।
7) द सर्वेण्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी	• 1905 ई. में इसकी स्थापना गोपाल कृष्ण गोखले ने पुणे-महाराष्ट्र में की थी। इसका उद्देश्य नौजवानों को सार्वजनिक जीवन के लिये प्रशिक्षित करना था। • इसके सदस्यों ने राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लेते हुए अनेक सामाजिक कार्य किये।
8) सामाजिक सेवा संघ	• सामाजिक सेवा संघ की स्थापना 1921 ई. में नारायण मल्हार जोशी द्वारा बम्बई में की गई थी। • इसका उद्देश्य लोगों के लिये अच्छी आजीविका के साधन उपलब्ध कराना था।
9) महार आन्दोलन	• 19वीं शताब्दी में प्रारंभ • गोपाल बाबा वलंगकर, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर प्रमुख नेता • महाराष्ट्र में अछूत महारो ने स्वयं को छत्रिय घोषित किया और सेना व सिविल सेवाओं में नौकरियों की मांग की • अंबेडकर का आंदोलन सामाजिक सुधार से जुड़ा था
10) एझावा आंदोलन	• 19वीं शताब्दी में प्रारंभ • प्रमुख नेता - नारायण गुरु • केरल की एझावा जाति द्वारा नारायण गुरु के नेतृत्व में इस आंदोलन की शुरुआत हुई जो निम्न श्रेणी की खेती(नारियल) से जुड़ी थी

8.8) मुस्लिम धर्म सुधार आन्दोलन

"19वीं सदी में भारत में मुस्लिम सुधार आंदोलन आरंभ हुए जिनका उद्देश्य इस्लाम में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों तथा रूढ़िवादिताओं को समाप्त करना था। हालांकि यह आंदोलन अनेक स्वरूपों में पुनर्स्थापना वादी थे"

1) वहाबी आंदोलन

1. प्रवर्तक व प्रचारक :- शाह वली उल्लाह, सैयद शाह अब्दुल्ला तथा सैयद अहमद बरेलवी
2. प्रभावित क्षेत्र :- उत्तर-पश्चिम पंजाब, पूर्वी तथा पटना
3. प्रमुख उद्देश्य :-
    - इस्लामिक कुरीतियों की समाप्ति तथा परंपरागत इस्लाम की स्थापना
    - पश्चिमीकरण का विरोध
    - मुसलमानों के रीति-रिवाजों तथा मान्यताओं में व्याप्त कुरीतियों का विरोध
    - कुरान का फारसी में अनुवाद
    - ब्रिटिश शासन का विरोध
    - शाह अब्दुल अजीज ने हिंदुस्तान को दारुल हर्ब (काफिरों का देश) से दारुल इस्लाम बनाने का आह्वान किया।

2) देवबंद आंदोलन

1. 1866 में मोहम्मद कासिम ननौत्वी तथा रशीद अहमद गंगोही ने देवबंद (सहारनपुर, उत्तरप्रदेश) में इस्लामी मदरसों (दारुल उलूम) की स्थापना की
2. मुख्य उद्देश्य :-
    - कुरान एवं हदीस की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार
    - विदेशी हमलावरों एवं गैर मुसलमानों के विरुद्ध धार्मिक युद्ध (जेहाद) को प्रारम्भ करना
    - मुस्लिम समाज का पश्चिमीकरण करने तथा उदार रुख अपनाने के विरुद्ध कड़ी आपत्ति दर्ज की
3. आंदोलन अलीगढ़ आन्दोलन के विरुद्ध - सैयद अहमद खां एवं उनकी संस्था संयुक्त भारतीय राजभक्त के विरुद्ध फतवा
4. मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसे नेता का उदय हुआ
5. देवबंद ने कांग्रेस की स्थापना का समर्थन किया

3) अहमदिया/कादिनी/काजिनी आन्दोलन

- मुस्लिम समाज में व्याप्त बुराइयों के उन्मूलन के लिए कादियान (पंजाब) के मिर्जा गुलाम अहमद द्वारा 1889 में
- मुख्य उद्देश्य :- भारतीय मुसलमानों के मध्य पश्चिमी उदारवादी शिक्षा का प्रसार
- अहमदिया आंदोलन उदार सिद्धांतों पर आधारित
- इससे संबंधित नेता स्वयं को हजरत मोहम्मद, कृष्ण तथा ईसा मसीह का अवतार मानते थे
- मिर्ज़ा गुलाम अहमद की पुस्तक :- बहरीन-ए-अहमदिया

4) सर सैयद अहमद खां व अलीगढ़ आंदोलन

1. सर सैयद अहमद का जन्म 1817 में दिल्ली में एक प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार में हुआ था
2. अलीगढ़ आंदोलन के प्रवर्तक
3. ब्रिटिश कंपनी के अधीन न्यायिक सेवा में नौकरशाह
4. 1870 में डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर ने अपनी पुस्तक इंडियन मुसलमान में यह सुझाव दिया कि अंग्रेजों को मुसलमानों को रियायतें देकर उन्हें सरकार की ओर मिलाना चाहिए
5. 1876 में सेवानिवृत्त होने के पश्चात वे इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य बने
6. अंग्रेजी सरकार ने 1888 में उन्हें नाइटहुड की उपाधि प्रदान की
7. प्रमुख कृतियां :- तहजीब-उल- अखलाक (सभ्यता और नैतिकता), अवसाव-ए-बगावत-ए-हिन्द, लॉयल मुहमडन्स ऑफ इंडिया , हिस्ट्री ऑफ रिवोल्ट इन बिजनौर इत्यादि
8. प्रमुख विचार :-
    - तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ मुस्लिम समाज में सुधार
    - वे स्त्री शिक्षा के पक्षधर थे

- पर्दा प्रथा तथा बहु पत्नी विवाह की कड़ी आलोचना
- आरंभ में वे धार्मिक सहिष्णुता में विश्वास रखते थे किंतु जीवन के उत्तरार्ध में भी हिंदू प्रभुत्व की बात करने लगे तथा ब्रिटिश विरोधी आंदोलनों से मुस्लिमों को अलग रहने की सलाह देने लगे

9. कांग्रेस की स्थापना का विरोध किया तथा 1908 में यूनाइटेड इंडियन पैट्रियोटिक एसोसिएशन की स्थापना की
10. 1887 में जब बदरुद्दीन तैयब जी को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया तो सैयद अहमद खां ने उनका विरोध किया
11. 1893 में सैयद अहमद की मृत्यु के पश्चात आंदोलन का नेतृत्व मोहसिन-उल-मुल्क ने किया

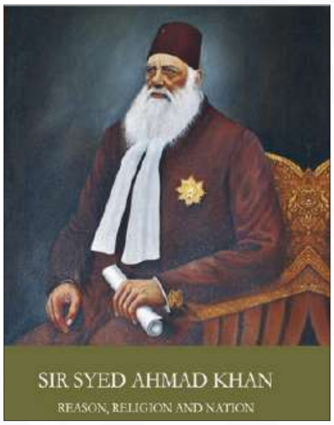

5) अन्य मुस्लिम सुधार आंदोलन

संस्था / आंदोलन	सदस्य	उद्देश्य - अन्य तथ्य
1. वहाबी आंदोलन	• शाह वलीअल्लाह • सैयद शाह अब्दुल्ला • सैयद अहमद बरेलवी	• पाश्चात्यकरण का विरोध • कुरूतियों का समाधान और परंपरागत इस्लाम की स्थापना • ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह का समर्थन
2. देवबंद आंदोलन (सहारनपुर यूपी)	• रूढ़िवादी उलेमा • मोहम्मद कासिम ननौत्वी • रशीद अहमद गंगोही • मौलाना अब्दुल कलाम आजाद	• अलीगढ़ आंदोलन का विरोध • कांग्रेस का समर्थन • परंपरावादी
3. अहमदिया आंदोलन / कादिनी बुक	• पंजाब 1889 • मिर्जा गुलाम अहमद ✓ बहरीन-ए-अहमदिया (पुस्तक)	• उदारवादी • स्वयं को हजरत मोहम्मद, कृष्ण और ईसा मसीह का अवतार

8.9) पारसी सुधार आन्दोलन

1) सेवा सदन (Sewa Sadan)

- सेवा सदन की स्थापना प्रसिद्ध पारसी धर्म सुधारक बहराम जी.एम. मालाबारी ने 1885 ई. में बम्बई में की।
- यह सदन महिलाओं की दशा में उन्नयन के लिये कार्यशील था।
- मालाबारी ने बाल विवाह के विरुद्ध व्यापक जागरूकता फैलाते हुए विधवा-पुनर्विवाह के पक्ष में भी अभियान चलाया।

2) रहनुमाई मजदायसन सभा

- इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य पारसी धर्म की प्राचीन सभ्यता की पुनर्स्थापना तथा पारसी समाज का पुनरुद्धार करना था।
- पारसी समाज सुधार की दिशा में अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त पारसियों द्वारा 1851 ई. 'रहनुमाई मज़द्यासन सभा' की स्थापना की गई। नौरोजी फरदोनजी, दादाभाई नौरोजी, के.एन. कामा एवं एस.एस. बंगाली आदि इसके महत्त्वपूर्ण नेता थे।
- पारसी महिलाओं की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया तथा पर विभिन्न बुराइयों जैसे - पर्दा प्रथा, बाल विवाह इत्यादि का विरोध किया
- इस संस्था ने अपने संदेशों को पारसियों तक पहुंचाने के लिए रॉस्त गोफ्तार (गुजराती) नामक पत्रिका का प्रकाशन किया

8.10) सिख सुधार आन्दोलन

19वीं सदी में आरम्भ हुए समाज सुधार आंदोलनों से सिख समाज पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। तत्कालीन सिख समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, गुरुद्वारों में भ्रष्ट महंतों का वर्चस्व आदि के उन्मूलन करने की दृष्टि से निम्नलिखित सुधार आंदोलन काफी प्रभावी सिद्ध हुए

1) कूका आंदोलन एवं नामधारी आंदोलन

1. पश्चिमी पंजाब में भगत जवाहर मल (सियान साहब) एवं उनके शिष्य बालक सिंह द्वारा 1840 में
2. उद्देश्य :-
   - सिख धर्म में व्याप्त बुराइयों एवं अंधविश्वासों को समाप्त करना
   - मदिरापान, मांसाहार, पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों का विरोध
   - अंतर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन
3. पंजाब की सत्ता अंग्रेज़ों द्वारा हस्तगत किये जाने पर इस आंदोलन ने राजनीतिक स्वरूप धारण कर लिया।
4. राम सिंह एवं बालक सिंह ने मिलकर कूका आंदोलन की परवर्ती शाखा के रूप में नामधारी आंदोलन की स्थापना की
   - सिख धर्म में प्रचलित बुराइयों एवं अंधविश्वासों को दूर करके धर्म को शुद्ध बनाना
   - जातीय भेदभाव को समाप्त करना,
   - सिखों को समानता का अधिकार
   - मांस, शराब व दूसरे नशीले पदार्थों के सेवन से परहेज
   - बहिष्कार एवं असहयोग के सिद्धांत

5. इसको दबाने के लिये सरकार ने 1872 ई. में आंदोलन के प्रमुख नेता राम सिंह को कैद करके रंगून भेज दिया। 1885 ई. में राम सिंह की मृत्यु हो गई और यह आंदोलन धीरे-धीरे शांत हो गया।

2) निरंकारी आंदोलन

1. 19वीं सदी में पंजाब में शुद्धतावादी और सुधारवादी आंदोलन
2. स्थापना :- बाबा दयाल दास
3. उद्देश्य :-
   - मूल सिख धर्म के अनुरूप जीवनयापन
   - निरंकार (निराकार ईश्वर) की साधना
   - मद्यपान न करना,
   - जन्म, विवाह, मृत्यु आदि अवसरों पर साधारण कर्मकांड करना

3) सिंह सभा आन्दोलन

1. ठाकुर सिंह संधावालिया तथा ज्ञान सिंह के नेतृत्व में 1 अक्टूबर 1873 को अमृतसर में सिंह सभा की स्थापना हुई
2. इस सभा का गठन प्रजातांत्रिक आधार पर किया गया था।
3. आरम्भ में गुरुग्रंथ साहब के सम्पादन का कार्य इस सभा द्वारा स्वयं किया गया, किंतु बाद में इसके लिये गुरमत ग्रंथ प्रचारक सभा का गठन किया गया।
4. 1879 में लाहौर में भी इसी आधार पर सभा का गठन किया गया
5. सिख धर्म के मूल स्वरूप के अनुसार जीवनयापन हेतु प्रेरित करना, इसका प्रमुख उद्देश्य था। इसके अलावा, दूसरे ग्रंथों की आलोचना न करना, दूसरे धर्म में चले गए लोगों की घर वापसी करना भी इसके प्रमुख उद्देश्य थे।

4) गुरुद्वारा सुधार आंदोलन

1. गुरुद्वारों पर अंग्रेज़ों द्वारा अपने हितों के अनुकूल महंतों को पूरा समर्थन दिया जाता था।
2. ये महंत भ्रष्टाचार एवं आचरणहीन कर्त्तव्यों में लिप्त रहते थे।
3. अतएव सिंह सभा द्वारा 'गुरुद्वारा सुधार आंदोलन' राष्ट्रवादियों के बढ़ते दबाव के कारण गुरुद्वारों का नियंत्रण नवम्बर 1920 में 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' नामक निर्वाचक समिति के पास चला गया।
4. शीघ्र ही इस आंदोलन ने अकाली आंदोलन का रूप ले लिया।
5. मुख्य उद्देश्य :- सिखों के पवित्र स्थलों तथा उनकी सम्पत्ति एवं भूमि के प्रबंध को भ्रष्ट महंतों के चंगुल से मुक्त कराना।
6. अकालियों के अहिंसात्मक असहयोग से सरकार को झुकना पड़ा तथा 1922 में सरकार ने सिख गुरुद्वारा अधिनियम पारित किया।

8.11) जाति सुधार आन्दोलन का स्वरूप

1) सत्यशोधक समाज

1. स्थापना :- ज्योतिबा फुले द्वारा पूना, महाराष्ट्र में 24 सितम्बर, 1873 में
2. उद्देश्य :- ब्राह्मणों के वर्चस्वशाली आडम्बर एवं उनके अवसरवादी धार्मिक ग्रंथों से निम्न जातियों को बचाना था।
3. निम्न जाति के लोगों एवं महिलाओं को शिक्षित
4. ज्योतिबा फुले एवं उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले ने मिलकर पूना में बालिका विद्यालय
5. पुस्तक :- गुलामगिरी, सार्वजनिक सत्यधर्म, तृतीय रत्न। उन्होंने 'दीनबंधु' नामक पत्र भी निकाला।

2) श्री नारायण धर्म परिपालन आंदोलन

1. केरल की एझवा जाति के सदस्यों के मंदिरों एवं सार्वजनिक स्थलों में प्रवेश की मांग को लेकर यह आंदोलन प्रारम्भ हुआ था।
2. इस आंदोलन के नेतृत्वकर्त्ता नारायण गुरु थे।
3. एझवा केरल में पारम्परिक रूप से नारियल की खेती करने वाली एक निम्न श्रेणी की जाति थी।
4. 1920 ई. में यह आंदोलन गांधीवादी राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गया

3) महार आंदोलन

1. महाराष्ट्र के अछूत महारों द्वारा 19वीं सदी में आंदोलन
2. नेतृत्व :- गोपाल बाबा मावलंकर
3. आंदोलनकारियों ने 'स्वयं' को 'क्षत्रिय' घोषित करते हुए सेना एवं सिविल सेवाओं में अधिक नौकरियों की मांग की।
4. 1920 ई. में इसका नेतृत्व डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सम्भाला।
5. इस आंदोलन के अंतर्गत तालाबों, मंदिरों एवं सार्वजनिक स्थलों या परिसम्पत्तियों के उपयोग की मांग के साथ महारों द्वारा गांव के मुखिया के घर पारम्परिक रूप से किये जाने वाले सेवा-कर्म 'महार वतन' को समाप्त करने की मांग की गई।

4) आत्मसम्मान आंदोलन

1. इस आंदोलन का शुभारम्भ ई.वी. रामास्वामी नायकर (पेरियार) ने 1925 ई. में तमिलनाडु में किया।
2. इस आंदोलन के तहत ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को चुनौती दी गई
3. इसके अनुयायियों द्वारा पिछड़ी जाति के लोगों के लिये समान अधिकार एवं प्रतिनिधित्व देने की मांग की गई
4. 1944 ई. में इस आंदोलन का 'जस्टिस पार्टी' के साथ विलय हो गया।

5) जस्टिस आंदोलन

1. 20वीं सदी के आरम्भ में उभरने वाला जातिगत आंदोलन था।
2. 1916 में मद्रास के गैर-ब्राह्मण नेताओं, यथा- टी.एम. नायर, पी.

त्यागराज चेट्टियार और सी.एन. मुदलियार ने दक्षिण भारतीय उदारवादी महासंघ की स्थापना की।

3. इस संघ ने 'जस्टिस' नामक समाचार-पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया
4. यह आंदोलन मुख्य रूप से गैर-ब्राह्मण एवं मंझोली जातियों (मुदलियार, चेट्टियार, तमिल वल्लाल) के सामाजिक विकास पर केंद्रित था।
5. जस्टिस आंदोलन के नेताओं ने ब्राह्मणों के वर्चस्व का विरोध करते हुए शिक्षा, लोक नियुक्तियों एवं नौकरियों में गैर-ब्राह्मण के लिये आरक्षण की मांग की।

8.12) प्रमुख समाज सुधारक

नाम	व्याख्या	छायाचित्र
1) पण्डित रमाबाई	1) महिला शिक्षा तथा अधिकारों हेतु समर्पित 19 वीं सदी की 2) महाराष्ट्र में आर्य समाज(1882) तथा विधवा पुनरुद्धार हेतु पूना में शारदा सदन(1889) की स्थापना	
2) सावित्री बाई फुले	1) महिला शिक्षा हेतु समर्पित समाज सुधार(ज्योतिबा फुले की पत्नी) 2) पुणे में भारत के प्रथम बालिका विद्यालय(1848) की स्थापना 3) पुस्तकों (काव्य फुले व बावनकशी) द्वारा महिला आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण, विधवा पुनर्विवाह का प्रसार	
3) श्री धोन्दो केशव कर्वे	1) महिला उत्थान समर्थक व पूना फर्ग्युसन कॉलेज के प्राध्यापक 2) बम्बई में प्रथम महिला विश्वविद्यालय(1916) व विधवाओं हेतु आश्रमों की स्थापना 3) महिलाओं हेतु व्यवसायिक शिक्षा के समर्थक 4) स्वयं विधवा से विवाह करके अपने विचारों को सुदृढ़ आधार प्रदान किया 5) 1958 में भारत रत्न से सम्मानित	
4) विष्णु शास्त्री पंडित	1) विधवा कल्याण हेतु समर्पित महाराष्ट्र के समाज सुधारक 2) महिला सुधारों हेतु विधवा विवाह नामक पुस्तक का मराठी अनुवाद 3) 1850 में विधवा पुनर्विवाह सभा की स्थापना	
5) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	1) संस्कृत के प्रख्यात विद्वान व महान सुधारक 2) इनके प्रयासों से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 पारित हुआ 3) संस्कृत कॉलेज द्वारा विद्यासागर की उपाधि से सम्मानित 4) आधुनिक बांग्ला के प्रेणता	
6) गोपाल हरी देशमुख (लोकहितवादी)	1) लोकहितवादी उपनाम से प्रसिद्ध महाराष्ट्र के समाज सुधारक 2) पुनर्विवाह मंडल व विधवा पुनर्विवाह संस्थान की स्थापना **3) पुस्तक -** जाति भेद **4) अखबार/पत्रिका -** ➢ मराठी मासिक पत्रिका लोक हितवादी ➢ **अन्य -** गीता ताव, सुभाषित, प्रभाकर आदि **5) कथन -** यदि कोई धर्म अपने में सुधार की आज्ञा नहीं देता तो उसे बदल देना चाहिए	

8.13) प्रमुख समाज सुधार

1) सती प्रथा

- सती प्रथा का भारत में प्रथम अभिलेख साक्ष्य 510 ई में गुप्त शासक भानुगुप्त के एरण अभिलेख में प्राप्त होता है जिसमें मित्र गोपराज की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी के सती होने का उल्लेख किया गया है
- भारत में इस प्रथा पर प्रतिबंध कश्मीर के शासक सिकन्दर ने 15 वीं सदी में तथा मुगल सम्राट अकबर और पेशवाओं ने अपने शासन काल में लगाया
- इसके बाद पुर्तगाली गवर्नर अल्फांसो डी अल्बुकर्क ने अपने कार्यकाल 1509-15 ई में सती प्रथा पर रोक लगाई थी।
- फ्रांसीसियों ने भी चन्द्रनगर में सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया
- 19वीं सदी के महान सुधारक राजा राममोहन राय ने अपनी पत्रिका 'संवाद कौमुदी के माध्यम से इस क्रूर प्रथा पर जोरदार प्रहार करना प्रारंभ किया
- अन्ततः 8 नवम्बर 1829 को लार्ड विलियम बैंटिक ने सती प्रथा को समाप्त करने के लिए अपना प्रस्ताव परिषद में रखा।
- 4 दिसम्बर 1829 को सरकार द्वारा नियम 17 के अन्तर्गत सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया

2) शिशु वध

- यह क्रूर प्रथा विशेषकर बंगालियों व राजपूतों में प्रचलित थी, जिसके तहत बालिका शिशु को आर्थिक भार मानकर उनकी हत्या कर दी जाती थी
- सरकार ने गवर्नर जॉन शोर के समय 1795 में बंगाल नियम 21 और वेलेजली के समय 1804 में नियम 3 क्व तहत क्रमशः नवजात कन्या हत्या एवं शिशु हत्या को साधारण हत्या के बराबर माना गया
- लार्ड विलियम बैंटिंक (1828-1835 ई०) ने राजपूताना के शिशु हत्या प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाया तथा लार्ड हार्डिंग (1844-1848 ई.) ने सम्पूर्ण भारत में बालिका शिशु हत्या का निषेध किया

3) नर-बलि प्रथा

- भारतीय समाज में तंत्र-मंत्र की पुरातन मान्यताओं के कारण नर-बलि की प्रथा प्रचलित थी
- लार्ड हार्डिंग प्रथम के समय में नर-बलि को रोकने का प्रयास किया गया। इसके लिए कैम्पबेल नामक अधिकारी की नियुक्ति 1844-45 ई. में की गई जिसने इस कुप्रथा को समाप्त कर दिया।

4) दास प्रथा का अन्त

- प्राचीन भारत में दास प्रथा विद्यमान थी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 9 प्रकार के दासों का उल्लेख मिलता है
- सल्तनत काल में फिरोजशाह तुगलक ने दासों का विभाग 'दीवान -ए - बन्दगान' ही खोल रखा था
- यूनानी, रोमन अथवा अमरीकी नीग्रो प्रकार की दास प्रथा भारत में कभी भी प्रचलित नहीं थी,
- मुगल सम्राट अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया था।
- लार्ड कार्नवालिस दासों का व्यापार 1789 ई. में बन्द करवा दिया। तदोपरान्त लार्ड एलनबरो के काल में 1843 ई. के एक्ट V द्वारा दासता को गैर कानूनी मान लिया गया

5) विधवा पुनर्विवाह

- स्त्रियों की दशा में सुधार करने के लिए विधवाओं पर बल दिया गया
- इस कार्य में सर्वाधिक योगदान ब्रह्म समाज के सदस्य व संस्कृत कालेज के आचार्य ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का था।
- इसके अतिरिक्त धोदों केशव कर्वे, मद्रास के वीरेसलिंगम पुण्टुलू एवं विष्णु शास्त्री का भी महत्वपूर्ण योगदान था
- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विधवा विवाह को मान्यता दिलानेके लिए पुराने संस्कृत लेखों व वैदिक उल्लेखों का तर्क दिया उन्होंने लगभग एक सहस्त्र हस्ताक्षरों से अनुमोदित एक प्रार्थना पत्र भारत सरकार (लार्ड डलहौजी) को भेजा साथ ही बर्दवान के राजा मेहताबचंद तथा नाडिया के राजा श्री चंद्र ने भी सरकार को याचिकाएँ भेजी
- अन्त में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856(लॉर्ड कैनिंग) से विधवा विवाह को वैध मान लिया गया
- विद्यासागरजी ने अपनी देख रेख में 1856-60 के बीच 25 विधवाओं का पुनर्विवाह करवाया

6) बाल विवाह

- बाल विवाह की समस्या को रोकने के लिए ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने महत्वपूर्ण प्रयास किया
- अंग्रेजी सरकार ने बाल विवाह रोकने के लिए प्रमुख तीन अधिनियम बनाये यथा-
  1. 1872 का नेटिव या सिविल मैरेज एक्ट :- इस अधिनियम को लाने में केशव चन्द्र सेन का भी महत्वपूर्ण योगदान था। जिसमें 14 वर्ष से कम आयु की लड़की और 18 वर्ष से कम आयु के लड़के का विवाह वर्जित कर दिया गया। बहुपत्नी प्रथा को भी अवैध घोषित किया गया।
  2. 1891 में पारसी सुधारक बीएम मालाबारी के प्रयासों से सम्मति आयु अधिनियम पारित किया गया। जिसमें लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु 12 वर्ष कर दी गयी। बाल गंगाधर तिलक ने इस अधिनियम का विरोध किया और इसे भारतीय संस्कृति में हस्तक्षेप माना।
  3. लॉर्ड इर्विन के समय में तृतीय अधिनियम शारदा अधिनियम 1929 में पारित किया गया जिसमें लड़की के विवाह की न्यूनतम आयु 14 वर्ष तथा लड़के के विवाह की न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित की गई। इस अधिनियम को पारित कराने का विशेष प्रयत्न अजमेर निवासी डॉ हरविलास शारदा ने किया

7) स्त्री शिक्षा

- प्राचीन भारत में स्त्रियाँ शिक्षा के मामले में पुरुषों से कमतर नहीं थीं। अपाला, घोषा, गार्गी, मैत्रेयी आदि अनेक विदुषियों के नाम विश्व विख्यात थे। परन्तु मध्यकाल व उसके पश्चात् हिन्दुओं ने मनगढ़ंत जनश्रुति प्रचलित कर दी कि हिन्दू शास्त्रों में स्त्री शिक्षा की अनुमति नहीं और शिक्षित स्त्री को देवता लोग वैधव्य का दण्ड देते हैं।
- स्त्री शिक्षा के लिए बहुत से सामाजिक व धार्मिक सुधारकों ने प्रयास किया।
- इस दिशा में पहला कदम ईसाई मिशनरियों का रहा जिन्होंने 1819 ई. में कलकत्ता में 'तरूण स्त्री सभा' की स्थापना की।
- इसे आगे बढ़ाते हुए जे. ई. डी. बेथून जो शिक्षा परिषद के अध्यक्ष थे, 1849 में कलकत्ता में प्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना की।
- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने बंगाल में 35 बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

- बम्बई में एल्फिन्सटन संस्थान के विद्यार्थी स्त्री शिक्षा के लिए पुस्तकालय और वैज्ञानिक सभा की स्थापना की
- आधिकारिक तौर पर 1854 के चार्ल्सवुड डिस्पैच में पहली बार स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया।
- 1880 में भारतीय स्त्रियों के लिए आधुनिक औषधियाँ तथा प्रसव की आधुनिक तकनीकों से युक्त लेडी डफरिन के नाम से एक महिला अस्पताल खोला गया
- 1916 ई. में डी.के. कर्वे ने बम्बई में महिला शिक्षा को प्रोत्साहन देने हेतु 'प्रथम महिला विश्वविद्यालय' (श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय) की स्थापना की।
- 1927 में 'अखिल भारतीय महिला संघ' की स्थापना स्त्रियों ने अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु किया।

Possible Questions

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. भारतीय पुनर्जागरण का क्या अर्थ है?
2. लॉर्ड विलियम बेंटिक के द्वारा किए गए तीन प्रमुख सुधारों के नाम बताएं।
3. ईश्वर चंद्र विद्यासागर।
4. रामकृष्ण गोपाल भंडारकर
5. जिद्दू कृष्णमूर्ति
6. डीके कर्वे
7. केशव चंद्र सेन
8. सर सैयद अहमद खान
9. ठक्कर बापा या अमृतलाल
10. लोकहितवादी गोपाल हरी देशमुख
11. हेनरी विवियन डेरेजियो
12. ई वी रामास्वामी नायकर
13. हरबिलास शारदा
14. स्वामी श्रद्धानंद
15. पंडित रमाबाई
16. श्री नारायण गुरु
17. नामधारी आंदोलन
18. सत्यशोधक समाज
19. अलीगढ़ आंदोलन
20. शुद्धि आंदोलन
21. पूना सार्वजनिक सभा
22. स्वामीनारायण संप्रदाय
23. तत्वबोधिनी सभा
24. संवाद कौमुदी
25. प्रार्थना समाज
26. परमहंस मंडली
27. अखिल भारतीय अस्पृश्यता निवारण संघ
28. जस्टिस पार्टी
29. राजा राममोहन राय
30. ब्रह्म समाज
31. एनी बेसेंट

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. भारतीय पुनर्जागरण के अर्थ को समझाते हुए प्रमुख विशेषताओं को लिखिए।
2. भारतीय पुनर्जागरण के कारणों को संक्षिप्त में समझाइए।
3. भारतीय पुनर्जागरण के चार प्रमुख परिणामों की चर्चा करें।
4. स्वामी दयानंद सरस्वती के धार्मिक तथा सामाजिक विचारों का मूल्यांकन करें।
5. ईश्वर चंद्र विद्यासागर महान सुधारक थे? स्पष्ट कीजिए।
6. भारतीय समाज के उत्थान में दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।
7. आधुनिक भारतीय इतिहास में हिंदू स्त्रियों की स्थिति क्या थी?
8. राजा राममोहन राय ने स्त्रियों के उद्धार के लिए क्या कार्य किए? समझाइए
9. युवा बंगाल आंदोलन पर संक्षिप्त टिप्पणी करें।
10. हिंदू धर्म के पुनर्जागरण में थियोसोफिकल सोसायटी का क्या योगदान है? समझाइए
11. 19वीं और 20वीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों के स्वरूप पर चर्चा करें।
12. राजा राममोहन राय को भारतीय समाज सुधार आंदोलन का अग्रदूत क्यों कहा जाता है?
13. रामकृष्ण मिशन के कार्यों तथा उद्देश्यों को समझाएं।
14. भारत के सामाजिक तथा धार्मिक सुधारों में आगामी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि किस प्रकार तैयार की?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

1. भारतीय पुनर्जागरण पर निबंध लिखें।
2. स्वामी दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज के कार्यों का भारत के समाज तथा राजनीति पर क्या प्रभाव हुआ? विस्तार से समझाइए।
3. भारतीय स्त्रियों के उत्थान के लिए किए गए आधुनिक भारतीय प्रयासों को समझाइए।
4. स्वामी दयानंद सरस्वती तथा स्वामी विवेकानंद के द्वारा किस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद की नींव तैयार की गई? समझाइए।

अध्याय – 07 भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उदय
(Rise of Indian National Movement)

Note :

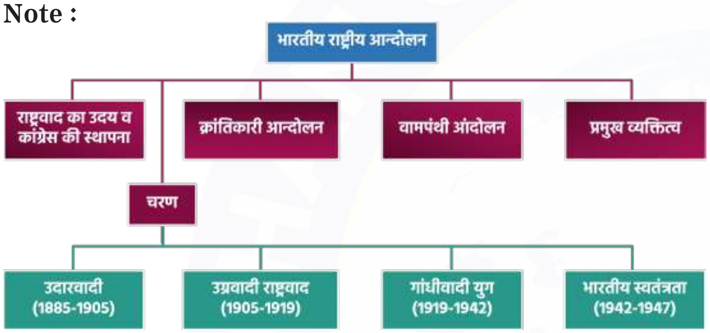

Previous Year Question

2020	Long	• बालगंगाधर तिलक का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान को रेखांकित कीजिए
2019	Long	• भारत छोड़ो आंदोलन को प्रारंभ किए जाने के कारणों का विश्लेषण कीजिए
2018	VS	• राजकुमार शुक्ल
2018	Long	• भारत में राष्ट्रवाद के उदय और विकास पर एक निबंध लिखिए
2017	VS	• चौरा चौरी घटना
2016	VS	• जलियांवाला बाग हत्याकांड
2016	VS	• हरिजन सेवक संघ
2016	Short	• उदारवादीयों (1885-1905) का मूल्यांकन कीजिए • स्वराज पार्टी पर एक संक्षिप्त लेख लिखें
2015	VS	• गोपाल कृष्ण गोखले • मुस्लिम लीग • दांडी मार्च • एनी बेसेंट • क्रिप्स मिशन • पूना पैक्ट
2015	Short	• उन कारकों का वर्णन कीजिए जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान में सहायता की • सूरत की फूट पर एक टिप्पणी लिखिए • गांधी - इरविन समझौते का संक्षिप्त वर्णन कीजिए
2014	VS	• ए. ओ. ह्यूम • काकोरी कांड • भारत छोड़ो आंदोलन
2014	Short	• भारत की स्वतंत्रता में सहायक तत्वों का वर्णन कीजिए

7.1) भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण

एक भौगोलिक इकाई के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के मध्य आत्मिक जुड़ाव तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण को राष्ट्रवाद कहते हैं। भारत में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना निम्नलिखित कारणों से विकसित हुई जिसने राष्ट्रीय आंदोलन का आधार रखा :–

1. देश का राजनीतिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक एकीकरण :-
   - ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों जैसे युद्ध, हड़प नीति आदि के द्वारा राजनीतिक एकीकरण
   - पूरे भारत में एक समान कानूनों व नियमों द्वारा प्रशासनिक एकीकरण
   - रेलवे तथा पक्की सड़कों के विकास से भारतीय बाजारों का एकीकरण
2. सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आंदोलन :-
   - राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद आदि ने भारतीय सभ्यता व संस्कृति के गौरव को पुनर्स्थापित करके श्वेतों के अधिभार सिद्धान्त का खंडन किया तथा भारतीयों में आत्मविश्वास पैदा किया
   - भारतीय समाज में तार्किकता तथा प्रगतिशील मूल्यों यथा स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व आदि का प्रसार
   - स्वामी दयानंद सरस्वती :- भारत, भारतीयों के लिए है
3. आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग का उत्थान :-
   - पश्चिमी देशों के पुनर्जागरण मूल्यों, (राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता आदि) मिल्टन, बेंथन, रूसो जैसे दार्शनिको के विचारों तथा फ्रांसीसी क्रांति जैसी घटनाओं से भारतीय शिक्षित वर्ग का परिचय
   - इसी नवीन शिक्षित मध्यमवर्ग द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व व प्रसार किया गया
   - पी. स्पीयर–"यह नवीन मध्यम वर्ग एक संगठित अखिल भारतीय वर्ग था"

4. प्रेस की भूमिका :-
   - हिन्दू पैट्रियाट, मराठा, केसरी, द इंडियन मिरर, सोम प्रकाश जैसे अखबारों द्वारा जनमानस में राष्ट्रीयता का प्रसार
   - आनन्दमठ, भारत दुर्दशा, नील दर्पण जैसे साहित्यों द्वारा ब्रिटिश शासन के वास्तविक स्वरूपों की जानकारी
5. परिवहन तथा संचार के साधनों का विकास :-
   - रेल, तार, डाक द्वारा समस्त भारत का एकीकरण
   - भौगोलिक दूरी कम करके सांस्कृतिक सम्मिश्रण तथा विचारों के आदान प्रदान को बढ़ावा दिया
   - एडिसन - भारत के लिए रेलवे वह कार्य करेगी, जो बड़े बड़े राजवंशों ने पहले कभी नहीं किया
6. ब्रिटिश औपनिवेशिक शोषणकारी नीतियां :-
   - प्रजातीय विभेद की नीति
   - ब्रिटिश भू राजस्व व विऔधोगिकरण नीति के परिणामस्वरूप अकाल, भुखमरी
   - धन का निष्कासन
7. आधुनिक राजनैतिक संस्थाओं की स्थापना :-
   - काँग्रेस पूर्व संस्थाओं जैसे इंडियन एसोसिएशन, लैण्ड होल्डर्स सोसायटी आदि के द्वारा जन जागृति
   - संवैधानिक तरीकों से अंग्रेजी संसद से अपील
8. तात्कालिक कारण :-
   - लॉर्ड लिटन की नीति - लॉर्ड के प्रतिक्रियावादी कार्यों, जैसे अकाल के समय दिल्ली दरबार का आयोजन, वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट द्वारा प्रेस पर प्रतिबंध, आर्म्स एक्ट द्वारा अस्त्र-शस्त्र रखने की मनाही, ICS परीक्षा की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष करना आदि
   - इल्बर्ट बिल विवाद - लॉर्ड रिपन (Lord Ripon) की परिषद के विधि सदस्य इल्बर्ट (ilbert) ने इस अन्याय को दूर करने के आशय का एक विधेयक 2 फरवरी 1883 को प्रस्तुत किया कि भारतीय न्यायाधीशों को भी यूरोपियन अपराधियों के मुकदमे सुनने का अधिकार हो। किन्तु यूरोपीय लोगों की प्रतिक्रियास्वरूप इस बिल को रद्द करना पड़ा।

इस राष्ट्रवाद की सर्वोच्च अभिव्यक्ति कांग्रेस की स्थापना एवं राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के रूप में हुई। आगे कांग्रेस के नेतृत्व में चलाए गए राष्ट्रीय आंदोलन के परिणाम स्वरूप भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

A) परिचय : स्वरूप व कार्यप्रणाली

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय राष्ट्रीय चेतना के उदय में कांग्रेस की स्थापना से पूर्व अनेक राजनीतिक संगठनों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि इन संस्थाओं का आधार क्षेत्रीय व दृष्टिकोण अभिजात्य-वर्गीय था और ये संकीर्ण हितों का प्रतिनिधित्व करती थी, तथापि इन्होंने जनता एवं स्वयं के हितों के लिये सरकार के सम्मुख आवाज़ उठाया। इन्होंने अपनी मांगों को ब्रिटिश संसद और भारत सरकार के समक्ष पत्रिकाओं, याचिकाओं एवं प्रार्थना-पत्रों के माध्यम से रखा, जो निम्नलिखित हैं :-

- प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी को बढ़ाया जाए।
- कम्पनी के अधीन सेवाओं, जैसे- नागरिक सेवा आदि का भारतीयकरण।
- प्रशासनिक व्ययों में कमी।
- भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार।

B) बंगाल की प्रमुख संस्थाएं

संस्था	स्थापना	संस्थापक	उद्देश्य	विशेषताएं
1) बंग भंग प्रकाशक सभा	1836	गौरीशंकर तरकाबागीश	प्रशासनिक गतिविधियों की समीक्षा व देशवासियों को राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरुक करना	╚ यह बंगाल में स्थापित प्रथम राजनीतिक संगठन
2) लैंड होल्डर्स सोसाइटी	1838 कलकत्ता	द्वारिका नाथ टैगोर	संवैधानिक प्रतिरोध द्वारा जमींदारों के हितों का संरक्षण	╚ इसके भारतीय सचिव प्रसन्न कुमार ठाकुर थे। जबकि अंग्रेज सचिव विलियम काब्री थे ╚ इस संस्था को 'बंगाल जमींदार सभा' की भी संज्ञा प्राप्त थी।
3) बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी	1843	जार्ज थामसन	अंग्रेज शासन के अधीन भारतीयों विशेषकर कृषकों की वास्तविक दशा का अध्ययन करना उससे सबको अवगत कराना और यथासम्भव उनके सुधार का प्रयत्न करना था।	╚ सचिव : प्यारी चन्द्र मित्र ╚ ब्रिटिश शासन में भारतीयों की वास्तविक अवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त करना, उनका प्रचार-प्रसार करना और जनता की उन्नति के लिये शांतिमय और कानूनी साधनों का प्रयोग करना था।
4) इंडियन लीग	1875 कलकत्ता	शिशिर कुमार घोष (अमृत बाजार पत्रिका के सम्पादक एवं स्वामी)	जनमानस में राष्ट्रवाद की अनुप्रेरणा एवं राजनीतिक शिक्षा प्रदान करना।	╚ इस संस्था का विलय वर्ष भर बाद इण्डियन एसोसिएशन में कर दिया गया था। ╚ मुख्य नेतृत्वकर्ता : सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस
5) ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन	31 अक्टूबर, 1851 कलकत्ता	राजा राधाकान्त देव (अध्यक्ष)	भारत के जमींदारों के राजनैतिक संरक्षण के साथ जनमानस के हितों की मांग करना	╚ इस संस्था का निर्माण लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी एवं बंगाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी को मिलाकर किया गया। ╚ इसे 'भारतवर्षीय सभा' की संज्ञा दी गई। ╚ 1860 ई. में अकाल पीड़ितों की सहायता और आयकर बढ़ाने का विरोध ╚ हिन्दू पैट्रियाट' इस संस्था का मुख्य पत्र था। ╚ उपाध्यक्ष : राजा कालीकृष्णादेव ╚ अन्य सदस्य : हरिश्चन्द्र मुकर्जी, रामगोपाल घोष, राजेन्द्र लाल मिश्र, देवेन्द्रनाथ टैगोर (सचिव) तथा दिगम्बर मित्र (उप सचिव)
6) कलकत्ता स्टूडेण्ट्स एसोसिएशन	1875 कलकत्ता	आनन्द मोहन बोस	छात्रों के हित सम्बर्द्धन हेतु संघर्ष करना।	╚ कालान्तर में इस संगठन से सुरेन्द्र नाथ बनर्जी भी जुड़ गये।
7) इंडियन एसोसिएशन	26 जुलाई 1876	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं आनन्द मोहन बोस	○ भारत में प्रबल जनमत तैयार करना ○ हिन्दू-मुस्लीम जनसम्पर्क की स्थापना करना ○ सार्वजनिक कार्यक्रम के आधार पर लोगों को संगठित करना ○ सिविल सैवा के भारतीयकरण के पक्ष में मत तैयार करना	╚ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पूर्वगामी ╚ शिशिर कुमार द्वारा स्थापित इंडियन लीग का इंडियन एसोसिएशन में 1 वर्ष बाद विलय कर दिया गया ╚ इन संस्था के सचिव आनन्द मोहन बोस बनाये गए जबकि अध्यक्ष मनमोहन घोष को चुना गया

C) बम्बई की प्रमुख संस्थाए

संस्था	स्थापना	संस्थापक	उद्देश्य	विशेषताएं
1) बाम्बे एसोसिएशन	26 अगस्त 1852	दादाभाई नौरोजी	राजनैतिक मांगों व प्रशासनिक सुधारों हेतु सरकार को ज्ञापन देना	╚ 'ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन' के कार्यों से प्रभावित ╚ यह बम्बई की प्रथम राजनीतिक संस्था थी।
2) बाम्बे प्रेसीडेंसी एसोसियेशन	31 जनवरी 1885	बदरुद्दीन तैय्यबजी,	लोगों में राजनीतिक विचारों का प्रचार-प्रसार करना	╚ इस संस्था ने वित्त एवं कृषि, प्रशासनिक जैसी कई उपसमितियों की स्थापना की ╚ के.टी. तैलंग, फिरोजशाह मेहता और काशीनाथ त्रयम्बक
3) पूना सार्वजनिक सभा	2 अप्रैल, 1870 ई.	एम.जी. रानाडे, जी.वी. जोशी तथा एस.एच. चिपलूणकर	जनता को सरकार की वास्तविकता के बारे में परिचित कराना और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सचेत करना था।	╚ यह संस्था मुख्यतः जमींदारों तथा व्यापारियो के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी ╚ इस संस्था की एक त्रैमासिक पत्रिका 'क्वार्टली जर्नल' थी।

D) मद्रास की प्रमुख संस्थाएं

संस्था	स्थापना	संस्थापक	उद्देश्य	विशेषताएं
1) मद्रास नेटिव एसोसिएशन	26 फरवरी 1852	**गुजलू लक्ष्मी नरसुचेट्टी**	कानूनी और सरकारी नियमों के साथ जनता की समस्याओं की वकालत करना	• इस संस्था ने 1857 के विद्रोह की भर्त्सना की थी। • इसके अध्यक्ष सी.वाई. मुदलियार और सचिव वी. रामानुजाचारी चुने गए। • 13 जुलाई, 1852 ई. को इस संस्था ने अपना नाम बदलकर 'मद्रास नेटिव एसोसोसिएशन' रख दिया और इसने लन्दन में अपना प्रतिनिधि माल्कम लेविन को नियुक्त किया।
2) मद्रास महाजन सभा	16 मई, 1884 ई.	**सुब्रह्मण्यम अय्यर, आनन्द चालू, एम.वी. राघवाचारी**	स्थानीय संगठनों के कार्यों को समन्वित करना एवं महाजनों तथा किसानों के बीच संघर्ष को रोकना था।	• इस संस्था के अध्यक्ष वी. राघवाचारी तथा सचिव आनन्द चालू चुने गए। • इसका प्रथम सम्मेलन 29 दिसम्बर, 1884 से 2 जनवरी, 1885 तक मद्रास में हुआ था। इस सम्मेलन में विधान परिषदों के सुधार, कार्यपालिका से न्यायपालिका के अलगाव तथा खेतिहर वर्गों की हालत पर विचार किया गया।

E) विदेशी प्रमुख संस्थाएं

संस्था	स्थापना	संस्थापक	उद्देश्य	विशेषताएं
1) लंदन इंडियन कमेटी	1862, लंदन में	**पुरुषोत्तम मुदालियर**	लंदन में भारतीयों को संगठित कर राष्ट्रहित में आवाज़ को बुलंद करना	
2) लंदन इंडिया सोसायटी	24 मार्च 1865	**दादा भाई नौरोजी तथा डब्ल्यू सी बनर्जी**	दादाभाई नौरोजी ने इस संस्था के माध्यम से भारतीयों की दुर्दशा का ज्ञान ब्रिटिश सरकार को कराया था।	
3) ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन	1 दिसम्बर 1866 ई., लंदन में	**दादाभाई नौरोजी**	भारतीय जनता की समस्याओं पर विचार-विमर्श करना और इससे ब्रिटेन की जनता का मत प्रभावित करना था	• इस संगठन को प्रत्यक्ष रुप से **बाम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन** का सहयोग मिला था • 22 मई, 1869 ई. को बम्बई में इसकी शाखा स्थापित हुई। इसके अध्यक्ष जमशेदजी जीजीभाई और सचिव फिरोजशाह मेहता एवं एच.वी.एम. वागले बने।

F) योगदान

1. 1875 ई. में कपास पर आयात शुल्क आरोपित करने का विरोध
2. सिविल सेवाओं के भारतीयकरण हेतु (1878-79 ई.) :- भारतीय सिविल सेवा में प्रवेश की न्यूनतम आयु कम किये जाने के विरोध में इंडियन एसोसिएशन द्वारा अखिल भारतीय प्रदर्शन किया गया।
3. लॉर्ड लिटन की अफगान नीति के अंतर्गत अत्यधिक धन एवं जन की बर्बादी के विरोध में।
4. शस्त्र अधिनियम (1878 ई.) के विरोध में।
5. भारतीय भाषा समाचार-पत्र अधिनियम (1878 ई.) के विरोध में।
6. 'इंग्लैंड इमिग्रेशन एक्ट' के विरोध में।
7. इल्बर्ट बिल के समर्थन में।
8. ब्रिटेन में भारत का समर्थन करने वाले दल के लिये मतों (वोट) हेतु अभियान।

इस प्रकार कांग्रेस से पूर्व स्थापित राजनीतिक संगठनों ने विभिन्न माध्यमों यथा- राजनीतिक सभा/ सम्मेलन, विज्ञापनों तथा समाचार-पत्रों द्वारा सरकारी नीतियों के राजनीतिक प्रतिरोध का आरम्भ किया गया और देश में एक अखिल भारतीय संस्था के गठन का आधार तैयार किया गया।

7.3) कांग्रेस की स्थापना

A) परिचय

कांग्रेस शब्द की उत्पत्ति उत्तरी अमेरिका से हुई है, जिसका अर्थ "व्यक्तियों का समूह" होता है

1. संस्थापक व प्रथम सचिव :- सेवानिवृत्त अंग्रेज अधिकारी एलन ऑक्टोवियन ह्यूम
2. आरम्भिक नाम :- भारतीय राष्ट्रीय संघ (दादा भाई नौरोजी की सिफारिश पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस)
3. प्रथम सम्मेलन :- गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज ज़ बम्बई 28 दिसम्बर 1885 (हैजा के कारण पूना के स्थान पर बम्बई)
4. प्रथम अध्यक्ष :- व्योमेश चन्द्र बनर्जी
5. सदस्य :- 72
6. मुख्य सदस्य :- दादा भाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, दिनशावाचा, K. T. तैलंग, B. राघवाचारी, S. सुब्रह्मण्यम आदि
7. कांग्रेस स्थापना की खबर मद्रास के समाचार पत्र हिन्दू में छपी कांग्रेस को ह्यूम ने भारत का विस्तृत दौरा करने के बाद गठित किया, इस प्रकार यह आकस्मिक घटना न होकर 19वीं सदी की राजनीतिक गतिविधियों की परिणति थी जिसने राजनीतिक मांगों व सुधार हेतु अखिल भारतीय मंच तैयार किया

B) कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन

- अध्यक्ष :- व्योमेश चन्द्र बनर्जी
- सचिव :- एलन ऑक्टोवियन ह्यूम
- कांग्रेस ने प्रथम अधिवेशन में निम्नलिखित 9 प्रस्तावों को पेश किया :-

1. शाही कमीशन के अनुसार प्रशासन में भारतीयों को प्रतिनिधित्व प्रदान करना
2. इंडिया कौंसिल को भंग किया जाए
3. केंद्रीय तथा प्रांतीय लेजिसलेटिव कौंसिलों का विस्तार तथा भारतीयों को बार्षिक बजट पर विचार करने तथा प्रश्न पूछने का अधिकार दिया जाए
4. इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा इंग्लैंड और भारत में एक साथ कराई जाए और अधिकतम उम्र 19 वर्ष से बढ़ाकर 23 वर्ष की जाए
5. सेना पर खर्च घटाया जाए
6. चुंगी कर फिर से लगाई जाए
7. बर्मा को, जिस पर अधिकार कर लेने की निंदा की गई अलग कर दिया जाए
8. उक्त प्रस्तावों को सभी प्रांतों की सभी राजनीतिक संस्थाओं को भेजा जाए ताकि वे उसके क्रियान्वयन की मांग कर सकें

9. अगले वर्ष कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन फिर से बुलाया जाए

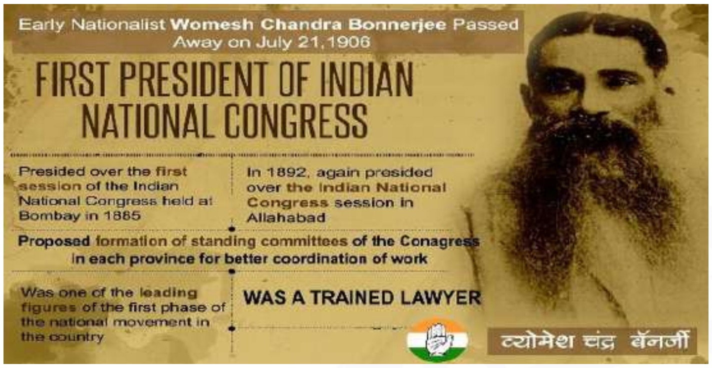

C) कांग्रेस के उद्देश्य

काँग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने इसके निम्नलिखित उद्देश्य बतलाये :-

1. देश हित की रक्षा करने वाले भारतीयों के बीच व्यक्तिगत सम्पर्क एवं मित्रता बढ़ाना।
2. देश प्रेमियों के बीच जाति, सम्प्रदाय तथा प्रान्तीय पक्षपातों की भावना को दूर करके, राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना।
3. शिक्षित वर्ग की पूर्ण सम्मति से महत्वपूर्ण और आवश्यक सामाजिक प्रश्नों पर विचार प्रकट करना।
4. यह निर्धारित करना कि आगामी वर्ष में भारतीय राजनीतिज्ञ लोकहित के लिए किस दिशा में?

स्पष्ट है कि स्थापना के समय भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के उद्देश्य सीमित थे, पर उत्तरोत्तर इस संस्था की शक्ति बढ़ती गयी जिसका परिणाम भारत की स्वतन्त्रता के रूप में हमारे सामने आया।

D) कांग्रेस की उत्पत्ति से संबंधित अवधारणाएं

D.1) सेफ्टी वाल्व थ्योरी (Safety Valve Theory) :

इस अवधारणा का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने यंग इंडिया के लेख में ह्यूम के जीवन-वृत्तांत-लेखक विलियम वेडरबर्न के कथन को आधार बनाकर कांग्रेस के उदारवादी नेतृत्व के संदर्भ में किया था।

1. अवधारणा :- कॉन्ग्रेस लॉर्ड डफरिन के दिमाग की उपज है जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन के प्रति संभावित राजनीतिक असंतोष की लहर को रोकना है।
2. समर्थक :- रजनी पाम दत्त, मार्क्सवादी राष्ट्रीय स्वयंसेवक सं,घ सीएफ एंड्रयूज व गिरिजा मुखर्जी
3. तार्किक विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि ह्यूम, डफरिन के मतानुसार कार्य नहीं कर रहे थे। साथ ही कांग्रेस की स्थापना के पश्चात डफरिन, कांग्रेस के प्रति असहिष्णु हो गए।

इस तरह कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में यह सिद्धांत प्रमाणित नहीं होता, क्योंकि वायसराय डफरिन और ह्यूम के मध्य संबंध कटुता पूर्ण थे। डफरिन ने कांग्रेस की आलोचना करते हुए इसे "मुट्ठी भर लोगों" का समूह कहा था। इस तरह कांग्रेस की स्थापना को एक व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज मानना ऐतिहासिक प्रवृत्तियों को संकुचित दृष्टिकोण में देखना है। वस्तुतः कांग्रेस से पूर्व भी कई क्षेत्रीय राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी तथा राष्ट्रवाद का प्रसार हो रहा था। इस प्रकार भारत की राजनीतिक समस्याओं तथा सुधारों के लिए एक अखिल भारतीय मंच के रूप में कांग्रेस की स्थापना की गई।

D.2) तड़ित चालक का सिद्धांत || Lightning Conductor Theory :

1. सुरक्षा कपाट की अवधारणा के विपरीत गोपाल कृष्ण गोखले के द्वारा प्रस्तावित सिद्धांत
2. इस अवधारणा के अनुसार भारतीय बुद्धिजीवियों ने ब्रिटिश सेवानिवृत्त अधिकारी ह्यूम का उपयोग भारतीय हितों के लिए किया अन्यथा अंग्रेजी सरकार कांग्रेस जैसी संस्था को विकसित होने से पहले ही दमन कर देती
3. इस तरह ह्यूम और दूसरे अंग्रेज उदारवादियों ने कांग्रेस के लिए "तड़ित चालक" का काम किया तथा कांग्रेस पर गिरने वाली सरकारी दमन की बिजली से उसे बचाया।

D.3) भारतीय अभिजात्य वर्गीय आकांक्षाओं का मूर्त रूप (Manifestation of the aspirations of Indian aristocratic class) :-

1. इस अवधारणा के अनुसार कांग्रेश अभिजात वर्ग की आकांक्षाओं तथा उनके स्वार्थों को सिद्ध करने वाला एक आंदोलन था
2. हालांकि यह अवधारणा ना सिर्फ गलत है बल्कि उस पवित्र भावना तथा राष्ट्रवादी नेताओं की उपेक्षा है जिसने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया।

D.4) क्षेत्रीय संस्थाओं का विकसित रूप (Developed form of regional organizations) :-

1. कांग्रेस की स्थापना से पूर्व भारतीयों द्वारा अनेक राष्ट्रीय राजनीतिक संगठनों की स्थापना के प्रयास किए गए
2. एस एन बनर्जी के इंडियन एसोसिएशन को तो कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था की संज्ञा दी जाती है इस प्रकार कांग्रेस को क्षेत्रीय संस्थाओं का विकसित रूप माना जाता है

D.5) अखिल भारतीय संस्था की आवश्यकता की अभिव्यक्ति (Expression of the need for all India organization) :-

1. 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में आधुनिक शिक्षित नवीन मध्य वर्ग में होने के कारण 1857 ई. के विद्रोह के दौरान राजनीतिक चेतना के अभाव में

इनकी सहानुभूति ब्रिटिश शासन के प्रति रही।

2. किंतु 1870 ई. के दशक में औपनिवेशिक शोषण प्रणाली के प्रति भारतीयों की समझ बेहतर हुई और राजनीतिक चेतना का विकास हुआ और इसी क्रम में आम जन में राष्ट्रवादी भावना से जुड़े मुद्दों को सरकार के समक्ष
3. मज़बूती से रखने के लिये अखिल भारतीय संस्था के रूप में कांग्रेस की स्थापना हुई।

E) विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रिया

1. व्यापारी वर्ग :- कांग्रेस के प्रति व्यापारी वर्ग का दृष्टिकोण सहयोगात्मक रहा ब्रिटिश सरकार द्वारा देश के आर्थिक विकास की उदासीनता को देखते हुए व्यापारी वर्ग कांग्रेस की तरफ खिंचते चले गए क्योंकि कांग्रेस देश में आर्थिक विकास के लिए संघर्षरत थी
2. सामंतवादी वर्ग :- परंपरागत सामंतवादी वर्ग जैसे जमीदार, साहूकार आदि राष्ट्रवादियों द्वारा स्वराज की मांग किए जाने से चिंतित हो गए क्योंकि स्वराज के अंतर्गत समतामूलक सामाजिक आर्थिक प्रशासन के आदर्श निहित होते हैं अतएव यह वर्ग ब्रिटिश सरकार का पक्षधर हो गया
3. आम जनता || Common Class :- आरम्भ में कांग्रेस का स्वरूप शहरी एवं मध्यमवर्गीय था। इसकी पहुँच सीमित वर्ग तक ही थी, क्योंकिइसका दायरा अभी सिर्फ पढ़े-लिखे भारतीयों तक ही था। अधिकांश जनता में शिक्षा का अभाव थाअतएव जनता आरम्भ में कांग्रेस का महत्त्व सही ढंग से नहीं समझ सकी, परंतु कांग्रेस ने क्रमशः आम जनता की शिकायतों एवं अधिकारों को जब अपने संघर्ष में शामिल किया, तब कांग्रेस को जनता अपनी प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्वीकार करने लगी। किसानों एवं मज़दूर वर्ग का भी समर्थन कांग्रेस को मिला।
4. सरकार/प्रशासक वर्ग (Government/Administrative Class):- कांग्रेस के प्रति सरकार की नीति परिवर्तनशील रही। आरंभिक समय में ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस के प्रति कोई कठोर रवैया नहीं अपनाया किंतु जैसे ही इलाहाबाद अधिवेशन (1888 ई.) से कांग्रेस ने राष्ट्रवादी आंदोलन के प्रसार में भूमिका निभानी शुरू की, वैसे ही ब्रिटिश सरकार का कांग्रेस के प्रति रवैया उत्तरोत्तर विरोधी होता चला गया।

F) प्रमुख कथन

1. कांग्रेस के बारे में डफरिन ने कहा था कि 'यह जनता के उस अल्पसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी संख्या सूक्ष्म है।
2. कांग्रेस के बारे में एक बार कर्जन ने कहा था कि 'कांग्रेस अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही है, भारत में रहते हुये मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद करूँ।' कर्जन ने ही कांग्रेस को 'गंदी चीज' और देशद्रोही संगठन आदि संज्ञा प्रदान की थी।
3. व्योमेश चंद्र बनर्जी के अनुसार 'कांग्रेस वास्तव में डफरिन की देन थी।'
4. लाला लाजपत राय ने भी कांग्रेस को 'डफरिन के दिमाग की उपज' बताया था। उन्होंने ही 'कांग्रेस सम्मेलनों को शिक्षित भारतीयों के राष्ट्रीय मेले की संज्ञा दी थी।
5. आर सी दत्त ने कांग्रेस की स्थापना को 'ब्रिटिश सरकार की एक पूर्व निश्चित गुप्त योजना का परिणाम" बताया।
6. तिलक ने कहा था कि 'यदि वर्ष में हम एक बार मेढ़क की भांति टर्रायें तो हमें कुछ नहीं मिलेगा।'
7. विपिन चंद्र पाल ने कांग्रेस को 'याचना संस्था', अश्विनी कुमार दत्त ने 'तीन दिनों का तमाशा' कहा। पाल ने कांग्रेस की नीति को 'भिखमंगी नीति' की संज्ञा दी थी।

अध्याय – 08
राष्ट्रीय आंदोलन का उदारवादी चरण
(Moderate Phase of National Movement (1885-1905)

8.1) उदारवादी चरण का परिचय

1885 में कांग्रेस की स्थापना से 1905 तक का समय कांग्रेस के नेतृत्व कर्ताओं तथा कार्यप्रणाली के कारण उदारवादी चरण कहलाता है। इस समय कांग्रेस पर फिरोजशाह मेहता, दादाभाई नौरोजी, व्योमेश चंद्र बनर्जी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, रमेश चंद्र दत्त जैसे समृद्धशाली मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों का प्रभाव था।

1. उद्देश्य :- ब्रिटिश शासन के अंतर्गत ही स्वराज की मांग तथा अ–ब्रिटिश शासन (Unbritish Rule) का विरोध
2. वैचारिक पृष्ठभूमि :-
   - आंदोलन के नेतृत्वकर्ता मध्यम वर्गीय पेशेवर लोग थे, जो जन आंदोलन के स्थान पर क्रमिक तथा संवैधानिक सुधारों के समर्थक थे।
   - प्रारंभिक नेतृत्वकर्ता ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली, नागरिक अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, औद्योगिक क्रांति, न्यायप्रियता के कारण ब्रिटिश शासन को अच्छा समझते थे और भारत में भी ऐसे ही शासन की मांग करते थे।
   - इन्होंने अपने विरोध का माध्यम प्रार्थना पत्र, प्रतिवेदन, स्मरण पत्र, भाषण, अखबार तथा निवेदन को बनाया।
3. इस प्रकार वे ब्रिटिश शासन का विरोध करने के स्थान पर अ–ब्रिटिश शासन तथा भारत में वायसराय की नीतियों का विरोध करते थे।

8.2) उदार वादियों के सिद्धांत, उद्देश्य तथा विचारधारा

1. ब्रिटिश शासन को एक वरदान माना :– उदार वादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन के कारण भारत में प्रगतिशील मूल्यों का प्रादुर्भाव हुआ है, जबकि विदेशी आक्रमण और अराजकता का अंत हुआ है। एक सुनिश्चित प्रशासनिक एवं न्याय प्रणाली का निर्माण, अंग्रेजी शिक्षा और यातायात के साधनों का विकास करके भारत में आधुनिकता की नींव रखी है।
2. धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद – कांग्रेस को सांप्रदायिकता, जातिवाद आदि से दूर रखने का प्रयास तथा सभी वर्गों की एकता के द्वारा स्वशासन की मांग।
3. ब्रिटिश शासन की न्याय प्रियता में विश्वास – उदार वादियों का मानना था की जब अंग्रेजों को भारतीयों की योग्यता पर विश्वास हो जाएगा तो वे उन्हें स्वशासन जरूर देंगे तथा हमारी सभी मांगों को पूरा करेंगे।
4. पूर्ण स्वराज के स्थान पर स्वशासन की प्राप्ति का लक्ष्य :– भारतीयों को स्वशासन या अधिराज्य के तहत वही दर्जा प्राप्त होना चाहिए जो कनाडा तथा ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य अधिराज्यों को प्राप्त है
5. संवैधानिक उपायों के औचित्य में विश्वास या निष्क्रिय प्रतिरोध :– क्योंकि कांग्रेस उस समय बाल्य अवस्था में थी अतः अंग्रेजी नीतियों का उग्र विरोध करने के स्थान पर विनम्र तथा उदारवादी विरोध की नीति को अपनाया
6. राजनीति का आध्यात्मिकरण :– गोपाल कृष्ण गोखले का मानना था की, राजनीति का एकमात्र उद्देश्य देश सेवा तथा उचित साधनों के प्रयोग से उचित लक्ष्य की प्राप्ति होना चाहिए। इसमें छल कपट जैसी प्रवृत्तियां नहीं होनी चाहिए।
7. अन्य :-
   - जन जागरूकता व जनमानस को राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ना, हालांकि इस समय कुछ नेताओं का मानना था कि भारतीय जनता अशिक्षित है अतः उसे राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल नहीं करना चाहिए।
   - पाश्चात्य शिक्षा की उपयोगिता में दृढ़ विश्वास
   - हिंदू मुस्लिम तथा राष्ट्रीय एकता में विश्वास
   - मानव प्रगति के लिए स्वतंत्रता में विश्वास
   - सुधार हेतु संवैधानिक साधनों तथा क्रमिक सुधारों में विश्वास

8.3) उदार वादियों की कार्यप्रणाली

1. अहिंसक एवं संवैधानिक प्रदर्शनों के द्वारा अंग्रेजों से उदारवादी नीतियों की मांग
2. प्रतिवेदनो, लेखों, सभाओं द्वारा ब्रिटिश राज्य की प्रशंसा करते हुए अपनी मांगों को सरकार के समक्ष रखना
3. समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के माध्यम से जनमानस तक पहुंचने का प्रयास
4. भारतीयों को राजनीतिक मुद्दों पर शिक्षित करना
5. ब्रिटिश जनता और ब्रिटिश सरकार को भारतीयों की स्थिति की जानकारी देने हेतु लंदन में दादा भाई नौरोजी के द्वारा भारतीय सुधार समिति और विलियम डिग्बी की अध्यक्षता में ब्रिटिश कमेटी ऑन इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की गई।
6. भारत में धन के निष्कासन को रोकने हेतु ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का विरोध तथा औद्योगिक संरक्षण, भू राजस्व में कमी, नमक कर की समाप्ति जैसी मांगे।

इस प्रकार उदार वादियों ने 'याचना एवं प्रार्थना' की पद्धति अपनाई जिससे कांग्रेस को सरकार की दमनकारी नीति का सामना नहीं करना पड़ा और वह बाल्य से युवा अवस्था में पहुंच सकी।

8.4) उदारवादियों की प्रमुख मांगे

1. संवैधानिक मांगे :-
   - विधायिका में भारतीयों की संख्या में वृद्धि
   - वायसराय की कार्यकारी परिषद में दो भारतीय सदस्यों शामिल हो
   - पश्चिमोत्तर प्रांत एवं पंजाब में नई परिषदे स्थापित की जाएं
   - नागरिक अधिकार जैसे– संगठन बनाने की स्वतंत्रता, भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि प्रदान किए जाए
2. आर्थिक मांगे :-
   - भारत से ब्रिटेन को होने वाले धन निष्कासन को रोका जाए
   - अनावश्यक सैन्य तथा प्रशासनिक व्यय में कटौती।
   - स्थाई बंदोबस्त को देश के अन्य क्षेत्रों में लागू किया जाए।
   - भूराजस्व की दरों को कम करते हुए नमक कानून को समाप्त किया जाए।
   - भारतीय उद्योगों के संरक्षण हेतु सीमा शुल्क में बढ़ोतरी तथा संरक्षणवादी नीति को अपनाया जाए।
3. प्रशासनिक मांगे :-
   - भारत को कनाडा एवं ऑस्ट्रेलिया के समान स्वशासन का अधिकार दिया जाए
   - सिविल सेवा का भारतीयकरण करते हुए परीक्षा का आयोजन इंग्लैंड एवं भारत में एक साथ हो तथा अधिकतम आयु सीमा भी बढ़ाई जाए
   - शस्त्र अधिनियम को समाप्त किया जाए
   - अकाल से बचने हेतु सिंचाई योजना का निर्माण
   - प्राथमिक, तकनीकी एवं उच्च शिक्षा के प्रचार हेतु बजट में बढ़ोतरी
   - न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक किया जाए

8.5) उदारवादियों की प्रमुख उपलब्धियां

1. भारतीय जनता को राजनीतिक प्रश्नों पर शिक्षित और एकताबद्ध करके भारतीय राष्ट्रवाद के गहरे और अच्छे बीज बोए।
2. विदेशों विशेषकर इंग्लैंड में भारतीय पक्ष हेतु समर्थन जुटाना
3. दादा भाई नौरोजी द्वारा धन निष्कासन की तार्किक व्याख्या करके ब्रिटिश सरकार के औपनिवेशिक एवं शोषणकारी चरित्र से जनता को अवगत करवाना
4. 1892 के भारत परिषद अधिनियम में उदारवादियों की कुछ मांगे सम्मिलित की गई
5. ब्रिटेन के द्वारा भारतीय व्यय की समीक्षा हेतु वेल्बी आयोग का गठन किया गया
6. 1886 में चार्ल्स एचिसन समिति की सिफारिश पर भारत और लंदन दोनों जगह सिविल सेवा परीक्षा आयोजित कराने पर सहमति बनी।

इस प्रकार उदारवादी चरण में कांग्रेस ने भारतीय जनता को राजनैतिक रूप से शिक्षित करके आगामी आंदोलन की पृष्ठभूमि को तैयार किया।

8.6) उदार वादियों की सीमाएं

1. ब्रिटिश न्यायप्रियता पर अत्यधिक विश्वास के कारण सरकार के वास्तविक रूप की समझ का अभाव
2. संकुचित सामाजिक आधार जिसमें डॉक्टर, शिक्षक, वकील इत्यादि शामिल थे। उनका मत था कि जनता अशिक्षित है अतः वह साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने में सक्षम नहीं है।
3. किसान तथा मजदूर वर्ग से जुड़ी मांगों को कांग्रेस के प्रस्ताव में जगह नहीं दी गई जिस वजह से यह वर्ग इस आंदोलन से नहीं जुड़ा।
4. सामाजिक और संगठन की संकीर्णता के कारण कांग्रेस की अनुनय तथा विनय की नीति का संतोषजनक परिणाम नहीं मिला।
5. अधिकांश नेतृत्वकर्ता पेशेवर वर्ग से संबंधित थे। अतः उनके लिए राजनीति एक अंशकालिक गतिविधि थी।
6. जनसाधारण की समस्याओं के समाधान के स्थान पर अभिजात्य वर्गीय मांगे जैसे – विधायिका में नेतृत्व ,लोक सेवा का भारतीय करण आदि।

यद्यपि यह प्रयास संतोषजनक नहीं थे तथापि इसने भारतीयों में आरंभिक राष्ट्रवादी चेतना जगाई तथा सबसे बढ़कर ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की तार्किक व्याख्या करके भारतीयों के समक्ष अनब्रिटिश शासन के स्वरूप को उजागर किया।

अध्याय – 09
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उग्रवादी चरण
(Extremist phase of national movement (1905 - 1919)

9.1) उग्रवादी चरण (1905 – 1919)

"हमारा राष्ट्र एक वृक्ष की तरह है जिसका तना स्वराज है और स्वदेशी व बहिष्कार उसकी शाखाएं" :- बाल गंगाधर तिलक

9.1.1) उग्रवादी चरण का परिचय/पृष्ठभूमि

1. बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में कांग्रेस में एक ऐसे युवा वर्ग का उदय हुआ जो पूर्ण स्वराज तथा उसकी प्राप्ति हेतु जन आंदोलन का समर्थक था।
2. प्रमुख नेता :- बाल गंगाधर तिलक (महाराष्ट्र), बिपिन चंद्र पाल व अरविंद घोष (बंगाल) एवं लाला लाजपत राय (पंजाब)
3. कांग्रेस के उग्रराष्ट्रवादी नेता आत्म बलिदान, स्वतंत्रता की भावना, विदेशी शासन के बहिष्कार, स्वदेशी का प्रयोग जैसी भावनाओं से ओतप्रोत थे।
4. भारत में उग्रवादी चरण के प्रारंभकर्ता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक माने जाते हैं।
5. इसी समय राष्ट्रीय आंदोलन में क्रांतिकारी आंदोलन का भी आरंभ हुआ।

9.1.2) उग्रवादी आंदोलन के उदय के कारण

1) कांग्रेस की उदारवादी कार्यप्रणाली की असफलता
2) 1892 के अधिनियम से राजनैतिक निराशा
3) धार्मिक पुनरुत्थान आंदोलन
4) लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां
5) अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव
6) दुर्भिक्ष तथा प्लैग का प्रकोप

1. कांग्रेस की उदारवादी कार्यप्रणाली की असफलता :- उदारवादी नेताओं की आवेदन तथा निवेदन की नीति से अपेक्षित सफलता नहीं मिलने के कारण युवा नेताओं ने उदारवादी तरीकों को राजनैतिक भिक्षावृत्ति की संज्ञा दी तथा स्वदेशी और बहिष्कार जैसे कठोर तरीकों के द्वारा पूर्ण स्वराज्य की मांग पर बल दिया
2. राजनैतिक निराशा :-
   - 1892 के भारत परिषद अधिनियम द्वारा बजट पर सीमित बहस का अधिकार दिया परंतु पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं मिला।
   - अभिव्यक्ति की आजादी पर रोक, 1897 में तिलक को 18 माह का कारावास, राजद्रोह अधिनियम इत्यादि से कांग्रेस के युवा वर्ग में ब्रिटिश शासन के प्रति आक्रोश में वृद्धि
3. धार्मिक पुनरुत्थान आंदोलन :-
   - बाल गंगाधर तिलक के द्वारा राष्ट्रवाद तथा स्वदेशी के प्रसार हेतु गणपति उत्सव और शिवाजी महोत्सव का आयोजन
   - उदार वादियों के विपरीत उग्रवादी, स्वामी विवेकानंद और दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित होकर पाश्चात्य के स्थान पर भारतीय संस्कृति के समर्थक थे
   - एनी बेसेंट :- सारी हिंदू प्रणाली पश्चिमी सभ्यता से बढ़कर है।
4. लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां :-
   - 1899 में कोलकाता नगर निगम से भारतीयों की संख्या को घटाना
   - 1903 में एडवर्ड सप्तम को भारत का सम्राट घोषित करने के लिए अकाल के पश्चात भी दिल्ली दरबार का आयोजन
   - 1904 में इंडियन ऑफिसियल सीक्रेट एक्ट से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करना
   - 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम से विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण को बढ़ाना
   - सबसे प्रतिक्रियावादी निर्णय 1905 मे बंगाल का विभाजन
5. अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव :-
   - मिस्त्र, फारस, तुर्की, चीन, आयरलैंड आदि में जन आंदोलन
   - जापान का बिना किसी पश्चिमी सहायता के औद्योगिकीकरण
   - छोटे से अफ्रीकी अबीसीनिया (इथियोपिया) के द्वारा 1896 में इटली की पराजय
   - 1899 के बोअर युद्ध में डचो के द्वारा अंग्रेजों की पराजय
   - 1905 में जापान द्वारा रूस की पराजय
   - मैजिनी, गैरीबाल्डी, कैवर से राष्ट्रवादीयों के प्रयासों से इटली का एकीकरण

6. दुर्भिक्ष तथा प्लेग का प्रकोप :-
   - 1876 से 1900 के मध्य देश में लगभग 18 बड़े अकाल पढ़ें परन्तु ब्रिटेन के द्वारा राहत कार्यों का आभाव।
   - तिलक ने अपने समाचार पत्र केसरी में इसकी आलोचना की जिस से प्रभावित होकर चाफेकर बंधुओं (दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव) ने प्लेग कमिश्नर रैण्ड और आयस्टर की हत्या कर दी इस आरोप में तिलक को 18 माह की जेल जबकि दामोदर हरी चापेकर को फांसी दी गई।
   - इससे भारतीय जनता में ब्रिटिश शासन के प्रति और भी ज्यादा आक्रोश उत्पन्न हुआ।

9.1.3) उग्रवादी आंदोलन की विचारधारा एवं कार्य पद्धति

1. अंग्रेजी शासन से घृणा तथा भारत में पूर्ण स्वराज की स्थापना। इसी परिपेक्ष में बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।"
2. पूर्ण स्वराज की प्राप्ति के लिए विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया।
3. उदार वादियों की प्रार्थना पत्र स्मरण पत्र तथा अनुनय विनय नीति के स्थान पर अधिकारों की प्राप्ति हेतु संघर्ष की नीति।
4. दीवानी मामलों के निवारण के लिए पंच निर्णय समितियां बनाई।
5. कांग्रेस के संकीर्ण सामाजिक आधार में विस्तार करके जनसाधारण तक पहुंचाना।
6. सहकारी संगठनों की स्थापना, गांव की साफ-सफाई, मेलों का आयोजन जैसे कार्यों द्वारा राष्ट्रवादी भावना का प्रसार।
7. अरविंद घोष ने निष्क्रिय प्रतिरोध को साधन बनाया इसके अंतर्गत स्वदेशी का प्रचार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार, सरकारी कानून का बहिष्कार तथा असहयोग करने जैसी गतिविधियां शामिल थी।
8. प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का प्रचार प्रसार करके राष्ट्रीयता एवं आत्मविश्वास की भावना को जगाना। इस हेतु बाल गंगाधर तिलक ने शिवाजी तथा गणेश महोत्सव का आयोजन किया।

9.1.4) उग्रवादी चरण की प्रमुख उपलब्धियां

1. राष्ट्रीय आंदोलन में विद्यार्थी, युवा वर्ग, महिलाओं आदि को शामिल करके सामाजिक आधार का विस्तार किया।
2. राजनीतिक संघर्ष की नवीन पद्धतियों जैसे स्वदेशी एवं बहिष्कार ने सीमित संघर्ष को जन संघर्ष में बदल दिया।
3. गणपति महोत्सव, शिवाजी उत्सव जैसे कार्यक्रमों से धार्मिक एकता को बढ़ावा।
4. प्राचीन गौरवशाली भारतीय इतिहास तथा संस्कृति को जनमानस तक पहुंचा कर भारतीयों मे पुनः आत्मविश्वास भरा।
5. 1911 में सरकार को आंदोलन के कारण बंगाल विभाजन को रद्द करना पड़ा

इस प्रकार उग्रवादियों ने पूर्ण स्वराज्य की संकल्पना को राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न हिस्सा बनाया जिसे कालांतर में गांधीजी और अन्य नेताओं ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्य उद्देश्य बनाया।

9.1.5) उग्रवादी आंदोलन की सीमाएं

1. राष्ट्रीय आंदोलन में धार्मिक प्रतीकों का इस्तेमाल करके कुछ रूप में सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिला।
2. उग्रवादी और उदार वादियों के मध्य 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन हो गया, जिससे कुछ समय के लिए राष्ट्रीय आंदोलन कमजोर पड़ा।
3. स्वदेशी पर अत्यधिक बल देने के कारण आधुनिक प्रगतिशील विचारों के प्रति भी लोगों का रवैया नकारात्मक हो गया।
4. क्रांतिकारी आंदोलन को बढ़ावा मिला जिससे कुछ स्थानों पर ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों से अराजकता पैदा हुई।

हालांकि गहराई से पर्यवेक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि उग्रवादियों ने राष्ट्रीय आंदोलन में युवा वर्ग को जोड़कर आंदोलन के आगामी का कार्यक्रमों को मजबूत पृष्ठभूमि प्रदान की।

9.1.6) उदारवादी तथा उग्रवादी आंदोलन में अंतर

आधार	उदारवादी (नरमपंथी)	उग्रवादी (गरमपंथी)
1) सामाजिक संरचना	उच्च मध्यम वर्ग, अभिजात्यवादी दृष्टिकोण	निम्न मध्यम वर्ग
2) राजनीतिक प्रतिरोध के साधन	याचना की नीति	निष्क्रिय प्रतिरोध
3) वैचारिक मतभेद	पाश्चात्य शिक्षा एवं ब्रिटिश शासन प्रणाली के पक्षधर	भारतीय संस्कृति एवं विरासत के समर्थक
4) लक्ष्य में मतभेद	अंग्रेजों के अधीन स्वशासन	स्वराज या स्वाधीनता

9.1.7) उग्रवादी आंदोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्ता

प्रमुख नेता :- बाल गंगाधर तिलक (महाराष्ट्र), बिपिन चंद्र पाल व अरविंद घोष (बंगाल) एवं लाला लाजपत राय (पंजाब)

- हम प्रमुख नेताओं में इसका अध्ययन करेंगे

9.2) बंगाल का विभाजन

9.2.1) सामान्य परिचय

1. 18900 वर्ग किमी में विस्तृत लगभग 8 करोड़ की आबादी वाला सबसे बड़ा ब्रिटिश भारतीय प्रांत
2. बंगाल :- पश्चिम बंगाल+बिहार+उड़ीसा+बांग्लादेश
3. मुख्य घटनाएं :-
   - 3 दिसंबर 1903 : गृह सचिव रिजले द्वारा विभाजन की योजना
   - 20 जुलाई 1905 : विभाजन की घोषणा
   - 7 अगस्त 1905 : कलकत्ता के टाउन हॉल से स्वदेशी आंदोलन का आरंभ
   - 16 अक्टूबर 1905 : बंगाल विभाजन प्रभावी (शोक दिवस)
     - ✓ R N टैगोर – रक्षाबंधन
     - ✓ R N टैगोर - अमार सोनार बंग्ला
     - ✓ आनंदमोहन बोस - फेडरेशन हॉल
4. मुख्य व्यक्तित्व :-
   - वायसराय - लॉर्ड कर्जन
   - लेफ्टिनेंट गवर्नर - फ्रेजर
   - गृह सचिव - रिजले
5. उद्देश्य :- फूट डालो व राज करो की नीति के तहत बंगाल का धार्मिक विभाजन व राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करना

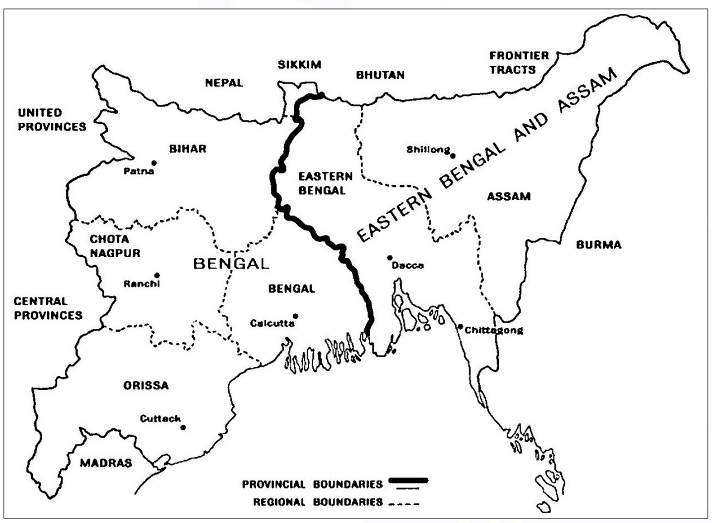

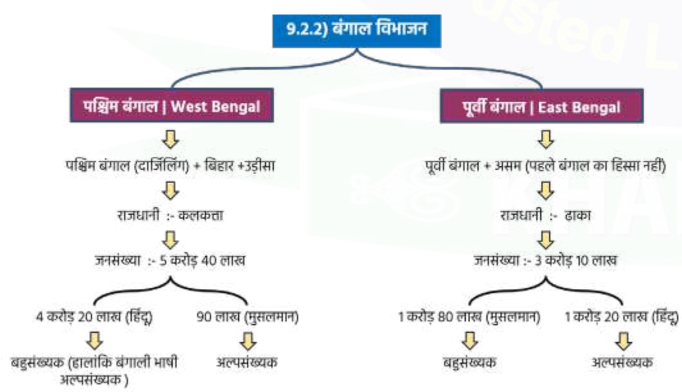

9.2.3) कारण

20 जुलाई 1905 को वायसराय कर्जन ने बंगाल को पूर्वी और पश्चिमी बंगाल में विभाजित कर दिया जिसके निम्नलिखित कारण थे -

1. ब्रिटिश सरकार द्वारा कारण :-
   - अत्याधिक विशाल क्षेत्रफल के कारण प्रशासनिक जटिलता के निवारण हेतु
   - पुलिस पर अत्याधिक दवाब के कारण चोरी व अन्य अपराधों में वृद्धि
   - मुस्लिम बहुल पूर्वी जिलों की विकासात्मक उपेक्षा
2. वास्तविक कारण :-
   - राष्ट्रवादी गतिविधियों का केंद्र बंगाल का विभाजन करके राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करना
   - फूट डालो और राज करो की नीति के तहत हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिकता को बढ़ाना
   - बंगालियों की आबादी कम करके उन्हें अल्पसंख्यक बनाना
   - ढाका को मुस्लिम राजनैतिक गतिविधियों का केंद्र बनाना जहां कालांतर में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई

राष्ट्रवादियों ने इन कारणों को समझकर स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की तथा राष्ट्रीय आंदोलन उग्रवादी चरण में प्रवेश कर गया

Note :

1) बंगाल ब्रिटिश राजनैतिक-प्रशासनिक व्यवस्था का केंद्र व राजधानी थी
2) आधुनिक शिक्षा, सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों से जागरूकता
3) राजनैतिक संस्थाओं का विकास व राष्ट्रवाद
4) आंदोलन को कमजोर करने हेतु विभाजन

9.2.4) प्रभाव/प्रतिक्रिया

1. स्वदेशी आंदोलन का आरम्भ
2. स्वराज, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा जैसे मुख्य विचारों का प्रसार
   - 7 अगस्त 1905 - कलकत्ता के टाउन हॉल से स्वदेशी आंदोलन का आरंभ
   - आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय द्वारा बंगाल केमिकल लिमिटेड की शुरुआत
   - 1907 में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता वाले कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में स्वराज की मांग का प्रस्ताव
3. भारत में उग्र राष्ट्रीय आंदोलन व क्रांतिकारी गतिविधियों का आरम्भ
4. दिसंबर 1911 में दिल्ली दरबार में लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय द्वारा बंगाल विभाजन रद्द

Note :

- बंगाल विभाजन को रद्द करने के कारण कर्जन एवं मिंटो की प्रतिक्रियावादी नीतियों से उत्पन्न जनअसंतोष को शांत करने के लिए 1910 में लॉर्ड हार्डिंग को गवर्नर जनरल बनाया गया।
- वैश्विक स्तर पर यूरोप में महायुद्ध की आशंका थी, ऐसे में सरकार को भारत में समर्थन आधार जुटाना आवश्यक था।
- कलकत्ता से दिल्ली में राजधानी परिवर्तन करके कलकत्ता में राजनीतिक गतिविधियों के पतन को सुनिश्चित कर लिया गया था।
- राजनीतिक अशांति एवं कोलाहल का वातावरण।
- 1909 के एक्ट के तहत सुधारों के खोखलेपन से उदारवादियों को भी निराशा ।
- इन कारणों से तथा भारत में शांति व्यवस्था की स्थापना के उद्देश्य से बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया गया था

9.2.5) बंगाल विभाजन की समाप्ति

1. स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन
2. अरुण्डेल समिति (1906)→बंगाल विभाजन रद्द किया जाना चाहिए
3. दिल्ली दरबार (दिसंबर 1911)→ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम और रानी मेरी

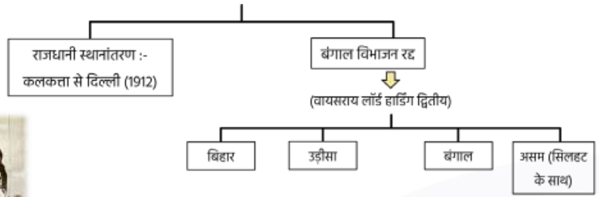

9.2.6) अन्य तथ्य

1. स्वदेशी आंदोलन का विचार सर्वप्रथम कृष्ण कुमार मित्र की पत्रिका संजीवनी में प्रयुक्त किया गया
2. आंध्र प्रदेश के डेल्टा वाले इलाकों में स्वदेशी आंदोलन को वंदे मातरम आंदोलन के नाम से जाना जाता है
3. रविंद्र नाथ टैगोर ने आमार सोनार बांग्ला लिखा
4. 1907 में डॉक्टर रासबिहारी घोष की अध्यक्षता में आयोजित सूरत अधिवेशन में स्वदेशी आंदोलन को लेकर कांग्रेस का प्रथम विभाजन नरम दल और गरम दल में हो गया
5. ब्रिटिश पत्रकार एच डब्ल्यू नेविन्सन ने 'द न्यू स्प्रिट ऑफ इंडिया' नामक किताब लिखी
6. अगस्त 1906 गुरूदास बैनर्जी ने 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' का गठन किया.
7. लोकमान्य तिलक ने मुंबई और पुणे, लाला लाजपत राय ने पंजाब, सैयद हैदर रजा ने दिल्ली और चिदंबर पिल्लई ने मद्रास में आंदोलन को आगे बढ़ाया

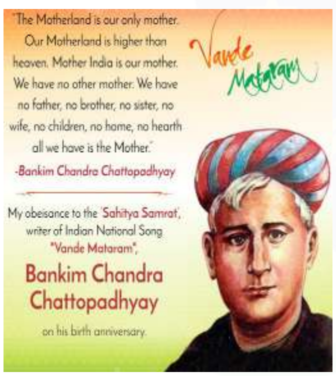

9.3) स्वदेशी आंदोलन

9.3.1) उद्देश्य

7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में आरम्भ स्वदेशी आंदोलन के कारण/उद्देश्य :-

- बंगाल विभाजन को रद्द करवाना
- बहिष्कार,असहयोग आदि के द्वारा ब्रिटिश शासन को कमजोर करना

9.3.2) रूपरेखा/पद्धति/कार्यक्रम

1. विदेशी वस्तुओं, सरकारी स्कूलों, अदालतों, नौकरियों, उपाधियों आदि का बहिष्कार
2. हड़ताल करके प्रशासन को पंगु बनाना।
3. महिलाओं द्वारा विदेशी दुकानों पर धरना देना ।
4. सामाजिक कुरीतियों, जैसे बाल विवाह, दहेज, शराब आदि का विरोध करना
5. आत्मनिर्भरता हेतु स्वदेशी शिक्षा, उद्योग, कला तथा विज्ञान को प्रोत्साहन देना ।

9.3.3) कार्यपद्धति

1. 16 अक्टूबर 1905 को बंगाल में शोक दिवस तथा रक्षाबंधन के रूप में मनाया गया
2. बहिष्कार के तहत विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई तथा कई लोगों ने सरकारी नौकरियों का त्याग कर दिया।
3. कोलकाता विश्वविद्यालय की दास ग्रह के रूप में आलोचना की गई
4. भारतीय शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु गुरुदास बनर्जी ने राष्ट्रीय शिक्षा परिषद, रंगपुर नेशनल स्कूल एवं बंगाल नेशनल कॉलेज की स्थापना की। अरविंद घोष बंगाल नेशनल कॉलेज के प्रथम प्राचार्य बने।
5. डॉन सोसायटी के सचिव सतीश चंद्र मुखर्जी ने बंगाल में राष्ट्रीय शिक्षा को प्रोत्साहित किया वहीं पंजाब में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना
6. पहली बार राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी :- महिलाओं ने विदेशी प्रसाधन सामग्री उपयोग मे लाना बंद कर दिया और दुकानों के बाहर धरना प्रदर्शन किया।
7. रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा रचित आमार सोनार बांग्ला तथा बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित वंदे मातरम राष्ट्रीय गीत बन गया।
8. सहकारी संगठन पंच समितियां तथा गणेश महोत्सव, शिवाजी महोत्सव जैसे धार्मिक और पारंपरिक मेलों का आयोजन।

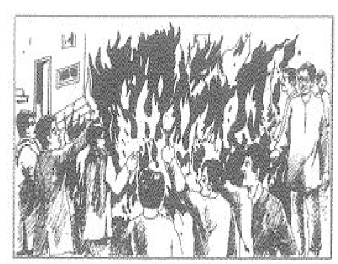

9.3.4) सामाजिक आधार

1. आन्दोलन में विद्यार्थी मुख्य कर्ता धर्ता थे
2. महिलाएं पहली बार घर से निकल कर जुलूस में शामिल हुईं
3. पूर्वी बंगाल के मुस्लिम समुदाय की भागीदारी नहीं रखी वस्तुतः उच्च एवं मध्य वर्ग के अधिकांश मुस्लिम नेता आंदोलन से दूर रहे या विभाजन का समर्थन किया
4. ढाका ने नवाब सलीमुल्ला ने विभाजन का समर्थन किया लेकिन फिर भी कुछ मुस्लिम नेताओं से आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया जैसे - सैयद हैदर रजा,अब्दुल रसूल, लियाकत हुसैन आदि
5. किसान इस आन्दोलन से दूर रहा

9.3.5) प्रसार

1. ब्रिटिश सरकार द्वारा 16 अक्टूबर, 1905 ई. में बंगाल विभाजन को लागू कर दिया गया। इस दिन को पूरे बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया।
2. लोगों ने एक-दूसरे के हाथों पर राखियां बांधकर एकता प्रदर्शित की। स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व बंगाल में
3. प्रसारणकर्ता :-
   - बाल गंगाधर तिलक - पूना और बॉम्बे
   - लाला लाजपत राय और अजीत सिंह - पंजाब
   - सैयद हैदर रजा - दिल्ली
   - चिदंबरम पिल्लई - मद्रास

इस प्रकार स्वदेशी आन्दोलन बंगाल से प्रारंभ हुआ था, परन्तु शीघ्र ही इसका प्रसार सम्पूर्ण भारत में हो गया।

9.3.6) प्रभाव

1) **सकारात्मक**
2) **नकारात्मक**

1. **सकारात्मक प्रभाव :-**
   - राष्ट्रवाद के वैचारिक आधार को विस्तृत करके उसे उग्र रूप प्रदान किया
   - रचनात्मक व अहिंसक राजनीतिक कार्य पद्धतियों जैसे निष्क्रिय प्रतिरोध, असहयोग, बहिष्कार आदि का सूत्रपात जिसने भविष्य के गांधीवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की।
   - स्वदेशी पर बल देने के कारण भारतीय उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहन मिला। जैसे - पीसी राय द्वारा स्थापित बंगाल केमिकल फैक्ट्री।
   - राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना हुई जिसका उद्देश्य साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा का प्रसार करना था।
   - राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों जैसे- बंगाल नेशनल कॉलेज, बंगाल इंस्टिट्यूट आदि की स्थापना।
   - रविंद्र नाथ टैगोर, रजनीकांत सेन, सैयद अबू अहमद, बंकिम चंद्र चटर्जी आदि ने स्वदेशी और बांग्ला साहित्य के व्यापक विकास में अहम भूमिका निभाई।
   - अविंद्र नाथ टैगोर ने मुगलों, राजपूतों और अजंता की चित्रकला से प्रेरणा प्राप्त करके हिंदू-मुस्लिम समन्वित चित्रकला का विकास किया।
   - 1906 में इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट की स्थापना की गई तथा नंदलाल बोस को चित्रकारी के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त हुई।
2. **नकारात्मक प्रभाव :-**
   - अब्दुल रसूल, लियाकत हुसैन, सैयद हैदर रजा आदि मुसलमानों के अलावा बहुसंख्यक मुस्लिम वर्ग की आंदोलन से दूरी।
   - ढाका के नवाब सलीमुल्लाह ने स्वदेशी आंदोलन का विरोध किया जिसका आधार अंग्रेजों की फूट डालो राज करो की नीति से निर्मित मुस्लिम लीग थी।
   - आंदोलन की कार्यपद्धति को लेकर उदारवादी तथा उग्रवादियों के मध्य 1907 में कांग्रेस का विभाजन।
   - धार्मिक प्रतीकों एवं नारों के प्रयोग से सांप्रदायिकता को बढ़ावा।
   - किसानों की न्यूनतम भागीदारी।

9.3.7) सीमाएं

1. समाज के सभी वर्गों यथा किसान मजदूर व मुस्लिम भागीदारी में कमी।
2. राजद्रोही सभा अधिनियम, भारतीय समाचार पत्र अधिनियम, फौजदारी कानून अधिनियम आदि कठोर दमनात्मक नीतियों के तहत नेताओं को जेल में डाला।
3. नेतृत्वविहीनता
   - नौ बड़े नेताओं, जैसे- अजीत सिंह, लाला लाजपत राय, अश्विनी कुमार दत्त और कृष्ण कुमार मित्र आदि को निर्वासित कर दिया
   - तिलक को छह वर्ष की जेल
   - मद्रास के चिदम्बरम पिल्लै को गिरफ्तार कर लिया गया।
   - बिपिनचंद्रपाल और अरविंद घोष ने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया।
4. सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन।
5. प्रभावी व दूरदर्शी नीति का अभाव।
6. ब्रिटिश सरकार ने 1905 में सर्कुलर जारी करके स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों को आंदोलन से दूर रहने के बदले छात्रवृत्ति की योजना बनाई.

बंगाल विभाजन ना रोक पाने के कारण प्रथम दृष्टतः आंदोलन असफल दिखाई पड़ता है हालांकि यह उपनिवेशवाद के विरुद्ध पहला व्यापक जन आंदोलन था जिसमें छात्रों, महिलाओं ने भाग लिया जिससे भविष्य के गांधीवादी आंदोलन के लिए सशक्त आधार तैयार हुआ।

9.3.8) सारांश

1. प्रमुख व्यक्तित्व :- सुरेंद्रनाथ बनर्जी, कृष्ण कुमार मित्र, पृथ्वीश राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिनचंद्र पाल, लाला लाजपत राय, अरविंद घोष
2. विरोध की पद्धति :- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, जनसभाओं का आयोजन, उग्र प्रदर्शन, स्वयंसेवी संगठनों का गठन, आत्म-शक्ति व आत्मनिर्भरता पर बल, राष्ट्रीय शिक्षा व उद्योगों को प्रोत्साहन, परम्परागत त्यौहारों व मेलों का आयोजन, शिक्षण संस्थानों व सरकारी सेवाओं का बहिष्कार आदि।
3. घोषणा :- 7 अगस्त, 1905 (टाउन हॉल, कलकत्ता)
4. 16 अक्तूबर, 1905 : शोक दिवस, राखी दिवस
5. बनारस कांग्रेस अधिवेशन (1905 ई.) :- स्वशासन प्रस्ताव पारित
6. अगस्त 1906 : राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् का गठन

7. सामाजिक आधार :- छात्र महिलाएँ, ज़मींदारों का एक वर्ग, शहरी निम्न मध्यम वर्ग आदि। (किसान व बहुसंख्यक मुसलमान अलग रहे)
8. क्षेत्रीय विस्तार :- बम्बई व पुणे (तिलक), पंजाब व उत्तर प्रदेश (लाला लाजपत राय व अजीत सिंह), दिल्ली (सैयद हैदर रजा), मद्रास (चिदंबरम पिल्लई, बिपिनचंद्र पाल)
9. अरूंडेल कमेटी (1906 ई. में गठित) :- बंगाल विभाजन रद्द करने का सुझाव दिया।
10. दिल्ली दरबार (दिसम्बर 1911) :- बंगाल विभाजन रद्द करने की घोषणा । (लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय)
11. राजधानी परिवर्तन :- कलकत्ता से दिल्ली

9.4) मुस्लिम लीग की स्थापना

1. पृष्ठभूमि :-
   - डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर ने अपनी पुस्तक 'द इंडियन मुसलमान' में लिखा था कि मुसलमान यदि खुश और संतुष्ट हैं, तो भारत में ब्रिटिश शक्ति का महत्तम बचाव होगा
   - सर सैयद अहमद खान (पृथक देश)
2. विचार :-
   - आगा खां के नेतृत्व में शिमला में 1 अक्टूबर 1906 को वायसराय मिंटो से मिलने के
   - अखिल भारतीय मुस्लिम शैक्षणिक सम्मेलन के आयोजन में ढाका के नवाब सलीमुल्लाह खान (बंगाल विभाजन के समर्थन) द्वारा प्रस्तावित
3. उद्देश्य :-
   - ब्रिटिश सरकार के प्रति मुसलमानों में निष्ठा बढ़ाना
   - अन्य संप्रदायों के प्रति सांप्रदायिकता की भावना को बढ़ने से रोकना
   - मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा और उनका विस्तार करना
4. प्रभाव :-
   - अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति की सफलता
   - 1909 के मार्ले मिंटो सुधार से सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली शुरू
     - ✓ प्रथम मांग | First demand :- 1906 में आगा खां ने लॉर्ड मिंटो से
     - ✓ द्वितीय मांग | Second demand :- 1908 में अमृतसर अधिवेशन में
   - भारत में सांप्रदायिकता
   - भारत का विभाजन

Note :

1. गठन :- ढाका (1906)
2. प्रथम अध्यक्ष :- आगा खां
3. मुख्यालय :- लखनऊ
4. सचिव :- मोहसिन-उल-मुल्क तथा वकार-उल-मुल्क
5. विदेशी शाखा :- लंदन में अमीर अली (1908)
6. अधिवेशन :- प्रथम (कराची,1907) और द्वितीय (अमृतसर, 1908)

9.5) कांग्रेस का सूरत अधिवेशन

1907 ई. में कांग्रेस के सूरत अधिवेश में कांग्रेस दो भागों में विभाजित हो गई। इस अधिवेशन में गरमपंथियों को कांग्रेस से निकालकर बाहर कर दिया गया।

कांग्रेस का बनारस अधिवेशन,1905

1) **अध्यक्ष :-** गोपाल कृष्ण गोखले
2) **प्रमुख घटनाएं :-**
   - स्वशासन का प्रस्ताव पारित
   - नरम और गरम दल के मध्य समझौते का प्रयास

कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन,1906

1) **अध्यक्ष :-** दादा भाई नौरोजी
2) **प्रमुख घटनाएं :-**
   - नरम दल और गरम दल के मध्य अध्यक्ष पद को लेकर विवाद
   - दादाभाई नौरोजी द्वारा समाधान
   - स्वराज्य, स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा के प्रस्ताव पारित

9.5.1) विभाजन के कारण

1. नरमपंथी, स्वदेशी आन्दोलन को बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे जबकि गरमपंथी पूरे देश हैं
2. गरमपंथी विदेशी माल के बहिष्कार के साथ ब्रिटेन को किसी तरह का सहयोग न दिए जाने की मांग कर रहे थे।
3. 1907 ई. में होने वाले कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्ष के पद को लेकर मतभेद - गरमपंथी लाला लाजपत राय जबकि नरमपंथी राजबिहारी घोष को अध्यक्ष बनाना चाहते थे
4. नागपुर में गरमपंथियों के प्रभाव के कारण नरमपंथियों ने यह अधिवेशन सूरत में आयोजित करवाया
5. अफवाह - 1906 ई. में हुए कलकत्ता अधिवेशन में पारित स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा तथा स्वालम्बन संबंधी प्रस्ताव रद्द कर दिए जाएंगे
6. तिलक तथा रानाड़े के गुट में व्यक्तिगत विरोध

9.5.2) परिणाम

1. कांग्रेस का सामाजिक आधार सीमित हो गया

2. स्वदेशी आन्दोलन पर प्रतिकूल - एक वर्ष के अन्दर स्वदेशी आन्दोलन समाप्त हो गया।
3. भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव जन तथा आन्दोलन की गति धीमी पड़ गई।
4. अंग्रेजों को सूरत विभाजन से लाभ हुआ तथा अंग्रेजों ने गरमपंथी नेताओं पर सख्त कार्यवाही की तथा नरमपंथी की मांगों को नजरअंदाज किया

निष्कर्षत: सूरत विभाजन का राष्ट्रीय आन्दोलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। हांलाकि राष्ट्रीय नेताओं ने शीघ्र ही पारस्परिक सहयोग के महत्व को समझते हुए 1916 ई. में लखनऊ में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में गरमपंथी नेताओं को पुनः शामिल कर लिया गया।

9.5.3) सारांश

कारण
उदारवादी व उग्रवादियों में मतभेद (स्वदेशी व बहिष्कार, अध्यक्ष पद आदि मुद्दों पर)

- **वर्ष :-** दिसम्बर 1907
- **स्थान :-** सूरत
- **अध्यक्ष :-** रास बिहारी घोष (उग्रवादी लाला लाजपत को बनाना चाहते थे)

मद्रास अधिवेशन (1908) - उग्रवादियों का कांग्रेस में प्रवेश प्रतिबंधित

9.6) मार्ले मिंटो सुधार (1909)

1. वर्ष 1905 में लॉर्ड कर्जन के स्थान पर लॉर्ड मिटो को भारत का वायसराय नियुक्त किया गया तथा जॉन मार्ले को भारत सचिव
2. भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 (मार्ले-मिंटो सुधार) का सबसे बड़ा दोष सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के तहत मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल की व्यवस्था करना था
   - इस व्यवस्था के अंतर्गत् परिषदों में मुसलमान सदस्यों का निर्वाचन सामान्य निर्वाचक मंडल द्वारा नहीं अपितु केवल मुसलमानों के लिए गठित पृथक निर्वाचक मंडल द्वारा किया जाता था
3. गांधीजी ने कहा था - "मार्ले-मिंटो सुधार (1909 के इंडियन काउंसिल एक्ट) ने हमारा सर्वनाश कर दिया"

नोट :- 1906 में आगा खां ने शिमला जाकर लॉर्ड मिंटो से सांप्रदायिक निर्वाचन की प्रथम मांग की।

John Morley   Viceroy Lord Min

9.7) दिल्ली दरबार

प्रथम दिल्ली दरबार, 1877

1) **वायसराय :-** लॉर्ड लिटन
2) **कारण :-** इंग्लैंड की क्वीन विक्टोरिया को भारत की सामग्री घोषित किया गया साथ ही केसर ए हिंद की उपाधि दी गई।
3) **अन्य तथ्य :-** दक्षिण भारत में भयंकर अकाल पड़ा हजारों लोगों की जान गई तथा इस दरबार में बेशुमार धन की बर्बादी हुई।

द्वितीय दिल्ली दरबार, 1903

1) **वायसराय :-** लॉर्ड कर्जन
2) **कारण :-** इंग्लैंड में एडवर्ड सप्तम का राज्यारोहण
3) **अन्य तथ्य :-**
   - एडवर्ड सप्तम ने अपने भाई आर्थर (कनॉट के ड्यूक) को भेजा
   - लॉर्ड कर्जन ने पहली बार तार के द्वारा भाषण दिया
   - भयंकर अकाल

तृतीय दिल्ली दरबार, 1911

1) **वायसराय :-** लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय
2) **कारण :-** जॉर्ज पंचम और मेरी का आगमन
3) **अन्य तथ्य :-**
   - राजधानी स्थानांतरण - कलकत्ता से दिल्ली (1912)
   - बंगाल विभाजन रद्द
   - 1 अप्रैल 1936 को उड़ीसा को बिहार से अलग
   - असम (सिलहट) का गठन

दिल्ली षड्यंत्र / हार्डिंग बम कांड

1. **दिसंबर 1912**
2. हार्डिंग द्वितीय, राजधानी स्थानांतरण समारोह जा रहा
3. चांदनी चौक पर हमला
4. 13 लोगों की हिरासत :- अमीर चंद्र, दीनानाथ, बालमुकुंद, अवध बिहारी आदि
   - सरकारी गवाह :- दीनानाथ
   - रासबिहारी बोस जापान चले गए

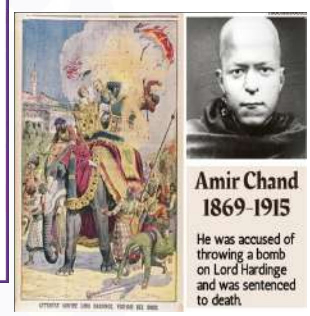

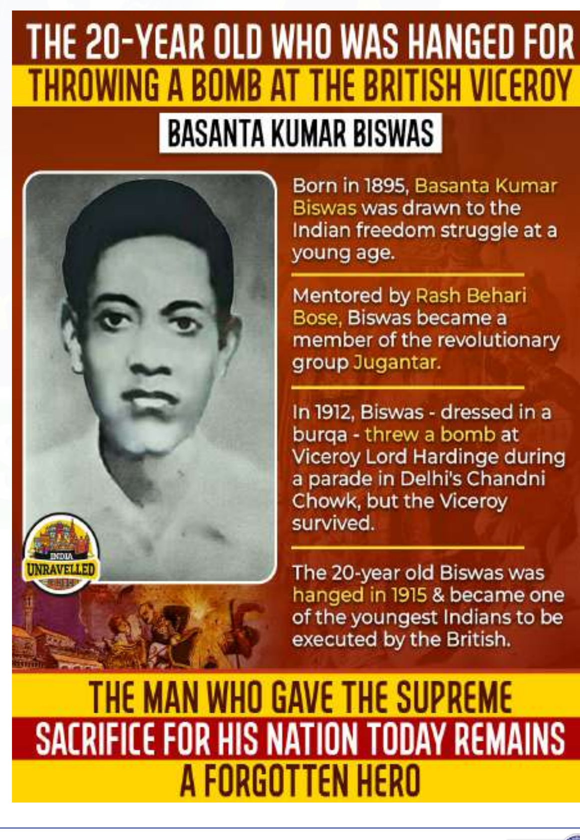

9.8) प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918)

1. जून 1914 में पहला विश्व युद्ध आरंभ हुआ।
2. भारत का योगदान व प्रभाव :-
   - कांग्रेस ने युद्ध के पश्चात स्वशासन प्राप्ति की आशा से सरकार को पूर्ण सहयोग दिया
   - इस युद्ध के बाद लौटे सैनिकों ने जनता के मनोबल बढ़ाया।
   - यूएसएसआर के गठन के साथ ही भारत में भी साम्यवाद का प्रसार (सीपीआई के गठन) हुआ
   - युद्ध के तुरंत बाद अंग्रेज़ो ने रौलेट एक्ट पारित किया, परिणामस्वरूप असहयोग आंदोलन की शुरुआत हुई।
   - खाद्य आपूर्ति, विशेष रूप से अनाज की मांग में वृद्धि से खाद्य मुद्रास्फीति में भी भारी वृद्धि हुई।
   - भारतीय उद्योगों का विकास

9.9) होमरूल आंदोलन

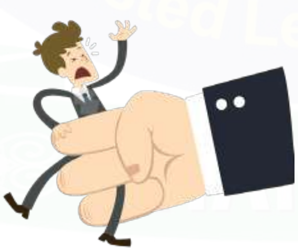

9.9.1) परिचय

1. होमरूल की अवधारणा आयरलैंड में होमरूल लीग स्थापित करने वाले नेता रेमाण्ड द्वारा दी गयी
2. अर्थ :- पराधीनता की स्थिति में स्वशासन की मांग
3. भारत में बाल गंगाधर तिलक(अप्रैल 1916) व एनी बेसेंट (सितंबर 1916) ने आन्दोलन को शुरू किया
4. **उद्देश्य :-**
   - ब्रिटिश शासन के अधीन रहते हुए संवैधानिक एवं शांतिपूर्ण तरीकों से स्वशासन प्राप्त करना।
   - तिलक ने क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा और भाषायी आधार पर राज्यों के निर्माण की मांग को स्वराज के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया।
   - जातिवाद एवं छुआछूत के विरुद्ध अभियान की शुरुआत करना।
   - लोगों को राजनीतिक शिक्षा देना
   - स्वशासन के अंतर्गत जिला परिषद्, नगरपालिका एवं प्रांतीय स्तरों पर पूर्ण स्थानीय सरकार का निर्माण करना।
   - भारतीय राजनीति में उग्र विचारधारा के विस्तार को सीमित करना।

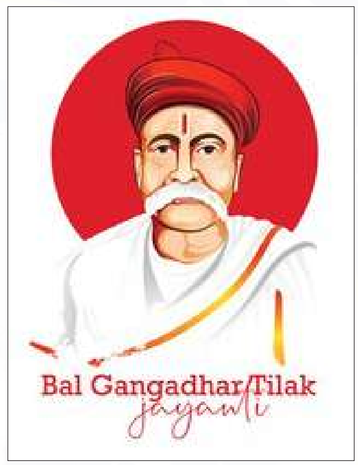

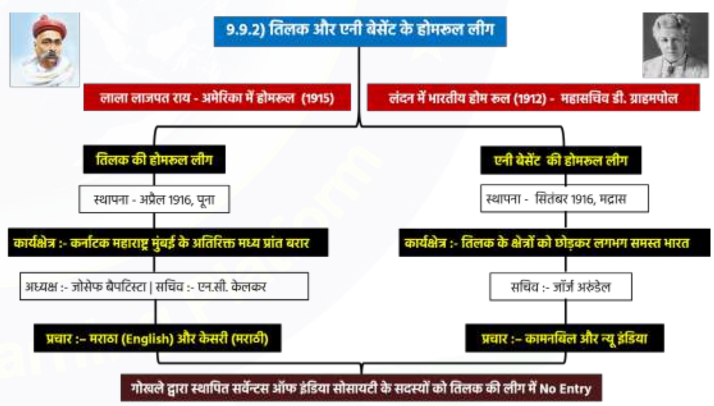

9.9.3) होमरूल लीग के कारण

1. कांग्रेस विभाजन के पश्चात उपजी राजनैतिक निष्क्रियता
2. 1909 के मार्ले मिंटो सुधार (भारत परिषद अधिनियम) के बाद उदारवादी नेताओं की लोकप्रियता में कमी।
3. स्वदेशी आंदोलन के उपरांत राष्ट्रीय नेतृत्व की शून्यता :- बाल गंगाधर तिलक को जेल भेजा गया जबकि अरविंद घोष ने राजनीति से संन्यास ले लिया
4. एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक का कुशल नेतृत्व
5. प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश साम्राज्यवाद की वास्तविक प्रवृत्ति तथा मंशा का उजागर होना।

6. प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत में महंगाई, कर वृद्धि इत्यादि से जन असंतोष बढ़ गया था।

9.9.4) कार्यक्रम

1. केसरी (मराठी भाषा में) एवं मराठा (अंग्रेज़ी भाषा में) पत्रों के माध्यम से तिलक ने, जबकि न्यू इंडिया एवं कॉमनवील (साप्ताहिक पत्र) नामक पत्रों के माध्यम से एनी बेसेंट ने जनसंचार का कार्य किया
2. तिलक ने समस्त भारत का दौरा करके जनमत तैयार करने का कार्य किया तथा नारा दिया, "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा" ।
3. 1917 ई. में अध्यक्ष पद पर रहते हुए एनी बेसेंट ने कहा कि "भारत अब अनुग्रहों के लिये अपने घुटनों पर नहीं, बल्कि अधिकारों के लिये अपने पैरों पर खड़ा है।"

9.9.5) होमरूल आंदोलन के मंद पड़ने के कारण

1. ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियां :-
   - तिलक एवं बिपिन चंद्र पाल के दिल्ली एवं पंजाब में प्रवेश पर रोक।
   - जून 1917 में एनी बेसेंट, जॉर्ज अरुंडेल, बीपी वाडिया को गिरफ्तार कर लिया गया जिसके विरोध में एस सुब्रमण्यम अय्यर ने नाइटहुड की उपाधि वापस कर दी।
   - मद्रास में छात्रों के जनसभा में शामिल होने पर प्रतिबंध
2. एडविन मोंटेग्यू की घोषणा तथा नेतृत्व विहीनता :-
   - नवीन भारत सचिव मोंटेग्यू ने संसद में कहा कि भारतीयों को स्वशासन का अवसर मिलना चाहिए।
   - इस घोषणा के पश्चात एनी बेसेंट ने आंदोलन वापस ले लिया
   - 1918 में वैलेंटाइन शिरोल ने अपनी पुस्तक "इंडियन अनरेस्ट" में तिलक को भारतीय अशांति का जनक कहा जिसके पश्चात तिलक, शिरोल पर मानहानि का मुकदमा करने लंदन चले गए।
3. 1917-18 के सांप्रदायिक दंगे
4. गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा स्थापित सर्वेंट ऑफ़ इंडिया सोसाइटी के सदस्यों को लीग में प्रवेश ना करने देना।

1920 में गांधी जी द्वारा होम रूल लीग का नाम बदलकर स्वराज सभा कर दिया गया। इस प्रकार यह आंदोलन अपने मूल उद्देश्य होमरूल को प्राप्त नहीं कर सका, परंतु इसने पुनः राष्ट्रव्यापी आंदोलन की भावना को जीवित करके आगामी आंदोलनों की आधारशिला तैयार की।

9.9.6) होमरूल आंदोलन का महत्व या उपलब्धियां

1. राष्ट्रव्यापी जन आंदोलन को जन्म देकर, गांधीजी के लिए भावी राष्ट्रीय आंदोलन की आधारशिला तैयार की।
2. राजनीतिक शून्यता के दौर में राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान करके आगे बढ़ाया।
3. राष्ट्रीय आंदोलन के भावी नेता जैसे मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, तेज बहादुर सप्रू, भूलाभाई देसाई, चितरंजन दास, के एम मुंशी, सैफुद्दीन किचलू, मदन मोहन मालवीय, मोहम्मद अली जिन्ना, लाला लाजपत राय आदि होम रूल लीग के सदस्य थे।
4. इस आंदोलन में पेशेवर और मध्यम वर्ग की भागीदारी सर्वाधिक थी हालांकि मुस्लिम वर्ग, स्त्री, व्यापारी और मजदूर वर्ग ने भी भाग लिया।
5. 1916 के लखनऊ समझौते के तहत गरमपंथियों के पुनः प्रवेश से कांग्रेस दोबारा ऊर्जावान हो गई।
6. उदारवादी शासन पर सहमति प्रकट करते हुए भारत शासन अधिनियम 1919 या मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार भारत में पारित हुआ।

9.10) कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन 1916

1. अंबिका चरण मजूमदार की अध्यक्षता में आयोजित कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (1916) द्वारा गरमपंथियों की कांग्रेस में वापसी तथा कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य समझौता हुआ।
2. महत्वपूर्ण कारक :- एनी बेसेंट व बाल गंगाधर तिलक तथा 1915 में उदारवादी नेता गोपाल कृष्ण गोखले एवं फिरोजशाह मेहता की मृत्यु।
3. लखनऊ समझौता या कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के मध्य समझौता
   - कांग्रेस द्वारा उत्तरदाई शासन की मांग को लीग ने स्वीकार किया जबकि कांग्रेस द्वारा मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन व्यवस्था को स्वीकार किया गया।
   - दोनों पार्टियां ब्रिटिश सरकार को संवैधानिक सुधारों हेतु संयुक्त योजना भेजने पर सहमत हुए।
   - केंद्रीय व्यवस्थापिका में कुल निर्वाचित सदस्यों का 1/9 भाग तथा प्रांतीय सभाओं में निर्वाचित भारतीयों की संख्या का एक निश्चित हिस्सा मुस्लिम वर्ग के लिए आरक्षित किया जाएगा।
   - एनी बेसेंट और तिलक ने इसका समर्थन किया जबकि मदन मोहन मालवीय ने इसका विरोध।

यह समझौता असहयोग आंदोलन की समाप्ति पर स्थगित हो गया परंतु कांग्रेस के द्वारा सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली की मांग स्वीकार करने के कारण भारत में सांप्रदायिकता का बीजारोपण हुआ, जिसके परिणामस्वरूप द्विराष्ट्र सिद्धांत की अवधारणा के तहत भारत का विभाजन हुआ।

9.11) मोंटेग्यू की घोषणा, 1917

1. एडविन मोंटेग्यू को 1917 में भारत के लिए राज्य सचिव नियुक्त किया गया था

2. 20 अगस्त 1917 को मोंटेग्यू ने ब्रिटिश संसद में अगस्त घोषणा की। इस घोषणा ने प्रशासन में भारतीयों की बढ़ती भागीदारी और भारत में स्वशासी संस्थाओं के विकास का प्रस्ताव रखा।
3. वर्ष 1918 में राज्य सचिव एडविन सेमुअल मांटेग्यू (Edwin Samuel Montagu) और वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने संवैधानिक सुधारों की अपनी योजना तैयार की, जिसे मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड (या मोंट-फोर्ड) सुधार के रूप में जाना जाता है, जिसके कारण वर्ष 1919 के भारत शासन अधिनियम को अधिनियमित किया गया।
4. वर्ष 1921 में मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों को लागू किया गया।
5. इस अधिनियम का एकमात्र उद्देश्य भारतीयों का शासन में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना था।

Lord Chelmsford

Edwin Montagu

9.11.1) 1919 अधिनियम के प्रमुख प्रावधान

1. वायसराय की कार्यकारी परिषद में आठ सदस्यों को शामिल करने का प्रावधान किया गया जिसमें तीन भारतीय सदस्यों को शामिल करना था।
2. इस अधिनियम द्वारा केंद्रीय विधायिका को अधिक शक्तिशाली और जवाबदेह बनाया गया।
3. द्विसदनीय विधानमंडलः अधिनियम में द्विसदनीय विधायिका की शुरुआत की गई जिसमें निम्न सदन या केंद्रीय विधानसभा (Lower House or Central Legislative Assembly) और उच्च सदन या राज्य परिषद (Upper House or Council of State) शामिल थी।
4. विधायिका का कार्यकाल वर्ष का था, जिसे वायसराय अपने अनुसार बढ़ा सकता था।
5. इस अधिनियम ने प्रांतीय स्तर पर कार्यपालिका हेतु द्वैध शासन प्रणाली (दो व्यक्तियों/पार्टियों का शासन) की शुरुआत की।
6. विषयों को दो सूचियों में विभाजित किया गया थाः 'आरक्षित' और 'स्थानांतरित'। आरक्षित सूची में शामिल विषयों का प्रशासन गवर्नर
7. महिलाओं को भी वोट देने का अधिकार दिया गया।
8. प्रांतीय विधान परिषदों का और अधिक विस्तार किया गया तथा 70% सदस्यों का चुनाव किया जाना था।

9.12) संभावित प्रश्न (Possible Questions)

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. उन कारकों का वर्णन कीजिए जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान में सहायता की ?
2. भारत में राष्ट्रीयता के उदय और विकास का वर्णन कीजिए?
3. 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना किन कारणों से हुई?
4. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के उद्देश्य बताइए?
5. भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग तड़ित चालक के रूप में किया स्पष्ट कीजिए?
6. बंगाल विभाजन के कारणों को स्पष्ट कीजिए ?
7. स्वदेशी आंदोलन पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए ?
8. कांग्रेस के सूरत विभाजन पर लेख लिखिए ?
9. होमरूल आंदोलन के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए?
10. बंगाल का विभाजन लॉर्ड कर्जन की महान भूल थी, स्पष्ट कीजिए ?
11. स्वदेशी आंदोलन के महत्व पर प्रकाश डालिए ?
12. बंगाल विभाजन की परिस्थितियों का वर्णन कीजिए ?
13. उदार वादियों के सिद्धांतों या राजनीतिक विचारों की व्याख्या कीजिए ?
14. स्वदेशी आंदोलन के कारण एवं महत्व पर प्रकाश डालिए ?
15. उदार वादियों के कोई चार सिद्धांत लिखिए ?
16. लार्ड कर्जन द्वारा किया गया बंगाल विभाजन अपने उद्देश्य और प्रभाव से एक धूर्तता पूर्ण कार्य था स्पष्ट कीजिए ?
17. भारतीय राजनीति में उदार वादियों और गरमदलियो के राजनीतिक विचारों में अंतर स्पष्ट कीजिए ?
18. लाल बाल पाल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?
19. उदार वादियों के विचारों में आदर्शवाद तथा यथार्थवाद का सुंदर समन्वय था इसको स्पष्ट कीजिए ?
20. गरम दलों के मुख्य सिद्धांत तथा कार्यक्रम की व्याख्या कीजिए ?
21. 1907 ईस्वी में कांग्रेसमें जो फूट पड़ी उसके क्या कारण थे? उसके क्या परिणाम हुए?
22. ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थापना किन परिस्थितियों में हुई ? उसकी क्या उद्देश्य थे ?
23. भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में गरमदली आंदोलन की भूमिका पर प्रकाश डालिए?
24. बाल गंगाधर तिलक के योगदान पर टिप्पणी लिखिए ?
25. लखनऊ समझौते पर एक टिप्पणी लिखिए ?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. इंडियन लीग
2. लंदन इंडिया क्रमेटी
3. लैंडहोल्डर्स सोसायटी
4. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
5. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन
6. तड़ित चालक सिद्धांत
7. सेफ्टी वाल्व सिद्धांत
8. चार प्रमुख उदारवादी नेताओं के नाम
9. बंगाल विभाजन
10. स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन
11. मुस्लिम लीग
12. प्रथम दिल्ली दरबार
13. होमरूल आंदोलन
14. कांग्रेस का प्रथम विभाजन
15. चार प्रमुख उग्रवादी नेताओं के नाम
16. कृष्ण कुमार मित्र
17. केसरी तथा मराठा

अध्याय – 10
राष्ट्रीय आंदोलन का गांधीवादी चरण
(Gandhian phase of national movement (1919-1942)

1. महात्मा गांधी का परिचय तथा विचारधारा
2. रौलट एक्ट (1919)
3. जलियांवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919)
4. खिलाफत आंदोलन (1919)
5. कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन (1920)
6. असहयोग आंदोलन (1920)
7. स्वराज पार्टी (1923)
8. साइमन कमीशन (1927)
9. नेहरू रिपोर्ट (1928)
10. जिन्ना का 14 सूत्री फार्मूला (1928)
11. पूर्ण स्वराज तथा लाहौर अधिवेशन (1929)
12. गांधीजी की 11 सूत्री मांगे (1930)
13. दांडी मार्च (1930) तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन
14. लाल कुर्ती आंदोलन
15. गोलमेज सम्मेलन तथा गांधी इरविन समझौता
16. सांप्रदायिक पंचाट व पूना पैक्ट (24 दिसंबर 1932)
17. प्रांतीय चुनाव (1937)
18. अगस्त प्रस्ताव (1940)
19. व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)
20. पाकिस्तान की मांग (1940)
21. क्रिप्स मिशन (मार्च 1942)
22. भारत छोड़ो आंदोलन (1942)
23. वर्धा प्रस्ताव (1942)

10.1) महात्मा गांधी का परिचय व विचारधारा

10.1.1) सामान्य परिचय

महात्मा गांधी ने सत्य,अहिंसा व सत्याग्रह के साधनों से 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में विशाल जन आंदोलन को आरंभ किया जिसकी परिणिति भारत की स्वतंत्रता हुई

1. मूल नाम :- मोहनदास करमचंद गांधी
2. जन्म :- 2 अक्टूबर 1869 पोरबंदर (काठियावाड़,गुजरात)
3. पिता :- पोरबंदर,राजकोट एवं बीकानेर के दीवान करमचंद गांधी
4. माता :- पुतली बाई (अत्याधिक धार्मिक)
5. विवाह :- 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबा गांधी (1882)
6. चार पुत्र :- हरीलाल, रामदास, मणिलाल एवं देवदास [जमनालाल बजाज को पांचवां पुत्र कहकर पुकारा]
7. शिक्षा :- राजकोट में आरंभिक जबकि लंदन (1889-91) में वकालत
8. 1893 :- भारत में राजकोट व बम्बई में वकालत के बाद गुजराती व्यापारी दादा अब्दुला का मुकदमा लड़ने हेतु दक्षिण अफ्रीका गए (1893-1915)
9. प्रथम सत्याग्रह (1906) :- दक्षिण अफ्रीका में पंजीकरण प्रमाण पत्र के विरुद्ध
10. 1901 :- पहली बार कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल (कलकत्ता)
11. 9 जनवरी 1915 :- भारत आगमन (प्रवासी भारतीय दिवस)
12. राजनैतिक गुरु :- गोपाल कृष्ण गोखले
13. गांधी जी पर निम्न व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा :-
    - शारीरिक परिश्रम - जॉन रस्किन की पुस्तक अंटू दिस लास्ट
    - सत्याग्रह व सविनय अवज्ञा - हेनरी थारो के निबंध सिविल डिसओविडिएंस से
    - अहिंसा - जैन व बौद्ध धर्म
    - टॉलस्टॉय - ईश्वर का राज्य तुम्हारे अंदर है
14. मृत्यु :- 30 जनवरी 1948, बिड़ला हाउस दिल्ली (5:15pm) [अभियुक्त नाथूराम गोडसे व नाना आप्टे को 15 नवंबर 1949 को अम्बाला जेल में फांसी]
    - J. L. नेहरू - हमारे जीवन से प्रकाश चला गया

आश्रम	स्थान	वर्ष
1. टॉलस्टाय फार्म	जोहान्सबर्ग	1910
2. फीनिक्स फार्म	डरबन	1904
3. साबरमती आश्रम	साबरमती नदी (अहमदाबाद)	1915
4. सत्याग्रह आश्रम	कोचरब (अहमदाबाद)	1915
5. अनाशक्ति आश्रम	कौसानी (उत्तराखण्ड)	1929
6. सेवाग्राम आश्रम	वर्धा (महाराष्ट्र)	1936

उपाधि	सम्बोधनकर्ता
कैसर-ए-हिन्द	प्रथम विश्व युद्ध के समय
भर्ती करने वाला सार्जेंट	प्रथम विश्व युद्ध के समय
कुली बैरिस्टर	दक्षिण अफ्रीका के अंग्रेज मजिस्ट्रेट
आधुनिक युग के अज्ञात शत्रु	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
मलंग बाबा	कबायलियों द्वारा
बापू	सी.एफ एण्ड्रूज व जवाहरलाल
अर्द्धनग्र/देशद्रोही फकीर	विंस्टन चर्चिल
भिखारियों का राजा	पं. मदन मोहन मालवीय
राष्ट्रपिता	सुभाष चन्द्र बोस
वन मैन ब्राउंड्री फोर्स	लॉर्ड माउंटबेटन
महात्मा	रवीन्द्रनाथ टैगोर

उपाधि :

- कर्मवीर
- कुली वैरिस्टर (अंग्रेजों ने उपहास रूप मे)
- सेवा ग्राम का संत
- मलंग बाबा (पश्चिमी सीमा प्रांत के कबाइली लोगों द्वारा)
- भर्ती करने वाला सार्जेंट (अंग्रेजों द्वारा)
- कैसर ए हिन्द
- जुलु युद्ध पदक और बोअर युद्ध पदक
- अर्ध नंगा फ़क़ीर एवं देशद्रोही फकीर (1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान ब्रिस्टल चर्चिल द्वारा)
- महात्मा (चंपारण सत्याग्रह के सफल नेतृत्व के कारण सर्वप्रथम रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा(कुछ विद्वानों के अनुसार राजवैध जीवराम कालिदास द्वारा)
- बापू (जवाहर लाल नेहरू द्वारा)
- राष्ट्रपिता(सुभाष चंद्र बोस ने 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो से अपने संबोधन में सर्वप्रथम सम्बोधित किया)
- वन मैन बाउंड्री फोर्स (लार्ड माउंटबेटन ने)

पुस्तक :

- एक लेखक के रूप में गाँधी जी की पहली पुस्तक 'लंदन गाइड' थी।
- दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों की दुर्दशा का चित्रण उन्होंने 'इण्डियन-फ्रेंचाइज' संज्ञक पुस्तक में किया है।
- 'ए गाइड टू-हेल्थ' में गाँधी जी ने सात्विक आहार के महत्व का निरूपण किया है।
- 1909 में दक्षिण अफ्रीका की धरती पर 'हिन्द स्वराज' या 'इंडियन होम रूल' नामक कृति का गाँधी जी ने सृजन किया।
- 'माई आर्ली लाइफ', माई एक्सपेरिमेंट विथ ट्रुथ' 'माई चाइल्ड हुड' एवं 'इण्डियन ओपेनियन' गाँधी जी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं।
- रस्किन बांड की पुस्तक 'अन-टू-दि-लॉस्ट' का गुजराती भाषा में 'सर्वोदय' नाम से गाँधी जी ने अनुवाद किया ।
- 'स्टोरी ऑफ सत्याग्रही' नामक पुस्तक में गाँधी जी ने प्लेटो की पुस्तक 'डिफेंस एण्ड डेथ ऑफ सार्केर' के मूल्यों को आधार बनाया है।
- गाँधी जी ने भारतीय संतों के गीतों का एक अंग्रेजी अनुवाद 'सांग्स फ्रॉम दी प्रिजन' नाम से प्रस्तुत किया। इसके अलावा गाँधी जी द्वारा समय-समय पर अनेक पत्र और पत्रिकाओं का सम्पादन किया गया।
- 1893 में दक्षिण अफ्रीका से 'इण्डियन ओपेनियन', 1919 में गुजरात के इंदुलाल याज्ञनिक के सहयोग से 'नवजीवन' नामक मासिक पत्रिका गुजराती तथा हिन्दी भाषा में निकाली गई।
- 1919 में अंग्रेजी भाषा में गाँधी जी ने 'यंग इण्डिया' नामक पत्रिका का सम्पादन किया।
- 1933 में हिन्दी साप्ताहिक 'हरिजन' और हरिजन सेवक एवं हरिजन बंधु आदि का सम्पादन किया।

10.1.2) गांधी जी की विचारधारा

1. **सत्याग्रह :-**
   - सत्य और अहिंसा पर आधारित गांधीवादी सिद्धान्त
   - अर्थ - अहिंसा का प्रयोग करते हुए असत्य पर आधारित बुराई का विरोध करना फिर चाहे कितनी भी यातनाएं सहन करना पड़ा
   - साधन - असहयोग, सविनय अवज्ञा, बहिष्कार, धरना आदि
   - महत्व - यह भौतिक शक्ति को नैतिक शक्ति के सामने झुकाने की कला, जिसमें सत्य व अहिंसा के कारण व्यापक जनभागीदारी होती है
   - सत्याग्रह व निष्क्रिय प्रतिरोध में अंतर - निष्क्रिय प्रतिरोध में शोषक के प्रति आक्रोश का भाव होता है, जबकि सत्याग्रह में शोषक के प्रति मानवीय भाव रखा जाता है। निष्क्रिय प्रतिरोध से प्राप्त लक्ष्य प्रायः अल्पकालिक होता है, क्योंकि शोषक को जैसे ही पुनः शोषण करने का मौका प्राप्त होता है, वह पुनः समस्या उत्पन्न कर देता है। इसके विपरीत सत्याग्रह से प्राप्त लक्ष्य दीर्घकालिक होता है, क्योंकि इससे दोनों पक्षों को आत्मिक संतोष मिलता है।
2. **साधन एवं साध्य की पवित्रता :-**
   - मैकियावेली के विपरीत साध्य व साधन दोनों की पवित्रता पर बल
   - उदाहरण - वृक्ष की प्रकृति बीज के अनुरूप होती है

- गाँधीजी ने स्वराज जैसे पवित्र साध्य की प्राप्ति हेतु सत्याग्रह जैसे पवित्र साधन का उपयोग किया

3. **वर्ग समन्वय :-**
   - कार्ल मार्क्स वर्ग सिद्धांत के विपरीत गांधी जी ने वर्ग समन्वय की अवधारणा दी
   - अर्थ - देश की स्वतंत्रता हेतु सभी वर्गों (जमींदार, किसान, शिक्षित, अशिक्षित, व्यापारी, मजदूर आदि) की भागीदारी तथा विकास
4. **सर्वोदय की अवधारणा :-**
   - बेंथम के उपयोगितावादी सिद्धान्त (अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख) के स्थाएँ पर सर्वोदय(सभी का समान उदय) पर बल
   - अर्थ - प्रत्येक व्यक्ति की भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति
   - यह अवधारणा जॉन रस्किन के विचारों से प्रेरित है
5. **शिक्षा सम्बंधी विचार :-**
   - मातृ भाषा में शिक्षा के समर्थक
   - उत्पादन, व्यवसायी व तकनीकी शिक्षा पर बल
   - उद्देश्य - आत्म साक्षात्कार, आध्यात्मिक व चारित्रिक गुणों से परिपूर्ण शिक्षा
   - उदाहरण - वर्धा शिक्षा योजना
6. **आर्थिक विचार :-**
   - मशीनीकरण के स्थान पर लघु व कुटीर उद्योग
   - आत्मनिर्भर व ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था
   - औद्योगिक पूंजीवाद के आलोचक
   - ट्रस्टीशिप या न्यास का सिद्धांत - यह पूंजीवाद और समाजवाद के समन्वय का रूप है जिसके अनुसार संपत्ति का स्वामित्व निजी होने के बावजूद मालिक उसे सार्वजनिक उपयोग के लिए उपलब्ध कराएगा अतः मालिक निजी संपत्ति का ट्रस्टी है
7. **सामाजिक विचार :-**
   - जातीय व लैंगिक समानता पर बल
   - कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था के समर्थक
   - अस्पृश्यता के संपूर्ण उन्मूलन पर विशेष बल

10.1.3) गांधी जी की कार्यपद्धति/रणनीति

1. संघर्ष-विराम-संघर्ष की रणनीति :- गांधीजी के अनुसार जनता के दमन सहन करने की शक्ति सीमित होती है जिस कारण कोई भी आंदोलन निरंतर नहीं चलाना चाहिए बल्कि विराम लेकर रचनात्मक कार्यों से जन भागीदारी बढ़ाने के बाद पुनः आंदोलन करना चाहिए

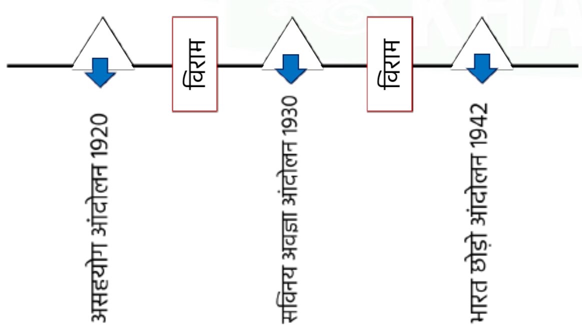

2. **दबाव समझौता दबाव की रणनीति :-** गांधी जी ने संघर्ष के साथ साथ समझौते पर भी बल दिया गांधीजी ने प्रारंभिक दबाव के उपरांत अंग्रेजों से समझौता कर शेष रह गए उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पुनः अंग्रेजों पर दबाव बनाने की नीति अपनाई। जन आंदोलनों को वापस लेना और फिर शुरू करना गांधीजी की इसी रणनीति का एक पहलू था।
3. **नियंत्रित जनआंदोलन पर बल :-**
   - सत्याग्रह और अहिंसा के द्वारा नियंत्रित जन आंदोलन पर बल
   - उद्देश्य - विस्तृत जन भागीदारी तथा आंदोलन को हिंसक होने से बचाना, ताकि ब्रिटिश सरकार आंदोलन का हिंसक दमन ना कर सके
4. **अन्य :-**
   - कताई, बुनाई, खादी, चरखा जैसे रचनात्मक साधनों का प्रयोग
   - जनता की केंद्रीय भूमिका पर बल
   - अत्यधिक सामान्य जीवन शैली जैसे आसान व मातृभाषा में लोगों से संवाद तथा अति सामान्य वेशभूषा
   - ग्रामीण क्षेत्रों में सभी वर्गों यथा किसान, मजदूर आदि को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ना

इस तरह गांधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन की सुषुप्तावस्था को समाप्त करके आंदोलन को एक निश्चित दिशा, उद्देश्य व नेतृत्व देकर सफल बनाया

10.1.4) गांधीजी का दक्षिण अफ्रीका प्रवास

1. 1893 में गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने हेतु डरबन गए
2. **मुख्य समस्याएं :-**
   - प्रजातीय व रंग आधारित भेदभाव - गांधी जी को मेरित्सबर्ग नामक स्टेशन पर रेल के प्रथम श्रेणी डिब्बे से धक्का देकर उतारा
   - भारतीयों को अपने साथ अंगूठे के निशान वाले पंजीकरण प्रमाण पत्र की अनिवार्यता
   - भारतीय श्रमिकों पर 3 पौंड का कर
   - गैर ईसाई पद्धति से संपन्न विवाहों को अवैध घोषित करना

इन अत्याचारों के निवारण हेतु गांधीजी ने पहले उदारवादी(1894-1906) तरीकों को अपनाया फिर अहिंसात्मक प्रतिरोध (1906-1914) को

3. **दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के मुख्य कार्य :-**
   - 1894 - नटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना
     - ✓ अखबार - इंडियन ओपिनियन (गुजराती, हिंदी , अंग्रेजी और तमिल)
   - 1904 - डरबन में फिनिक्स आश्रम की स्थापना
     - ✓ गांधी जी का प्रथम आश्रम
     - ✓ फरवरी 2000 में पुनः खोला गया
   - 1906 - पंजीकरण प्रमाणपत्र की अनिवार्यता के विरोध में 'सत्याग्रह
     - ✓ गांधीजी का प्रथम सत्याग्रह
     - ✓ 1908 में जेल
   - 1909 :- लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए 'हिंद स्वराज' नामक पुस्तक की रचना
   - 1910 :- सत्याग्रह में शामिल व्यक्तियों की सहायता हेतु जर्मन शिल्पकार 'कॉलेन बाख' की सहायता से 'टॉलस्टॉय फॉर्म' की स्थापना

✓ परिणाम - 1914 तक भारतीयों से भेदभाव करने वाले अधिकतर कानूनों को खत्म किया गया

- 9 जनवरी 1915 - 21 वर्षों के बाद दक्षिण अफ्रीका से भारत वापसी

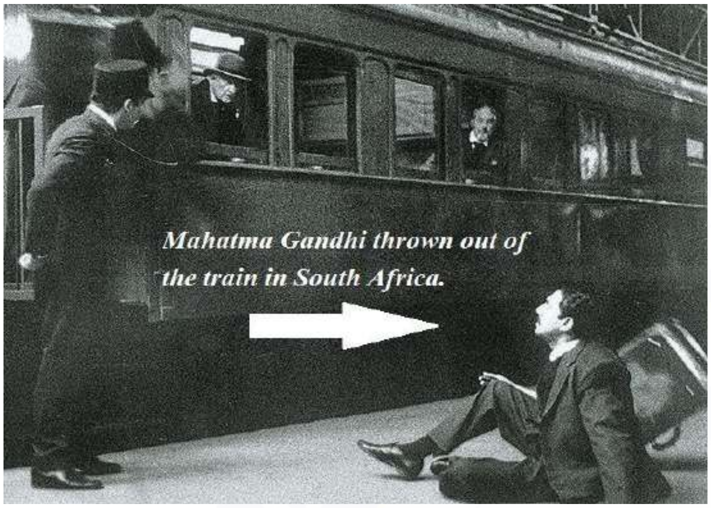

4. **महत्व :-**
- गांधीजी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
- दक्षिण अफ्रीका में किये गए सत्याग्रह में गांधी जी को अनेक समुदायों धर्मों एवं वर्गों का समर्थन प्राप्त हुआ
- दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को प्राप्त हुए इसी समर्थन में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए आधार का काम किया
- दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को एक विशेष राजनैतिक शैली, नेतृत्वकारी क्षमता तथा संघर्ष नवीन पद्धतियों को विकसित करने का अवसर मिला
- इस प्रकार गांधी को अपनी रणनीति, कार्य पद्धति एवं संघर्ष के तरीकों की कमजोरियों एवं मजबूतियों को जानने का उचित अवसर प्राप्त हुआ, जिससे भारत में इन रणनीतियों एवं कार्य प्रणालियों का प्रभावी क्रियान्वयन हो सका जिसकी प्रयोगशाला दक्षिण अफ्रीका सिद्ध हुई

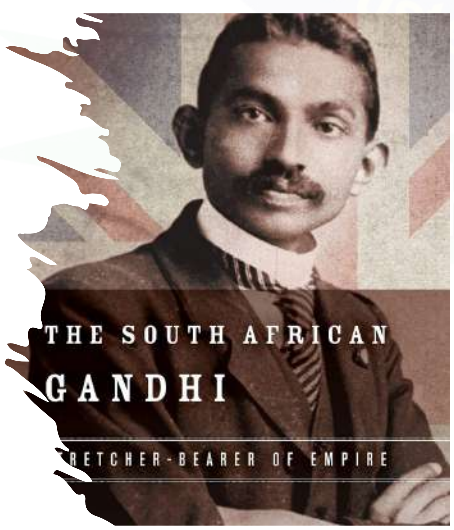

10.1.5) महात्मा गांधी का भारत आगमन व आरंभिक आंदोलन

A) प्रथम विश्व युद्ध (1914-18)

1. 9 जनवरी 1915 :- भारत आगमन
2. गोपाल कृष्ण गोखले को राजनीतिक गुरु माना
3. प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजो का समर्थन
4. कारण - अंग्रेज युद्ध के बाद भारत को स्वराज प्रदान करेंगे
5. गांधीजी को भर्ती करने वाला सार्जेन्ट कहा गया
6. इंग्लैंड में गांधीजी को केसर-ए-हिंद की उपाधि दी
7. एक वर्ष तक तक भारत भ्रमण
8. अहिंसक प्रतिरोध / सत्याग्रह की नीति द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को आगे बढ़ाया

B) अहमदाबाद का श्रमिक विवाद, 1918

1. अहमदाबाद के मिल मालिकों और श्रमिकों में 'प्लेग बोनस' को लेकर विवाद की स्थिति।
2. कारण :-
3. मिल मालिक 20% बोनस देना चाहते थे, जबकि गांधी 35% चाहते थे, जिसे बाद में स्वीकार कर लिया गया
4. मालिकों द्वारा मजदूरों को दिए जाने प्लेग बोनस को समाप्त करना
5. प्रथम विश्व युद्ध के कारण मंहगाई
6. शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीके से कामबंदी और भूख हड़ताल
7. प्रमुख सहयोगी :- मिल मालिक अंबालाल साराभाई (विरोधी) की बेटी अनुसूया बेन
8. गांधीजी का प्रथम सफल आमरण अनशन
9. 'अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन' की स्थापना

10.1.6) गांधीजी के उदय के कारण

- तात्कालिक परिस्थितियां
- गांधी जी की विचारधारा
- कार्यपद्धती

तात्कालिक परिस्थितियां:

1. राजनीतिक शून्यता
2. दक्षिण अफ्रीका से प्राप्त अनुभव
3. प्रथम विश्व युद्ध से उपजी समस्याएं

10.2) रौलेट एक्ट या द अनार्किकल एवं रिवॉल्यूशनरी क्राइम एक्ट 1919

1. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बढ़ने वाली भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने हेतु लॉर्ड चेम्सफोर्ड द्वारा 10 दिसंबर 1917 को न्यायाधीश सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में देशद्रोह समिति का गठन
2. मुख्य सिफारिश :- अप्रैल 1918 में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार भारत में क्रांतिकारी एवं अराजकतावादी कानून बनना चाहिए
3. **18 मार्च 1919 में भारतीयों के तीव्र विरोध के बाद भी क्रांतिकारी एवं अराजकतावादी अधिनियम पारित :-**
   - ब्रिटिश सरकार द्वारा बिना मुकदमे के भारतीयों को जेल में बंद करना
   - साक्ष्य विधि के अंतर्गत अमान्य साक्ष्यों की कोर्ट द्वारा मान्यता
   - कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध अपील नहीं की जा सकती
   - बिना वारंट की तलाशी एवं गिरफ्तारी
4. **प्रतिक्रिया :-**
   - भारतीयों द्वारा अधिनियम का "काला कानून" तथा "बिना वकील, बिना अपील व बिना दलील" वाला कानून कहकर तीव्र विरोध
   - जिन्ना, मदन मोहन मालवीय और मजहरुल हक ने केंद्रीय व्यवस्थापिका से इस्तीफा दिया
   - महात्मा गांधी ने सत्याग्रह सभा की स्थापना करके 6 अप्रैल 1919 को देशव्यापी अहिंसक हड़ताल को शुरू किया
5. **अन्य तथ्य :-**
   - महात्मा गांधी - " यह कानून बिल्कुल अनुचित, स्वतंत्रता विरोधी तथा व्यक्ति के मूल अधिकारों की हत्या करने वाला है"
   - सत्याग्रह सभा के सदस्य - जमनालाल बजाज, शंकरलाल बैकर, उमर सोमानी, बी.जी. हार्नीमन आदि
   - गांधी जी ने आन्दोलन हेतु होमरूल लीग तथा कुछ इस्लामी समूहों का प्रयोग किया
   - सत्याग्रह का प्रभाव दिल्ली(स्वामी श्रद्धानंद), पंजाब(डॉ सत्यपाल व सैफुद्दीन किचलू), बम्बई, लाहौर आदि में फैला
   - सरकार द्वारा हिंसक व दमनात्मक नीतियों का प्रयोग
   - 9 अप्रैल 1919 को गांधी जी को हरियाणा के पलवल में गिरफ्तार किया गया जब वे पंजाब जा रहे थे

   हालांकि यह आंदोलन रोलेट को निरस्त नहीं किया जा सका परंतु इस देशव्यापी आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी जी व कांग्रेस को अग्रणी पंक्ति में खड़ा कर दिया
6. **कथन :-**
   - चिंतामणि - रोलेट एक्ट से देश भर में विरोध की भावना भड़क उठी थी इसका विरोध प्रत्येक गैर सरकारी भारतीय निर्वाचित एवं मनोनीत सदस्यों ने किया था किंतु सरकार अपनी बात पर अड़ी रही और इस विधेयक को पारित कराने में सरकार ने अपनी सारी शक्ति लगा दी
   - जवाहरलाल नेहरू - रोलेट अधिनियमो से सारे देश में रोष की लहर दौड़ गयी और सभी भारतीय ने उसका विरोध किया
   - महात्मा गांधी - मुझे पहला धक्का रोलेट अधिनियम से लगा है जो जनता की स्वतंत्रता छीनने के उद्देश्य से बनाया गया था मुझे मेरी अंतरात्मा से प्रेरणा मिली कि इसके विरुद्ध तीव्र आंदोलन करना होगा

10.3) जलियांवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919)

1. **घटना :-** 13 अप्रैल 1919(बैसाखी) को रौलेट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जलियांवाला बाग में आयोजित शांतिपूर्ण सभा पर पंजाब के तत्कालीन जनरल रेजीनॉल्ड एडवर्ड हैरी डायर गोलीबारी से 1000 से ज्यादा लोगों की मृत्यु
2. **कारण :-**
   - सरकार द्वारा रौलेट एक्ट पारित करना
   - गांधी जी के पंजाब आगमन को रोकने हेतु पलवल में गिरफ्तारी
   - पंजाब में दो नेताओं(डॉ सत्यपाल व सैफुद्दीन किचलू) की बिना कारण गिरफ्तारी
   - पंजाब में मार्शल लॉ लागू करना
3. **आलोचनाएं :-**
   - रविंद्र नाथ टैगोर - नाइटहुड की उपाधि वापस की
   - संकरन नायर - वायसराय की कार्यकारिणी परिषद से इस्तीफा
   - सी. एफ. एंड्रूज़ (दीनबन्धु) - जानबूझकर की गई क्रूर हत्या
   - मांटेग्यू - निवारक हत्या
   - ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरून (2013) - ब्रिटिश इतिहास की शर्मनाक घटना
   - समितियों / जांच आयोग का गठन

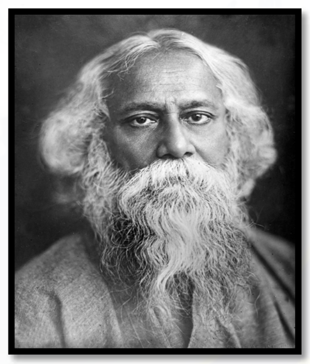

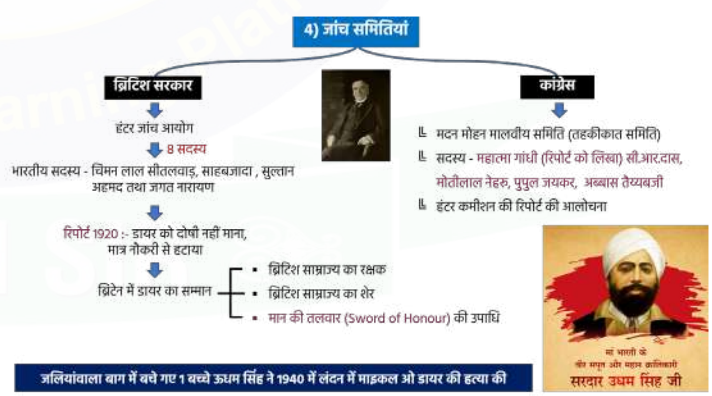

10.4) खिलाफत आंदोलन

प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश ने अपने वादे के प्रतिकूल तुर्की साम्राज्य का विभाजन करके खलीफा पद समाप्त कर दिया, जिससे 1919-20 में भारतीय मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन शुरू कर दिया

1 कारण
2 उद्देश्य
3 घटनाक्रम
4 पतन
5 परिणाम
6 मूल्यांकन

A) कारण

4. प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की का जर्मनी को समर्थन
5. भारतीय मुसलमानों का समर्थन प्राप्त करने हेतु
6. तुर्की का खलीफा मुस्लिम विश्व का आध्यात्मिक गुरु माना जाता है भारतीय मुसलमान भी उससे भावनात्मक रूप से जुड़ते थे
7. वस्तुत प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की, इंग्लैंड के विरुद्ध था किंतु ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों का समर्थन लेने के लिए यह आश्वासन दिया था कि तुर्की सुल्तान का सम्मान बनाए रखा जाएगा किंतु सेवर्स की संधि के तहत ब्रिटिश ने जब इस आश्वासन को भंग कर दिया और तुर्की राज्य का विभाजन कर दिया अतः मुस्लिम समुदाय असंतुष्ट हुआ और ब्रिटिश के विरुद्ध खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ
8. गांधी ने हिंदू मुस्लिम एकता के अगले कदम के रूप में खिलाफत आंदोलन को समझा इसी क्रम में कांग्रेस को भी ब्रिटिश के विरुद्ध असहयोग आंदोलन के लिए तैयार किया

B) उद्देश्य

1. खलीफा के सम्मान, सर्वोच्चता एवं शक्ति की पुनर्स्थापना
2. खलीफा के पक्ष में जनमत तैयार कर तुर्की का विभाजन रोकना
3. हिंदू मुस्लिम एकता
4. खलीफा के अधीन इतना भूभाग हो कि वह इस्लाम की रक्षा कर सकें
5. जजीरतुल अरब (अरब, सीरिया, इराक, फिलिस्तीन) पर मुसलमानों की संप्रभुता बनी रहे

C) घटनाक्रम

1. 1919 में अली बंधुओं (शौकत अली, मोहम्मद अली) अजमल खान, मौलाना आजाद आदि के नेतृत्व में खिलाफत कमेटी का गठन हुआ जिसका उद्देश्य तुर्की के प्रति ब्रिटेन के व्यवहार को बदलने के लिए दबाव बनाना था
2. कमेटी का अधिवेशन जून 1920 में इलाहाबाद :- अधिवेशन में स्कूल, न्यायालय के बहिष्कार का निर्णय लिया और गांधी जी को आंदोलन का नेतृत्व करने का दायित्व सौंपा गया
3. इसी समय जलियांवाला बाग हत्या कांड हुआ था और सरकार द्वारा जर्नल डायर को निर्दोष करार दिया गया था तथा पंजाब के नरसंहार एवं खिलाफत के मुद्दे पर गांधी जी ने कांग्रेस को भी आंदोलन के लिए तैयार किया
4. खिलाफत समिति ने औपचारिक तौर पर असहयोग आंदोलन की शुरुआत अगस्त 1920 में की किंतु 1 अगस्त 1920 को ही तिलक की मृत्यु हो गई

D) आन्दोलन का पतन

5. असहयोग आंदोलन के प्रभाव में खिलाफत आंदोलन दब गया
6. ब्रिटिश सरकार ने तीव्र दमन चक्र चलाकर, आंदोलन से जुड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया
7. 1924 में तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा का उदय हुआ जिसने खलीफा के पद को ही समाप्त कर दिया था अतः 1924 में खिलाफत आंदोलन समाप्त हो गया

E) परिणाम व योगदान

1. राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में मुस्लिम वर्ग की भागीदारी
2. मुस्लिम नेताओं का एक गुट राष्ट्रीय आंदोलन का प्रबल समर्थक हो गया, जैसे - अबुल कलाम आजाद, हकीम अजमल खान तथा अली बंधु आदि
3. यह आंदोलन धर्म के मुद्दे पर प्रारंभ हुआ था अतः आगे चलकर इससे संप्रदायिकता को प्रोत्साहन मिला

F) मूल्यांकन

1. खिलाफत आंदोलन को भारतीय राजनीति से जोड़ने पर इसे गांधी जी की बड़ी भूल बताया जाता है क्योंकि इससे धर्म का राजनीति में प्रवेश हुआ और कट्टरपंथियों को राजनीति में हस्तक्षेप का अवसर मिला जिससे अंततः सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिला
2. इस संदर्भ में कोई निर्णायक टिप्पणी करने से पूर्व यह जानना जरूरी है कि गांधीजी ने खिलाफत मुद्दे को भारतीय राजनीति से क्यों जोड़ा वस्तुतः ब्रिटिश फूट डालो एवं राज करो की नीति पर चल रहे थे और सांप्रदायिकता को प्रोत्साहित कर रहे थे। ऐसी स्थिति में खिलाफत का मुद्दा भारत में हिंदू-मुस्लिम एकता का अवसर प्रदान कर रहा था। इतना ही नहीं खिलाफत का मुद्दा मुस्लिम संप्रदाय से जुड़ा जरूर था किंतु किसी दूसरे संप्रदाय का विरोध नहीं कर रहा था। अतः भारत के अंदर विभिन्न वर्गों ने आंदोलन का समर्थन किया इसी तरह गांधी जी ने साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन को मजबूत बनाने के लिए तथा जनशक्ति को एकजुट करने के लिए इसे सुनहरे अवसर के रूप में देखा
3. इस दृष्टि से यह गांधीजी की भूल नहीं बल्कि एक रणनीतिक कदम माना जा सकता है।

10.5) असहयोग आंदोलन (1920-1922)

कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन, दिसंबर 1920

1) **समय :-** 26 से 30 दिसंबर 1920
2) **स्थान :-** नागपुर
3) **अध्यक्ष :-** सी विजयराघवाचार्य
4) **मुख्य कार्य :-**
   - सी आर दास द्वारा प्रस्तुत असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव की पुष्टि
   - वैधानिक व शांतिपूर्ण ढंग से स्वराज प्राप्ति
   - प्रांतीय कमेटी का भाषाई आधार पर पुनर्गठन
   - सदस्यता शुल्क घटाकर चार आने (25 पैसे)
   - कांग्रेस के संचालन हेतु 15 सदस्यीय वर्किंग कमेटी का गठन
   - कांग्रेस के उद्देश्य में परिवर्तन (संविधानिक तरीकों के स्थान पर अहिंसक उचित तरीकों से स्वराज)

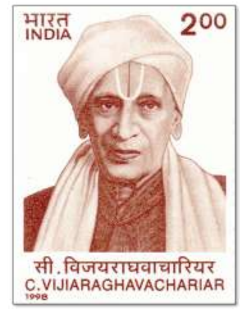

1) परिचय

स्वराज की प्राप्ति हेतु गांधी जी द्वारा अगस्त 1920 से राष्ट्रव्यापी अहिंसक, असहयोग आंदोलन आरंभ किया

1. समय :- 1 अगस्त 1920
2. स्थगित :- 12 फरवरी 1922
3. प्रथम प्रस्ताव :- गांधीजी ने 4 सितंबर 1920 को कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में (अध्यक्ष - लाला लाजपत राय) प्रस्ताव रखा हालांकि सी आर दास (विधायिका बहिष्कार के कारण), एनी बेसेंट, मदन मोहन मालवीय, जिन्ना आदि के विरोध के कारण प्रस्ताव खारिज
4. असहयोग आंदोलन की पुष्टि :- सी आर दास द्वारा चक्रवर्ती विजय राघवाचारी की अध्यक्षता में आयोजित कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में असहयोग का प्रस्ताव रखा गया जिसे स्वीकार कर लिया गया इसके विरोध में एनी बेसेंट, जिन्ना, विपिन चंद्र पाल व खापर्डे ने कांग्रेस से त्यागपत्र दिया
5. उद्देश्य :-
   - खिलाफत के प्रश्न का सम्मानजनक समाधान
   - जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरुद्ध न्याय की मांग
   - स्वराज की प्राप्ति
6. गांधी जी ने 'केसर ए हिंद' तथा जमनालाल बजाज ने 'रायबहादुर' की उपाधि लौटाकर 1 अगस्त 1920 से असहयोग आंदोलन को शुरू किया साथ ही एक करोड़ रुपए लक्ष्य के साथ 'तिलक स्वराज फंड' की स्थापना की

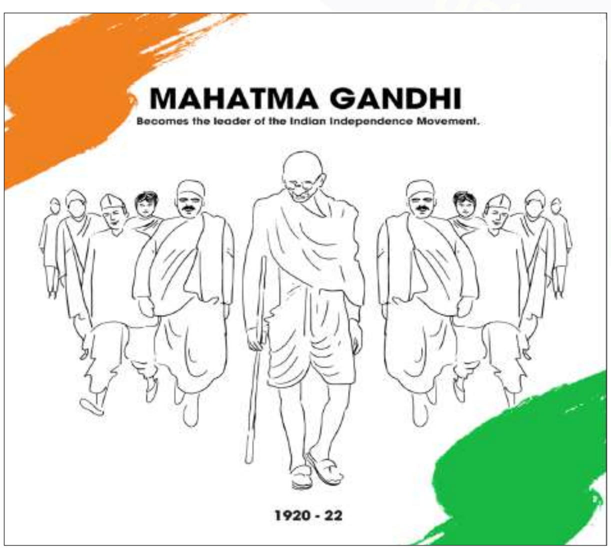

2) आंदोलन के कारण

1. **प्रथम विश्व युद्ध से निर्मित परिस्थितियां :-**
   - युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार का स्वशासन के वादे से मुकरना
   - सेवर्स की संधि द्वारा तुर्की से दुर्व्यवहार से उपजा खिलाफत आंदोलन
   - महंगाई व बेरोजगारी से असंतोष
2. नागरिक अधिकारों का दमन करने वाले रॉलेट एक्ट को लागू करना
3. जलियांवाला बाग हत्याकांड तथा इसकी जांच हेतु गठित हंटर कमेटी द्वारा डायर को निर्दोष घोषित करना
4. मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार द्वारा प्रांतों में द्वैध शासन लागू किया गया, जिसमें निर्वाचित सरकार को न्यूनतम अधिकार दिए गए

3) आंदोलन के कार्यक्रम/ रणनीति

कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में आंदोलन हेतु निम्नलिखित रचनात्मक व असहयोग संबंधी कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए :-

1. **रचनात्मक कार्यक्रम :-**
   - स्वदेशी को प्रोत्साहन देना :- स्वदेशी वस्तुओं, विद्यालयों, संस्थाओं को बढ़ावा देना
   - चरखा, खादी एवं कताई-बुनाई जैसी गतिविधियों को बढ़ावा देना।
   - स्थानीय विवादों का निपटारा करने के लिये पंचायती अदालतों की स्थापना करना।
   - हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना।
   - छुआछूत, मद्यपान जैसी बुराइयों को समाप्त करना
   - अहिंसा के पालन को बढ़ावा देना।
   - सभी वयस्कों को कांग्रेस की सदस्यता प्रदान करना।
   - 300 सदस्यों वाली अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का गठन।
   - ज़िला, तालुका एवं ग्राम स्तरों पर कांग्रेस समितियों का एक संस्तर बनाना
   - भाषायी आधार पर प्रांतीय कांग्रेस समितियों का पुनर्गठन।
   - आंदोलन के कार्यक्रमों की गतिविधियों के लिए 1 करोड़ रुपए का कोष स्थापित किया जाएगा जिसका नाम तिलक स्वराज फंड होगा क्योंकि तिलक कि 1 अगस्त 1920 को मृत्यु हो गई थी
2. **असहयोग संबंधी कार्यक्रम :-**
   - ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदान की गई उपाधियों का त्याग
   - सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र देना

- विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करना
- सरकारी उत्सव का बहिष्कार करना
- सरकारी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों का बहिष्कार
- वकीलों द्वारा ब्रिटिश न्याय व्यवस्था का बहिष्कार करना
- आवश्यकता पड़ने पर कर अदा न करना

4) आंदोलन का प्रचार-प्रसार

असहयोग आंदोलन को पश्चिम उत्तर भारत तथा बंगाल में अभूतपूर्व सफलता मिली जिसका कारण निम्नलिखित गतिविधियां थी :-

1. 1 अगस्त 1920 को खिलाफत आंदोलन के साथ असहयोग आंदोलन की घोषणा
2. गांधी जी द्वारा "केसर ए हिंद" की उपाधि का त्याग
3. 'तिलक स्वराज फंड' की स्थापना
4. कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में आंदोलन को स्वीकृति तथा कांग्रेस की कार्य पद्धति में परिवर्तन जैसे सदस्यता शुल्क कम करना आदि
5. गांधी जी द्वारा जेल भरने का आवाहन किया गया
6. ताड़ी एवं शराब की दुकानों पर महिलाओं का धरना (यह मूल कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं था)
7. राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना, जैसे - काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, महाराष्ट्र विद्यापीठ, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय आदि कलकत्ता में नेशनल कॉलेज को स्थापित किया गया जिस के प्रधानाचार्य सुभाष चंद्र बोस बने
8. प्रतिष्ठित वकीलों (सी आर दास, मोतीलाल नेहरू, एमआर जयकर, सैफुद्दीन किचलू, बल्लभ भाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू, विट्ठल भाई पटेल, सी राजगोपालाचारी राजेंद्र प्रसाद आदि) ने न्यायालयों का बहिष्कार किया
9. विदेशी कपड़ों की होली जलाकर बहिष्कार :- 1920-21 में जहां 102 करोड़ रुपए मूल्य की विदेशी कपड़ों का आयात हुआ, वहीं 1921-22 में यह घटकर 57 करोड़ रुपए ही रह गया
10. पंजाब में सिखों ने अकाली आंदोलन शुरू किया, असम में चाय बागानों के मजदूरों ने हड़ताल की, मिदनापुर के किसानों ने यूनियन बोर्ड को कर देने से इनकार कर दिया, मालाबार में जमींदारों के विरोध में मुस्लिम कृषकों ने आंदोलन शुरू कर दिया
11. 17 नवंबर 1921 को प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर काले झंडे दिखाए गए
12. 1927 के अंत तक ब्रिटिश सरकार द्वारा कांग्रेस व खिलाफत कमेटी को प्रतिबंधित करके अनेक नेताओं को गिरफ्तार किया जैसे मोहम्मद अली, मोतीलाल नेहरू, सरदार पटेल, जिन्ना, चितरंजन दास, आदि
13. फरवरी 1921 में गांधी जी ने वायसराय लॉर्ड रीडिंग को पत्र लिखकर चेतावनी दी कि यदि 1 हफ्ते के अंदर राजनीतिक बंदी रिहा नहीं किए गए और उत्पीड़नकारी नीतियां वापस नहीं ली गई तो वह व्यापक रूप से सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू कर देंगे
14. 4 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश में घटित चोरी-चोरा हिंसक घटना के कारण 12 फरवरी 1922 को गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस लिया
    - मोतीलाल नेहरू :- "यदि कन्याकुमारी के एक गांव में अहिंसा का पालन नहीं किया तो इसकी सजा हिमालय के एक गांव को क्यों मिलनी चाहिए?"
    - गांधीजी :- "आंदोलन को हिंसा होने से बचाने के लिए मैं हर एक अपमान, यहां तक कि मौत भी सहने को तैयार हूं"
15. मार्च 1922 में गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा न्यायाधीश ब्रूमफिल्ड द्वारा गांधी को असंतोष फैलाने के अपराध के कारण 6 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई किंतु 5 फरवरी 1924 को स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए उन्हें रिहा कर दिया गया

चोरी-चौरा कांड (4 फरवरी 1922)

1. यह घटना 4 फरवरी 1922 को गोरखपुर जिले के चोरी चोरी कस्बे में घटी थी
2. पुलिस वालों ने भगवान अहीर तथा कुछ अन्य लोगों की पिटाई कर दी प्रतिक्रिया स्वरूप उग्र जनता ने पुलिस थाने पर हमला करके उसे जला दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए
3. 170 भारतीयों को मृत्युदंड दिया गया था किंतु पंडित मदन मोहन मालवीय ने पैरवी करते हुए 151 लोगों को फांसी से बचा लिया
4. गांधीजी ने क्षुब्द होकर 12 फरवरी 1922 को कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में असहयोग आंदोलन को स्थगित करवा दिया
5. यह प्रस्ताव कांग्रेस कार्यकारिणी की बारदोली बैठक में रखा गया था
6. मोतीलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, राजगोपालाचारी, सी आर दास, मुहम्मद और शौकत अली ने गांधीजी के निर्णय की आलोचना की
7. पंडित जवाहरलाल नेहरू :- हम सब को बड़ा दुख हुआ जब हमने सुना कि हमारी लड़ाई उस समय बंद कर दी गई जब हम सफलता की ओर बढ़ रहे थे
8. सी आर दास :- गांधीजी आंदोलन को बहुत साहस से प्रारंभ करते हैं कुछ समय तक कुशलता से चलाते हैं परंतु अंत में साहस खोकर बहक जाते हैं
9. सुभाष चंद्र बोस :- उस समय जनता का उत्साह बहुत ऊंचा था तब पीछे हटने का आदेश देना राष्ट्रीय संकट से कुछ कम नहीं था

5) आंदोलन के परिणाम/ उपलब्धियां

असहयोग आंदोलन स्वराज प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका फिर भी आंदोलन की निम्न दूरगामी उपलब्धियां रही :-

1. कांग्रेस ने प्रार्थना पत्रों के स्थान पर अहिंसक व उचित कार्यवाही की नीति बनाई
2. कांग्रेस वर्ग के स्थान पर जन समूह का नेतृत्व करने वाली संस्था बन गई
3. आंदोलन में शिक्षित वर्ग के साथ-साथ कृषक मजदूर स्त्री आदि सभी की भागीदारी
4. मालाबार की घटनाओं के बाद भी हिंदू मुस्लिम एकता में वृद्धि
5. विदेशी शासन के भय में कमी तथा भारतीयों के आत्मविश्वास में वृद्धि
6. ग्रामीण क्षेत्र की भागीदारी

वस्तुतः असहयोग आंदोलन समाप्त नहीं अपितु गांधीजी के संघर्ष-विराम-संघर्ष की नीति के तहत स्थगित किया गया जिससे आगामी आंदोलन के लिए व्यापक जनाधार तैयार हुआ

6) आंदोलन की वापसी

चौरी-चौरा की घटना के पश्चात् असहयोग आंदोलन को अचानक वापस ले लिया गया, जिसकी आलोचना करते हुए कुछ इतिहासकारों ने गांधीजी को बुर्जुआ हितों का पोषक बताया है। उनके आक्षेपानुसार आंदोलन वापसी के प्रमुख कारण थे :-

1. गांधीजी को असहयोग आंदोलन का नेतृत्व अपने हाथ से निकलकर लड़ाकू ताकतों के हाथ में जाता दिखा।
2. गांधीजी जमींदारों का हित चाहते थे इसीलिये उन्होंने बारदोली प्रस्ताव में किसानों से ज़मींदारों को कर अदा करने को कहा।

परंतु इस सतही विश्लेषण की अपेक्षा हमें गांधीजी की वैचारिक पृष्ठभूमि के आधार पर तथा तत्कालीन परिस्थितियों के आलोक में आंदोलन वापसी हेतु निम्नलिखित कारणों को उत्तरदायी ठहराना अधिक युक्तिसंगत होगा –

1. गांधीजी, अहिंसा को लेकर एक तार्किक सोच रखते थे। उनके अनुसार हिंसक आंदोलन को सरकार आसानी से कुचल देगी।
2. चौरी-चौरा कांड से पूर्व ही कार्यक्रम में जन-भागीदारी घटती जा रही थी, ऐसे में जनांदोलन कमजोर हो रहा था।
3. कोई भी जन-आंदोलन लगातार नहीं चल सकता है। चूँकि यह आंदोलन एक वर्ष से अधिक समय से चल रहा था, ऐसे में जनता लंबे समय तक पूर्ण ऊर्जा के साथ आंदोलन से जुड़ी नहीं रह सकती थी
4. यह आक्षेप कि 'आंदोलन की बागडोर अब लड़ाकू ताकतों के हाथ में चली गई थी' का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है।

7) आंदोलन की समीक्षा

तात्कालिक रूप से असहयोग आंदोलन निश्चित रूप से अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असमर्थ रहा फिर भी इस आंदोलन की राष्ट्रीय आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

1. भारतीयों ने एकजुट होकर राजनीतिक संघर्ष किया
2. महिलाओं तथा समाज के अन्य वर्गों की भागीदारी से राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया
3. जनमानस में साम्राज्यवादी सत्ता के विरुद्ध, निर्भीकता एवं उत्साह
4. स्वदेशी वस्तुओं के प्रति लगाव से कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन
5. साम्राज्यवादी सत्ता की अजेयता के सिद्धांत को इस आंदोलन ने तोड़ दिया
6. असहयोग आंदोलन ने मुसलमानों की भागीदारी को बढ़ाया, किंतु आगामी वर्षों में साम्प्रदायिक सौहार्द्र को बनाए न रखा जा सका

10.6) स्वराज पार्टी, 1923

परिचय

1. **स्थापना :-** मार्च 1923 (इलाहाबाद)
2. संस्थापक :- चितरंजन दास (अध्यक्ष) और मोतीलाल नेहरू (महासचिव)
3. **सदस्य :-** श्रीनिवास आयंगर (मद्रास प्रांत स्वराज पार्टी), एन. सी. केलकर, विट्ठलभाई पटेल (केंद्रीय विधानमंडल, अध्यक्ष)
4. **उद्देश्य :-** इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य चुनावों के माध्यम से काउंसिलों में प्रवेश कर तथा उन्हें काम न करने देकर वर्ष 1919 के भारत शासन अधिनियम का उच्छेदन करना था

मोतीलाल नेहरू | सी.आर. दास | अजमल खान

1) पृष्ठभूमि व कारण

1. मार्च 1922 में गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद उपजी राजनीतिक शून्यता
2. विधान परिषद चुनावों में सम्मिलित होने पर कांग्रेस में दो गुटों का निर्माण

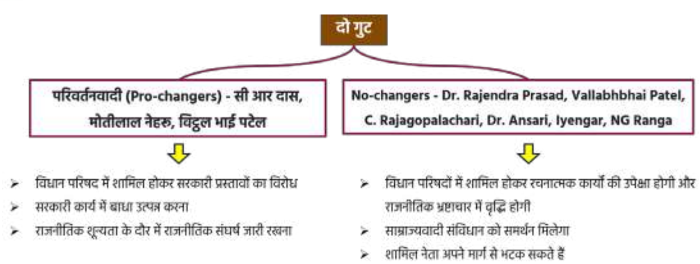

3. परिवर्तनवादी नेताओं ने गया अधिवेशन (दिसम्बर, 1922) में इस नए कार्यक्रम से संबद्ध प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव नामंजूर हुआ और सी. आर. दास- मोतीलाल नेहरू ने 1 जनवरी, 1923 को इलाहाबाद में स्वराज पार्टी की स्थापना की।
4. सितंबर 1923 में अबुल कलाम आजाद के अध्यक्षता में दिल्ली में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया जिसमें कांग्रेस के सदस्यों को व्यक्तिगत स्तर पर चुनाव लड़ने की स्वतंत्रता प्रदान की गई ताकि कांग्रेस का विभाजन ना हो

2) उपलब्धियां

1. प्रान्तीय विधान परिषदों में मध्य प्रान्त में स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ।
2. बंगाल में सबसे बड़े दल के रूप में उभरे
3. सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली की 101 निर्वाचित सीटों में से 42 सीटों पर इनकी जीत हुई।
4. इन्होंने 1919 ई. के अधिनियम की जांच हेतु मुड्डीमैन समिति नियुक्त कराई।
5. इसके अतिरिक्त कपास पर लगने वाले उत्पाद शुल्क की समाप्ति नमक कर में कटौती, श्रमिकों की स्थिति में सुधार तथा मजदूर संघों की सुरक्षा आदि महत्वपूर्ण कार्य किए।
6. पब्लिक सेफ्टी बिल तथा ट्रेड डिसप्यूट्स बिल को पारित नहीं होने दिया।
7. विट्ठल भाई पटेल को सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली का अध्यक्ष चुना गया
8. 1923-1924 ई. में स्थानीय निकायों के चुनाव में सफलता :- सी. आर. दास कोलकाता के मेयर, विट्ठल भाई पटेल अहमदाबाद के, राजेन्द्र प्रसाद पटना के तथा जवाहरलाल नेहरू इलाहाबाद के मेयर चुने गए।

1923 ई. का चुनाव

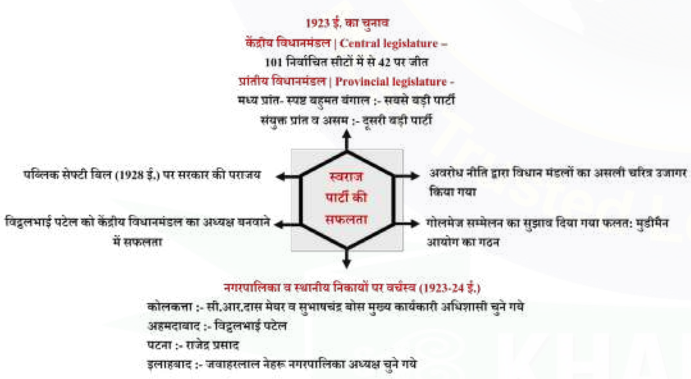

3) कांग्रेस का दिल्ली अधिवेशन 1923

1. 1923 में मौलाना आजाद की अध्यक्षता में दिल्ली अधिवेशन में कांग्रेसी एकता को बनाए रखने हेतु समझौता वादी रुख अपनाया गया
2. इस अधिवेशन में कांग्रेस ने अपने सदस्यों को स्वराज पार्टी के अंतर्गत चुनावी प्रक्रिया में सम्मिलित होने की अनुमति प्रदान कर दी
3. इस विचार का अपना समर्थन विट्ठल भाई पटेल एवं एमआर जयकर ने समर्थन किया

4) गांधी दास पैक्ट नवम्बर 1924

फरवरी 1924 में जेल से रिहा हुए गांधीजी ने नवम्बर 1924 में चितरंजन दास एवं मोतीलाल नेहरू से मिलकर एक संयुक्त वक्तव्य प्रस्तुत किया इसे गांधी-दास पैक्ट के नाम से जाना जाता है।

1. इस पैक्ट में विधानसभाओं के भीतर स्वराज पार्टी को कांग्रेस के नेतृत्व में तथा उसके अभिन्न अंग के रूप में कार्य करने का अधिकार दे दिया गया।
2. साथ ही असहयोग आंदोलन को अब राष्ट्रीय कार्यक्रम नहीं मानने का निर्णय लिया गया।
3. इसके अतिरिक्त, रचनात्मक कार्यक्रमों की ज़िम्मेदारी गांधीजी को सौंप दी गई।

इस पैक्ट के मुख्य प्रस्तावों को 1924 ई. में गांधी की अध्यक्षता में सम्पन्न बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

मुड्डीमैन समिति

ब्रिटिश सरकार ने 1924 ई. में सर अलेक्जेंडर मुड्डीमैन की अध्यक्षता में रिफॉर्म्स इंक्वायरी समिति का गठन किया गया, जिसने अपनी रिपोर्ट 1925 ई. में प्रस्तुत की :-

- भारत सरकार अधिनियम, 1919 के तहत 1921 में लागू संविधान में द्विशासन पद्धति की समीक्षा करना था।
- भारतीय सदस्य :- सर शिवास्वामी अय्यर, आर. पी. परांजपे, तेजबहादुर सप्रू, मोहम्मद अली जिन्ना, बिजॉय चंद महताब
- इस समिति के सदस्यों में मतभेद होने के कारण रिपोर्ट को दो भागों में बाँटा गया- अल्पमत रिपोर्ट और बहुमत रिपोर्ट।
  - ✓ बहुमत रिपोर्ट :- यह रिपोर्ट अधिकारियों और राजभक्तों द्वारा तैयार की गई था। इनका मानना था कि द्विशासन पद्धति को अभी पर्याप्त समय नहीं मिला है, अतः उन्होंने केवल छोटे-मोटे बदलावों की अनुशंसा की।
  - ✓ अल्पमत रिपोर्ट :- इस रिपोर्ट को गैर-शासकीय भारतीय सदस्यों द्वारा तैयार किया गया था। इनका मानना था कि 1919 का भारत सरकार अधिनियम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल सिद्ध हुआ है।
- दोनों रिपोर्ट द्वारा संयुक्त रूप से शाही आयोग (रॉयल कमीशन) की नियुक्ति की सिफारिश की गई।

5) स्वराज आन्दोलन का पतन

1. सत्ता के पद के प्रति लोलुपता(अवरोध की बजाय सहयोग नीति का अनुसरण)
2. जून 1925 में सी आर दास का निधन
3. सांप्रदायिकता का उत्थान
4. 1926 के चुनावों में अपेक्षित सफलता का ना मिलना
5. सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930 के कारण विधानमंडल का बहिष्कार

इस प्रकार असहयोग आंदोलन के उपरांत जब राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में कांग्रेस का महत्व कम हो गया था तब स्वराज पार्टी ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा वस्तुतः इन्हीं की मांगों का यह परिणाम था कि भारत में उत्तरदाई शासन की स्थापना हेतु लंदन में तीन गोलमेज सम्मेलनों का आयोजन किया गया

10.7) 1922-27 के दौरान की अन्य गतिविधियां

1. **अखिल भारतीय मुस्लिम लीग :-**
   - 1924 ई. में तुर्की में मुस्तफा कमालपाशा के नेतृत्व में खलीफा के पद को समाप्त करने की घोषणा के साथ ही भारत में खिलाफत समिति ने कार्य करना बंद कर दिया।
   - फलतः 1924 ई. में ही अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का पुनरुत्थान हुआ तथा मुहम्मद अली जिन्ना इस लीग के प्रमुख नेता बनकर उभरे।
2. **हिंदू महासभा :-**
   - हिंदू महासभा की स्थापना पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा 1915 ई. में हरिद्वार में की गई।
   - कासिम बाज़ार के महाराजा की अध्यक्षता में महासभा का प्रथम सम्मेलन आयोजित किया गया।
   - 1924 ई. में मदनमोहन मालवीय के अध्यक्ष बनने के पश्चात् यह दल अधिक प्रभावी बनकर उभरा।
3. **'यूनियनिस्ट पार्टी :-**
   - इस पार्टी की स्थापना पंजाब के भू-स्वामी वर्गों के हितों की रक्षा हेतु की गई थी।
   - इस पार्टी ने 1937 ई. के चुनावों के पश्चात् मुस्लिम लीग के साथ मिलकर मिली-जुली सरकार (गठबंधन सरकार) बनाई।
4. **अकाली आंदोलन :-**
   - अकाली आंदोलन का उद्देश्य गुरुद्वारों को अंग्रेज़ समर्थक एवं भ्रष्ट आनुवंशिक महंतों के प्रभाव से मुक्त करना था।
   - ब्रिटिश सरकार में भय उत्पन्न कर दिया कि कहीं इस आंदोलन से ब्रिटिश सेना में कार्यरत सिक्ख में असंतोष उत्पन्न ना हो जाए
   - 1925 में एक विधेयक पारित करके शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति की स्थापना :- पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के चुनाव का अधिकार सिख समुदाय के व्यक्तियों को ही सौंप दिया गया
5. **वलसाड आंदोलन :-**
   - यह आंदोलन गुजरात के खेड़ा जिले के वलसाड नगर में डकैतों से रक्षा करने हेतु पुलिस द्वारा प्रत्येक वयस्क पर रुपये 7 आने का कर लगाने के विरुद्ध
   - 1923 ई. में गांधीवादी आंदोलन तथा अत्यधिक सामाजिक दबाव के कारण सरकार द्वारा यह कर समाप्त कर दिया गया।
6. **नागपुर झंडा सत्याग्रह :-**
   - 1923 में सरकार ने स्थानीय आदेश द्वारा नागपुर में कांग्रेस को अपने ध्वज के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था, फलतः यह सत्याग्रह शुरू किया गया।
   - गुजरात से आंदोलनकारियों के समूह सरकार पर दबाव बनाने के लिये नागपुर भेजे गए, जिससे सरकार समझौते के लिये बाध्य हो गई।
7. **वायकोम सत्याग्रह :-**
   - यह सत्याग्रह टी.के. माधवन, के.के. केलप्पन तथा के. पी. केशव मेनन के नेतृत्व में किया गया।
   - गांधीजी द्वारा भी 1925 में वायकोम का दौरा किया गया।
   - उद्देश्य :- श्रमिक निम्न जातियों (एझवाओं) एवं अछूतों द्वारा गांधीवादी तरीके से त्रावणकोर (केरल) के मंदिर प्रवेश
8. **जबलपुर झंडा सत्याग्रह :-**
   - झंडा सत्याग्रह एक शांतिपूर्ण नागरिक अवज्ञा आंदोलन था जिसमें लोग राष्ट्रीय झंडा फहराने के अपने अधिकार के तहत जगह-जगह झंडा फहरा रहे थे
   - इतिहासविदों के अनुसार आज़ादी के लिये झंडा आंदोलन की शुरुआत ही जबलपुर से हुई थी। यहाँ आज़ादी के लिये जुनून ऐसा था कि जेल में तिरंगे के लिये लाल रंग नहीं मिला तो नौजवानों ने अपना लहू निकालकर उससे केसरिया रंग बना लिया।
   - 1923 में डॉ. राजेंद्र प्रसाद, राजगोपालाचारी, जमनालाल बजाज, देवदास गांधी समेत कॉन्ग्रेस समिति के अन्य पदाधिकारी जबलपुर आए।
   - म्युनिसिपल कमेटी के अध्यक्ष कुशलचंद्र जैन ने डिप्टी कमिश्नर हैमिल्टन से टाउनहाल (वर्तमान गांधी भवन) के ऊपर झंडा फहराने की अनुमति चाही, किंतु नहीं मिली।
   - इससे उपजे असंतोष के बाद जनता ने आंदोलन प्रारंभ किया जिसे झंडा सत्याग्रह नाम दिया गया।
   - इस समय नगर कॉन्ग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पं. सुंदरलाल थे। यहाँ पर राष्ट्रीय झंडा फहराने के कारण सुंदरलाल को 6 माह की कारावास की सजा दी गई।

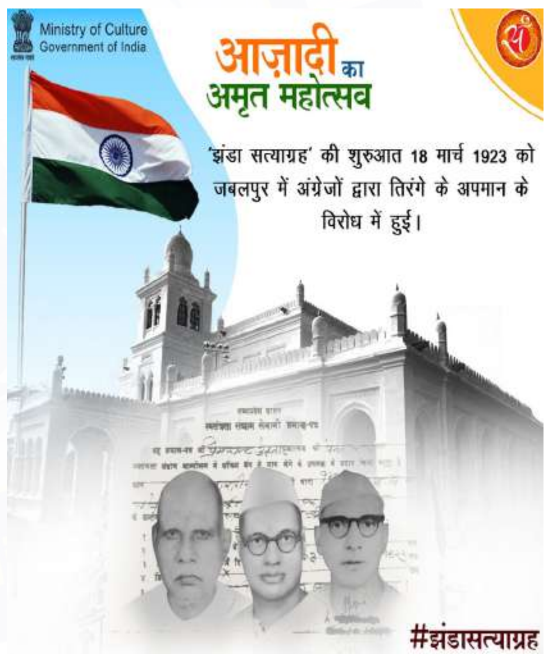

10.8) साइमन कमीशन (1927)

1) परिचय व पृष्ठभूमि

1. 1919 के भारत शासन अधिनियम में 10 वर्षों के पश्चात अधिनियम की समीक्षा हेतु एक आयोग के गठन का प्रावधान था, परन्तु ब्रिटिश चुनावों के कारण 8 वर्ष पहले 1927 में गठन
2. **आयोग का परिचय :-**
   - तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री स्टेनली बाल्डविन (कंजरवेटिव पार्टी) द्वारा 8 नवंबर 1927 में गठित सात सदस्यीय आयोग (इंडियन स्टेचुटरी कमीशन)
   - अध्यक्ष :- जॉन साइमन(लेबर पार्टी)
   - लॉर्ड इरविन की सिफारिश पर सारे 7 सदस्य ब्रिटिश :- चूंकि इस आयोग में कोई भारतीय नहीं था अतः इसे श्वेत कमीशन कहकर विरोध किया गया
3. **साइमन कमीशन के उद्देश्य :-**
   - 1919 के भारत शासन अधिनियम की समीक्षा
   - उत्तरदायी सरकार की प्रगति की दिशा में किये गए कार्यों की समीक्षा
   - भारतीयों को और कितने तथा किस स्वरूप में संवैधानिक अधिकार दिए जाएं

नोट :

1. जॉन साइमन (लिबरल पार्टी)
2. बाथम (कंजरवेटिव पार्टी)
3. स्ट्रैथ कोना(कंजरवेटिव पार्टी)
4. लेन फोक्स (कंजरवेटिव)
5. कैडेगन (कंजरवेटिव पार्टी)
6. एटली (लेबर पार्टी)
7. बर्नोन हार्ट शोन (लेबर पार्टी)

2) भारतीय प्रतिक्रिया

1. **भारत में विरोध के कारण :-**
   - समय से 2 वर्ष पूर्व गठन
   - समिति में कोई भारतीय नहीं
   - सभी सदस्य ब्रिटिश
   - भारतीय संविधान निर्माता भारतीय नहीं थे
   - स्वराज हेतु आवश्यक योग्यता
2. **प्रतिक्रिया :-**
   - मुहम्मद शफी वाली मुस्लिम लीग, जस्टिस पार्टी(मद्रास), यूनियनिष्ट पार्टी(पंजाब), डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन, अखिल भारतीय अछूत संगठन के अलावा कांग्रेस, जिन्ना गुट वाली मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, किसान मजदूर पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी आदि द्वारा साइमन कमीशन का बहिष्कार
   - कांग्रेस ने 'हर चरण में और हर रूप में' आयोग के बहिष्कार का निर्णय डॉ अंसारी की अध्यक्षता वाले 1927 के मद्रास अधिवेशन में लिया
   - 3 फरवरी 1928 को आयोग मुंबई पहुंचा - साइमन गो बैक के नारे, काले झंडे व हड़ताल
   - लखनऊ में जवाहरलाल नेहरू व गोविंद वल्लभ पंत द्वारा विरोध
   - लाहौर में लाला लाजपत राय द्वारा विरोध। पुलिस के लाठीचार्ज के कारण लाला लाजपत राय की दिसंबर 1928 में मृत्यु हो गयी। इस दौरान लाला लाजपत राय ने कहा था कि "मेरे ऊपर लाठियों से किया गया एक एक प्रहार एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत की आखिरी कील साबित होगी"

3) आयोग की मुख्य सिफारिशें

1. द्वैध शासन को समाप्त करने तथा प्रांतों को स्वायत्तता सौंपने की सिफारिश की
2. गवर्नर जनरल एवं गवर्नरों के अधिकारों को बढ़ाने का सुझाव दिया गया
3. केंद्र में भारतीयों को कोई भी उत्तरदायित्व न दिया जाए
4. संघीय संविधान निर्मित किया जाए तथा केंद्रीय विधान मंडल को पुनर्गठित किया जाए
5. उच्च न्यायालय को भारत सरकार के नियंत्रण में लाने के लिये सुझाव
6. प्रांतीय विधानमंडल की सदस्य संख्या का विस्तार किया जाए।
7. अल्पसंख्यक जातियों के हितों के प्रति गवर्नर-जनरल से विशेष ध्यान देने को कहा गया।
8. मताधिकार का विस्तार कर इसकी वर्तमान सीमा 2.8% से बढ़ाकर 10 से 15 प्रतिशत तक करने की बात कही गई
9. प्रत्येक 10 वर्ष के पश्चात् पुनरीक्षण आयोग की नियुक्ति की व्यवस्था को समाप्त किया जाए।
10. केंद्रीय विधानमंडल का पुनर्गठन करने, बर्मा को भारत से और सिंध को बम्बई से अलग करने, उड़ीसा को अलग प्रांत बनाने, सेना के भारतीयकरण करने, भारत परिषद को बनाये रखते हुए उसके अधिकारों में कमी करने की सिफारिश साइमन कमीशन ने की

इस रिपोर्ट में स्वराज्य के बारे में एक शब्द भी नहीं था, बल्कि भारतीयों को उत्तरदायी शासन हेतु अयोग्य करार दिया गया। परिणामस्वरूप उपजे विरोध से विभिन्न दलों के पारस्परिक मतभेद कम हुए तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन हेतु सशक्त आधार तैयार हुआ

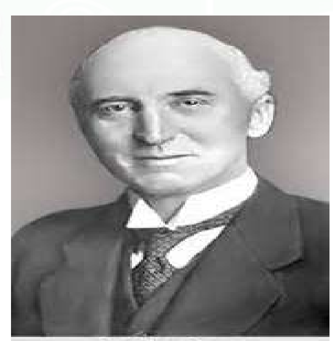
Sir John Simon

कथन :-
- **कुपलैंड** - पुस्तकालय हेतु **"एक अन्य श्रेष्ठ रचना"**
- **शिवस्वामी अय्यर** - रद्दी की टोकरी में फेकने लायक

- रिपोर्ट पर विचार-विमर्श करने हेतु लंदन में तीन गोलमेज सम्मेलन आयोजित किये गए
- 1935 के भारत शासन अधिनियम पर प्रभाव
- मोतीलाल नेहरु द्वारा नेहरु रिपोर्ट

10.9) नेहरू रिपोर्ट 1928

1) पृष्ठभूमि व परिचय

1. भारत सचिव लार्ड बर्केनहेड ने 24 नवम्बर 1927 को भारतीयों को चुनौती दी कि वे स्वयं अपने लिए ऐसा संविधान तैयार करें जो सर्वमान्य हो
2. कांग्रेस ने चुनौती स्वीकार करते हुए 28 फरवरी 1928 को दिल्ली में सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया, जिसमें 29 दलों ने भाग लिया।
3. मई 1928 में मुंबई में डॉ अंसारी की अध्यक्षता में दूसरा सर्वदलीय सम्मेलन आयोजित हुआ,जिसमें मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया गया, जिसे भारत के संविधान का एक मसौदा (प्रारूप) तैयार करना था

Note :

नेहरू कमेटी के सदस्य

- पंडित मोतीलाल नेहरू (अध्यक्ष)
- जवाहरलाल नेहरू (सचिव)
- तेज बहादुर सप्रू (लिबरल फेडरेशन)
- एन एम जोशी (लेबर पार्टी)
- सुभाष चंद्र बोस (कांग्रेस)
- एम आर जयकर (हिन्दू महासभा बाद में अपना नाम वापस ले लिया था)
- अली इमाम (मुस्लिम लीग)
- शोएब कुरैशी (मुस्लिम लीग)
- मंगल सिंह सिंध (सिख)
- जी पी प्रधान (गैर ब्राह्मण)

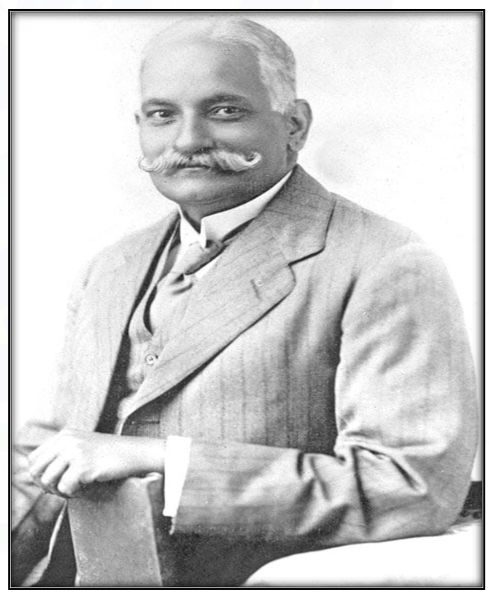

2) मुख्य सिफारिशें

मोतीलाल नेहरू व तेज बहादुर सप्रू द्वारा रिपोर्ट का प्रारूप किया गया, जिसे 10 अगस्त 1928 को प्रस्तुत किया गया :-

1. भारत को अधिराज्य का दर्जा (डोमिनियन पद) दिया जाय
2. भारत एक संघ होगा जिसके अधीन केन्द्र में द्विसदनीय विधानमण्डल होगा।

3. मन्त्रिमण्डल इस सदन के प्रति उत्तरदायी होगा।
4. प्रान्तों में द्वैध शासन नहीं होगा।
5. गवर्नर जनरल केवल संवैधानिक प्रमुख होगा जिसकी शक्तियाँ ब्रिटिश शाही 'ताज' के समान होंगी।
6. साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति नहीं होगी।
7. नागरिकता की परिभाषा दी गई तथा 19 मूल अधिकारों को प्रतिपादित किया गया।
8. एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की जाय जिसके अधिकार संसद द्वारा निर्धारित हों।
9. सार्वभौम वयस्क मताधिकार (21 वर्ष) की व्यवस्था की जाय।
10. सिंध को बम्बई प्रांत से अलग एक नया प्रान्त बनाने की सिफारिश की गई।
11. भाषाई आधार पर प्रान्तों के गठन की सिफारिश की गई।
12. देशी रियासतों के नरेशों के अधिकारों की रक्षा का आश्वासन।

नेहरू रिपोर्ट का भारतीय संवैधानिक इतिहास में विशेष महत्व है। नेहरू रिपोर्ट स्वतन्त्र भारत के संविधान की पूर्वगामी प्रमाणित हुई। इसी कारण अनेक इतिहासकारों ने नेहरू रिपोर्ट को वर्तमान संविधान का 'ब्लू प्रिंट' माना है

3) आगामी घटनाक्रम व मतभेद

1. 1928 के लखनऊ सर्वदलीय सम्मेलन में जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकार कर दिया
2. जिन्ना मुसलमानों के लिए केंद्रीय विधानमंडल में एक तिहाई प्रतिनिधित्व की मांग कर रहे थे, जिसे कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया
3. युवा राष्ट्रवादी जैसे सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू और सत्यमूर्ति डोमनियन स्टेट की जगह पूर्ण स्वराज को कांग्रेस का लक्ष्य बनाना चाहते थे
4. नवंबर 1928 में सुभाषचंद्र बोस और जवाहर लाल नेहरू ने पूर्ण स्वराज की प्राप्ति हेतु ऑल इंडिया इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की
5. गाँधीजी ने सरकार को चेतावनी दी कि यदि एक वर्ष के भीतर नेहरू रिपोर्ट के अनुसार डोमनियन स्टेट का दर्जा नहीं दिया गया, तो कांग्रेस पूर्ण स्वराज से कम किसी प्रस्ताव पर समझौता नहीं करेगी

10.10) जिन्ना का 14 सूत्री फॉर्मूला

नेहरू रिपोर्ट के विरोध में मुहम्मद अली जिन्ना ने मार्च 1929 में अपनी रिपोर्ट दी, जिसमें निम्नलिखित 14 शर्तें :–

1. भारतीय संविधान परिसंघात्मक हो तथा अवशिष्ट शक्तियाँ प्रांतों को दी जायें।
2. सभी प्रांतों को एक समान स्वायत्तता हो।
3. सभी विधान मंडलों तथा निर्वाचित निकायों में अल्पसंख्यकों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो ।
4. केन्द्रीय विधानमंडल में मुसलमानों का प्रतिनिधित्व एक-तिहाई से कम न हो।
5. केन्द्रीय तथा प्रांतीय मंत्रिमंडलों में मुसलमानों को कम से कम एक-तिहाई प्रतिनिधित्व मिले।
6. राज्य की सभी सेवाओं तथा स्थानीय निकायों में मुसलमानों के लिए स्थान आरक्षित हों।
7. सांप्रदायिक समूहों के प्रतिनिधित्व हेतु पृथक निर्वाचन मंडल की व्यवस्था बनी रहे।
8. उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत, बंगाल तथा पंजाब में कोई भी क्षेत्रीय बदलाव मुस्लिम बहुमत को प्रभावित न करे।
9. सभी संप्रदायों को धार्मिक स्वतंत्रता हो।
10. सिंध को बंबई से पृथक किया जाये।
11. उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत तथा बलूचिस्तान में संवैधानिक सुधार हो।
12. मुस्लिम संस्कृति, धर्म तथा व्यक्तिगत कानून (पर्शनल लॉ) को सुरक्षा दी जाये।
13. किसी संप्रदाय के 3/4 सदस्यों के विरोध करने पर विधानमंडल अथवा स्थानीय निकाय में कोई विधेयक व प्रस्ताव पारित न हो।
14. केंद्रीय विधान मंडल द्वारा भारतीय परिषद की इकाई राज्यों की सहमति के बिना संविधान में संशोधन न किया जाये।

ध्यातव्य है कि मि. जिन्ना ने उपर्युक्त माँगों को इंग्लैण्ड में प्रथम गोलमेज सम्मेलन के समक्ष पेश किया। जिन्ना की इन माँगों में से अधिकांश माँगें अगस्त, 1932 में मि. मैकडोनाल्ड के 'साम्प्रदायिक निर्णय' में स्वीकार कर ली गयीं। इस सम्बन्ध में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है "इन शर्तों का केवल इसलिए महत्व है कि रैम्जे मैकडोनाल्ड ने इनके आधार पर भारत के लिए साम्प्रदायिक निर्णय का सिद्धांत बनाया था"

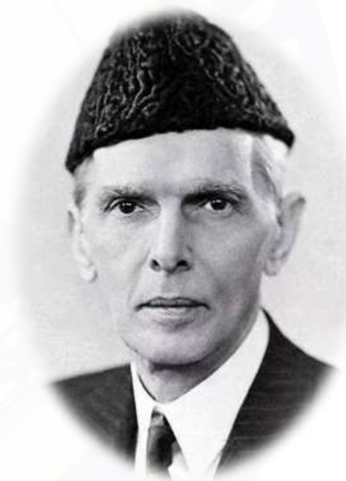

10.11) कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन व पूर्ण स्वराज की मांग (1929)

दिसंबर 1929 में कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन लाहौर में हुआ। अधिवेशन में पं जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष बनाया गया, जिसमे अधोलिखित संकल्पों को स्पष्ट किया गया :-

1. नेहरू समिति की डोमनियन राज्य के दर्जे की योजना समाप्त कर दी गयी
2. ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वाधीनता की मांग की गई।
3. 31 दिसंबर 1929 की मध्य रात्रि को रावी नदी के तट पर जवाहर लाल नेहरू ने नया तिरंगा झंडा फहराया
4. 26 जनवरी 1930 को संपूर्ण देश में स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा की, गई इसी कारण 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू हुआ तथा गणतंत्र दिवस मनाया जाने लगा
5. राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व पुनः गांधीजी को सौंपा गया।
6. अधिवेशन में सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने की घोषणा की गई
7. केंद्रीय, प्रांतीय विधानमंडल तथा सरकारी समितियों का पूर्णतः बहिष्कार

10.12) गांधी जी की 11 सूत्री मांगे, जनवरी 1930

सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने से पूर्व गांधी जी ने अपने पत्र यंग इंडिया के माध्यम से वायसराय लॉर्ड इरविन एवं ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड के सम्मुख 31 जनवरी 1930 को 11 सूत्रीय मांगे रखी जो निम्नलिखित हैं –

1. सामान्य हित से सम्बंधित :-
    - सेना खर्च में 50% की कमी
    - राजनीतिक बंदियों की रिहाई
    - नशीली वस्तुओं की बिक्री पर रोक
    - सीआईडी (गुप्तचर विभाग) पर सार्वजनिक नियंत्रण
    - सशस्त्र कानून में परिवर्तन
    - डाक आरक्षण बिल
2. विशिष्ट पूंजीपति वर्ग से संबंधित :-
    - रुपए का विनिमय दर कम करना
    - विदेशी कपड़ों पर आयात शुल्क लगाना
    - तटकर विधेयक पास किया जाए
3. कृषक वर्ग से सम्बंधित :-
    - नमक कर की समाप्ति
    - भू राजस्व में 50% की कमी

वायसराय ने गांधी जी के पत्र पर कोई ध्यान नहीं दिया उसने गांधी जी से मिलने से भी इंकार कर दिया। सुभाष चंद्र बोस एवं अन्य कार्यकर्ताओं को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। बाध्य होकर गांधी जी को अपना सविनय अवज्ञा आंदोलन दांडी मार्च से आरंभ करने का निश्चय करना पड़ा।

10.13) सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-1934)

1) आन्दोलन का परिचय

1930 में पूर्ण स्वराज के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आरंभ किया गया गांधी जी का दूसरा राष्ट्रीय आंदोलन। सविनय अवज्ञा का अर्थ है कानूनों की नम्रता पूर्वक अवमानना करना

1. 12 मार्च 1930 को गांधी जी ने दांडी यात्रा द्वारा आंदोलन आरंभ किया
2. आंदोलन दो चरणों में हुआ :-
    - प्रथम - 12 मार्च 1930 से 5 मार्च 1931
    - द्वितीय - जनवरी 1932 से 1934
3. 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस कार्यकारिणी को सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का अधिकार दिया गया
4. फरवरी 1930 में साबरमती आश्रम में हुई कांग्रेस कार्यकारिणी की दूसरी बैठक में महात्मा गांधी को नेतृत्व सौंपा गया
5. उद्देश्य :- पूर्ण स्वराज

2) आंदोलन के कारण

1. साइमन कमीशन में किसी भी भारतीय को शामिल ना करना तथा केंद्र में भारतीयों को उत्तरदाई शासन हेतु अयोग्य बताना
2. नेहरू समिति की रिपोर्ट को सरकार द्वारा अस्वीकार करना
3. प्रथम विश्व युद्ध, अमेरिका व ब्रिटेन की पूंजीपति नीतियों के कारण उपजी वैश्विक महामंदी
4. दिसंबर 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पारित पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव
5. आंदोलनों का सरकार द्वारा क्रूरता से दमन
6. गांधीजी ने वायसराय लॉर्ड इरविन के सामने 11 सूत्री मांगे रखी थी किंतु इरविन के द्वारा इन मांगों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। परिणाम स्वरूप गांधी जी के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ हो गया।

3) आंदोलन के कार्यक्रम

1. नमक कानून का उल्लंघन करना एवं स्वयं नमक बनाना
2. करों को अदा ना करना
3. महिला द्वारा शराब, विदेशी कपड़ों एवं अफीम की दुकानों पर धरना देना
4. सरकारी उपाधियों एवं नौकरियों का परित्याग करना
5. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं विदेशी कपड़ों की होली जलाना
6. वकीलों द्वारा वकालत का बहिष्कार करना
7. न्यायालयों का परित्याग करना
8. सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का बहिष्कार करना
9. चरखा एवं सूत कातने पर जोर देना
10. सत्य एवं अहिंसा को सर्वोपरि रखना, ताकि स्वराज्य की प्राप्ति की जा सके

4) सामाजिक आधार

1. व्यापारी एवं किसानों की अत्यधिक भागीदारी
2. जनजातियों भागीदारी :- मणिपुर (रानी गैडिनेल्यु), मध्य प्रांत, कर्नाटक, महाराष्ट्र में जनजातियों की भूमिका उल्लेखनीय रही
3. महिलाओं की सक्रिय भूमिका रही जिन्होंने विदेशी कपड़ों की दुकानों, मदिरा की दुकानों व अफीम के ठेकों पर धरने दिए
4. छात्रों की सक्रिय व उल्लेखनीय भूमिका रही
5. मुसलमानों की भागीदारी नगण्य रही और इसका कारण यह था कि मुस्लिम नेताओं ने मुसलमानों को अलग रहने की सलाह दी फिर भी उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में मुसलमानों की पर्याप्त भागीदारी रही

नमक केंद्रीय मुद्दा क्यों ?

- नमक का मुद्दा जन सामान्य से जुड़ा था और वर्ग समन्वय एवं जनशक्ति का आधार था वस्तुतः यह दैनिक उपयोग की वस्तु थी। अतः किसान, मजदूर, शहरी, ग्रामीण, धनी, निर्धन सभी के लिए महत्वपूर्ण थी। इतना ही नहीं नमक के मुद्दे पर कोई सांप्रदायिक भेदभाव की आशंका भी नहीं थी। इस संदर्भ में गांधी ने कहा कि पानी से पृथक नमक नाम की कोई चीज नहीं है, जिस पर कर लगाकर सरकार करोड़ों लोगों को भूखा मार सकती है तथा असहाय, बीमार एवं विकलांगों को पीड़ित कर सकती है। इसलिए यह कर अत्यंत अविवेकपूर्ण एवं अमानवीय है

5) आंदोलन का आरंभ व प्रसार

1. आरम्भ :- गांधी जी की दांडी यात्रा
2. दक्षिण भारत :- राजगोपालाचारी (त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम) तथा के. केलप्पन व टी के माधवन (कालीकट से प्यंनूर)
3. धरसणा, बम्बई :- सरोजनी नायडू, इमाम शाह, कस्तूरबा गांधी, मणिलाल गांधी
4. पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत :- खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमांत गांधी) का लाल कुर्ती आन्दोलन
5. मणिपुर :- रानी गाडिनेल्यु के नेतृत्व में जियारलांग आंदोलन
6. असम :- तरुण राम फुकान
7. बिहार :- चौकीदारी कर ना अदा करने पर आंदोलन
8. गुजरात के खेड़ा, सूरत तथा बारदोली :- कर ना अदायगी का आंदोलन
9. उत्तर प्रदेश :- जमींदारों को कर ना देने का आंदोलन
10. मध्य प्रांत, महाराष्ट्र और कर्नाटक :- वन नियमों के विरुद्ध सत्याग्रह चलाया गया

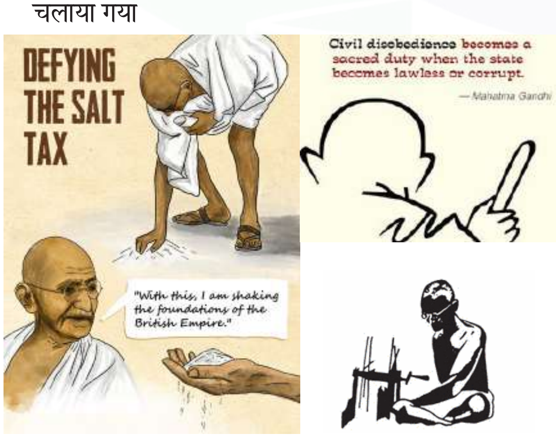

5.1) दांडी यात्रा

1. 12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी ने अपने 78 अनुयायियों के साथ नमक कानून का उल्लंघन करने के लिए साबरमती आश्रम से दांडी तक 241 मील का मार्च प्रारंभ किया
2. 6 अप्रैल 1930 को दांडी में अवैध रूप से नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन कर सविनय अवज्ञा आंदोलन को प्रारंभ किया
3. सुभाष चंद्र बोस ने गांधी जी की दांडी मार्च की तरह नेपोलियन के पेरिस मार्च और मुलोसिनी के रोम मार्च से की

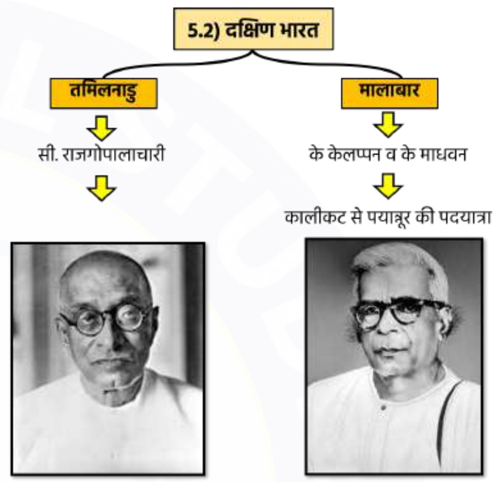

5.3) अन्य

1. तमिलनाडु में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का नेतृत्व सी. राजगोपालाचारी ने किया। इन्होंने त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम तक की यात्रा की तथा नमक कानून का उल्लंघन किया।
2. मालाबार में केलप्पन ने आन्दोलन का नेतृत्व किया तथा इन्होंने कालीकट से पेन्नार की यात्रा की और नमक कानून तोड़ा।
3. ओडिशा ने नमक सत्याग्रह गोपचन्द्र बन्धु चौधरी के नेतृत्व में चलाया गया।
4. बम्बई के निकट धरसना नामक स्थान में सरोजनी नायडू, इमाम शाह, कस्तूरबा गांधी तथा मणिलाल ने नमक कानून का उल्लंघन किया। घरसना के निहत्थे सत्याग्रहियों पर पुलिस द्वारा लाठी चार्य करने का प्रत्यक्षदर्शी अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर था। मिलर ने लिखा कि "घरासना जैसा भयानक दृश्य मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा।"
5. पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त में खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमांत गांधी) के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया। खान अब्दुल गफ्फार खान के नेतृत्व में गठित खुदाई खिदमतगार (लाल कुर्ती) नामक संगठन ने आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। पैशावर में गढ़वाल रेजीमेंट के सिपाहियों ने चंद्रसिंह गढ़वाली के नेतृत्व में निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने से इंकार कर दिया था
6. मणिपुर की जनजातियों ने भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। यहां रानी गाडिनेल्यू के नेतृत्व में जियालरंग आन्दोलन किया गया। गाडिनेल्यू को गिरफ्तार कर आजीवन कारावास की सजा दी गई। गाडिनेल्यू स्वाधीनता संग्राम में सर्वाधिक समय तक जेल में रहने वाली महिला थी

7. असम में छात्रों ने कनिंघम सरकुलर के विरोध में आन्दोलन चलाया। इस सरकुलर तहत् छात्रों को अपने अभिभावकों से सद्व्यवहार का प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होता था।
8. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय बच्चों ने बानर सेना तथा लड़कियों ने माजरी सेना का गठन किया था।
9. असम के सिलहट तथा बंगाल के नोआखली में भी नमक कानून तोड़ने का प्रयास किया गया।

6) आन्दोलन कि समाप्ति

1. 1930 :- लॉर्ड इरविन ने गांधी जी और अन्य बड़े नेताओं को गिरफ्तार किया
2. 5 मार्च 1931 :- गांधी इरविन समझौता तथा आंदोलन स्थगित
3. 7 सितंबर 1931 :- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की विफलता
4. 1931 :- लॉर्ड बिलिंगटन नया वायसराय बना
   - गांधी इरविन समझौता नहीं माना
5. जनवरी 1932 :- आंदोलन पुनः प्रारंभ
6. क्रूरता से दमन :-
   - नेताओं की गिरफ्तारी
   - कांग्रेस को गैरकानूनी संस्था घोषित
7. 1932 :- "पूना सांप्रदायिक पंचाट और पूना पैक्ट" में गांधीजी की व्यस्तता
8. लोगों का समर्थन कम होने लगा
9. 1934 :-आंदोलन को स्थगित किया
   - गांधीजी ने पिछले 13 वर्षों की मेहनत पर पानी फेर दिया – 'सुभाष चंद्र बोस'

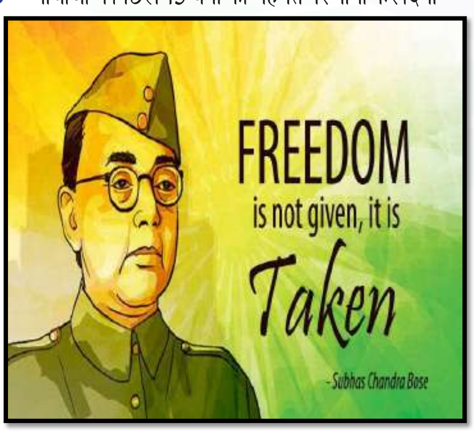

7) महत्व/समीक्षा

1. राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी
2. विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई इसका प्रतिकूल प्रभाव ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर पड़ा
3. भारतीय पूंजीपति वर्ग का राष्ट्रीय आंदोलन को भारी समर्थन
4. किसानों की भागीदारी भी पर्याप्त थी किंतु मजदूरों की सक्रियता पहले की अपेक्षा कम थी
5. मुस्लिम वर्ग की भागीदारी असहयोग आंदोलन की अपेक्षा नगण्य
6. स्वराज्य के स्थान पर सविनय अवज्ञा आंदोलन में पूर्ण स्वतंत्रता को मुख्य लक्ष्य बनाया गया
7. नमक कानून तोड़कर गांधी जी ने भारत की आम जनता के मन से ब्रिटिश शासन का भय समाप्त कर दिया
8. सविनय अवज्ञा आंदोलन में बुद्धिजीवी वर्ग की भागीदारी में कमी आई
9. युवा वर्ग ने बड़ी तत्परता एवं गर्मजोशी से भाग लिया

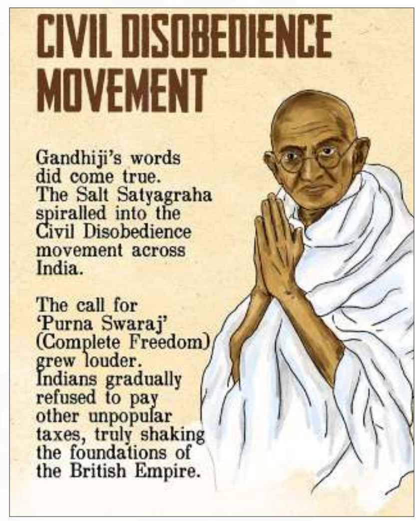

10.14) गोलमेज सम्मेलन

1) परिचय

1. ब्रिटिश सरकार द्वारा साइमन कमीशन की रिपोर्ट तथा भारत के आगामी संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करने हेतु लंदन में आयोजित तीन सम्मेलन :-
2. 1930 : प्रथम गोलमेज सम्मेलन
3. 1931 : द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
4. 1932 : तृतीय गोलमेज सम्मेलन
5. सामान्यतः ब्रिटिश प्रधानमंत्री, भारत सचिव व विभिन्न पार्टियों के प्रतिनिधि इसमें शामिल होते थे
6. भारतीयों को पहली बार ब्रिटिश शासकों के बराबर दर्जा दिया गया तथा इन्हीं सम्मेलनों के आधार पर भारत में सांप्रदायिक पंचाट तथा भारत शासन अधिनियम 1935 पारित हुए

प्रथम गोलमेज सम्मेलन 12 नवंबर 1930 से आरंभ	
♀ साइमन कमीशन की सिफारिशों पर विचार करने के लिए आयोजन	♀ कांग्रेस के भाग न लेने के कारण वार्ता असफल
द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 7 सितंबर 1931 से प्रारंभ	
♀ वायसराय लॉर्ड वेलिंगटन के समय आयोजित सम्मेलन में कांग्रेस की तरफ से गांधी की भागीदारी	♀ दलितों के लिए प्रथक निर्वाचक मंडल की मांग के कारण वार्ता असफल
तृतीय गोलमेज सम्मेलन 17 नवंबर 1932 से प्रारंभ	
♀ कांग्रेस द्वारा सम्मेलन का बहिष्कार	♀ सम्मेलन के पश्चात भारत शासन विधेयक प्रस्तुत, भारत शासन अधिनियम 1935 में पारित

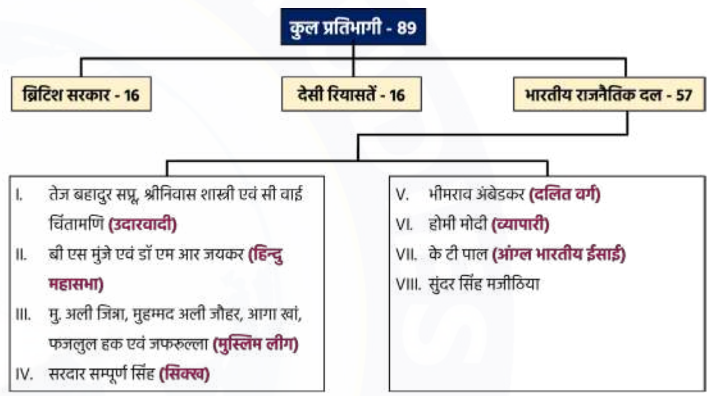

2) प्रथम गोलमेज सम्मेलन (12 नवंबर 1930 से 19 जनवरी 1931)

1) सामान्य परिचय

1. स्थान व समय :- 12 नवंबर 1930 से 19 जनवरी 1931 तक लंदन के सेंट जेम्स पैलेस में
2. उद्घाटन :- तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम (अल्पसंख्यक वर्ग के हितों की सुरक्षा का आश्वासन)
3. सभापति :- तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड
4. उद्देश्य :- साइमन कमीशन की रिपोर्ट तथा आगामी संवैधानिक सुधारों पर चर्चा
5. प्रतिभागी :- इसमें कुल 89 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें ब्रिटेन की तीन पार्टियों, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, उदारवादी दल, देसी रजवाड़ों आदि का प्रतिनिधित्व था जबकि कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन में इसके बहिष्कार का निर्णय लिया

2) प्रमुख मांगे

1. डॉक्टर अंबेडकर :- दलितों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल की मांग
2. मुस्लिम लीग :- पृथक निर्वाचक मंडल की पृथक निर्वाचन मंडल के विस्तार की मांग
3. भारतीय रजवाड़े :- ब्रिटिश भारत के अंतर्गत अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रस्ताव (भारतीय रजवाड़े)

फलतः सम्मेलन का कोई सर्वमान्य नतीजा नहीं निकल सका। ब्रिटिश सरकार अखिल भारतीय संघ का निर्माण, प्रदेशों में पूर्ण उत्तरदाई शासन तथा केंद्र में द्वैध शासन पर सहमत हुई। कांग्रेस के बहिष्कार ने सम्मेलन को निरर्थक बना दिया। प्रो. विपिन चंद्र के शब्दों में "कांग्रेस के बिना भारतीय मामलों से संबंधित कोई सम्मेलन वैसे ही था जैसे राम के बिना रामलीला का प्रदर्शन"

3) गांधी इरविन समझौता (5 मार्च 1931)

प्रथम गोलमेज सम्मेलन की असफलता के बाद 5 मार्च 1931 को तेज बहादुर सप्रू एवं एमआर जयकर आदि के प्रयास से महात्मा गांधी और लॉर्ड इरविन के मध्य समझौता हुआ, इस समझौते की शर्तें निम्नलिखित थी :-

1. कांग्रेस व उसके कार्यकर्ताओं की जब्त की गई सम्पत्ति वापस की जाये।
2. सरकार द्वारा सभी अध्यादेशों एवं अपूर्ण अभियोगों के मामले को वापस लिया जाये।
3. हिंसात्मक कार्यों में लिप्त अभियुक्तों के अतिरिक्त सभी राजनीतिक कैदियों को मुक्त किया जाये।
4. समुद्र के किनारे बसने वाले लोगों को नमक बनाने व उसे एकत्रित करने

की छूट दी जाये।

5. अफीम, शराब एवं विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर शांतिपूर्ण ढंग से धरने की अनुमति दी जाये।

महात्मा गाँधी ने कांग्रेस की ओर से निम्न शर्तें स्वीकार कीं :-

1. 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' स्थगित
2. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि भी भाग लेंगे।
3. पुलिस की ज्यादतियों के खिलाफ निष्पक्ष न्यायिक जाँच की मांग वापस ले ली जायेगी।
4. नमक कानून उन्मूलन की मांग एवं बहिष्कार की मांग को वापस ले लिया जायेगा।

जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाषचन्द्र बोस ने समझौते की आलोचना करते हुए कहा कि गाँधी जी ने पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य को बिना ध्यान में रखे ही समझौता कर लिया।

श्री अयोध्या सिंह :- "पूर्ण स्वाधीनता या डोमिनियन स्टेट्स (अधिराज्य) की बात जाने दीजिए; न तो लगान कम किया गया, न कोई टैक्स, न नमक पर सरकार की इजारेदारी हटाई गई, सिर्फ बुर्जुआ वर्ग को नाममात्र के लिए एक-दो सुविधाएँ दी गईं। बस इसी पर सारा जन-आंदोलन उसवक्त बंद कर दिया गया, जब वह चरम सीमा पर पहुँच रहा था और क्रांतिकारी रुप ले रहा था। एक बार फिर बुर्जुआ वर्ग के स्वार्थ के लिए सारे देश के स्वार्थ की बलि दे दी गई।"

- **राजपूताना नामक जहाज में महादेव देसाई, मदन मोहन मालवीय, देवदास गांधी, घनश्याम दास बिड़ला एवं मीरा बेन**
- **सरोजनी नायडू ने इरविन व गांधीजी को दो महात्मा कहा।**
- **के. एम. मुंशी ने इस समझौते को भारत के संवैधानिक इतिहास में एक युग प्रवर्तक घटना कहा है।**

4) कांग्रेस का कराची अधिवेशन, 1931

1. गांधी इरविन समझौता या दिल्ली समझौता को स्वीकृति प्रदान करने के लिए कांग्रेस का अधिवेशन 29 मार्च 1931 को वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में कराची में आयोजित किया गया
2. कराची अधिवेशन में मौलिक अधिकार तथा आर्थिक कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव पारित किए गए
3. अधिवेशन में कांग्रेस के द्वारा किसी भी तरह की राजनीतिक हिंसा का समर्थन ना करने की बात दोहराते हुए क्रांतिकारियों के वीरता और बलिदान की प्रशंसा की गई
4. **मौलिक अधिकारों से संबंधित प्रस्ताव :-**
   - अभिव्यक्ति एवं प्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता
   - संगठन बनाने की स्वतंत्रता
   - सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनावों की स्वतंत्रता
   - सभा एवं सम्मेलन आयोजित करने की स्वतंत्रता

   - जाति धर्म एवं लिंग इत्यादि से हटकर कानून के समक्ष समानता का अधिकार
   - सभी धर्मों के प्रति राज्य का तटस्थ भाव
   - निशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की गारंटी
5. **राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम से संबंधित प्रस्ताव :-**
   - लगान और मालगुजारी में उचित कटौती
   - अलाभकर जोतो को लगन से मुक्ति
   - किसानों को कर्ज से राहत और सूदखोरों पर नियंत्रण
   - मजदूरों के लिए बेहतर सेवा शर्तें, महिला मजदूरों की सुरक्षा तथा काम के नियमित घंटे
   - मजदूरों और किसानों को अपने यूनियन बनाने की स्वतंत्रता
   - प्रमुख उद्योगों परिवहन और खदान को सरकारी स्वामित्व एवं नियंत्रण में रखने का वायदा
6. अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार पूर्ण स्वराज्य को परिभाषित किया

Note :

- कराची अधिवेशन के पूर्व 23 मार्च 1931 को भगत सिंह राजगुरु एवं सुखदेव को फांसी दी गई इनके मृत्युदंड के कारण गांधी जी को

KGS IAS

अपनी कराची यात्रा के दौरान जनता के तीव्र आक्रोश का सामना करना पड़ा

- इस दौरान गांधीजी ने कहा "गांधी मर सकता है किंतु गांधीवाद नहीं"। पंजाब नौजवान सभा ने भगत सिंह एवं उनके कामरेड साथियों को फांसी की सजा सेना न बचा पाने के लिए गांधीजी की तीव्र आलोचना की

5) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 सितंबर 1931 से 1 दिसंबर 1931)

1) सामान्य परिचय

1. स्थान व समय :- 7 सितंबर 1931 से 1 दिसंबर 1931 तक लंदन के सेंट जेम्स पैलेस में
2. भारतीय वायसराय :- लार्ड विलिंगटन (1931 से 1936)
3. ब्रिटिश प्रधानमंत्री :- रैम्जे मैकडोनाल्ड(लेबर पार्टी के स्थान पर सर्वदलीय सरकार बनने से कमजोर स्थिति)
4. भारत के गृह सचिव :- सैमुअल होअर
5. कुल 31 प्रतिभागी :-
    - कांग्रेस - महात्मा गांधी (S.S. राजपूताना जहाज व किंग्स पैलेस होटल)
    - भारतीय महिला - सरोजनी नायडू
    - दलित - डॉ भीमराव अंबेडकर
    - हिन्दू महासभा - मदन मोहन मालवीय
    - उदारवादी - सप्रू, चिंतामणि
    - भारतीय व्यवसायी - जीडी बिड़ला
    - मुस्लिम लीग - मो. इकबाल, अली इमाम, जिन्ना
    - भारतीय ईसाई - एस के दत्ता

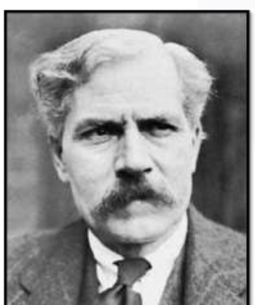

रैम्जे मैकडोनाल्ड

2) मुख्य घटनाएं व निष्कर्ष

1. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में मुख्यतः रूढ़िवादी, प्रतिक्रियावादी, साम्प्रदायिक एवं ब्रिटिश राजभक्तों के प्रतिनिधि थे, जिनका उपयोग सरकार ने यह प्रदर्शित करने के लिए किया कि कांग्रेस सभी भारतीयों को एकमात्र प्रतिनिधि संस्था नहीं है।
2. इस समय तक पृथक निर्वाचक मंडल की मांग मुस्लिम वर्ग के अतिरिक्त दलित, भारतीय ईसाई, एंग्लो इंडियन एवं यूरोपियन भी करने लगे थे
3. गांधीजी ने अनुसूचित जातियों को हिन्दू समाज का अभिन्न अंग बताकर डॉ आंबेडकर द्वारा की गई दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग का विरोध किया
4. सम्मेलन की विफलता का लाभ उठाकर प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने भारत के लिए एक योजना रखी। इस प्रस्ताव में निम्नलिखित बातों पर बल दिया गया था -
    - संघीय केंद्र और स्वायत्तता की व्यवस्था
    - प्रांतों के लिये सीमित स्वायत्तता अधिकार
    - वित्त, विदेशी व्यापार और सुरक्षा संबंधी मामलों में अंग्रेजी संसद एवं वायसराय का एकाधिकार

सरकारी रुख से दुखी और निराश होकर गांधी बेसंटियाना नामक इटली के पोत पर बैठकर 28 दिसंबर 1931 को भारत लौटे। गांधीजी ने कहा "मैं भारत खाली तो जरूर लौटा हूं पर मैने अपने देश की इज्जत को बट्टा नहीं लगने दिया"। 29 दिसम्बर 1931 को कांग्रेस कार्यकारिणी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से प्रारंभ करने का निर्णय लिया।

फ्रैंक मॉरिस :- "अर्धनग्न फकीर को ब्रिटिश प्रधानमंत्री से वार्ता हेतु सेंट जेम्स पैलेस की सीढ़ियाँ चढ़ने का दृश्य अपने-आप में अनोखा एवं दिव्य प्रभाव उत्पन्न करने वाला था"

6) साम्प्रदायिक पंचाट (16 अगस्त 1932)

ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने भारतीय मताधिकार समिति (लोथियन समिति) की रिपोर्ट के आधार पर 16 अगस्त 1932 को साम्प्रदायिक पंचाट की घोषणा की, जिसके बिंदु निम्नलिखित हैं :-

1. अल्पसंख्यकों अर्थात मुसलमानों, सिक्खों तथा यूरोपीयों के लिए अलग निर्वाचन की व्यवस्था की गई
2. दलितों को हिंदुओं से अलग अल्पसंख्यक मानकर, पृथक निर्वाचन मंडल की व्यवस्था की गई
3. प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं की सदस्य संख्या बढ़ाकर दुगुनी कर दी गई। जिसमें 71 सीटें दलितों के लिए आरक्षित थीं
4. स्त्रियों के लिए भी कुछ स्थान आरक्षित किये गए
5. श्रम, वाणिज्य, उद्योग, चाय बागान संघों, जमींदारों और विश्वविद्यालयों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था की गई
6. जिन क्षेत्रों में हिंदू अल्पसंख्यक में थे, उन्हें वैसी रियायतें नहीं दी गई जैसी मुसलमानों को दी गई जहां उनकी संख्या कम थी

इस प्रकार सांप्रदायिक पंचाट ने दलितों को हिंदुओं से पृथक करने का प्रयास किया तथा "फूट डालो व राज करो" की नीति द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने का भी प्रयास किया।

7) पूना समझौता, 24 सितंबर 1932

महात्मा गांधी ने सांप्रदायिक पंचाट का विरोध किया क्योंकि इसके द्वारा दलित वर्ग को हिंदुओं से अलग करने का प्रयत्न किया जा रहा था। अतः गांधीजी ने 20 सितंबर 1932 को यरवदा जेल में आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया। इसी अनशन को समाप्त करने के लिए पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ राजेंद्र प्रसाद, पुरुषोत्तम दास, राजगोपालाचारी, एमसी राजा के प्रयत्नों के परिणामस्वरुप 24 सितंबर 1932 को पूना समझौता हुआ। दलित वर्ग की ओर से डॉ. अम्बेडकर ने तथा हिन्दू जाति की ओर से पं. मदनमोहन मालवीय ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत् :-

- दलित वर्ग के लिए पृथक निर्वाचक मण्डल समाप्त कर दिया गया।
- केन्द्रीय विधानमण्डल में दलित वर्ग के लिए आरक्षित सीटों की संख्या में 18% की वृद्धि।

- प्रान्तीय विधानमण्डलों में दलित वर्ग के लिए आरक्षित सीटों की संख्या बढ़ाकर 148 कर दी गई।
- सार्वजनिक सेवाओं एवं स्थानीय निकायों में दलित वर्ग के उचित प्रतिनिधित्व और शैक्षाणिक एवं आर्थिक विकास के लिए प्रयास किया जाएगा।

पूना समझौते के बाद गांधीजी का पूरा ध्यान दलित उत्थान की तरफ हो गया। गांधीजी ने दलित वर्ग को 'हरिजन' नाम दिया।

8) तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 नवंबर 1932 से 24 दिसंबर 1932)

7. स्थान व समय :- 17 नवंबर 1932 से 24 दिसंबर 1932 तक लंदन में
8. इस बार 46 प्रतिनिधि :-
   - डॉ अम्बेडकर व तेज बहादुर सप्रू (तीनों सम्मेलन)
   - कांग्रेस, जिन्ना व ब्रिटेन की लेबर पार्टी द्वारा बहिष्कार
9. परिणाम :-
   - मार्च 1933 :- इंग्लैंड की सरकार ने श्वेत पत्र प्रकाशित किया
   - अप्रैल 1933 :- इंग्लैंड की संसद ने लॉर्ड लिनलिथगो की अध्यक्षता में संयुक्त प्रवर समिति बनाई
   - 11 नवंबर 1934 :- समिति की रिपोर्ट के आधार पर ब्रिटिश संसद ने भारतीय शासन अधिनियम 1935 पारित किया
   - 1935 के कानून द्वारा भारत में प्रांतीय स्वशासन की स्थापना की गई और कांग्रेस ने चुनावों में भाग लिया

10.15) गांधी जी एवं हरिजन उत्थान

1. पूना पैक्ट के पश्चात गांधी जी जेल से रिहा होकर पूर्ण रूप से हरिजनों के उत्थान में संलग्न हो गए
2. इस संदर्भ में गांधी जी ने कहा था कि या तो छुआछूत को जड़ से समाप्त करो या मुझे अपने बीच से हटा दो
3. सितम्बर, 1932 ई. में गांधीजी ने हरिजन कल्याण के लिए 'अखिल भारतीय छुआछूत विरोधी लीग' की स्थापना की।
4. 1933 में हरिजन नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया
5. नवंबर 1933 से अगस्त 1934 तक गांधी जी ने वर्धा से 20000 किलोमीटर लंबी हरिजन यात्रा प्रारंभ की
6. जनवरी, 1934 ई. में बिहार में आए भूकम्प के बारे में गांधीजी ने कहा "यह सवर्ण हिन्दुओं के पापों का दैवीय दण्ड है।
7. ब्रिटिश सरकार ने इन प्रतिक्रियावादी ताकतों को अपना समर्थन दिया यही कारण है कि 1934 में लेजिसलेटिव असेंबली में मंदिर प्रवेश विधेयक पारित ना हो सका

> ➢ **अंबेडकर :-** अछूत, जाति प्रथा की ही देन है। जब तक जाति प्रथा कायम रहेगी अछूत बने रहेंगे।
>
> ➢ **गांधी :-** वर्णाश्रम की जो भी खामियां हो इसमें कोई पाप नहीं है। लेकिन छुआछूत पाप है। छुआछूत जाति प्रथा के कारण नहीं बल्कि उच्च और निम्न के कृत्रिम बंटवारे का प्रतिफल है।

Note :

- गांधीजी ने 1930 में साबरमती आश्रम छोड़ दिया था और प्रतिज्ञा की थी कि स्वराज्य मिलने के पश्चात ही वे साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) में वापस लौटेंगे।
- 7 नवंबर 1933 को वर्धा से गांधीजी ने अपनी 'हरिजन यात्रा' प्रारंभ की। नवंबर 1933 से जुलाई 1934 तक गांधीजी ने पूरे देश की यात्रा की तथा लगभग 20 हजार किलोमीटर का सफर तय किया।
- मुख्य उद्देश्य - हर रूप में अश्पृश्यता को समाप्त करना।
- उन्होंने आग्रह किया कि गांवों का भ्रमणकर हरिजनों के सामाजिक, आर्विक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान का कार्य करें ।
- दलितों को 'हरिजन नाम सर्वप्रथम गांधीजी ने ही दिया था
- हरिजन उत्थान के इस अभियान में गांधीजी 8 मई व 16 अगस्त 1933 को दो बार लंबे अनशन पर बैठे।
- अपने हरिजन आंदोलन के दौरान गांधीजी को हर कदम पर सामाजिक प्रतिक्रियावादियों तथा कट्टरपंथियों के विरोध का सामना करना पड़ा।
- सरकार ने इन प्रतिक्रियावादी तत्वों का भरपूर साथ दिया। अगस्त 1934 में लेजिस्लेटिव एसेंबली में मंदिर प्रवेश विधेयक को गिराकर, सरकार ने इन्हें अनुग्रहित करने का प्रयत्न किया।

10.16) 1937 के प्रांतीय चुनाव

1) परिचय

1. 1930 :- प्रांतों में उत्तरदाई शासन की स्थापना (साइमन कमीशन की रिपोर्ट)
2. 1930-1932 :- लंदन में गोलमेज सम्मेलन
3. 1935 :- भारत शासन अधिनियम : कांग्रेस की सहमति
   - 1936 का लखनऊ अधिवेशन :- जवाहरलाल नेहरू
   - 1937 का फैजपुर अधिवेशन :- जवाहरलाल नेहरू
4. 1937 :- भारत में प्रांतीय चुनाव (11 प्रांतों हेतु)

11 प्रांत

1. मद्रास
2. बिहार
3. उड़ीसा
4. मध्य प्रांत
5. संयुक्त प्रांत
6. बम्बई
7. बंगाल
8. पंजाब
9. पश्चिमोत्तर प्रांत
10. असम
11. सिंध

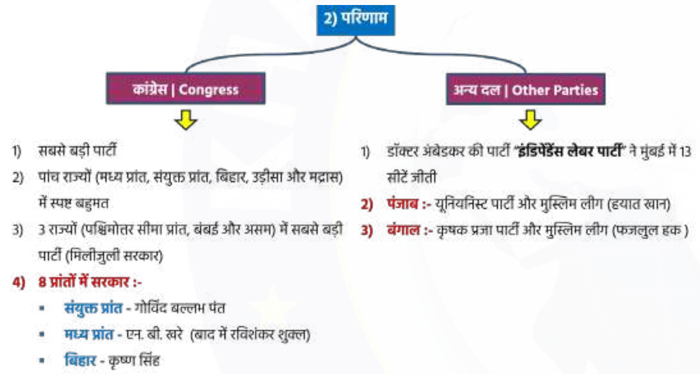

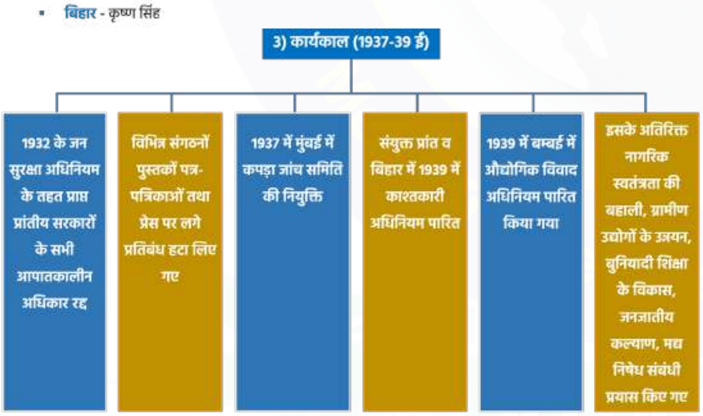

NOTE

10.17) द्वितीय विश्व युद्ध तथा भारत

1. 1 सितंबर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध का आरंभ
2. भारतीय की सलाह के बिना लॉर्ड लिनलिथगो ने भारत को युद्धरत राष्ट्र घोषित किया
3. कांग्रेस मंत्रिमंडल द्वारा युद्ध उपरांत स्वतंत्रता व केंद्र में अंतरिम सरकार के गठन की मांग
4. वायसराय लिनलिथगो द्वारा मांगों की उपेक्षा
5. अक्टूबर 1939 में 8 प्रांतों से कांग्रेस मंत्रिमंडल का त्यागपत्र
6. मुस्लिम लीग द्वारा मुक्ति दिवस तथा धन्यवाद दिवस का आयोजन
7. कांग्रेस ने बिहार के रामगढ़ में मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में आयोजित अधिवेशन में निम्न मांग –
   - ब्रिटिश सरकार से सहयोग करने के बदले केंद्र में अंतरिम राष्ट्रीय सरकार के गठन का प्रस्ताव रखा
8. वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने कांग्रेस की अंतरिम राष्ट्रीय सरकार की मांग को अस्वीकार करते हुए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसे अगस्त प्रस्ताव की संज्ञा दी गयी

Allies	Leaders
Great Britain	Winston Churchill, prime minister
France	Charles de Gaulle, leader of French not under German control
Soviet Union	Joseph Stalin, communist dictator
United States	Franklin D. Roosevelt, President
Axis Powers	**Leaders**
Germany	Adolf Hitler, Nazi dictator
Italy	Benito Mussolini, fascist dictator
Japan	Hideki Tojo, army general and prime minister; Hirohito, emperor

10.18) अगस्त प्रस्ताव (8अगस्त 1940)

वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने 8 अगस्त 1940 को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कांग्रेस से सहयोग प्राप्त करने के लिए उसके समक्ष प्रस्ताव रखा, जिसे अगस्त प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है :-

1. युद्ध के बाद एक प्रतिनिधि मूलक संविधान निर्मात्री संस्था का गठन किया जाएगा
2. वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में भारतियों की संख्या बढ़ा दी जाएगी
3. एक युद्ध सलाहकार परिषद गठित की जाएगी
4. भारत का शासन किसी ऐसे समुदाय को नहीं सौंपा जाएगा, जिसका

विरोध भारत का कोई शक्तिशाली और प्रभावशाली वर्ग कर रहा हो अगस्त प्रस्ताव को कांग्रेस सहित मुस्लिम लीग ने भी तुरन्त अस्वीकृत कर दिया। जवाहरलाल नेहरू नगर से प्रस्ताव के विषय में कहा कि "जिस डोमिनियन स्टेट की स्थिति पर यह प्रस्ताव आधारित है वह दरवाजे में जड़ी जंग लगी कील की तरह है" जबकि मुस्लिम लीग विभाजन से कम और कुछ भी नहीं चाहती थी

10.19) व्यक्तिगत सत्याग्रह/दिल्ली चलो आंदोलन (17 अक्टूबर 1940)

1. महात्मा गांधी द्वारा पवनार आश्रम (महाराष्ट्र) से 1940 में प्रस्तावित नैतिक व अहिसंक विरोध का कार्यक्रम
2. कारण :-
    - अगस्त प्रस्ताव का विरोध करना
    - ब्रिटिश द्वारा भारत को युद्धरत देश घोषित करना
3. उद्देश्य व कार्यप्रणाली :-
    - महात्मा गांधी द्वारा चुना हुआ सत्याग्रह पूर्व निर्धारित स्थान पर भाषण देकर अपनी गिरफ्तारी देता था
    - भारतीयों की युद्ध के प्रति असहमति का प्रचार
    - दिल्ली तक जन जागरूकता यात्रा
4. पहले सत्याग्रही विनोबा भावे, दूसरे सत्याग्रही जवाहरलाल नेहरू तथा तीसरे सत्याग्रही ब्रह्मदत्त थे
5. मई, 1941 तक लगभग 25000 सत्याग्राहियों को सरकार के द्वारा गिरफ्तार किया जा चुका था

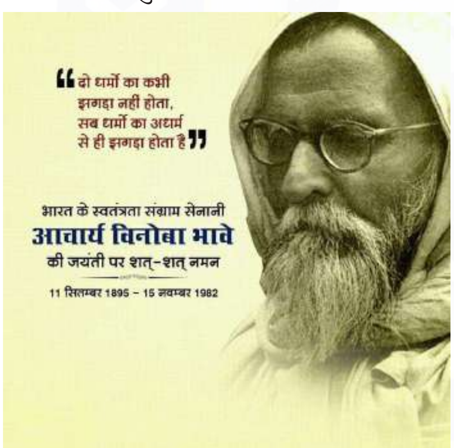

10.20) पाकिस्तान की मांग (23 मार्च 1940)

1. मुहम्मद अली जिन्ना की अध्यक्षता में 23 मार्च, 1940 को लाहौर में सम्पन्न मुस्लिम लीग के अधिवेशन में पाकिस्तान की औपचारिक मांग
    - प्रस्ताव का प्रारुप :- हयात खान
    - प्रस्ताव की प्रस्तुति :- फजलुल हक
2. 23 मार्च 1943 को मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान दिवस मनाया गया था
3. पाकिस्तान शब्द को सर्वप्रथम कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र चौधरी रहमत अली ने 1933 में गढ़ा था
4. मुसलमानों के लिए पृथक राष्ट्र का विचार 1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में मुहम्मद इकबाल ने रखा था। हालांकि मुसलमानों के लिए प्रथम राष्ट्र की संकल्पना सर सैयद अहमद खान ने की थी

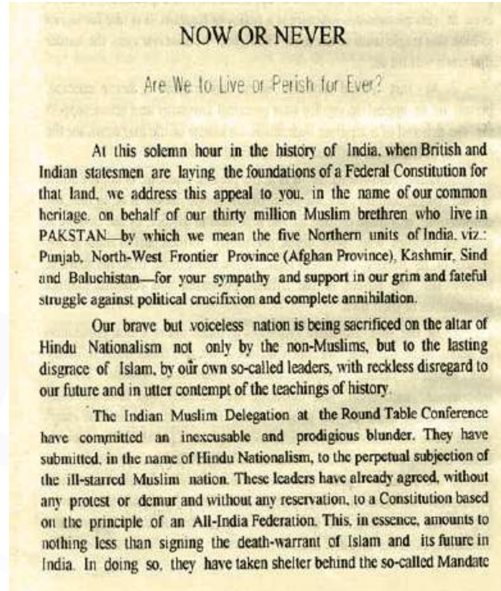

NOW OR NEVER

Are We to Live or Perish for Ever?

At this solemn hour in the history of India, when British and Indian statesmen are laying the foundations of a Federal Constitution for that land, we address this appeal to you, in the name of our common heritage, on behalf of our thirty million Muslim brethren who live in PAKSTAN—by which we mean the five Northern units of India, viz.: Punjab, North-West Frontier Province (Afghan Province), Kashmir, Sind and Baluchistan—for your sympathy and support in our grim and fateful struggle against political crucifixion and complete annihilation.

Our brave but voiceless nation is being sacrificed on the altar of Hindu Nationalism not only by the non-Muslims, but to the lasting disgrace of Islam, by our own so-called leaders, with reckless disregard to our future and in utter contempt of the teachings of history.

The Indian Muslim Delegation at the Round Table Conference have committed an inexcusable and prodigious blunder. They have submitted, in the name of Hindu Nationalism, to the perpetual subjection of the ill-starred Muslim nation. These leaders have already agreed, without any protest or demur and without any reservation, to a Constitution based on the principle of an All-India Federation. This, in essence, amounts to nothing less than signing the death-warrant of Islam and its future in India. In doing so, they have taken shelter behind the so-called Mandate

10.21) क्रिप्स प्रस्ताव (मार्च 1942)

30 मार्च को स्टैफोर्ड क्रिप्स की अध्यक्षता वाली समिति ने द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों के समर्थन प्राप्ति हेतु निम्न प्रस्ताव रखे :-

1. युद्धोपरांत डोमनियन स्टेटस, भारतीय संघ की स्थापना स्थापना व ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल से अलग होने की स्वतंत्रता
2. संविधान-निर्मात्री परिषद का गठन(ब्रिटिश भारत+देशी रियासतों के प्रतिनिधि
3. नवीन संविधान को स्वीकृत या अस्वीकृत करने की स्वतंत्रता प्रांतों को होगी
4. रक्षा मंत्रालय ब्रिटिश सरकार के पास रहेगा

कांग्रेस ने प्रांतीय आत्मनिर्णय के अधिकार, मुस्लिम लीग ने पृथक पाकिस्तान की मांग के आधार पर इसे अस्वीकार किया महात्मा गांधी ने क्रिप्स मिशन को पोस्ट डेटेड चेक कहा जबकि जवाहरलाल नेहरू ने डूबते हुए बैंक का चेक कहा

10.22) भारत छोड़ो आन्दोलन

1) पृष्ठभूमि व कारण

8 अगस्त 1942 को बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान से गांधी जी द्वारा प्रारंभ आन्दोलन जिसका अनुमोदन कांग्रेस के वर्धा अधिवेशन में किया गया था। भारत छोड़ो का नारा यूसुफ मेहर अली ने दिया। भारत छोड़ो आंदोलन या अगस्त क्रांति के निम्न कारण थे :-

1. 1 सितंबर 1939 को प्रारंभ हुए द्वितीय विश्वयुद्ध में बिना भारतीय नेताओं की सहमति के भारत को युद्धरत राष्ट्र घोषित करना
2. मार्च 1942 में भारत आए क्रिप्स मिशन की असफलता
3. युद्ध के कारण उपजी महँगाई, बेरोज़गारी, आवश्यक वस्तुओं का अभाव
4. जापान द्वारा ब्रिटेन की लगातार पराजय के कारण भारतीयों के ऊपर जापानियों के नियंत्रण का खतरा
5. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा शांतिपूर्ण राजनीतिक गतिविधियों को प्रतिबंधित करना
6. सविनय अवज्ञा आंदोलन के पश्चात् व्यापक स्तर पर नवीन संघर्ष हेतु पर्याप्त ऊर्जा व उत्साह का संचार

2) उद्देश्य व कार्यक्रम

भारत छोड़ो आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन को समाप्त करके पूर्ण स्वराज की प्राप्ति था जिस हेतु गांधी ने 8 अगस्त 1942 को मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में बम्बई में आयोजित कांग्रेस बैठक में निम्न कार्यक्रमों का प्रस्ताव रखा :-

1. सरकारी कर्मचारी नौकरी ना छोड़ें लेकिन कांग्रेस के प्रति निष्ठा की घोषणा कर दें
2. देसी रियासतों के राजा महाराजा भारतीय जनता की प्रभुसत्ता को स्वीकार कर लें एवं रियासतों में रहने वाली जनता स्वयं को भारतीय राज्य का अंग घोषित कर दें
3. काश्तकारों से कहा गया कि यदि ज़मींदार सरकार का साथ दें, तो वे कर अदा न करें और यदि ज़मींदार सरकार विरोधी हो, तो पारस्परिक सहमति के आधार पर तय किया गया लगान अदा करते रहें।
4. किसानों को निर्देश दिया गया कि वे मालगुज़ारी देने से इनकार कर दें।
5. छात्रों से कहा गया कि वे पढ़ाई तभी छोड़ें, जब वे आजादी प्राप्त होने तक इस निर्णय पर अडिग रह सकें।
6. सैनिक सेना से त्यागपत्र नहीं दें, लेकिन अपने सहयोगियों एवं भारतीयों पर गोली न चलाने का निश्चय करें।

Timeline :

- 1939 : द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत
- 1 सितंबर 1939 : लॉर्ड लिनलिथगो ने बिना भारतीय नेताओं की सहमति से भारत को युद्धरत राष्ट्र घोषित किया
- 30 अक्टूबर 1939 : 8 प्रांतों में कांग्रेस मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दिया
- 8 अगस्त 1940 : अगस्त प्रस्ताव की असफलता
- 7 दिसंबर 1941 : जापान ने पर्ल हार्बर पर हमला किया (अंग्रेजों भारत को जापान के लिए मत छोड़ो बल्कि भारत को भारतीयों के लिए छोड़ जाओ : महात्मा गांधी) (अमेरिका राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट तथा चीनी राष्ट्रपति चियांग काई का ब्रिटेन पर दबाव)
- मार्च 1942 : क्रिप्स मिशन का भारत आगमन परंतु विफल
- 14 जुलाई 1942 : कांग्रेस के वर्धा अधिवेशन में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव रखा गया (महात्मा गांधी ने कहा कि अगर कांग्रेस ने संघर्ष का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तो मैं देश की बालू से कांग्रेस से भी बड़ा आंदोलन खड़ा कर दूंगा)
- 1 अगस्त 1942 : तिलक दिवस
- 8 अगस्त 1942 : मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में मुंबई के ऐतिहासिक ग्वालीया टैंक के मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस की एक बैठक हुई जिसमें पुनः भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव को मान्यता दी गई
- 9 अगस्त 1942 : ब्रिटेन की सरकार ने ऑपरेशन जीरो आवर के तहत सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार किया
- इसके बाद राम मनोहर लोहिया अरूणा आसफ अली उषा मेहता आदि ने भूमिगत तरीके से आंदोलन चलाया।
- बलिया सातारा जैसी जगहों पर सरकारों का गठन
- 10 फरवरी 1943 : महात्मा गांधी द्वारा 21 दिन के उपवास की घोषणा
- मई 1944 : गांधी जी को रिहा किया (गांधी जी की रिहाई से पूर्व ही उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी और उनके सचिव महादेव देसाई की मृत्यु हो गई)

3) सामाजिक आधार

1. महिला
2. छात्र
3. किसान व छोटे जमींदार
4. मुसलमान (सीमित)
5. उद्योगपति
6. ग्रामीण जन
7. ट्रेन चालक

निम्न द्वारा आंदोलन की आलोचना :–

1. साम्यवादी दल, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आदि
2. आलोचक - भीमराव अंबेडकर (पागलपन भरा कार्य), तेज बहादुर सप्रू(अविचारित व असामयिक)

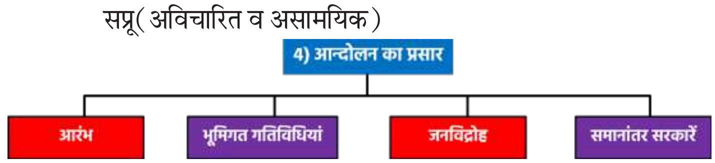

4.1) आंदोलन का आरंभ व ऑपरेशन जीरो ऑवर :-

- 8 अगस्त 1942 को आंदोलन की घोषणा
- 9 अगस्त 1942 को देश के ऑपरेशन जीरो ऑवर के तहत सभी बड़े नेताओं की गिरफ्तारी
- कांग्रेस को देश द्रोही संस्था घोषित करना

4.2) भूमिगत आन्दोलन :-

- बड़े नेताओं की गिरफ्तारी के बाद का चरण
- नेतृत्वकर्ता :- राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, उषा मेहता, बीजू पटनायक, छोटू भाई पुराणिक, अच्युत पटवर्धन, सुचेता कृपलानी, RP गोयनका आदि
- मुख्य कार्य :- बम्बई तथा नासिक में गुप्त रेडियो स्टेशनों की स्थापना (संचालक- उषा मेहता व लोहिया)
- कुछ आंदोलनकारियों ने क्रांतिकारी साधनों का प्रयोग भी किया

4.3) जन आन्दोलन :-

- सरकारी भवनों पर तिरंगा फहराना
- पुलिस के विरुद्ध
- गिरफ्तारी देना व सरकारी संपत्ति को नुकसान
- अहमदाबाद (भारत का स्तालिनग्राद), बम्बई आदि में विशाल मजदूर हड़तालें

4.4) समानांतर सरकारों की स्थापना :-

- बलिया (UP) - यहां चीतु पांडे के नेतृत्व में पहली समानांतर सरकार स्थापित हुई
- तामलुक (बंगाल) - यहां सतीश सरकार के नेतृत्व में जातीय सरकार की स्थापना हुई। यहां 73 वर्षीय किसान विधवा मातंगिनी हाजरा को गोली लग जाने के बाद भी राष्ट्रीय झंडे को ऊंचा रखा था
- सतारा (महाराष्ट्र) - यहां बी आई चव्हाण के नेतृत्व मे राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई। यह सरकार सबसे दीर्घ जीवी रही
- अहमदाबाद - आजाद सरकार
- उड़ीसा के तलचर में भी

आदोलन के दौरान गिरफ्तार नेता	
नेता	**जेल**
महात्मा गाँधी, सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गाँधी, भूला भाई देसाई	आगा खाँ पैलेस
जवाहरलाल नेहरु	अल्मोड़ा जेल
डॉ. राजेंद्र प्रसाद	बाँकीपुर जेल
मौलाना अबुल कलाम आजाद	बाँकुड़ा जेल
जय प्रकाश नारायण	हजारीबाग
कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्य	अहमदनगर दुर्ग

5) आंदोलन की समाप्ति

1. भारत छोड़ो आन्दोलन की समाप्ति के कारण :-
    - ब्रिटिश सरकार की अत्यंत कठोरतापूर्ण दमन नीति
    - गांधी समेत लगभग 1 लाख लोगों की गिरफ्तारी
    - लाठीचार्ज, गोलीबारी, शारीरिक यातनाएं
    - शहरों पर सैन्य नियंत्रण
2. प्रेस व समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध
3. गांवों पर जुर्माना
4. मुस्लिम लीग जैसी पार्टियों का असहयोग
5. आंदोलन का हिंसात्मक स्वरूप
6. केंद्रीय नेतृत्व का अभाव

6) गांधी जी का उपवास (10 फरवरी 1943)

1. अंग्रेजों के आंदोलन का दोषारोपण गांधी जी पर
2. निष्पक्ष जांच हेतु फरवरी 1943 में 21 दिन का उपवास
3. चर्चिल :- जब हम दुनिया में हर जगह जीत रहे हैं, तो ऐसे समय एक कम्बख्त बुड्ढे के समक्ष कैसे झुक सकते हैं, जो सदियों से हमारा दुश्मन रहा है
4. सर मोदी, एन. एल. सरकार और अणे का वायसराय काउंसिल से इस्तीफा
5. 6 मई 1944 :- गांधीजी रिहा
6. आंदोलन की समाप्ति

7) आन्दोलन का महत्व

1. भविष्य के नेताओं जैसे राममनोहर लोहिया, JP नारायण आदि का उदय
2. महिलाओं की भागीदारी
3. राष्ट्रवाद की भावना का प्रसार
4. भारतीय जन आक्रोश की पूर्णतः अभिव्यक्ति
5. भारतीय स्वाधीनता के पक्ष में वैश्विक जनमत का निर्माण

इस प्रकार भारत छोड़ो आंदोलन राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का अंतिम चरण था इस आन्दोलन के पश्चात भारत की आजादी लगभग सुनिश्चित थी, प्रश्न केवल यह रह गया था कि सत्ता का हस्तांतरण किस तरीके से हो? तथा स्वतंत्रता के उपरांत सरकार का स्वरूप क्या हो?

8) आंदोलन से जुड़े अन्य मुद्दे

क्या आंदोलन स्वतः स्फूर्त था ?

गांधीवादी आंदोलनों के अंतर्गत नेतृत्वकर्त्ताओं के द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित कर दी जाती थी, जिसका क्रियान्वयन स्थानीय नेताओं, कार्यकर्त्ताओं एवं आम जनमानस के द्वारा किया जाता था। किंतु भारत छोड़ो आंदोलन, पूर्व के आंदोलनों से इस संदर्भ में भिन्नता रखता था।

1. भारत छोड़ो आंदोलन के पूर्व ही राष्ट्र के प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था।
2. इसका प्रभाव यह पड़ा कि आम जनमानस ने आंदोलन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। लेकिन फिर भी जनता द्वारा की गई कार्यवाही की स्वीकृति नेतृत्व द्वारा पूर्व में ही प्रदान कर दी गई थी।
3. दरअसल, 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस द्वारा पारित प्रस्तावों में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि 'एक ऐसा समय आ सकता है, जब निर्देश जारी करना सम्भव न हो सके। ऐसे समय में प्रत्येक स्त्री और पुरुष, जो आंदोलन में भाग ले रहे हों, को स्वयं ही फैसला करते हुए आंदोलन को गति प्रदान करनी होगी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कांग्रेस नेतृत्व ने जनता को स्वतः स्फूर्त होने का निर्देश आंदोलन आरम्भ होने से पूर्व ही दे दिया था। हालाँकि देश के मुख्य नेताओं के गिरफ्तार हो जाने के पश्चात् जनता की गतिविधियाँ स्वतः स्फूर्त थी, लेकिन कांग्रेस विचारधारा, संगठन एवं राजनीति के स्तर पर लम्बे समय से संघर्ष की तैयारी कर रही थी एवं गांधी सहित अन्य नेताओं को भी अब इस बात का स्पष्ट आभास हो चुका था कि जनमानस स्वयं आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करते हुए व्यापक संघर्ष शुरू करने में सक्षम है।

आंदोलन के दौरान हिंसक गतिविधियाँ :-

- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान हुई हिंसक घटनाओं ने कांग्रेस की अहिंसक रणनीति से भिन्नता प्रदर्शित की। इस संदर्भ में जिन सत्याग्रहियों ने आंदोलन के दौरान हिंसा का प्रयोग किया, उनके अनुसार यह परिस्थितियों की मांग थी।
- इस हिंसक रणनीति के समर्थक सत्याग्रहियों ने यह स्पष्ट किया कि टेलीग्राफ या टेलीफोन के तारों को काटना, पुलों को उड़ा देना या रेल की पटरियों को उखाड़ फेंकना तब तक अनुचित नहीं है, जब तक कि इससे किसी के जीवन को खतरा न हो।
- ध्यातव्य है कि 1942 में गांधीजी ने स्वयं हिंसा की निंदा करने से इनकार कर दिया था। इस संदर्भ में 5 अगस्त को गांधीजी ने अपने सम्बोधन में था कि "मैं आपसे अपनी अहिंसा की मांग नहीं कर रहा। आप तय करें कि आपको इस संघर्ष में क्या करना है?"
- गांधी के द्वारा हिंसा का विरोध न करने के संदर्भ में फ्रांसिस हचिंस का कहना था कि "हिंसा पर गांधीजी की ज्यादा आपत्ति इसलिये थी क्योंकि इससे जन भागीदारी में कमी आती थी, लेकिन 1942 में ऐसा नहीं हुआ था।"

अध्याय – 11
1942 से 1947 के बीच का भारत (India from 1942 to 1947)

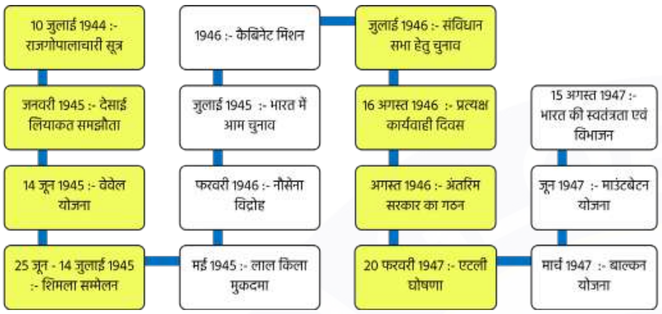

11.1) राजगोपालाचारी सूत्र (10 जुलाई 1944)

10 जुलाई, 1944 ई. को राजगोपालाचारी ने कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के मध्य समझौते हेतु योजना प्रस्तुत की, जिसे राजगोपालाचारी योजना या फार्मूला के नाम से जाना जाता है। इस योजना के अनुसार :-

1. मुस्लिम लीग भारतीय स्वतंत्रता का समर्थन करें तथा अस्थायी सरकार के गठन में कांग्रेस के साथ सहयोगी की भूमिका निभाए।
2. द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति पर भारत के उत्तर-पश्चिम व पूर्वी भागों में मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में वयस्क मताधिकार के आधार पर भारत के विच्छेद के प्रश्न पर निर्णय किया जाए।
3. देश के विभाजन की स्थिति में आवश्यक विषयों, प्रतिरक्षा, वाणिज्य, संचार तथा आवागमन आदि के सम्बन्ध में दोनों के मध्य कोई संयुक्त समझौता हो सकता है।
4. उपर्युक्त शर्तें तभी मानी जाएगी, जब ब्रिटेन भारत को पूर्णरूप से स्वतंत्रता प्रदान करे।

गांधीजी ने जिन्ना को कायदे आजम (महान नेता) कहा था। सरोजनी नायडू ने जिन्ना को हिन्दू मुस्लिम एकता का दूत कहा था। जिन्ना की मांग थी कि कांग्रेस स्पष्टतः द्विराष्ट्र सिद्धान्त को स्वीकार कर ले तथा उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में केवल मुस्लिम लोगों को ही मत देने का अधिकार मिले न कि पूर्ण जनसंख्या

11.2) देसाई लियाकत समझौता (जनवरी 1945)

जनवरी, 1945 में केन्द्र में अन्तरिम सरकार के गठन से संबंधित कांग्रेस के नेता भूलाभाई देसाई तथा मुस्लिम लीग के नेता लियाकत अली ने निम्नलिखित प्रस्ताव तैयार किया :-

1. अन्तरिम सरकार में कांगेस तथा मुस्लिम लीग दोनों केन्द्रीय विधानमण्डल से अपने समान संख्या में सदस्यों को मनोनीत करेंगे।
2. अन्तरिम सरकार में अल्पसंख्यकों तथा अनुसूचित जाति का प्रतिनिधित्व होगा।

इस प्रस्ताव के द्वारा कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के मध्य कोई सहमति होने की बात तो दूर रहीं, दोनों के मध्य मतभेद और गहरे हो गए।

11.3) वेवेल योजना (14 जून 1945)

भारत के संवैधानिक गतिरोध को दूर करने के उद्देश्य से तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने 14 जून, 1945 ई. को निम्नलिखित प्रस्तुत कि :-

- गवर्नर जनरल की कार्यकारणी परिषद् में गवर्नर जनरल तथा कमांडर इन चीफ को छोड़कर सभी सदस्य भारतीय होंगे।
- कार्यकारिणी परिषद् में मुसलमान सदस्यों की संख्या, सवर्ण हिन्दुओं के बराबर होगी।
- कार्यकारिणी परिषद् एक अंतरिम सरकार के समान होगी।
- गवर्नर जनरल बिना कारण निषेधाधिकार का प्रयोग नहीं करेगा।
- युद्ध समाप्ति के बाद भारतीय स्वयं ही अपना संविधान बनाएंगे।
- कांग्रेस के नेता रिहा किए जाएंगे तथा शीघ्र ही शिमला में एक सम्मेलन बुलाया जाएगा।
- इस योजना पर विचार-विमर्श करने के लिए 25 जून, 1945 ई. को शिमला में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें 21 भारतीय राजनीतिक नेताओं ने भाग लिया। कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में मौलाना अबुल कलाम आजाद और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि के रूप में मुहम्मद अली जिन्ना ने इस सम्मेलन में भाग लिया।
- इस सम्मेलन में मुहम्मद अली जिन्ना ने प्रस्ताव रखा कि वायसराय की कार्यकारिणी के सभी मुस्लिम सदस्यों को मुस्लिम लीग से ही लिया जाए क्योंकि यही एकमात्र संस्था है जो भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती है। कांग्रेस सहित कई राजनीतिक पार्टियों ने इसका विरोध किया, परिणामस्वरूप यह सम्मेलन असफल हो गया।

11.4) भारत में आम चुनाव (दिसंबर 1945)

1. जुलाई 1945 में इंग्लैंड में चुनाव हुए जिसमें लेबर पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ
   - अब चर्चिल की जगह एटली प्रधानमंत्री बने
2. एटली ने सर्वप्रथम भारत में प्रांतीय और केंद्रीय विधान सभाओं के लिए चुनाव करवाने की घोषणा की
3. 1940 में चुनाव परिणाम :- 1583 सीटों में
   - 923 कांग्रेसी
   - 405 लीग
4. केंद्रीय विधानसभा में 102 सीटों में :-
   - कांग्रेस को - 59
   - लीग को - 30
   - अकाली दल को- 02
   - स्वतंत्र दल - 03
   - यूरोपियन – 08
5. 11 प्रांतों में 8 (बंबई, मद्रास, संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा, असम, मध्य प्रांत, उत्तर पश्चिमी प्रांत) कांग्रेस सरकार बनी

6. बंगाल और सिंध में लीग की सरकार बनी
7. पंजाब :- यूनियनिस्ट दल

11.5) आजाद हिंद फौज (INA)

1. **सुभाष चंद्र बोस :-**
   - जन्म -
     - ✓ सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था।
     - ✓ उनकी माता का नाम प्रभावती दत्त बोस
     - ✓ पिता का नाम जानकीनाथ बोस था।
     - ✓ उनकी जयंती 23 जनवरी को 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाई जाती है।
   - शिक्षा और प्रारंभिक जीवन -
     - ✓ वर्ष 1919 में उन्होंने भारतीय सिविल सेवा (ICS) की परीक्षा पास की थी। बाद में बोस ने सिविल सेवा से त्यागपत्र दे दिया।
     - ✓ आध्यात्मिक गुरु - विवेकानंद
     - ✓ राजनीतिक गुरु - चितरंजन दास
     - ✓ 1921 में बोस ने चित्तरंजन दास द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र 'फॉरवर्ड' के संपादन का कार्यभार संभाला और बाद में अपना खुद का समाचार पत्र 'स्वराज' शुरू किया।

   - कॉन्ग्रेस के साथ संबंध -
     - ✓ उन्होंने बिना शर्त स्वराज अर्थात् स्वतंत्रता का समर्थन किया
     - ✓ मोतीलाल नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया जिसमें भारत के लिये डोमिनियन के दर्जे की बात कही गई थी।
     - ✓ 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया
     - ✓ 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के निलंबन तथा गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर का विरोध किया।
     - ✓ 1930 के दशक में जवाहरलाल नेहरू और एम.एन. रॉय के साथ कॉन्ग्रेस की वाम राजनीति में संलग्न रहे।
     - ✓ 1938 में बोस ने हरिपुरा में कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष के चुनाव में जीत हासिल की।
     - ✓ 1939 में पुनः त्रिपुरी में उन्होंने गांधी के उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया के खिलाफ अध्यक्ष का चुनाव जीता।
     - ✓ गांधी के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण बोस ने इस्तीफा दे दिया और कॉन्ग्रेस छोड़ दी।
     - ✓ उन्होंने एक नई पार्टी 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। इसका उद्देश्य अपने गृह राज्य बंगाल में राजनीतिक वामपंथ को मज़बूत करना था।
   - मृत्यु - वर्ष 1945 में ताइवान में विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी। हालाँकि उनकी मृत्यु के संबंध में अभी भी अस्पष्टता है।
2. **आजाद हिंद फौज - सामान्य परिचय :-**
   - विचार - मोहन सिंह (मलाया)
   - स्थापना - मार्च 1942 (मेजर फुजीहारा के सहयोग से रासबिहारी बोस द्वारा)
   - मुख्यालय - सिंगापुर
   - जुलाई 1943 - सुभाष चंद्र बोस INA प्रमुख बने
   - लड़ाकू ब्रिगेड - पुरुष ब्रिगेड (नेहरू, गांधी व सुभाष बिग्रेड) तथा रानी लक्ष्मीबाई के नाम से महिला ब्रिगेड
   - नारा - जय हिंद, दिल्ली चलो, तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा
3. **मुख्य कार्य :-**
   - 21 अक्टूबर 1943 - सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में आजाद हिंद सरकार (अरजी हुकूमत ए आजाद हिंद) का गठन
     - ✓ प्रधानमंत्री व युद्ध मंत्री - सुभाषचंद्र बोस
     - ✓ मुख्यालय - रंगून
     - ✓ कैप्टन लक्ष्मी सहगल - महिला विंग प्रमुख
     - ✓ 21 अक्टूबर 2018 को आजाद हिंद फौज की 75 वीं वर्षगांठ (लाल किला)
     - ✓ 9 देशों द्वारा मान्यता
   - INA ने मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की
   - जापान ने अंडमान निकोबार द्वीप INA को सौंपा -
     - ✓ 8 नवंबर 1943 - नेताजी ने शहीद व राजस्व द्वीप नाम रखा
     - ✓ 2018 - प्रधानमंत्री श्री मोदी ने नेता जी द्वारा अंडमान निकोबार में तिरंगा फहराने की 75वीं वर्षगांठ पर तीनों द्वीपों के नाम बदले -
       1. नील - शहीद द्वीप
       2. हैवलॉक - स्वराज द्वीप
       3. रॉस - नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप
   - 6 जुलाई 1944 को रेडियो प्रसारण पर नेताजी ने गांधीजी को राष्ट्रपिता कह कर संबोधित किया
   - अराकान पहाड़ियों पर ब्रिटिश सेना को हराया तथा कोहिमा पर अधिकार किया
   - शाह नवाज़ के नेतृत्व में आज़ाद हिंद फौज ने जापानियों के साथ मिलकर भारत की पूर्वी सीमा एवं बर्मा में युद्ध लड़ा, किंतु द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान को मिली पराजय ने आज़ाद हिंद फौज को भी परास्त कर दिया। 1945 ई. में आज़ाद हिंद फौज के अधिकारियों

और सैनिकों को अंग्रेज़ों ने गिरफ्तार कर लिया।

यद्यपि आज़ाद हिंद फौज अपने उद्देश्य को प्राप्त न कर सकी तथा अपने प्रयत्नों में असफल रही, किंतु इस फौज ने राजनीतिक और मानसिक रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सम्भवतः अंग्रेजों के शीघ्र भारत छोड़ने का एक कारण यह भी था।

11.6) लाल किला मुकदमा (नवंबर 1945)

1. आजाद हिन्द फौज के गिरफ्तार सैनिकों एवं अधिकारियों पर अंग्रेज सरकार ने दिल्ली के लाल किले में नवम्बर, 1945 मुकदमा चलाया
2. इस मुकदमे के मुख्य अभियुक्तं तीन अधिकारी मेजर शहनवाज खाँ, कर्नल प्रेम सेहगल और कर्नल गुरु दयालसिंह ढिल्लो राजद्रोह का आरोप लगाया गया
3. इनके समर्थन में न केवल कांग्रेस, बल्कि मुस्लिम लीग, अकाली दल, कम्युनिस्ट पार्टी आदि ने भी मुकदमे की सुनवाई का विरोध किया।
4. आजाद हिन्द फौज के बचाव के लिए कांग्रेस ने भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज बचाव समिति का गठन किया, जिसमें तेजबहादुर सप्रू, कैलाशनाथ काटजू, अरुणा आसफ अली, जवाहरलाल नेहरू तथा जिन्ना प्रमुख वकील थे
5. फौजी अदालत द्वारा इन तीनों को फांसी की सजा सुनाई गई तथा एक अन्य सैनिक अधिकारी कैप्टल रशीद को 7 वर्ष की सजा दी गई।
6. इस निर्णय के खिलाफ पूरे देश में "लाल किले को तोड़ दो, आजाद हिन्द फौज को छोड़ दो' के नारे लगाए गए।
7. विवश होकर तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इनकी मृत्युदण्ड की सजा को माफ कर दिया
8. इस आन्दोलन की व्यापकता इतनी अधिक थी कि ब्रिटिश राज के परम्परागत समर्थक माने जाने वाले सरकारी कर्मचारी एवं सशस्त्र सेनाओं के लोग भी सरकार के विरुद्ध हो गए।

11.7) शाही भारतीय नौसेना विद्रोह, 18 फरवरी 1946

1. 18 फरवरी 1946 को बम्बई में एच एम आई एस तलवार नामक जहाज के लगभग 1100 नौसैनिकों ने भारतीयों नौसैनिकों के साथ भोजन एवं वेतन से सम्बंधित दुर्व्यवहार, नस्लवादी भेदभाव एवं अपमानजनक व्यवहार के कारण विद्रोह किया
2. अंग्रेजों ने इस संदर्भ में कहा था कि भिखारियों को चुनने का अधिकार नहीं होता
3. प्रसार :- कराची, मद्रास, कलकत्ता सहित देशभर के सभी
4. विद्रोहियों ने जहाजों से ब्रिटिश झंडों को उतार कर कांग्रेस मुस्लिम लीग और कम्युनिस्ट पार्टी के झंडों को फहरा दिया
5. नौसेना के कर्मचारियों को संगठित करने का काम एमएस खान के नेतृत्व में गठित नौसेना केंद्रीय हड़ताल समिति ने किया
6. 23 फरवरी 1946 को सरदार पटेल और जिन्ना के दबाव में आकर विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया जिसके पश्चात इन विद्रोहियों ने कहा था कि हम भारत के सामने समर्पण कर रहे हैं ब्रिटेन के सामने नहीं

11.8) कैबिनेट मिशन मार्च 1946

1. ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने नौसेना विद्रोह के लिए एक दिन बाद 19 फरवरी 1946 को ब्रिटिश संसद के हाउस ऑफ कॉमन्स में कैबिनेट मिशन को भारत भेजने की घोषणा की, जिसके बाद 24 मार्च 1946 को मिशन भारत पहुंचा। कैबिनेट मिशन के सदस्यों में सर स्टेफोर्ड क्रिप्स(व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष), एवी एलेक्जेंडर(फर्स्ट लॉर्ड ऑफ द एडमिरलिटी) एवं पेथिक लॉरेंस(भारत सचिव) सम्मिलित थे
2. **कैबिनेट मिशन के प्रमुख प्रावधान इस प्रकार हैं-**
    - ब्रिटिश भारत के प्रांतों एवं देशी रियासतों को सम्मिलित करते हुए भारत में एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना की जाएगी।
    - विदेश, संचार एवं रक्षा सम्बंधी मामले केंद्र सरकार के अधीन रखे जाएँगे।
    - संघीय विषयों के अतिरिक्त अन्य सभी विषयों पर कानून बनाने की शक्ति एवं अवशिष्ट शक्तियाँ प्रांतों को प्रदान की जाएँगी।
    - प्रांतीय विधानसभाओं और देशी रियासतों के प्रतिनिधियों को मिलाकर, अप्रत्यक्ष निर्वाचन के माध्यम से एक संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जाएगा।
    - संविधान सभा में प्रत्येक प्रांत से 'लगभग 10 लाख की आबादी पर एक प्रतिनिधि' के अनुपात में सीटों का आवंटन किया जाएगा।

कैबिनेट मिशन ने जुलाई 1946 में संविधान सभा के चुनाव संपन्न करवाए जिसमें कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ इसके पश्चात 14 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने जिन्ना के नेतृत्व में प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाया इसके पश्चात बंगाल में सांप्रदायिक दंगे प्रारंभ हो गए

11.9) प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (16 अगस्त 1946)

1. 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग द्वारा घोषित
2. संविधान सभा निर्वाचन में कांग्रेस को बहुमत मिला
3. परिणाम :- बंगाल व बिहार में साम्प्रदायिक दंगे
4. गांधी जी ने शांति स्थापना हेतु नोआखाली का दौरा किया
5. माउंटबेटन ने गांधी जी को "वन मैन बाउंड्री फोर्स कहा"

11.10) अंतरिम सरकार का गठन (सितंबर 1946)

1. 24 अगस्त, 1946 को जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में भारत की प्रथम अंतरिम सरकार की घोषणा की गई, जिसका गठन 2 सितम्बर 1946 को 12 सदस्यों के साथ किया गया
2. वायसराय को परिषद का अध्यक्ष एवं नेहरू जी को परिषद का उपाध्यक्ष बनाया गया :- जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, राजेंद्र प्रसाद, अरूणा आसफ अली, राजगोपालाचारी, शरतचंद्र बोस, जॉन मथाई, बलदेव सिंह, शफात अहमद खाँ, जगजीवनराम, सैयद अली ज़हीर और सी.एच. भाभा।
3. लॉर्ड वेवेल की मध्यस्थता के परिणामस्वरूप 26 अक्टूबर, 1946 को मुस्लिम लीग के पाँच प्रतिनिधि भी अंतरिम सरकार में सम्मिलित हो गए :- लियाकत अली खाँ, आई.आई. चुंदरीगर, जोगेंद्रनाथ मंडल, गजनफर अली खां एवं अब्दुर रब निश्तर
4. मुस्लिम लीग का अंतरिम सरकार में सम्मिलित होने का उद्देश्य पाकिस्तान के रूप में पृथक राष्ट्र की मांग
5. अंतरिम सरकार :- कांग्रेस के 6, मुस्लिम लीग के 5 तथा ईसाई, पारसी एवं सिख वर्ग से एक-एक सदस्य सम्मिलित थे

अंतरिम सरकार के मंत्री	
सदस्य	**विभाग**
जवाहर लाल नेहरु	कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष, विदेश एवं राष्ट्रमण्डल सम्बंधित मामले
सरदार वल्लभ भाई पटेल	गृह, सूचना एवं प्रसारण विभाग
बलदेव सिंह	रक्षा विभाग
डॉ जॉन मथाई	उद्योग व आपूर्ति विभाग
सी राजगोपालाचारी	शिक्षा विभाग
सी एच भाभा	निर्माण, खनन एवं ऊर्जा विभाग
डॉ राजेंद्र प्रसाद	कृषि एवं खाद्य विभाग
जगजीवन राम	श्रम विभाग
आसफ अली	रेलवे विभाग
लियाकत अली खान(मु लीग)	वित्त विभाग
आई आई चुंदरीगर(मु लीग)	वाणिज्य विभाग
गजनफर अली खान(मु लीग)	स्वास्थ्य विभाग
जोगेंद्रनाथ मंडल(मु लीग)	विधि विभाग
अब्दुर रब नश्तर(मु लीग)	संचार विभाग

11.11) एटली की घोषणा (20 फरवरी 1947)

1. 20 फरवरी 1947 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लिमेंट एटली ने हाउस ऑफ कॉमंस में ऐतिहासिक घोषणा करते हुए कहा कि अंग्रेज जून 1948 के पहले ही उत्तरदाई लोगों को सत्ता हस्तांतरित करने के पश्चात भारत छोड़ देंगे
2. अंतिम ब्रिटिश वायसराय और गवर्नर जनरल के रूप में लॉर्ड माउंटबेटन 22 मार्च 1947 को भारत आए और आते ही उन्होंने सत्ता हस्तांतरण के लिए कार्यवाही करना प्रारंभ कर दिया

11.12) बाल्कन योजना

1. वर्ष 1947 में मार्च से मई के बीच माउंटबेटन ने वैकल्पिक योजना तैयार की इसे बाल्कन योजना के नाम से भी जाना जाता है
2. इस योजना में यह प्रावधान था कि सत्ता का हस्तांतरण पृथक-पृथक प्रांतों को किया जाए,
3. बंगाल एवं पंजाब को यह विकल्प दिया जाए कि वे अपने बंटवारे के लिए जनमत संग्रह का सहारा ले सकते हैं
4. देशी रियासतों के साथ विभिन्न समूहों को यह छूट होगी कि वे भारत में सम्मिलित होना चाहते हैं या पाकिस्तान में या फिर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखना चाहते हैं

11.13) माउंटबेटन योजना (3 जून 1947)

माउंटबेटन 3 जून 1947 को माउंटबेटन द्वारा प्रस्तुत योजना को 3 जून योजना व डिकी बर्ड योजना के नाम से भी जाना जाता है :-

- भारत को भारत और पाकिस्तान में विभाजित किया जायेगा
- बंगाल और पंजाब का विभाजन किया जायेगा और उत्तर पूर्वी सीमा प्रान्त और असम के सिलहट जिले में जनमत संग्रह कराया जायेगा
- पाकिस्तान के लिए संविधान निर्माण हेतु एक पृथक संविधान सभा का गठन किया जायेगा।
- रियासतों को यह छूट होगी कि वे या तो पाकिस्तान या भारत में सम्मिलित हो जाये या फिर खुद को स्वतंत्र घोषित कर दें।
- भारत और पाकिस्तान को सत्ता हस्तांतरण के लिए 15 अगस्त 1947 का दिन नियत किया गया।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 को जुलाई 1947 में पारित कर दिया। इसमें ही वे प्रमुख प्रावधान शामिल थे जिन्हें माउंटबेटन योजना द्वारा आगे बढ़ाया गया था। अतः हम कह सकते है कि माउंटबेटन योजना का मुख्य उद्देश्य भारत का विभाजन और सत्ता का त्वरित हस्तांतरण था।

क्या भारत विभाजन को रोका जा सकता था?

1. भारत में विभाजन को एक 'महान दुर्घटना' माना जाता है। इसे अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति तथा मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिकता तथा पार्थक्य के आदर्श का एक स्वाभाविक चरण माना जाता है। अंग्रेजों एवं लीग की नीतियों ने एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य किया तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को विभाजन स्वीकार करने पर बाध्य कर दिया। कुछ भारतीय लेखक विभाजन के लिये कुछ सीमा तक कांग्रेस के नेताओं को भी दोषी ठहराते हैं। उनका तर्क है कि यदि ये नेता पर्याप्त सूझ-बूझ तथा हिम्मत दिखाते तो मातृभूमि का बंटवारा रूक सकता था।

2. वहीं, पाकिस्तान में इस विभाजन को पूर्णतया तर्कसंगत तथा अनिवार्य माना जाता है। वे कभी स्वीकार नहीं करते कि स्वतंत्रता संग्राम में 'मुस्लिम राष्ट्रवाद' भी उपस्थित था। यह केवल भारतीय इतिहास में ही निहित है। अंग्रेज इतिहासकार और लेखक भी विभाजन की अनिवार्यता या टाले जा सकने के संदर्भ में एकमत नहीं हैं।
3. पंडित नेहरू के अनुसार मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का कारण उनमें मध्यवर्ग के उभरने में देरी का होना था, जिसके कारण लीग ने मुस्लिम जनता में भय की भावना भर दी। 'इस्लाम खतरे में है।'- इस नारे ने सभी मुसलमानों को एक झण्डे तले इक्ट्ठा कर मुहम्मद अली जिन्नाह को एक राजनीतिक मसीहा के रूप में स्थापित कर दिया। मुहम्मद अली जिन्नाह ने भी तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का पूरा लाभ उठाया और अंत में 'कायद-ए-आज़म' कहलाये।
4. भारतीय हिंदू संगठनों जैसे हिंदू महासभा आदि की भूलों और गलत कार्यों ने भी साम्प्रदायिकता एवं पृथकतावाद को बढ़ावा दिया। ऐसी परिस्थितियों में विभाजन एक अनिवार्यता बन गया था। फिर भी, यदि जिन्नाह और कांग्रेस के प्रमुख नेताओं ने सूझबूझ दिखाई होती तो यह विभाजन एक त्रासदी/दुर्घटना न कहलाकर महज़ एक सहज तरीके से हुआ 'विभाजन' हो सकता था

11.14) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947

18 जुलाई 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम ब्रिटिश संसद द्वारा पारित किया गया। इस अधिनियम की प्रमुख धाराएं निम्न थी –

- भारतीय उपमहाद्वीप को भारतीय संघ तथा पाकिस्तान में बांटा जाएगा।
- पाकिस्तान के प्रदेश में सिंध, ब्रिटिश ब्लूचिस्तान, उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रान्त, पश्चिमी पंजाब तथा पूर्वी बंगाल सम्मिलित होंगे। इसमें अंतिम दो प्रान्तों की सुनिश्चित सीमाओं का निर्धारण एक सीमा आयोग, जनमत तथा निर्वाचन द्वारा किया जाएगा।
- प्रत्येक राज्य के लिए एक-एक गवर्नर-जनरल होगा, जो महामहिम द्वारा नियुक्ति किया जाएगा
- यदि दोनों राज्य चाहें तो वही व्यक्ति इन दोनों राज्यों का गवर्नर-जनरल रह सकता है।
- भारत तथा पाकिस्तान के विधानमण्डलों को कुछ विषयों पर कानून निर्माण का पूर्ण अधिकार दिया गया।
- 15 अगस्त 1947 ई. के बाद भारत तथा पाकिस्तान पर अंग्रेजी संसद के क्षेत्राधिकार की समाप्ति
- पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर जनरल मुहम्मद अली जिन्ना बने, किन्तु भारत के लिए माउंटबेटन को ही साग्रह गवर्नर- जनरल बने रहने को कहा गया।

Note :

- संविधान सभा के चुनाव के पश्चात् भारत में आंतरिक संकट की स्थिति व्याप्त थी, साम्प्रदायिक दंगों के मध्य ब्रिटिश सरकार के लिए भारत की समस्या जटिल होती जा रही थी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने 20 फरवरी, 1947 ई. को हाउस ऑफ कॉमन्स में यह घोषणा की कि जून, 1948 ई. तक भारत को स्वतंत्रता प्रदान कर दी जाएगी।
- एटली ने विभाजन की समस्या के समाधान के लिए लॉर्ड माउंटबेटन को गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्त किया। मार्च, 1947 ई. को माउंटबेटन गवर्नर जनरल बनकर भारत आए। भारत में उन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, जिन्ना, मौलाना आजाद, जे. बी. कृपलानी, कृष्ण मेनन, लियाकत अली, गांधीजी आदि से बातचीत की
- माउंटबेटन इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि भारतीय समस्या का एकमात्र समाधान देश का विभाजन और पाकिस्तान की स्थापना है। माउंटबेटन ने सबसे पहले सरदार पटेल को देश के बंटवारे के पक्ष में किया। इसके बाद जवाहरलाल नेहरू को बंटवारे के पक्ष में किया। गांधीजी ने इस दौरान कहा था कि "विभाजन मेरी लाश पर होगा।"
- विभाजन की योजना के सम्बन्ध में एक सुनिश्चित एवं दूर्शितापूर्ण रणनीति का अभाव था। साथ ही योजना में यह भी नहीं बताया गया था कि विभाजन उपरान्त उत्पन्न समस्याओं का समाधान कैसे किया जाएगा।
- सीमा आयोग (रेडक्लिफ की अध्यक्षता में) की घोषणा करने में अनावश्यक देरी की गई। हालाँकि इस सम्बन्ध निर्णय 12 अगस्त, 1947 ई. को ही लिया जा चुका था लेकिन माउंटबेटन ने इसे 15 अगस्त, 1947 ई. को ही सार्वजनिक करने का निर्णय लिया। इसके पीछे उनकी यह सोच थी कि इससे सरकार किसी भी प्रकार की विपरीत घटना होने पर जिम्मेदारी बच जाएगी।
- इस प्रकार, ब्रिटिश सरकार की स्वयं के हितों को सुरक्षित रखने की स्वार्थपूर्ण नीति ने भारतीय उपमहाद्वीप को अस्त-व्यस्त कर दिया जिसके कारण भीषण नरसंहार हुआ तथा किसी को भी इसके लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया गया।

संभावित प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. महात्मा गांधी को सत्याग्रह तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन की प्रेरणा किससे मिली?
2. महात्मा गांधी ने प्रथम सत्याग्रह कहां किया?
3. गांधीजी को देशद्रोही फकीर किसने कहा?
4. यंग इंडिया
5. सत्याग्रह
6. सर्वोदय
7. ट्रस्टीशिप सिद्धांत
8. अहमदाबाद का श्रमिक विवाद
9. भर्ती करने वाला सार्जेंट
10. जलियांवाला बाग हत्याकांड
11. द अनार्किकल एंड रिवॉल्यूशनरी क्राइम एक्ट 1919
12. असहयोग आंदोलन।
13. कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन दिसंबर 1920
14. चौरी-चौरा घटना
15. स्वराज पार्टी

16. जबलपुर का झंडा सत्याग्रह।
17. गांधी दास समझौता।
18. साइमन कमीशन
19. गोलमेज सम्मेलनों का आयोजन कब तथा कहां किया गया?
20. कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन 1929
21. दांडी मार्च
22. दक्षिण भारत में किसने दांडी मार्च किया?
23. सांप्रदायिक पंचाट
24. पूना समझौता
25. व्यक्तिगत सत्याग्रह
26. ऑपरेशन जीरो आवर।
27. महात्मा गांधी
28. सुभाष चंद्र बोस।
29. जवाहरलाल नेहरू
30. सरदार वल्लभभाई पटेल
31. आजाद हिंद फौज
32. शाही नौसेना विद्रोह
33. लाल किला मुकदमा
34. बाल्कन योजना
35. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. गांधी जी की विचारधारा को संक्षिप्त में समझाएं।
2. सत्याग्रह को विस्तार से समझाएं।
3. गांधीजी की कार्यपद्धति को समझाएं।
4. जलियांवाला बाग हत्याकांड
5. खिलाफत आंदोलन के कारण तथा प्रभाव को स्पष्ट करें।
6. असहयोग आंदोलन के कार्यक्रमों को समझाएं।
7. स्वराज पार्टी की प्रमुख उपलब्धियों को समझाएं।
8. साइमन कमीशन की मुख्य सिफारिशें क्या थी?
9. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन को समझाए।
10. नेहरू रिपोर्ट पर टिप्पणी करें।
11. सविनय अवज्ञा आंदोलन के विस्तार को समझाइए
12. महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन हेतु नमक को क्यों चुना?
13. गांधी इरविन पैक्ट क्या था?
14. भारत छोड़ो आंदोलन के चरणों को समझाइए।
15. सुभाष चंद्र बोस का भारतीय स्वतंत्रता में क्या योगदान रहा? समझाइए

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

1. महात्मा गांधी को भारत में सफलता मिलने के प्रमुख कारणों को विस्तार से समझाएं।
2. असहयोग आंदोलन पर निबंध लिखें
3. सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारणों, विस्तार तथा महत्व को समझाते हुए इसकी समीक्षा कीजिए।
4. भारत छोड़ो आंदोलन को विस्तार से समझाएं